

MAHN401CCT

अनुवाद सिद्धांत

एम.ए.
(चतुर्थ सेमेस्टर के लिए)
पेपर – 13

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी
हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
Course : Anuvad Siddhant
ISBN: 978-81-XXX-XX-X
First Edition: November, 2024

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2024
Copies	:	500
Price	:	313/-
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, MANUU, Hyderabad Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

Anuvad Siddhant

For
M.A. Hindi
4th Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

Director: dir.dde@manuu.edu.in Publication: ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)



संपादक

डॉ. आफताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल (Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिन्दी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,
मानू

Prof. Rishabha Deo Sharma

Former Head, P.G. and Research
Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar
Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अंग्रेजी और विदेशी भाषा वि.वि., हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod

Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

प्रो. गंगाधर वानोडे

क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Prof. Gangadhar Wanode

Regional Director
Central Institute of Hindi
Secunderabad, Hyderabad.

डॉ. आफताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig

Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत

अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat

Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

डॉ. एल. अनिल

अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. L. Anil

Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक

इकाई संख्या

• डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद	1,7,8
• डॉ. इबरार खान, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मिर्ज़ा गालिब कॉलेज, गया.	2, 12
• बालाजी	3
• डॉलक्ष्मीप्रिया .एन ., असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा गांधी सरकारी कॉलेज, मायाबांदर (निकोबार-अंडमान)	4
• डॉवाजदा इशरत ., अतिथि प्राध्यापक(संविदा)असिस्टेंट प्रोफेसर /, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद	5, 6
• डॉ. गुर्मकोंडा नीरजा, एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै	9,10,11
• प्रोगोपाल शर्मा ., पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथियोपिया (पूर्व अफ्रीका)	13,14,15,16

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम—समन्वयक	11

खंड/ इकाई	विषय	पृष्ठ संख्या	
खंड 1	:		
इकाई 1	:	अनुवाद अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप	13
इकाई 2	:	अनुवाद प्रकार और प्रक्रिया	23
इकाई 3	:	अनुवाद और भाषा विज्ञान का अंतः संबंध	40
इकाई 4	:	अनुवाद का महत्व, सार्थकता और उपयोग	64
खंड 2	:		
इकाई 5	:	काव्यनुवाद की समस्याएँ	82
इकाई 6	:	‘कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ	95
इकाई 7	:	नाटकानुवाद की समस्याएँ	104
इकाई 8	:	सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ	114
खंड 3	:		
इकाई 9	:	‘वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ	123
इकाई 10	:	पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ	142
इकाई 11	:	मानविकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ	161
इकाई 12	:	विधि पाठ के अनुवाद की समस्याएँ	177
खंड 4	:		

इकाई 13	:	हिंदी अंग्रेजी कहानी अनुवाद	194
इकाई 14	:	‘अंग्रेजी हिंदी कहानी अनुवाद	207
इकाई 15	:	हिंदी-अंग्रेजी कविता अनुवाद	222
इकाई 16	:	अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद	235
		परीक्षा प्रश्नपत्र का नमूना	257

प्रूफ रीडर:

प्रथम	:	डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दू. शि. नि., मानू.
द्वितीय	:	डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दू. शि. नि., मानू.
अंतिम	:	डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुलसचिव, दू. शि. नि., मानू.

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने को अपना सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों

की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना चुका है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले वर्षों कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामलों और संचार में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किए गए हैं।

मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूं कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन
कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से हुआ और इस के बाद 2004 में विधिवत तौर पर पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए।

देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर अंदाज़ से जारी रखने में UGC की अहम भूमिका रही है। दूरस्थ शिक्षा (ODL) के तहत जारी विभिन्न प्रोग्राम UGC-DEB से मंजूर हैं।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के छात्रों के मेयार को बुलंद किया जाये। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवत्तापूर्ण करके स्व-अध्ययन सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड- 24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज़ पर आधारित कुल 17 पाठ्यक्रम चला रहा है। साथ ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बेंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकत्ता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 6 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, अमरावती और वाराणसी) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क मौजूद है। इस के अलावा विजयवाड़ा में एक एक्सटेंशन सेंटर कायम किया गया है। इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अंतर्गत 160 से अधिक अधिगम सहायक केंद्र (Learner Support Centre) और 20 प्रोग्राम सेंटर काम कर रहे हैं, जो शिक्षार्थियों को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (DDE) अपने शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल कर रहा है। साथ ही सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ़ ऑनलाइन तरीके से ही दिया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध है। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए SMS और व्हाट्सएप्प ग्रुप एवं ईमेल की व्यवस्था भी की गयी है। जिसके द्वारा शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसेलिंग, परीक्षा आदि के बारे में सूचित किया जाता है। गत वर्षों से रेगुलर काउंसेलिंग के अतिरिक्त एडिशनल रेमेडियल क्लासेस(ऑनलाइन) उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ताकि शिक्षार्थियों के मेयार को बुलंद किया जा सके।

आशा है कि देश की शैक्षणिक और आर्थिक रूप में पिछड़ी आबादी को आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी। आने वाले दिनों में शैक्षणिक जरूरतों के अनुरूप नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किया जायेगा और आशा है कि यह दूरस्थ शिक्षा को अत्यधिक प्रभावी और कारगार बनाने में मददगार साबित होगा।

प्रो. मो. रज्जाउल्लाह खान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

अनुवाद सिद्धांत

1. अनुवाद परिभाषा एवं स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ – अनुवाद अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.3.1 अनुवाद का अर्थ

1.3.2 अनुवाद की परिभाषा

1.3.3 अनुवाद का स्वरूप

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

छात्रों ! हमारे देश में अनेक भाषा हैं लेकिन हम एक दूसरे से सम्प्रेषण करना आवश्यक हैं इतना ही नहीं अपने देश के आलावा अन्य देशों से भी सम्प्रेषण की जरूरत है। इसलिए हमें एक दूसरे से सम्प्रेषण करना आवश्यक है। पूरे संसार की भाषा एक होती तो हम आसानीसे एक दूसरों के साथ सम्प्रेषण या व्यवहार कर सकते हैं लेकिन हमारी भाषा अलग-अलग हैं। प्रत्येक देश की एक राष्ट्र भाषा होती है। इसी के साथ कई अन्य बोली एवं भाषाएँ होती हैं। जब दो भाषी एक दूसरे के साथ मिलते हैं या अपने भाव एवं विचारों को विनिमय करना चाहते हैं तो हमें अनुवाद की जरूरत होती है।

अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा के आलावा अन्य भाषा की संस्कृति, वेशभूषा, रीति-रिवाज, भाषा में प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावते, व्याकरण और साहित्य से ज्ञात होते हैं। अनुवाद ज्ञानार्जन का महत्वपूर्ण साधन हैं। डॉ. सुरेश कुमार के शब्दों में अनुवाद इतना महत्वपूर्ण है कि “अपने व्यापकतम रूप में अनुवाद भाव की शक्ति में संवर्धन करता है। पाठों को व्याख्या एवं परिभाषा में सहायक होता है। भाषा तथा विचार के संबंध को स्पष्ट करता है और ज्ञान का प्रसार करता है गेटे के शब्दों में अनुवाद असंभव होते हुए भी आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।” (डॉ. सुरेश कुमार : अनुवाद महत्व – परंपरा – स्वरूप, पृ. 19)

1.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप –

- अनुवाद शब्द के मूल अर्थ से परिचित होंगे।
- अनुवाद की परिभाषा को जानेंगे।

- अनुवाद के स्वरूप के बारे में जानेंगे ।

1.3 मूल पाठ : अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

1.3.1 अनुवाद का अर्थ

अनुवाद शब्द की उत्पत्ति 'वद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने से 'वाद' बनता है, फिर उसमें बादमें, पीछे, अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द निर्माण होता है। अनुवाद शब्द का मूल अर्थ होता है – 'पुनः कथन' या किसी के कहने के बाद कहना। अनुवाद शब्द संस्कृत का है।

अनुवाद का शाब्दिक अर्थ स्पष्ट है कि किसी एक भाषा में कही हुई बात को अन्य किसी भाषा में लिखित या मौखिक रूप में फिर से कहना ही अनुवाद है।

अनुवाद के लिए अंग्रेजी भाषा में ट्रांसलेशन शब्द प्रयुक्त होता है। यह शब्द फ्रांसीसी शब्द 'ट्रांसलेटर' से व्युत्पन्न है। इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पारवहन – एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

अनुवाद क्या है ?

एक भाषा की सामग्री किसी अन्य भाषा में परिवर्ती करना ही अनुवाद कहलाता है। अनुवाद में कम से कम दो भाषा होना आवश्यक होता है। जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत-भाषा (source Language) कहते हैं उसी प्रकार जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य-भाषा (Target Language) कहा जाता है। स्रोत-भाषा का मूल भाव, विचार लक्ष्य भाषा में अंतरित करना ही अनुवाद कहा जाता है।

मूल भाषा में प्रयुक्त व्यंगार्थ, लक्षण, अभिव्यंजना भाव का सही अर्थ को दूसरी भाषा में बनाया रखना ही अनुवाद है।

बोध प्रश्न –

1. अनुवाद का तात्पर्य क्या है ?

1.3.2 अनुवाद की परिभाषा

अनुवाद के बारे में अनेक विद्वानों ने अपना – अपना मत व्यक्त किया हैं हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

विदेशी विद्वानों के अनुसार –

ए. नड्डा के अनुसार – 'अनुवाद का तात्पर्य है स्रोत-भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।'

(Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style!)

केटफोर्ड – ‘एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है’

(The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language.)

मैथ्यु आर्नल्ड- ‘जिस प्रकार मूल रचना का प्रभाव उसके पाठकों पर पड़ता है, ठीक उसी प्रकार का प्रभाव अनुवाद के पाठक पर भी हना अत्यंत आवश्यक है’

हैलिडे :- ‘अनुवाद एक संबंध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।’

पीटर न्युमार्क – ‘अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

वेब्स्टर शब्दकोश में अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार से दियी गई है – ‘एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण की प्रणाली अनुवाद है। यह ऐसी कला है, जिसमें भिन्न पृष्ठ भूमि वाले पाठकों के लिए किसी रचना को किसी और भाषा में पुनः लिखा जाता है।’

(Translation is a rendering from one language or representational system into another. Translation is an art that involves the recreation of a work in another language for reader with a different background)

बोध प्रश्न –

1. वेब्स्टर शब्दकोश के अनुसार अनुवाद की परिभाषा बताइए।

भारतीय चिंतन –

भोलानाथ तिवारी- ‘किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।

विनोद गोदरे – ‘अनुवाद, स्नोत- भाषा में अभिव्यक्त विचार अथवा व्यक्त अथवा रचना सूचना साहित्य को यथासंभव मूल भावना के सामानांतर बोध एवं सम्प्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है।’

दंगल झाल्टे – ‘स्नोत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य –भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपांतरण करना अनुवाद है।

महादेवी वर्मा – ‘भाषा विचारों और मनोभावों का परिधान है और इस दृष्टि से एक विचारक या कवि की उपलब्धिया जिस भाषा में व्यक्त हुई है, उनसे उन्हें दूसरी वेशभूषा में लाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य रहता है। युग विशेष के कृती स्रष्टा की अनुभूतियों को पुनरावृति सहज नहीं होती। कवि जब अपनी अनुभूतियों को भी यथातथ्य आवृति करने में

असमर्थ रहता है, तब युगांतर के किसी कवि की अनुभूतियों की आवृत्तियों के संबंध में कुछ कहना व्यर्थ है। परन्तु अनुवादक के लिए ऐसी तादात्म्यमूलक आवृत्ति आवश्यक हो रहेगी, जिसमें वह देश काल के व्यवधान पार करके किसी कवि की अनुभूति के नवीन वाणी दे सके।’ बोध प्रश्न –

1. विनोद गोदरे की अनुवाद की परिभाषा बताइए।
2. महादेवी का अनुवाद के बारे में क्या मत है ?

1.3.3 अनुवाद का स्वरूप –

एक भाषा की पाठ सामग्री अन्य किसी दूसरी भाषा में जैसा कि वैसा ही उत्तरना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद में स्रोत-भाषा का भाव लक्ष्य भाषा में होना महत्वपूर्ण होता है। शब्द से शब्द (Word to word) अनुवाद करने से लक्ष्य भाषा के पाठकों को समझ में नहीं आएगा। इसलिए अनुवाद में भावार्थ होना आवश्यक है। अनुवाद में केवल भाव का दूसरी भाषा के समतुल्य भाव में परिवर्तन करना ही अनुवाद नहीं बल्कि भाव के साथ शैली पर भी बल दिया जाता है। स्रोत भाषा के शैली के आधार पर मूल भाषा का अनुवाद करना आवश्यक है।

अनुवाद एक साहित्य का परावर्तीत रूप होता है और जैसे साहित्य को पढ़ने में रूचि पैदा होती है उसी तरह से अनुवाद कृति में भी रूचि होती है। जिस तरह से मूल कृति हो उसी तरह से अनुवाद कृति भी हो। ‘यदि अनुवाद में मूल की आत्मा के दर्शन न हो, तो ऐसा अनुवाद निरर्थक है। भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद में प्रतीकांतर माना है वे कहते हैं “भाषा में ये प्रतीक शब्द होते हैं। इसी तरह चित्रकला, संगीत कला, नृत्यकला आदि में भी भों या विचारों को अभिव्यक्ति के लिए तरह- तरह के प्रतीकों का प्रयोग होता है। इन प्रतीकों का परिवर्तन ही प्रतीकांतर है।” जो तीन प्रकार का है।

A) शब्दांतर, B) माध्यामांतर और C) भाषांतर

A) शब्दांतर

किसी भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में व्यक्त करना शब्दांतर कहा जाता है। एक शब्द प्रतीक या शब्द प्रतीकों के स्थान पर दूसरे शब्द या प्रतीक या प्रतीकों का प्रयोग करना ही अनुवाद है।

जैसे- हुजूर तशरीफ ला रहे हैं। इस का शब्दांतर है- मालिक पधार रहे हैं

B) माध्यामांतर

माध्यामांतर का अर्थ यह है कि एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर दूसरे माध्यम के प्रतीकों का प्रयोग करना ही माध्यमांतर अनुवाद कहते हैं। अर्थात् एक चित्रकार जो भाव अपने चित्र के माध्यम से व्यक्त कर सकता है, उसी भाव को एक कवि अपनी कविता के द्वारा व्यक्त कर सकता है।

C) भाषांतर

एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में व्यक्त करना भाषांतर कहलाता है। इसी के मुख्य रूप से अनुवाद कहते हैं।

बोध प्रश्न -

1. अनुवाद में प्रतीकांतर के कितने भेद हैं ?
2. माध्यांतर प्रतीक क्या है ?

जब हम अनुवाद का स्वरूप की बात की जाए तो विद्वानों में मतभेद हैं कुछ विद्वानों ने अनुवाद के प्रकृति को ही स्वरूप मानते हैं, कुछ भाषाविज्ञानी अनुवाद के प्रकार को ही स्वरूप मानते हैं। डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने इन दोनों के आलावा वे अनुवाद के स्वरूप को व्यापक एवं सीमित दो वर्गों में भेद किया है।

अनुवाद का व्यापक संदर्भ

इस में अनुवाद को प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में रखने की बात कही गई है। प्रतीक के बारे में पीयर्स का कहना है कि प्रतीक वह वस्तु है जो किसी के लिए किसी अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। (A sign... is something that stands to some body for something else in some respect or capacity) अनुवाद को दो भिन्न प्रतीक व्यवस्था में मध्य होने वाला अर्थ का अंतरण माना जाता है। यह प्रतीकांतरण तीन भागों में बांटा गया है।

1. अंतः भाषिक अनुवाद (अन्वयांतर)

‘इस का अर्थ है कि एक ही भाषा के अंतर्गत। अर्थात् अंतः भाषिक अनुवाद में हम एक भाषा के दो भिन्न प्रतीकों के मध्य अनुवाद करते हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दी की किसी कविता का अनुवाद हिन्दी गद्य में करते हैं या हिन्दी की किसी कहानी को हिन्दी कविता में बदलते हैं तो उसे अंतःभाषिक अनुवाद कहा जाएगा। इसके विपरीत अंतर भाषिक अनुवाद में हम दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के भिन्न-भिन्न प्रतीकों के बीच अनुवाद करते हैं।

2. अंतर भाषिक (भाषांतर)

इसमें अनुवाद को न केवल स्रोत-भाषा में लक्ष्य-भाषा की संरचनाओं, उनकी प्रकृतियों से परिचित होना होता है, वरन् उनकी सामाजिक -सांस्कृतिक परम्पराओं, धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं आदि की सम्यक् जानकारी भी उसके लिए बहुत जरूरी है। अन्यथा वह अनुवाद के साथ न्याय नहीं कर पाएगा। अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद में किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है।

3. अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद (प्रतीकांतर)

इसमें प्रतीक-1 का संबंध तो भाषा से ही होता है, जबकि प्रतीक-2 का संबंध किसी दृश्य माध्यम से होता है। उदाहरण के लिए अमृता प्रीतम के ‘पिंजर’ उपन्यास को हिन्दी फ़िल्म ‘पिंजर’ में बदला जाना अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद है।

अनुवाद का सीमित संदर्भ

अनुवाद के एक भाषा के निहित अर्थ को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है उसे ही अनुवाद का सीमित स्वरूप कहा जाता है। इसमें दो भाषाओं के मध्य होने वाला अर्थ को अंतरण माना जाता है। इसे दो वर्गों में बांटा गया है।

1. पाठ्धर्मी आयाम

पाठ्धर्मी आयाम के अंतर्गत अनुवाद में स्रोत - भाषा पाठ केन्द्र में रहता है जो तकनीकी एवं सूचना प्रधान सामग्रियों पर लागू होता है।

2. प्रभावधर्मी आयाम

प्रभावधर्मी अनुवाद में स्रोत-भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट की अपेक्षा उस प्रभाव को पकड़ने की कोशिश की जाती है जो स्रोत- भाषा के पाठकों पर पड़ा है। इस प्रकार का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य और विशेषकर कविता के अनुवाद में लागू होता है।

बोध प्रश्न –

1. अनुवाद का व्यापक स्वरूप बताइए।
2. अनुवाद का सीमित स्वरूप के कितने भेद हैं ?

1.4 पाठ सार

अनुवाद शब्द की उत्पत्ति 'वद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। 'वद्' धातु में 'घज्' प्रत्यय लगने से 'वाद' बनता है, फिर उसमें बादमें, पीछे, अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द निर्माण होता है। अनुवाद शब्द का मूल अर्थ होता है – 'पुनः कथन' या किसी के कहने के बाद कहना। अनुवाद शब्द संस्कृत का हैं।

वेब्स्टर शब्दकोश में अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार से दियी गई है – 'एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण की प्रणाली अनुवाद है। यह ऐसी कला है, जिसमें भिन्न पृष्ठ भूमि वाले पाठकों के लिए किसी रचना को किसी और भाषा में पुनः लिखा जाता है।'

भोलानाथ तिवारी- 'किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषांतरण करना अनुवाद है, दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है।'

अनुवाद एक साहित्य का परावर्तीत रूप होता है और जैसे साहित्य को पढ़ने में रूचि पैदा होती है उसी तरह से अनुवाद कृति में भी रूचि होती है। जिस तरह से मूल कृति हो उसी तरह से अनुवाद कृति भी हो। 'यदि अनुवाद में मूल की आत्मा के दर्शन न हो, तो ऐसा अनुवाद निरर्थक है। भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद में प्रतीकांतर माना है वे कहते हैं "भाषा में ये प्रतीक शब्द होते हैं। इसी तरह चित्रकला, संगीत कला, नृत्यकला आदि में भी भों या विचारों को अभिव्यक्ति के लिए तरह- तरह के प्रतीकों का प्रयोग होता है। इन प्रतीकों का परिवर्तन ही प्रतीकांतर है।" जो तीन प्रकार का है।

A) शब्दांतर, B) माध्यामांतर और C) भाषांतर

जब हम अनुवाद का स्वरूप की बात की जाए तो विद्वानों में मतभेद हैं कुछ विद्वानों ने अनुवाद के प्रकृति को ही स्वरूप मानते हैं, कुछ भाषाविज्ञानी अनुवाद के प्रकार को ही स्वरूप मानते हैं। डॉ। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने इन दोनों के आलावा वे अनुवाद के स्वरूप को व्यापक एवं सीमित दो वर्गों में भेद किया है।

- 1) अनुवाद का व्यापक संदर्भ
- 2) अनुवाद का सीमित संदर्भ

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ –

- अनुवाद शब्द से परिचित हुए।
- अनुवाद की परिभाषा के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है।
- अनुवाद के स्वरूप से परिचित हुए हैं।
- अनुवाद में कम से कम दो भाषा का होना अनिवार्य होता है।
- अनुवाद ज्ञानार्जन के लिए किया जाता है।

1. 6 शब्द संपदा

1. स्रोत भाषा	=	जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है
2. लक्ष्य भाषा	=	जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है
3. समतुल्य	=	बराबर, समान, समकक्ष
4. शैली	=	ढंग, तरीका, रीति
5. प्रतिस्थापना	=	विकल्प, किसी वस्तु के न रहने या नष्ट हो जाने पर या खो जाने पर उसके स्थान पर वैसी ही अन्य वस्तु को रखना।
6. भाषांतरण	=	एक भाषा के लेख या रचना का किसी अन्य भाषा में किया गया अनुवाद, तर्जुमा
7. अभिव्यक्ति	=	जिसकी अभिव्यक्ति की गई हो, प्रकट किया हुआ।
8. सम्प्रेषण	=	प्रेषित करना, भेजना, किसी बात, विचार आदि को पहुँचाना
9. परिनिष्ठित	=	पूर्णतः, शुद्ध संपन्न होना।
10. मनोभावों	=	मन में स्थिति या जाग्रत भाव, विचार या भावना
11. परिधान	=	वस्त्र, पहनावा, पहनने का कपड़ा
12. पुनरावृति	=	किए हुए काम या बात को फिर से करने या दोहराने की क्रिया या भाव

13. आवृति	=	दोहराव, बार-बार घटित होना, बारंबारता
14. व्यवधान	=	बाधा, रूकावट
15. अनुभूति	=	अहसास, संवेदना, अनुभव
16. वाणी	=	वाचा
17. भाषांतर	=	एक भाषा के लेख या रचना का किसी अन्य भाषा किया गया अनुवाद।
18. प्रतीक	=	चिह्न, लक्षण, निशान
19. अंतरण	=	किसी एक जगह से दूसरी जगह तबादला या स्थानांतरण।
20. धर्मी	=	किसी विशिष्ट धर्म या गुण से युक्त।
21. सृजनात्मक	=	सृजनशील, रचनात्मक, निर्माण करने की शक्तिवाला

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. अनुवाद का अर्थ समझाते हुए उसकी परिभाषा पर प्रकाश डालिए।
2. अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
3. अनुवाद की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अनुवाद के संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी की परिभाषा पर प्रकाश डालिए।
2. अनुवाद के संदर्भ में किसी एक विदेशी विद्वान की परिभाषा बताइए।
3. अनुवाद का अर्थ बताइए।
4. शब्दांतर अनुवाद को समझाइए।

खंड (स)

- I. सही विकल्प चुनिए।

1. ऋत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य –भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपांतरण करना अनुवाद है।” किस विद्वान की परिभाषा हैं।

(अ) दंगल झाल्टे (ब) भोलानाथ तिवारी (क) कैटफोर्ड (ड) मैथ्यु आर्नल्ड

2. ‘एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।’

(अ) दंगल झाल्टे (ब) भोलानाथ तिवारी (क) कैटफोर्ड (ड) मैथ्यु आर्नल्ड

3. अनुवाद में प्रतिकांतर कौनसे हैं ?

(अ) शब्दांतर (ब) माध्यामांतर (क) भाषांतर (ड) यह सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अनुवाद के लिए अंग्रेजी भाषा में _____ शब्द प्रयुक्त होता है।
2. किसी भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में व्यक्त करना _____ कहा जाता है।
3. एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में व्यक्त करना _____ कहलाता है।
4. कुछ भाषाविज्ञानी अनुवाद के प्रकार को ही _____ मानते हैं।

III. सुमेल कीजिए।

- | | |
|-------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. हैलिडे | (अ) ‘अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। |
| 2. पीटर न्युमार्क | (ब) ‘अनुवाद एक संबंध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं।’ |
| 3. दंगल झाल्टे | (क) ‘एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।’ |
| 4. कैटफोर्ड | (ड) ‘ऋत-भाषा के मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य –भाषा के परिनिष्ठित पाठ के रूप में रूपांतरण करना अनुवाद है।” किस विद्वान की परिभाषा हैं। |

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद भाषाएँ – समस्याएँ – एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
2. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं सिद्धि – अवधेश मोहन गुप्त
3. अनुवाद कला - एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
4. व्यवहारिक अनुवाद कला – रमेश चंद्र
5. अनुवाद महत्त्व : परंपरा : स्वरूप - डॉ. सुरेश कुमार

इकाई -2 अनुवाद प्रकार और प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूलपाठ : अनुवाद प्रकार और प्रक्रिया

2.3.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

2.3.2 अनुवाद की परिभाषा

2.3.3 अनुवाद के प्रकार

2.3.4 अनुवाद की प्रक्रिया

2.4 पाठसार

2.5 पाठ की उपलब्धियां

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

संसार में विभिन्न भाषाएँ हैं और उनमें साहित्य सृजन हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति कई भाषाओं का जानकार नहीं हो सकता है। अंग्रेजी भाषा की जानकारी नहीं रखने वाला व्यक्ति अंग्रेजी में लिखित किसी कहानी या उपन्यास को हिंदी में पढ़ सकता है। उसे ऐसी सहूलियत अनुवाद के जरिए मिल सकती है। हिंदी की कई रचनाओं को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से ही जाना गया और उसको प्रसिद्धि भी मिली। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अनुवाद को बुकर प्राइज़ भी प्राप्त हुआ। अनुवाद कार्य के जरिए दो समाज, दो संस्कृतियाँ करीब आती हैं।

2.2 उद्देश्य

प्रिय विद्यार्थियो, इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में जान सकेंगे।
- अनुवाद का अर्थ जान सकेंगे।
- अनुवाद की परिभाषा को बता सकेंगे।

- अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के विषय में जान सकेंगे।
- अनुवाद की प्रक्रिया के विषय में समझ सकेंगे।
- अनुवादक के विषय में बता सकेंगे।

2.3 मूलपाठ : अनुवाद प्रकार और प्रक्रिया

2.3.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

अनुवाद शब्द को हम दो अलग-अलग शब्दों में समझ सकते हैं। पहला शब्द है 'अनु' और दूसरा शब्द है 'वाद'। यहाँ 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' या 'बाद' और 'वाद' शब्द का अर्थ है 'विचारधारा' या 'बात'। इसका अर्थ निकलता है- किसी विचारधारा या बात के बाद की बात। इस तरह से किसी ने कोई बात कही उस बात को दूसरी भाषा में कहा जाना अनुवाद कहलाता है। भोलानाथ तिवारी बताते हैं 'अनुवाद' शब्द का संबंध 'वद' धातु से है, जिसका अर्थ होता है 'बोलना' या 'कहना'। 'वद' धातु में 'घ इयाँ' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है, और फिर उसमें 'पीछे', 'बाद में', 'अनुवर्तिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द निष्पत्ति होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है 'पुनः कथन' या 'किसी के कहने के बाद कहना'। किसी के द्वारा कही गई बात के बाद उसी बात को उसी अर्थ के साथ अन्य भाषा में कहना अनुवाद है।

जी. गोपीनाथन कहते हैं ' 'अनुवाद' भाषाओं के बीच सम्प्रेषण की वह प्रक्रिया है जिसके लिए अंग्रेजी में 'ट्रांसलेशन', फ्रेंच में 'ट्रांसलेशन', अरबी में 'तर्जुमा' आदि शब्द चलते हैं। 'ट्रांसलेशन' शब्द लैटिन के 'ट्रांस' और 'लेशन' के संयोग से बना है जिसका मतलब है 'पार ले जाना'।

बोधप्रश्न

- अनुवाद के लिए अंग्रेजी, फ्रेंच और अरबी में कौन से शब्द चलते हैं?
- अनुवाद में 'अनु' और 'वाद' शब्द के विषय में बताइए।

निर्मला जैन लिखती हैं 'अनुवाद का सामान्य अर्थ हुआ-एक भाषा के पाठ में निबद्ध 'अर्थ' को, (जो कोई विचार, अनुभूति या तथ्यात्मक सूचना में से कुछ भी हो सकता है) एक भाषा की सीमा पारकर दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना'।

बोध प्रश्न

- पाठ में निबद्ध अर्थ क्या हो सकता है?

2.3.2 अनुवाद की परिभाषा

अनुवाद में किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) में कही गई बात को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी अर्थ के साथ कहने की कोशिश की जाती है। यह कोशिश भी बहुत सावधानी के

साथ की जानी चाहिए। अनुवाद की विभिन्न विद्वानों ने अपने हिसाब से अलग-अलग परिभाषा दी है। कुछ प्रमुख परिभाषाओं को यहाँ दिया जा रहा है।

1-भोलानाथ तिवारी के अनुसार – ‘एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।’

2-डॉ. जॉनसन के अनुसार – ‘अनुवाद का तात्पर्य है अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।’

3-ए. एच. स्मिथ के अनुसार – ‘अनुवाद का तात्पर्य यह है यथा संभव अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।’

बोध प्रश्न

- भोलानाथ तिवारी की परिभाषा को अपने शब्दों में समझाइए।
- अनुवाद के विषय में ए. एच. स्मिथ की परिभाषा को बताइए।

4-The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language. -Cattord

5-Translation is the transference of the content of a text from one language in to another, bearing in mind that we can not always dissociate the content from the form. -Foresten

2.3.3 अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के विभिन्न प्रकार हैं। अनुवाद को मुख्यतः दो भागों में बाँट सकते हैं।

1-साहित्यिक अनुवाद

2-साहित्येतर अनुवाद

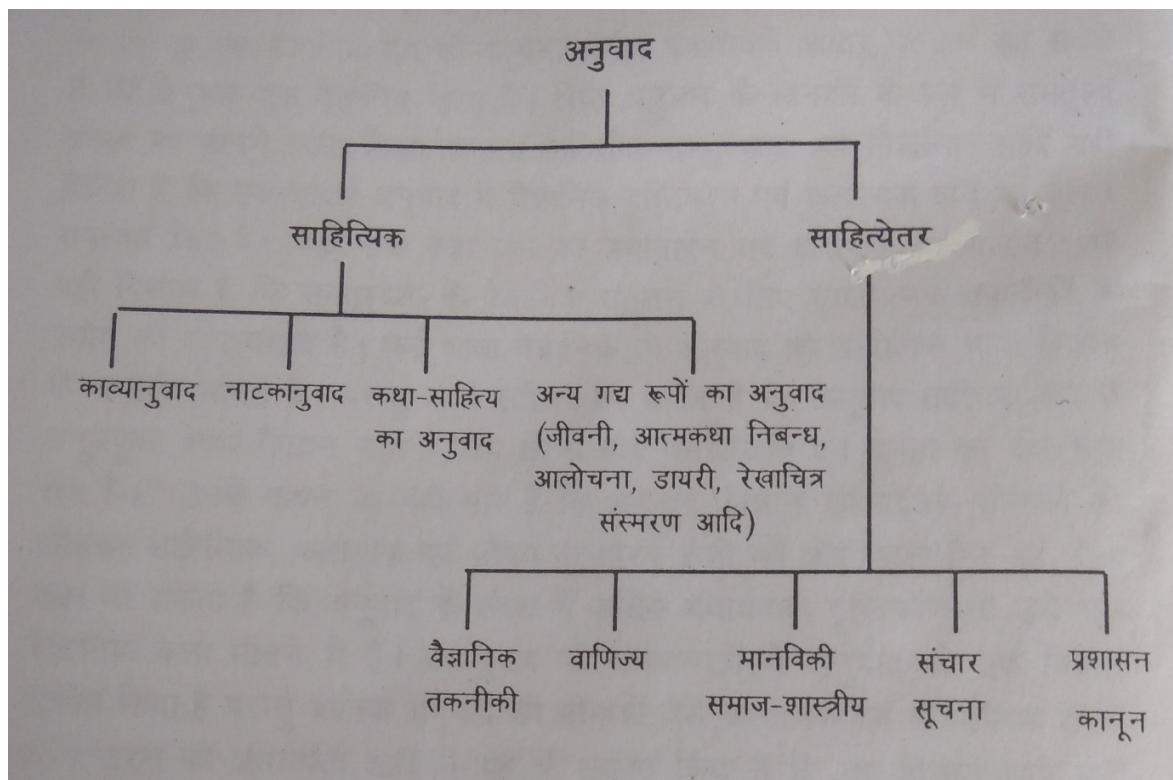
बोध प्रश्न

- अनुवाद के मुख्यतः दो प्रकार कौन-कौन से हैं?

1-साहित्यिक अनुवाद- इसके अंतर्गत काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथा साहित्य अनुवाद और अन्य गद्य रूपों का अनुवाद जैसे जीवनी, आत्मकथा, निबंध, आलोचना, रेखाचित्र का अनुवाद आदि आते हैं।

2-साहित्येतर अनुवाद- इसके अंतर्गत वैज्ञानिक/तकनीकी अनुवाद, वाणिज्य का अनुवाद, मानविकी एवं समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद, प्रशासनिक और कानूनी क्षेत्र के अनुवाद आदि शामिल हैं।

अनुवाद के विभिन्न प्रकारों को इस डायग्राम के जरिए समझा जा सकता है। यह डायग्राम जी. गोपीनाथन जी की पुस्तक “अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग” पृष्ठ संख्या 24 से लिया गया



अब हम इन सभी के विषय में बिन्दुवार संक्षेप में समझने का प्रयास करेंगे-

(क)

1-काव्यानुवाद

2-नाटकानुवाद

3-कथा साहित्य का अनुवाद

4-अन्य गद्य रूपों का अनुवाद (जीवनी, आत्मकथा, निबन्ध, आलोचना, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि)

(ख)

1-वैज्ञानिक तकनीकी

2-वाणिज्य

3-मानविकी समाजशास्त्रीय

4-संचार सूचना

5-प्रशासन कानून

(क)

1-काव्यानुवाद

काव्यानुवाद का सीधा सा तात्पर्य है- काव्य (कविता) का अनुवाद। कविता के अनुवाद में सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जिस पंक्ति को कवि ने लिखा है। उस पंक्ति को लिखते समय वह कवि किस भावभूमि पर था। उस समय उसकी मनः स्थिति कैसी थी? इसीलिए यह स्वीकार किया जाता है कि कविता के अनुवाद के लिए अनुवादक के पास कवि हृदय होना अर्थात् संवेदनशील, भावुक होना आवश्यक है। तभी वह भावनाओं को भली प्रकार से अनुवादित कर सकेगा। उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण है। उमर खय्याम की रुबाइयाँ फारसी में हैं। उसका फारसी से अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन' ने किया। उमर खय्याम की रुबाइयों का अन्य साहित्यकारों यथा- पंडित केशव प्रसाद पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन 'पंत', हरिवंशराय 'बच्चन' आदि ने किया।

बोध प्रश्न

- काव्यानुवाद के विषय में लिखिए।
- उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद करने वाले साहित्यकारों के नाम लिखिए।

2-नाटकानुवाद

नाटक का अनुवाद भी हमारे सामने देखने में आता है। इसका अनुवाद करते समय हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि नाटक दर्शकों के सामने खेला भी जाता है। यह केवल पठनीय ही नहीं होता। रंगमंच की जरूरतों और उसकी विशेषताओं को ध्यान में रखकर नाटक का अनुवाद करना उचित होता है। नाटक में संवाद का अपना विशेष महत्व होता है। इसका अनुवाद करते समय भी पात्र की मनः स्थिति आदि को ध्यान में रखना होता है। नाटक का अनुवाद करते समय एक बड़ी समस्या तब आती है जब कोई रचना कई शताब्दी पुरानी हो और उसका अनुवाद करना हो। कई शताब्दी पहले की भाषा, संस्कृति, समाज, परिवेश आदि आज से काफी बदले हुए हैं। अलग-अलग भाषाओं के नाटकों के अनुवाद आज हिंदी की संपदा बन गए हैं। 'भारतेन्दु'

ने शेक्सपीयर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का हिंदी में अनुवाद 'दुर्लभबंधु' शीर्षक से 1880 में किया था।

3-कथा साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य (उपन्यास और कहानी) के अनुवाद भी काफी संख्या में हुए हैं। कई भारतीय भाषाओं के उपन्यासकार और कहानीकार हिंदी में काफी प्रसिद्ध हुए हैं। उदाहरण के लिए बांग्ला की महाश्वेता देवी, पंजाबी की अमृता प्रीतम, मराठी के दलित साहित्यकार शरण कुमार लिम्बाले, सूर्य नारायण रणसुभे, दया पवार आदि। इसी तरह से विदेशी साहित्यकार जैसे मैक्सिम गोर्की, तालस्टॉय आदि। कथा साहित्य का अनुवाद काव्य के अनुवाद और नाटक के अनुवाद की अपेक्षा थोड़ा सरल होता है। कथा साहित्य के अनुवाद में कथा तत्व, शैली के साथ-साथ देशकाल, वातावरण और संस्कृति का विशेष महत्व होता है। इनको ध्यान में रखते हुए कथा साहित्य का अनुवाद किया जाना उचित होता है।

बोधप्रश्न

- कथा साहित्य का अनुवाद करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

4-अन्य गद्य रूपों का अनुवाद (जीवनी, आत्मकथा, निबंध, आलोचना, डायरी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि)

अन्य गद्य विधाओं के भी अनुवाद हुए हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की आत्मकथा है। उन्होंने अपनी आत्मकथा गुजराती में लिखी थी। उसका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ। अंग्रेजी से अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। हिंदी में 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' शीर्षक से उनकी आत्मकथा का अनुवाद हुआ है। इसी तरह से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की आत्मकथा का अनुवाद हिंदी में 'आज़ादी की कहानी' शीर्षक से हुआ है। इसी तरह से रोमां रोलां द्वारा गांधी जी और विवेकानंद जी की जीवनी का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी की हिंदी में लिखित रचना 'माटी की मूरतें' का साहित्य अकादेमी ने विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करवाया है।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि अनुवादक को आत्मकथा या जीवनी का अनुवाद करते समय व्यक्तित्व के अनुरूप शब्दावली रखना चाहिए। उदाहरण के लिए गांधी जी की आत्मकथा और नेहरू जी की आत्मकथा के अनुवाद में अनुवादकों ने क्रमशः सरल और बोधगम्य शैली तथा फारसी उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग अनुवादकों ने किया है। इसी तरह से आलोचना के अनुवाद की भी अपनी विशेषता है।

(ख)

1-वैज्ञानिक तकनीकी

वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद में विज्ञान और तकनीक में प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दों को रखा जाता है। कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि शब्द का अनुवाद न करके शब्द की लिपि बदल दी जाती है। ऐसा इसलिए किया जाता है कि वे शब्द उसी तरह से प्रचलन में होते हैं। उदाहरण के लिए थर्मामीटर, एक्स -रे, पैथोलॉजी आदि। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय के अनुवादक को वैज्ञानिक एवं तकनीकी से संबंधित शब्दावली की गहरी जानकारी होनी चाहिए।

बोधप्रश्न

- वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद का क्या तात्पर्य है?

2-वाणिज्य

वाणिज्य से संबंधित अनुवाद राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी काम का है। इसमें काफी संभावनाएँ हैं। वाणिज्यानुवाद की जरूरत व्यापार, फिल्म, पर्यटन, बैंक, विज्ञापन उद्योग धंधों आदि में खूब पड़ती है। बैंक अपना प्रचार प्रसार करने के लिए विज्ञापन की मदद लेते हैं। विज्ञापन को विभिन्न भाषाओं के जरिए दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए आई. सी. आई. सी. आई. बैंक आदि।

3-मानविकी समाजशास्त्रीय

मानविकी और समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद विशेष रूप से शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। इस तरह के अनुवाद में पाठक के स्तर और शब्दों के प्रचलन को भी ध्यान में रखा जाता है। यह देखा गया है कि तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद की अपेक्षा मानविकी और समाजशास्त्रीय अनुवाद काफी जल्दी प्रसिद्ध हो जाया करते हैं।

4-संचार सूचना

सूचना एवं जनसंचार का अनुवाद थोड़ा अधिक विस्तृत होता है। इसमें राजनीति, खेलकूद, फिल्म, साहित्य, व्यापार, गाँव और आसपास के क्षेत्र में घटित होने वाली घटनाओं को भी दिखाया जाता है। समाचार पत्र हो या रेडियो के जरिए कोई बात संप्रेषित की जाती है तो वह लाखों, करोड़ों पाठकों और श्रोताओं तक पहुँचती है। इसलिए समाचार, रेडियो, दूरदर्शन के अनुवाद में बहुत सावधानी से काम लिया जाता है। कुछ ऐसी बात प्रकाशित हो जाए या प्रसारित हो जाए जिससे कोई आपत्ति इत्यादि होने की संभावना हो तो बाद में माफी भी माँगनी पड़ती है।

5-प्रशासन कानून

प्रशासन और कानून से संबंधित अनुवाद में परिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल आवश्यक होता है। क्योंकि अंग्रेजी में लिखे किसी शब्द के लिए हिंदी में दो-तीन अर्थ हों तो मुश्किल होती है। जैसे-अंग्रेजी के interest (इन्टरेस्ट) शब्द को देखें। इसके लिए हिंदी में ‘अभिरुचि’, ‘स्वार्थ’, ‘ब्याज’, ‘हित’, आदि शब्दों का इस्तेमाल होता है। हिंदी में इन सबका कुछ अलग-अलग अर्थ निकलता है। इसलिए अनुवादक को बहुत ध्यान देना होता है। इसलिए आवश्यक होने पर परिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल उचित होता है। कानून से संबंधित अनुवाद इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे कही गई बात का एक ही अर्थ निकले।

अनुवाद के इन प्रकारों के अलावा अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के अन्य भी प्रकार होते हैं जैसे- शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, आदर्श अनुवाद, रूपांतरण, वार्तानुवाद या आशु अनुवाद। यहाँ इन पर भी संक्षेप में विचार कर लेना उचित जान पड़ता है।

शब्दानुवाद- यह ‘शब्द’ और अनुवाद से बना है। यहाँ दीर्घ संधि है। इस तरह के अनुवाद में मूल के हर शब्द पर अनुवादक ध्यान देता है और उसका अनुवाद करता है। इसके कई उपभेद किए जा सकते हैं।

भावानुवाद- इस तरह के अनुवाद में मूल पाठ के शब्द वाक्य, वाक्यांश आदि पर ध्यान न देकर उसके भाव या अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है।

छायानुवाद- इस अनुवाद में न शब्दानुवाद किया जाता है और न ही भावानुवाद। यह मूल पाठ से शब्दततः और भावतः मुक्त होकर बस उसकी छाया लेकर किया जाता है।

सारानुवाद- इस अनुवाद में मूल का सार लेकर उसका अनुवाद किया जाता है। यह कई प्रकार का हो सकता है।

बोधप्रश्न

- शब्दानुवाद के विषय में बताइए।
- भावानुवाद के विषय में अपने विचार रखिए।

व्याख्यानुवाद- इस तरह के अनुवाद में मूल का व्याख्या के साथ अनुवाद होता है। इसमें अनुवादक की हैसियत केवल अनुवादक की ही नहीं रहती है। वह काफी महत्वपूर्ण हो जाता है।

आदर्श अनुवाद- इस तरह के अनुवाद में स्रोत भाषा से मूल सामग्री की अभिव्यक्ति और अर्थ को दृष्टिगत रखते हुए लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक और निकटतम अनुवाद किया जाता है। इसे ‘स्वाभाविक सटीक अनुवाद’ भी कह सकते हैं।

रूपांतरण- इस शब्द का अर्थ होता है 'रूप को बदल देना'। इस तरह के अनुवाद में रूपांतरकार मूल पाठ को अपनी पसंद, ज़रूरत और आसानी के हिसाब से बदलकर लक्ष्य भाषा में रखता है।

वार्तानुवाद या आशु अनुवाद- इस तरह के अनुवाद में दो भिन्न भाषा-भाषी के बीच आपस में बातचीत को सम्पन्न कराने का कार्य किया जाता है। उनके बीच जो अनुवादक होता है उसे 'दुभाषिया' कहते हैं। इसे ही वार्तानुवाद या आशु अनुवाद कहा जाता है। वार्तानुवाद या आशु अनुवाद को अब सामान्यतः 'अनुवचन' कहते हैं। अनुवचन करने वाले को अनुवाचक (interpreter) कहते हैं।

बोधप्रश्न

- व्याख्यानुवाद के बारे में बताइए।
- वार्तानुवाद या आशु अनुवाद के विषय में अपने विचार रखिए।

2.3.4 अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। निर्मला जैन ने सत्य ही कहा है 'अनुवाद कार्य मूलतः और अंततः सांस्कृतिक कर्म भी है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सबसे सशक्त और कारगर माध्यम भी।' जाहिर सी बात है अनुवाद के लिए किसी न किसी प्रक्रिया से गुजरना ही होता है। आपको कोई नौकरी चाहिए होती है तो आप किसी न किसी प्रक्रिया से गुजरते हैं जैसे फॉर्म भरते हैं, लिखित परीक्षा देते हैं, साक्षात्कार देते हैं इत्यादि। इसी तरह से किसी रचना का अनुवाद करने के लिए कुछ प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। कुछ विद्वानों ने अनुवाद की प्रक्रिया के तीन, कुछ ने चार और कुछ ने पाँच चरण माने हैं। जी. गोपीनाथन लिखते हैं 'इयान फिनले की राय में अनुवाद करने से पूर्व सम्पूर्ण पाठ्य सामग्री को पढ़ना और समझना अनुवाद प्रक्रिया का अनिवार्य नियम है।' इसके अलावा इसका दूसरा महत्वपूर्ण नियम है अनुवाद द्वारा अर्थ तत्व की पहचान। तीसरा महत्वपूर्ण नियम है स्रोत भाषा की सामग्री के लिए लक्ष्य भाषा में अनुरूप शैली की खोज।

निर्मला जैन अनुवाद की प्रक्रिया के चार सोपान स्वीकार किए जाने पर बल देती हैं। उनकी कही हुई बात को हम बिन्दुवार सरल तरीके से आपके सामने रख रहे हैं-

1-प्रथम सोपान – इसमें वैज्ञानिक दृष्टि से तथ्यों का सत्यापन और उस भाषा की जानकारी शामिल होती है, जिसमें उनका बयान किया गया है।

2-द्वितीय सोपान – इसमें लक्ष्य भाषा के समुचित और व्यवहारोचित प्रयोग के कौशल की बारी आती है।

3-तृतीय सोपान – यह सोपान रचनात्मक प्रतिभा और कभी-कभी अन्तःस्फूर्त प्रेरणा का होता है। इससे अनुवाद को महज विज्ञान और कौशल से आगे कलात्मक दर्जा प्राप्त हो जाता है।

4-चतुर्थ सोपान – इस सोपान में अनुवादक की अभिरुचि या पसंद की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

भोलानाथ तिवारी बताते हैं कि नाइडा आदि ने अनुवाद के तीन चरण माने हैं यथा- पाठ विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन। कुछ रूसी विचारकों ने इसके चार चरण माने हैं। भोलानाथ तिवारी अनुवाद की प्रक्रिया के पाँच चरण स्वीकार किए हैं-

1-पाठ-पठन

2-पाठ-विश्लेषण

3-भाषांतरण

4-समायोजन

5- मूल से तुलना

बोध प्रश्न-

- भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की प्रक्रिया के जिन चरणों को स्वीकार किया है। उनके शीर्षक लिखें?

अब हम इन पांचों बिंदुओं पर क्रमवार विचार करने का प्रयास करेंगे-

1-पाठ-पठन- इस चरण में हमें सबसे पहले जिस कृति या पाठ का अनुवाद करना होता है उसे ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं। पढ़ते समय उस पाठ या कृति की भाषा का अर्थ और उसके विषय या कथ्य को समझने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी कोई कठिन शब्द आ जाने पर शब्दकोश या कोई ऐसा संदर्भ आ गया जिसको समझने में परेशानी हो रही हो तो उस विषय से संबंधित पुस्तक या उस विषय के जानकार व्यक्ति की सहायता ली जाती है। ध्यान में रखना चाहिए कि अनुवाद किया जाने वाला पाठ या रचना किस देश, काल, परिस्थितियों में लिखी गई है। उसमें जो प्रसंग आया है वह किस संदर्भ में है? लिंग, वचन इत्यादि को देखते और समझते हुए पाठ-पठन का चरण पूरा किया जाता है।

2-पाठ-विश्लेषण- इस चरण में अनुवाद को दृष्टिगत रखते हुए पाठ का विश्लेषण किया जाता है। इसमें आवश्यकता पड़ने पर महत्वपूर्ण बिंदुओं पर निशान या हार्डलाइटर से हार्डलाइट भी किया जा सकता है। इस चरण में इस बात पर बहुत ज़ोर रहता है कि कहाँ किस तरह से अनुवाद करना है। जैसे- कहाँ शब्दानुवाद से काम लेना है, कहाँ भावानुवाद से काम लेना है, कहाँ सारानुवाद से काम लेना है, कहाँ पदबंध का अनुवाद करना है, कहाँ उपवाक्य का, कहाँ वाक्य

का अनुवाद करना है, कहाँ एकाधिक वाक्यों को तोड़कर अनुवाद करना है, कहाँ कुछ वाक्यों को मिलाकर एक साथ अनुवाद करना है, कहाँ प्रोक्ति स्तरीय अनुवाद करना है इत्यादि। ये सबकुछ इस चरण में विचार कर लिया जाता है ताकि अनुवाद करते समय कम से कम बाधा पहुंचे।

बोध प्रश्न-

- अनुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत पाठ विश्लेषण में क्या किया जाता है?
- अनुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत पाठ पठन के अंतर्गत क्या किया जाता है?

3-भाषांतरण- इस चरण में पाठ विश्लेषण के आधार पर विभक्त स्रोत भाषा की इकाइयों का लक्ष्य भाषा की इकाइयों में अंतरण किया जाता है। यह मुख्यतः तीन तरह से हो सकता है-

(i)किसी इकाई का समान इकाई में जिसे शब्द-शब्द पदबंध-पदबंध, उपवाक्य-उपवाक्य वाक्य-वाक्य, वाक्यबन्ध-वाक्यबन्ध अंतरण कह सकते हैं।

(ii)बड़ी इकाई छोटी इकाई (जैसे उपवाक्य-पदबंध)

(iii)छोटी इकाई बड़ी इकाई (जैसे पदबंध उपवाक्य)

अनुवाद करते समय केवल मूल पाठ के अर्थ को ही जानना ही काफी नहीं होता बल्कि रचनाकार की विषय वस्तु के साथ तादात्म्य स्थापित करना भी होता है। मूल लेखक ने जो जिया है उसे जीना भी जरूरी होता है। अनुवाद में एक समय 'लहज़े' की भी आती है। निर्मला जैन जी ने इसे धूम्रपान का उदाहरण देते हुए बहुत अच्छे से समझाया है। देखिए-

Official : smoking is prohibited.

सरकारी (आदेश) धूम्रपान / सिगरेट पीना निषिद्ध है / मना है।

Formal : you are requested not to smoke in this area

औपचारिक (अनुरोध) आपसे अनुरोध है कि यहाँ धूम्रपान न करें।

Neutral : smoking is not permitted / allowed here

तटस्थ (सूचना) यहाँ धूम्रपान करने की इजाजत नहीं है।

Informal : please don't smoke here

अनौपचारिक (निवेदन) कृपया यहाँ धूम्रपान न करें

प्रिय विद्यार्थियों यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि सभी में धूम्रपान के लिए मना किया जा रहा है लेकिन तरीका अलग-अलग है। सम्प्रेषण अनुवाद की महत्वपूर्ण शर्त है। कई

बार ऐसा होता है कि विरोधाभास भी दिखता है जैसे- चिकित्साशास्त्र का उदाहरण देख सकते हैं। इसे भी हमने निर्मला जैन जी की पुस्तक 'अनुवाद मीमांसा' से लिया है-

अंग्रेज़ी	हिंदी
Chicken pox	छोटी माता
Small pox	बड़ी माता
Mumps	कनफेड
Typhoid	मियादी बुखार / मोतीझारा
Jaundice	पीलिया
Stroke	लू लगना, सर्दी खा जाना, दौरा पड़ना (जो दिल का दौरा भी हो सकता है और फ़ालिज भी)

अब कोई ये प्रश्न उठा सकता है कि small (स्मॉल) का अर्थ तो छोटा होता है तो फिर स्मॉल पॉक्स (small pox) को बड़ी माता क्यों कहा जा रहा है। ये शब्दावली इस्तेमाल हो रही है और प्रचलन में है। जब कहीं दो-तीन शब्दों की बात आए तो अनुवादक को प्रचलन में रहने वाले शब्द को प्रयोग में लाना चाहिए।

यदि हम हिंदी की ही बात करें तो 'कुर्ता', 'धोती' 'लहंगा', 'चोली', 'दुपट्टा', 'ओढ़नी' शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। धीरे-धीरे 'ब्लाउज', 'पैंट', 'बनियान' भी प्रचलन में आ गया। यदि कहीं अनुवाद करते समय इन शब्दों का अनुवाद करना हो तो लक्ष्य भाषा में इसके लिए निकटतम शब्द का प्रयोग करने के साथ-साथ स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द की कुछ व्याख्या या टिप्पणी लिख देनी चाहिए। जिससे पाठक तक बात पूरी तरह पहुँच जाए। अनुवाद करते समय अनुवादक को पाठक का भी ध्यान रखना चाहिए कि किस तरह के शब्दों से पाठक भली प्रकार से बात को समझ पाएगा। जहां तक पाठक की बात है तो पाठक का भी अपना वर्गीकरण है। पाठक मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं-

1-विशेषज्ञ

2-सामान्य शिक्षित जन

3-अपढ़/ अनपढ़ या अज्ञानी

फ्रेडरिक शेरमाखेर ने सन् 1813 में अनुवाद की तीन पद्धतियों की चर्चा की :

(क) सूचनाओं का व्यावहारिक स्थानांतरण, अर्थात् पंक्ति – दर – पंक्ति शाब्दिक अनुवाद

(ख) मध्यमस्तरीय अनुवाद, अर्थात् ऐसा अनुवाद जो मूल के प्रति वफादार पर साथ ही स्वायत्त हो।

(ग) मुक्त पुनः सृजन या अनुकरण

बोध प्रश्न-

- अनुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत भाषांतरण में क्या किया जाता है ?

4-समायोजन-इस चरण में अंतरित पाठ का लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समायोजन करते हैं। ऐसा करते समय तीन बातों पर ध्यान रहना चाहिए-

(i) भाषा में सहज प्रवाह हो- यहाँ कहने का तात्पर्य है कि अनुवाद ऐसा हो कि पाठक को ये एहसास ही न हो कि वह अनुवादित कृति पढ़ रहा है। उसे ये लगे कि वह मूल पाठ या रचना पढ़ रहा है। इस रचना का सृजन इसी भाषा में हुआ है। ऐसा करने के लिए अनुवाद की प्रक्रिया के साथ अभ्यास की भी नितांत आवश्यकता होती है।

(ii) स्रोत भाषा की छाया न हो – किसी रचना का अनुवाद करते समय कभी शब्दानुवाद तो कभी भावानुवाद इत्यादि की जरूरत होती है। अनुवाद इस तरह से हो कि उस पर स्रोत भाषा की छाया न दिखाई दे। जैसे- अंग्रेजी के इस वाक्य को देखिए- I have taken my meals.

इसका हिंदी अनुवाद ‘मैंने अपना खाना ले लिया है’ किया जा सकता है लेकिन इसमें स्रोत भाषा की झलक दिख रही है। यह सही अनुवाद नहीं माना जाएगा। साथ ही शब्दानुवाद दिख रहा है। इसके लिए सही अनुवाद होगा- ‘मैंने खाना खा लिया है’।

(iii) अर्थ स्पष्ट हो- अनुवाद में अर्थ स्पष्ट होने चाहिए। यह स्पष्टता भाषिक के साथ-साथ विषय की भी होनी चाहिए।

5-मूल से तुलना-इस चरण में अनुवादक को मूलपाठ से अनुवादित पाठ की तुलना करनी चाहिए। ऐसा करते समय यह देखना चाहिए अनुवाद ठीक तरह से हुआ है कि नहीं। भाषा और शैली विषय इत्यादि मूलपाठ के हिसाब से हैं कि नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह अंतिम चरण है और इसमें कोई कमी नहीं रह जाए इस बात पर ध्यान दिया जाता है।

2.4 पाठ सार

प्रिय विद्यार्थियो ! इस तरह से हम देखते हैं कि अनुवाद कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। यह दो भाषाओं दो संस्कृतियों को जोड़ने का काम करता है। अनुवाद करने वाले को अनुवादक कहा जाता है। उसकी अपनी कुछ योग्यताएँ होती हैं। अनुवाद की विभिन्न विद्वानों ने अपनी - अपनी परिभाषाएँ दी हैं। अनुवाद के कई प्रकार हैं। इनमें दो महत्वपूर्ण प्रकार हैं- साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद।

जहां तक अनुवाद की प्रक्रिया का प्रश्न है तो इस पर भी विद्वानों ने विचार किया है। उसके सोपान या चरण बताए हैं। किसी विद्वान / विदुषी ने तीन किसी ने चार और किसी ने पाँच चरण स्वीकार किए हैं। भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की प्रक्रिया के पाँच चरण स्वीकार किए हैं। यथा- पाठ पठन, पाठ विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन, और मूल से तुलना। अनुवाद के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए कृति, पाठक इत्यादि पर ध्यान दिया जाता है।

2.5 पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-अनुवाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। यह सामाजिक सांस्कृतिक समझ पैदा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके साथ-साथ यह दो समाजों को जोड़ने का कार्य भी करता है।

2-अब हम अनुवाद को समझने की बात करें तो 'अनुवाद' शब्द को हम दो अलग-अलग शब्दों में समझ सकते हैं। पहला शब्द है 'अनु' और दूसरा शब्द है 'वाद'। यहाँ 'अनु' का अर्थ है 'पीछे' या 'बाद' और 'वाद' शब्द का अर्थ है 'विचारधारा' या 'बात'। इसका अर्थ निकलता है किसी विचारधारा या बात के बाद की बात। इस तरह से किसी ने किसी कृति की रचना की उसको दूसरी भाषा में लाना अनुवाद कहलाता है।

3-अनुवाद में किसी एक भाषा (स्रोत भाषा) में कही गई बात को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में उसी अर्थ के साथ कहने की कोशिश की जाती है। यह कोशिश भी बहुत सावधानी के साथ की जानी चाहिए।

4-अनुवाद के विभिन्न प्रकार हैं। अनुवाद को मुख्यतः दो भागों में बाँट सकते हैं। साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद।

5-साहित्यिक अनुवाद की बात करें तो इसके अंतर्गत काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथा-साहित्य अनुवाद और अन्य गद्य रूपों का अनुवाद जैसे जीवनी, आत्मकथा, निबंध, आलोचना, रेखाचित्र का अनुवाद आदि को शामिल किया जाता है।

साहित्येतर अनुवाद की बात करें तो इसके अंतर्गत वैज्ञानिक/तकनीकी अनुवाद, वाणिज्य का अनुवाद, मानविकी एवं समाजशास्त्रीय विषयों का अनुवाद, प्रशासनिक और कानूनी क्षेत्र के अनुवाद आदि शामिल किये जाते हैं।

6-भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की प्रक्रिया के पाँच चरण स्वीकार किए हैं-

1-पाठ-पठन 2-पाठ-विश्लेषण 3-भाषांतरण 4-समायोजन 5- मूल से तुलना

2.6 शब्द संपदा

- 1-अर्थ संकोच = कोई शब्द पहले विस्तृत अर्थ का वाचक था, लेकिन बाद में सीमित अर्थ का वाचक हो गया या व्युत्पत्ति के आधार पर उस शब्द को विस्तृत अर्थ का वाचक होने चाहिए था किन्तु उसका प्रयोग सीमित अर्थ में होता है। जैसे-‘जगत’ शब्द का अर्थ है ‘खूब चलने वाला’। लेकिन मोटर, रेलगाड़ी या हवाई जहाज को जगत नहीं कहते। इसका अर्थ संकोच हुआ यह आज संसार का वाचक हो गया।
- 2-अर्थ विस्तार = कोई शब्द पहले सीमित अर्थ में प्रयुक्त होता था और बाद में उसका अर्थ व्यापक हो जाता है। यही ‘अर्थ विस्तार’ कहलाता है। जैसे- पहले ‘प्रवीण’ शब्द का अर्थ ‘वीणा बजाने वाला’ था लेकिन बाद में किसी भी काम में निपुण व्यक्ति के लिए ‘प्रवीण’ शब्द का इस्तेमाल होने लगा।
- 3-अर्थादेश = इसमें अर्थ का संकोच या विस्तार नहीं होता बल्कि उसका अर्थ बिल्कुल बदल जाता है। वह पहले किसी वस्तु का वाचक रहता है बाद में किसी और वस्तु का वाचक हो जाता है। जैसे पहले वेद में ‘असुर’ शब्द ‘देवता’ का वाचक था लेकिन बाद में ‘दैत्य’ (राक्षस) का वाचक हो गया।
- 4-स्रोत भाषा = सोर्स लैंग्वेज, वह भाषा जिसमें कोई जानकारी या ज्ञान मौलिक रूप में होता है।
- 5-लक्ष्य भाषा = टारगेट लैंग्वेज, ज्ञान या जानकारी का जिस भाषा में अनुवाद होता है। उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।
- 6-तादात्म्य = अभिन्नता, एकात्म्य, एक हो जाना
- 7-सोपान = चरण, स्टेप
- 8-अनुवर्तिता = अनुसरण करने वाला
- 9-सम्प्रेषण = अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने और दूसरों की बात अपने तक प्राप्त करने की प्रक्रिया
- 10-अनुभूति = एहसास

- 11-रुबाई = यह चार पंक्तियों की कविता होती है। इसमें एक ही विचार प्रकट किया हुआ होता है। इसमें हर प्रकार के विचार लाए जा सकते हैं पर अधिकांशतः दार्शनिक होते हैं
- 12-रंगमंच = वह स्थान या स्टेज जहां पर नृत्य किया जाता है या नाटक खेला जाता है

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

- 1-अनुवाद की प्रक्रिया पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
- 2-साहित्येतर अनुवाद में क्या-क्या शामिल किया जाता है? उसके विषय में संक्षेप में लिखिए
- 3-अन्य गद्य रूपों के अनुवाद के विषय में अपने विचार लिखिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

- 1-नाटकानुवाद के विषय में लिखिए।
- 2-किसी भी विद्वान की 'अनुवाद' की परिभाषा को अपने शब्दों में समझाइए।
- 3-प्रशासन एवं कानून के अनुवाद के विषय में लिखिए।

खंड (क)

(i) वैकल्पिक प्रश्न

(I) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प छाँटिए-

- 1-अनुवाद मीमांसा पुस्तक को किसने लिखा है-

(क) जी. गोपीनाथन (ख) भोलानाथ तिवारी (ग) निर्मला जैन (घ) इनमें से कोई नहीं
- 2-अनुवाद की प्रक्रिया के चरण में भोलानाथ तिवारी या अन्य विद्वानों ने पाठ पठन को किस क्रम पर स्वीकार किया है?

(क) तीसरे (ख) पहले (ग) चौथे (घ) पाँचवे

3-अनुवाद को अंग्रेजी में 'ट्रांसलेशन' कहा जाता है।

(क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य - असत्य दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-कहानी और उपन्यास के लिए एक साथ शब्द का प्रयोग किया जाता है।

2-अंग्रेज़ी के interest शब्द के लिए हिंदी मेंआदि शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है।

3-एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव सामान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास.....है।

(iii) सुमेल प्रश्न

- | | |
|----------------------|------------------------------------------|
| (क) अनुवाद प्रक्रिया | (अ) interpreter |
| (ख) तटस्थ (सूचना) | (ब) छोटी माता |
| (ग) अनुवाचक | (स) पाठ विश्लेषण |
| (घ) chicken pox | (द) यहाँ धूम्रपान करने की इजाज़त नहीं है |

2.8 पठनीय पुस्तकें

1-अनुवाद मीमांसा – निर्मला जैन

2-अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी

3-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग – जी. गोपीनाथन

4-प्रयोजनमूलक हिंदी – सूर्यप्रसाद दीक्षित

5- प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. पी. लता

इकाई 3: अनुवाद और भाषा विज्ञान का अंतः संबंध

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ : अनुवाद और भाषा विज्ञान का अंतः संबंध

3.3.1 अनुवाद का सामान्य परिचय व प्रक्रिया

3.3.2 अनुवाद की समस्याएँ

3.3.3 भाषा विज्ञान का सामान्य परिचय, अंग व प्रकार

3.3.4 अनुवाद में भाषा विज्ञान की भूमिका

3.4 पाठ सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1. प्रस्तावना

आज हम दुनिया की कल्पना एक गाँव के रूप में कर रहे हैं। किस आधार पर? जबकि आज पूरी दुनिया में अंदाजन 7,000 के आस-पास भाषाएँ बोली-समझी जाती हैं। ऐसे में पूरे विश्व को एक गाँव के रूप में जोड़ने वाला तार है - सूचना, सूचना प्रौद्योगिकी व इंटरनेट और अनुवाद। आप इससे सहमत होंगे ही। आज बहुत से लोगों के हाथ में स्मार्ट फोन आ गया है। आप अपने फोन से, अपने कंप्यूटर के माध्यम से या लैपटॉप के जरिए दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति के साथ संपर्क बना सकते हैं। आपको उस व्यक्ति की भाषा नहीं भी आती हो तो कोई बात नहीं, गूगल स्टोर से अनुवाद के कुछ ऐसे ऐप हमारे पास उपलब्ध हो जाते हैं, जिनके जरिए आपकी बात दूसरा व्यक्ति अपनी भाषा में सुन-पढ़ सकता है। आपकी सुविधा के लिए कुछ ऐप के नाम और उनकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ दी जा रही है। ऐप के नाम हैं - एप्पल ट्रांस्लेट, स्पीच टेक्स्ट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांस्लेट, बीके ट्रांस्लेट, गूगल ट्रांस्लेट, से हाई, नेवर पापागो, ट्रिप लिंगो, आई ट्रांस्लेट, डिक्शनरी लिंगुई आदि। उन ऐपों के अलावा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के कंठस्थ, हिंदी शब्द सिंधु, ई-सरल हिंदी वाक्य कोश जैसे अनुवाद, शब्दकोश व वाक्य कोश के पोर्टल भी अब उपलब्ध हो गए हैं।

इंटरनेट जैसी आधुनिक तकनीक कारण लोगों के बीच की दूरियाँ खत्म होती जा रही हैं। इससे भिन्न-भिन्न समाजों-देशों की सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ नजदीक आ रही हैं। उनको समझने और समझाने के लिए अनुवाद तथा संचार के विविध माध्यमों की आवश्यकता बढ़ रही है।

दुनिया भर के अलद-अलग समाजों में संचार को आसान बनाने के लिए अनुवाद सबसे सटिक उपकरण है। सरल शब्दों में किया गया अनुवाद बहुत पसंद किया जाता है। आप जानते ही हैं कि किसी पाठ, वीडियो या किसी अन्य कार्य का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण

करने को अनुवाद कहा जाता है। एक नज़र में, यह एक सरल प्रक्रिया लगती है जिसे एक से अधिक भाषा जानने वाले किसी व्यक्ति, ऐप या इंटरनेट पर किसी अनुवाद प्रणाली द्वारा आसानी से किया जा सकता है। लेकिन यह भी देखा गया है कि मूल पाठ के वास्तविक संदेश को दूसरी भाषा में ले जाने में विफल होने पर अनुवादकों की बहुत आलोचना भी होती है।

अनुवाद के लिए उलब्ध ऐप व उपकरण अनुवादकों की मदद के लिए हैं। ये अनुवादकों के बदले काम करने के लिए नहीं हैं। ये अनुवादक के औजार हैं। इनमें से अधिकांश उपकरण शत-प्रतिशत व सटीक अनुवाद उपलब्ध नहीं करा सकते हैं। ये स्रोत भाषा से प्राप्त डैटा को लक्ष्य भाषा के समीपवर्ती डैटा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस आधार पर कह सकते हैं कि एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्द, वाक्य और अर्थ के रूपांतरण के लिए अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

अधिक सटीक अनुवाद के लिए भाषा विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता होती है। भाषा विज्ञान अनुवाद में मूल भाषा के हर पहलू को समझने और समझाने में मदद करता है। मूल पाठ को अनुवादित पाठ में परिवर्तित करता है। एक भाषाविद् आमतौर पर किसी भाषा के अधिकांश अंगों, पहलुओं और प्रकारों को समझता है जो किसी भी पाठ का नई भाषा में सटीक अनुवाद करने में काम आते हैं।

आगे हम विस्तार से अनुवाद और भाषा विज्ञान का सामान्य परिचय प्राप्त करते हुए जानेंगे कि अनुवाद करते समय आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए भाषा विज्ञान का ज्ञान कैसे उपयोगी हो सकता है?

3.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा और ज्ञान प्राप्त करेंगे –

- अनुवाद और भाषा विज्ञान का सामान्य परिचय प्राप्त कर पाएँगे।
- अनुवाद करते समय आने वाली समस्याओं की जानकारी हासिल कर पाएँगे।
- भाषा विज्ञान के विभिन्न प्रकारों से परिचित होंगे।
- अनुवाद में भाषा विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता समझ सकेंगे।
- अनुवाद की भाषा वैज्ञानिक समस्याएँ और उनके समाधान के उपाय जानेंगे।

और इस तरह आप अनुवाद और भाषा विज्ञान के अंतः संबंध का ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे।

3.3 मूल पाठ : अनुवाद और भाषा विज्ञान का अंतः संबंध

3.3.1 अनुवाद का सामान्य परिचय व प्रक्रिया

प्रिय छात्रो, आप जानते ही हैं, अनुवाद शब्द अनु + वाद से बना है जिसका सामान्य अर्थ है कही हुई बात को फिर से दोहराना, पीछे-पीछे बोलना। दोहराते समय पहले कही हुई बात का अर्थ नष्ट नहीं होना चाहिए। एक भाषा में लिखित साहित्य, (चाहे वह साहित्य किसी भी विषय का हो) को उसके मूल अर्थ को बनाए रखते हुए दूसरी भाषा में लिखना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद करते समय इस बात का ध्यान रखना बेहद जरूरी होता है कि मूल अर्थ नष्ट न हो।

यह स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य एक तरह से दो भिन्न भाषाओं के बीच संबंध स्थापित करने वाला काम है। परोक्ष रूप से दो भाषा समाजों को एक करने का काम है। दोस्ती बनाने का काम है।

दो भिन्न भाषाओं में से पहली भाषा जिसके साहित्य का अनुवाद किया जाना है, उसे अनुवाद की भाषा में स्रोत भाषा कहते हैं और वह दूसरी भाषा जिसमें अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं। स्रोत भाषा के प्रतीक, सांस्कृतिक संदर्भ, मिथक, मुहावरे व लोकोक्तियों में अभिव्यक्त अर्थ को अनुवादक पहले समझता है। उसे ग्रहण करता है। उसे लक्ष्य भाषा में कभी बिना किसी बदलाव के तो कभी दूसरी भाषा की संस्कृति, मिथक, मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतरित करता है। यह काम करते समय अनुवादक को ध्यान रखना होता है कि स्रोत भाषा में कही गई बात का अर्थ बना रहे। यह प्रक्रिया अनुवादक को एक लेखक की तरह काम करने के लिए प्रेरित करती है। वह स्रोत भाषा के लेखक की तरह सोचता है, भाषा व शैली का प्रयोग करता है। ऐसा करते समय अनुवादक स्रोत भाषा के पाठ का पाठक बनता है और लक्ष्य भाषा के पाठ का लेखक।

प्रिय छात्रों, अनुवाद करने की प्रक्रिया के पाँच चरण होते हैं। अनुवादक को स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में अंतरित करते समय उन पाँच चरणों से गुजरना होता है - पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन तथा मूल से तुलना। इस प्रक्रिया को एक उदाहरण के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण: (1) There is a snake in the room. (2) There is the snake in the room.

अनुवादक के सामने दो वाक्य हैं। पढ़ने से सामान्य रूप से लगता है कि दोनों एक ही प्रकार के वाक्य हैं, एक ही अर्थ संप्रेषित कर रहे हैं। अनुवादक वाक्यों को पढ़ता है, उनका विश्लेषण करता है, फिर उसका लक्ष्य भाषा में अंतरण करता है -

(1) कमरे में साँप है। (2) साँप कमरे में है।

यहाँ पाठ विश्लेषण, समायोजन तथा मूल से तुलना यदि नहीं की जाएगी तो अंग्रेजी के दोनों ही वाक्यों का एक ही अर्थ में अनुवाद हो जाएगा - कमरे में साँप है। ऐसा होने से, दूसरे वाक्य का गलत अनुवाद होगा। अंग्रेजी के दूसरे वाक्य के अंश 'दी स्नेक' के द्वारा बाताया जा रहा है कि वह साँप जो इससे पहले किसी अन्य स्थान पर था अब कमरे में है। अनुवादक पाँच चरणों से गुजरते हुए मूलपाठ के अनुरूप लक्ष्य भाषा में उस अभिव्यक्ति को ढूँढता है जो अनूदित पाठ में मूल पाठ के समान अर्थ को अभिव्यक्त कर सके।

भिन्न-भिन्न समाजों में भाषा की प्रकृति भी भिन्न होती है। प्रिय छात्रों, इसे हम इसी पाठ में आगे विस्तार से समझने की कोशिश करेंगे। फिलहाल अनुवाद की प्रक्रिया के संबंध में चर्चा करते हुए दो भिन्न प्रकृति की भाषाओं की अभिव्यक्ति को उदाहरणों से समझने का प्रयास करते हैं - हिंदी का वाक्य है -

(1) टेलिफोन सुनिए। इस वाक्यय का सामान्य रूप से अनुवाद किया जाएगा – Listen to the telephone. जबकि सही अनुवाद होगा – Kindly / Please answer the telephone.

(2) शब्दकोश देखिए। इस वाक्य का भी सामान्य रूप से अनुवाद होगा - See the dictionary. जबकि सही अनुवाद होगा - Kindly refer/consult dictionary.

इन उदाहरणों के माध्यम से हम समझने की कोशिश कर रहे हैं कि अनुवाद करते समय न केवल शाब्दिक अर्थ को मूल भाषा से लक्ष्य में अंतरित करना होता है बल्कि उसके साथ ही अभिव्यक्त अर्थ को व्यवस्थित रूप से ले जाना होता है। मूल अर्थ को लक्ष्य भाषा में व्यवस्थित रूप से ले जाने के लिए ही भाषा विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता होगी।

बोध प्रश्न

- (1) राजभाषा विज्ञान के अनुवाद पोर्टल का नाम लिखिए।
- (2) भाषा विज्ञान अनुवाद में किस तरह मदद कर सकता है?
- (3) अनुवादक स्रोत भाषा में किसे स्थापित करता है ?
- (4) अनुवाद करते समय अनुवादक किन दो प्रकार के अर्थों का अंतरण करता है ?

3.3.2 अनुवाद की समस्याएँ

प्रिय छात्रों, आप जानते ही होंगे कि अनुवाद के प्रकार मुख्य रूप से दो माने जाते हैं – साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद। कविता, कहानी, नाटक, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र आदि साहित्य की विविध विधाओं के अनुवाद को साहित्यिक अनुवाद कहा जाता है। इसी तरह विषय जैसे वैज्ञानिक व तकनीकी दस्तावेजों, खोजों का अनुवाद, कानूनी व प्रशासनिक कार्रवाई व कार्यवाही का अनुवाद, व्यापार व वाणिज्य से संबंधित लेन-देन का अनुवाद, संचार माध्यमों का अनुवाद आदि साहित्येतर अनुवाद कहलाता है। इन दोनों प्रकार के अनुवादों में विषय के आधार पर दो समस्याएँ हो सकती हैं। पहली समस्या विषय से संबंधित और दूसरी भाषा के तत्वों से संबंधित समस्या।

यहाँ पर दोनों प्रकार के अनुवादों से संबंधित एक-एक उदाहरण की चर्चा करके आगे बढ़ेंगे। चलिए साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत काव्यानुवाद की समस्या पर संक्षिप्त में चर्चा करते हैं। साहित्यिक अनुवाद में कविता का अनुवाद सबसे अधिक कठिन माना जाता है। कविता का अनुवाद करना पुनः सृजन के समान होता है। मूल कविता के कथ्य, भाव, संवेदनाएँ, सौंदर्य व शिल्प को समझना बेहद जरूरी होता है। काव्य के अनुवाद में कभी शब्दानुवाद, कभी भावानुवाद करना पड़ता है।

हिंदी के लोकप्रिय कवि हरिवंश राय बच्चन ने उमरखय्याम की रुबाइयत का अनुवाद किया था। अपने द्वारा किए गए अनुवाद के बारे उन्होंने कहा था कि - “अपने अनुवाद के विषय

में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा। भावों को ही मैंने प्रधानता दी।”

इस कथन से स्पष्ट होता है कि अनुवादक को मूल कवि की भावना को आत्मसात करके नवीन सृजन करना होता है, तभी अनुवाद ज्यादा सफल हो सकता है। इसीलिए काव्य अनुवाद के लिए पुनः अर्थात् फिर से सृजन करना कहा गया है। काव्य के अनुवाद के लिए एक सुन्नाव यह भी दिया जाता है कि किसी भाषा विद् की सहायता ली जाए और पहले कविता का पंक्ति दर पंक्ति अनुवाद करवाया जाए। उसके बाद किसी कवि द्वारा उसका सहज काव्यानुवाद करवाया जाए। ऐसा करने से मूल कविता के कथ्य व भाव सौंदर्य को बनाए रखते हुए वांच्छित शिल्प में ले जाना आसान हो सकता है। रूसी भाषा के अनुवादक इसी पद्धति को अपनाते हैं।

काव्यानुवाद की एक और समस्या हो सकती है – उसकी शैली, जिसके निर्माण में मूल कविता के सामाजिक व सांस्कृति पृष्ठभूमि से उपजे मिथक, अलंकार, बिंब व प्रतीक आदि शामिल होते हैं। इन्हें समझने के लिए मूल कविता के भाषिक समाज व संस्कृति को समझना भी जरूरी होता है। काव्य भाषा की दृष्टि से अनुवादक को अपने समय के काव्य के मुहावरे की परख होनी चाहिए। इससे अनूदित कविता लक्ष्य भाषा के पाठक को आसानी से समझ में आ सकती है। पाठक कविता पढ़ते समय कविता में व्यक्त भाव व विचारों को अपने समय से जोड़कर समझने की कोशिश करेगा। काव्य भाषा का बुनियादी तत्व तो शब्द होता है। उसके अर्थ, ध्वनि एवं नाद-सौंदर्य का अनुवादक को ध्यान रखना होता है। इसी तरह साहित्य की अन्य विधाओं का अनुवाद करते समय उस विधा की भाषा की विशिष्ट व संक्षिप्त प्रकृति को ध्यान में रखना होता है।

साहित्येतर अनुवाद के अंतर्गत अंग्रेजी भाषा में लिखित प्रशासनिक कार्यों के वाक्यांशों के भारत की राजभाषा हिंदी में अनुवाद के कुछ उदाहरणों की चर्चा करेंगे। इससे साहित्येतर अनुवाद की कुछ समस्याओं की जानकारी हासिल करने में आसानी होगी।

भारत सरकार के कामकाज में प्रयुक्त होने वाली हिंदी को प्रशासनिक हिंदी या कार्यालयीन हिंदी कहा जाता है। इस हिंदी का विकास स्वतंत्र रूप से होना था, लेकिन अंग्रेजी से अनुवाद की भाषा के रूप में विकास हुआ। प्रशासनिक हिंदी का शब्द भंडार, व्याकरणिक रूप, वाक्य संरचना आदि सब कुछ अंग्रेजी से प्रभावित है। इसी कारण भारत की राजभाषा होने के बावजूद प्रशासनिक हिंदी जनता की भाषा से भिन्न हो गई।

प्रिय छात्रों, आप जानते ही हैं कि हिंदी और अंग्रेजी भाषा की प्रकृति भिन्न है, अभिव्यक्ति प्रणाली में अंतर है, वाक्य की संरचना तो पूरी तरह से अलग है ही। इसीलिए अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय हिंदी की प्रकृति के अनुकूल अनुवाद किया जाना चाहिए। इससे बोधगम्यता के साथ-साथ भाषा की सरलता भी बनी रहेगी। उदाहरण के लिए कुछ वाक्यांश देखिए –

- | | |
|---------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1) Unless the context
otherwise requires | अटपटा अनुवाद – यदि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित हो।
सहज अनुवाद – जब तक कि प्रसंग में अन्यथा अपेक्षित न
हो। |
|---------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

2) As early as possible संस्कृत शैली में अनुवाद – यथासंभव शीघ्र।

सहज अनुवाद – जितनी जल्दी हो सके।

प्रशासन की भाषा सुगठित होने के साथ-साथ सहज, प्रवाहमान तथा सरल होनी चाहिए, जिससे पाठक को आसानी से समझ में आ सके।

सरकारी भाषा अभिधा प्रधान होती है। इसलिए नियमों आदि का अनुवाद करते समय अर्थ को स्पष्ट और सुनिश्चित होना चाहिए।

Mohan Lal was sentenced to death for the cold blooded murder of his brother Sohan Lal by Justice A.

इस वाक्य का शब्दानुवाद करने से अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। यहाँ यह अर्थ समझने की गुजाइश है कि – सोहनलाल की हत्या न्यायाधीश ए द्वारा की गई जिसके लिए फाँसी की सजा सोहन लाल के भाई मोहन लाल को दी गई। इस अंग्रेजी वाक्य का बोधगम्य अनुवाद होगा - मोहनलाल को अपने भाई सोहनलाल की नृशंस हत्या के लिए न्यायाधीश ए द्वारा मौत की सजा सुनाई गई थी।

इस खंड में अब तक की चर्चा से यह बात स्पष्ट होती है कि अनुवाद करते समय अनुवादक को भाषा विज्ञान के विभिन्न अंगों की सहायता की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न –

(1) साहित्यिक अनुवाद में सबसे कठिन अनुवाद किसे कहा जाता है ?

(2) प्रशासनिक भाषा के गुण क्या हैं ?

3.3.3 भाषा विज्ञानसामान्य परिचय

भाषा, विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। पशु-पक्षी भी एक-दूसरे से ध्वनि संकेतों व हाव-भाव के माध्यम से आपस में बातचीत करते हैं। उन्हें एक दूसरे की बातें समझ में भी आती हैं। उनका काम उसी से चल जाता है। किंतु मनुष्यों की भाषा पशु-पक्षियों की भाषा से उन्नत है, विकसित है। मनुष्य की भाषा बोलने की क्रिया से आगे बढ़कर लिखित रूप में भी प्रकट होती है। मौखिकता की सीमा लाँघने के कारण ही कहा जा सकता है कि मनुष्य की भाषा पशु-पक्षियों की भाषा से अधिक विकसित व उन्नत है। भिन्न है, संप्रेषणीय है। इस पाठ में मनुष्य की भाषा के संबंध में चर्चा की जा रही है।

मनुष्य एक भाषिक प्राणी है। भाषा की वजह से ही वह समाज नामक इकाई का निर्माण कर पाया है। एक समान भाषा बोलने वाला समाज अपने द्वारा बोली जानेवाली भाषा के नाम से पहचाना जाता है। उस भाषा में लिखा जाने वाला साहित्य उस भाषा का साहित्य कहलाता है। जैसे कि हिंदी भाषी समाज और उसका का साहित्य हिंदी साहित्य। समाज में अपने भावों और विचारों को एक दूसरे तक पहुंचाने की आवश्यकता चिरकाल से अनुभव की जाती रही है। भाषा का अस्तित्व मानव समाज में अति प्राचीन है। मानव के संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान के प्रकाशन के

लिए, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास को जानने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण साधन का कार्य करती है। भाषा विज्ञान मानव समाज की भाषा के अध्ययन के लिए सैद्धांतिक व व्यावहारिक पद्धतियाँ या औजार उपलब्ध कराता है। भाषा विज्ञान मूलतः मानव भाषा का अध्ययन है। इसे कई उप-श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। मानव की भाषा का जो क्षेत्र है, वही भाषा-विज्ञान का क्षेत्र है। संसार के सभी मनुष्यों और समाजों की बोलियों व भाषाओं का अध्ययन भाषा-विज्ञान के अंतर्गत किया जा सकता है।

भाषा विज्ञान के अंग या प्रकार

भाषा विज्ञान भाषा के अध्ययन का विज्ञान है। इसके अंतर्गत भाषा के दोनों रूपों - मौखिक और लिखित का अध्ययन संभव है। भाषा के दोनों ही रूपों के छह अंग हैं - ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ और लिपि। इसीलिए भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला विज्ञान अर्थात् भाषा विज्ञान इन छह अंगों में विभाजित है- ध्वनि विज्ञान, शब्द विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान और लिपि विज्ञान। अनुवाद का संबंध भाषा विज्ञान के इन छह अंगों से है। प्रिय छात्रों, अगले खंडों में अनुवाद और भाषा विज्ञान के अतः संबंध पर चर्चा की जाएगी।

भाषा के अध्ययन के आधार पर भाषा विज्ञान के पाँच प्रकार माने गए हैं। भाषा के किसी एक काल खंड के रूप का अध्ययन-विश्लेषण करने वाले विज्ञान को एककालिक भाषा विज्ञान कहा जाता है। भाषा के इतिहास व उत्पत्ति आदि का अध्ययन करने वाला विज्ञान ऐतिहासिक भाषा विज्ञान कहलाता है। इसके अंतर्गत भाषा के एककालिक विश्लेषणों को शूखलाबद्ध किया जाता है। भाषा वैज्ञानिक विभिन्न भाषाओं का अध्ययन करते समय एक परिवार या भिन्न परिवार की दो भाषा की तुलना करते हैं। इसे तुलनात्मक भाषा विज्ञान कहा जाता है। इसके अंतर्गत दो भाषाओं की समानताओं का पता लगाते हैं और जब दो भाषा के व्येतिरेकों अर्थात् असमानताओं का पता लगाया जाता है तो वह व्येतिरेकी भाषा विज्ञान कहलाता है। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के समय कुछ सिद्धांत निर्मित होते चले जाते हैं। उन सैद्धांतिक रूपों का अनुप्रयोग भाषा अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में किया जाता है। इसीलिए इस प्रकार के अध्ययन को अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान कहते हैं। इस तरह हम पाते हैं कि भाषा विज्ञान के पाँच प्रकार हैं - एककालिक, ऐतिहासिक (बहुकालिक), तुलनात्मक, व्यतिरेकी तथा अनुप्रयुक्त। अगले खंड में हम अनुवाद में भाषा विज्ञान की भूमिका के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।

बोध प्रश्न -

- (1) भाषा विज्ञान मूल्तः क्या है ?
- (2) एक कालिक भाषा विज्ञान क्या है ?

3.3.4 अनुवाद में भाषा विज्ञान की भूमिका

प्रिय छात्रों, एक भाषा में कहीं गई बात चाहे वह मौखिक हो या लिखित, उसे दूसरी भाषा में कहना या लिखना अनुवाद कहलाता है। मानव भाषा ध्वनि प्रतिकों व शब्दों की एक

सुव्यवस्थित संरचना है। दो भिन्न भाषाओं के ध्वनि प्रतिकों की व्यवस्था भी भिन्न होती है। इन भिन्नताओं की पड़ताल करके एक भाषा में अभिव्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में व्यक्त करने हेतु भाषा विज्ञान के विभिन्न अंगों व प्रकारों की सहायता लेनी पड़ेगी।

अनुवाद और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान

‘अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा का अध्ययन, विश्लेषण तथा निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं और उनका उपयोग विज्ञान की अन्य शाखाओं या किसी अन्य प्रयोजन के लिए किया जाता है। जैसे कि उच्चारण संबंधी दोषों को दूर करना, टाइपराइटर या कंप्यूटर के की-बोर्ड का संयोजन, मातृभाषा के साथ-साथ किसी अन्य भाषा का शिक्षण-प्रशिक्षण, कोश निर्माण, भाषा संबंधी पाठ्य पुस्तकें तैयार करना, व्याकरण की रचना करना आदि। इसी तरह अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरते हुए अनुवादक को दो भिन्न भाषा प्रकृतियों का अध्ययन करना होता है। अनुवादक प्रयास करता है कि वह अपने भाषा ज्ञान के आधार पर एक अच्छा अनुवाद प्रस्तुत करें। वह अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का उपयोग एकालिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा व्येतिरेकी भाषा विज्ञान से गुजरते हुए करता है। अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के अंतर्गत आता है। अनुवाद करते समय भाषा विज्ञान की सभी अंगों व प्रकारों के ज्ञान से अनुवादक में महत्वपूर्ण कौशल का विकास होता है। इससे अनुवाद करने में आसानी होती है।

प्रिय छात्रों, इस खंड में हम अनुवाद और भाषा विज्ञान के अंगों व प्रकारों के अंतः संबंधों पर चर्चा करेंगे। ये अच्छा अनुवाद करने के लिए अनुवादक की मदद करते हैं :

अनुवाद और व्येतिरेकी भाषा विज्ञान

व्येतिरेक का अर्थ है असमानता या विरोध। अनुवाद करते समय अनुवादक को दो भाषाओं की असमानताओं के लिए समाधान खोजने होते हैं। असमानताओं की वजह से अनुवाद में कठिनाई होती है। व्येतिरेकी भाषा विज्ञान के अंतर्गत दो भिन्न भाषाओं की असमान तत्वों का विश्लेषण किया जाता है। उस विश्लेषण के सहयोग से अनुवाद में उत्पन्न असमानताओं के समाधान मिल सकते हैं। दो भिन्न भाषाओं में व्येतिरेक ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप और वाक्य के स्तर पर होता है। प्रायः देखा गया है कि दो भिन्न भाषा परिवार के वर्ण व ध्वनियों में अंतर होता है। अनुवाद करते समय जब कभी ध्वनि में व्येतिरेकी का सामना करने पड़े तो लक्ष्य भाषा में उपलब्ध निकटतम ध्वनि को अपनाना चाहिए। यदि निकटम ध्वनि की वजह से अर्थ का अनर्थ हो रहा हो तब स्रोत भाषा की ध्वनि संबंधी वर्ण को लेना ही सही होगा। उदाहरण के लिए दक्षिण भारत की भाषाओं सहित मराठी, गुजराती, उरिया आदि भाषाओं में ‘ळ’ की ध्वनि है। यह हिंदी के ल के करीब है, लेखिन ल नहीं है। मराठी से इस ध्वनि व वर्ण को हिंदी में लिया गया है। छ क्या होता है? छ एक वैदिक वर्णाक्षर है। जिस प्रकार ट, ठ, ड, ढ, ण, प, झ, र वर्णों को मूर्धनी को स्पर्श कर उच्चारण करते हैं, उसी प्रकार छ का उच्चारण मूर्धनी स्पर्श कर होता है। यानी ल को दाँतों से न छूकर उसे मसूड़ों के कुछ ऊपर (र बोलते जैसी स्थिति में) जीभ ले कर उच्चारण करने का प्रयास करिए तब यह ध्वनि निकलेगी।

अब तक हिंदी में हम लिखते आए हैं – मलयालम जो कि सही शब्द है मळयाळम। इसी तरह तमिल, लोकमान्य तिळक, लोनावाला आदि।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार विश्व में अनुवाद सबसे अधिक अंग्रेजी और रूसी भाषा में हुआ है। इन भाषाओं में हमेशा निकटतम में परिवर्तन वाले सिद्धांत को ही माना है। हिंदी में भी इसी सिद्धांत को अपनाया जाता है। उदाहरणः केरली नृत्य है कथाकली। ल की ध्वनि के अभाव में कथाकली लिखा व पढ़ा जाता है।

ध्वनियों का व्यतिरेक प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के अनुवाद के समय आता है। फ्रेंच या रूसी भाषाओं के शब्दों का उच्चारण और लेखन (वर्तनी) भिन्न होता है। हिंदी में अनुवाद करते समय उच्चारण का अनुसरण करना चाहिए न कि लिखित शब्द-वर्तनी का। जैसे- फ्रांस के राष्ट्रपति का नाम है - Emmanuel Macron जिसका उच्चारण uh·ma·nyoo·uhl ma·krawn है। हिंदी में निकटतम ध्वनि में सरलीकरण की प्रवत्ति का अनुसरण करके इसे इमैनुएल मैक्रों लिखा जाएगा।

शब्द के स्तर भी भाषाओं में व्यतिरेक मिलते हैं। इसे हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद के क्षेत्र के प्रसिद्ध उदाहरण से समझेंगे। प्रेमचंद की कहानी है शतरंज के खिलाड़ी। इस कहानी के अंग्रेजी में तीन अनुवाद हुए हैं। तीनों अनुवादकों ने हुक्का शब्द का अनुवाद अपने ढंग से किया है। हुक्का भारतीय समाज के जीवन का हिस्सा है, अंग्रेजी समाज में इसका उपयोग नहीं होता है। वहाँ तो पाइप से तंबाकु का सेवन किया जाता है। कदापि इसीलिए अनुवाद करते समय हुक्का के लिए एक ने indigenous pipe, दूसरे ने earthen pipe और तीसरे ने Hukka (हुक्का) लिखा। तीसरे ने पाद टिप्पणी में इसे समझाया भी। इसी तरह एक परिवार की भाषा के शब्द और समस्तीय शब्दों के अर्थ में अंतर होता है। उदाहरण के लिए नेपाली में कच्चा का अर्थ है खराब। तमिल में पशु का अर्थ है गाय। अनुवादक को इस तरह के शब्दों के अनुवाद में सावधानी बरतनी चाहिए।

अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के समय अनुवादक को शब्द और अर्थ के स्तर पर इसी तरह के जटिल व्यतिरेक का सामना करना पड़ता है। अंग्रेजी के You, He, She, It, Uncle, Aunt, है तो संदर्भ के अनुवासार क्रमशः तू, तुम, आप, वह, वे, चाच, मामा, मौसा, ताऊ, चाची, मामी, मौसी, ताई का प्रयोग किया जाता है। इसी तरह Good Morning के लिए शुभ प्रभात या सुप्रभात, Good Day के लिए शुभदिन या आप का दिन शुभ हो, Good Night के लिए शुभ रात्रि का प्रयोग चल पड़ा लेकिन Good Afternoon, Good Evening के लिए शुभ दोपहर/अपराह्न, शुभ संध्या का प्रयोग थोड़ा अटपटा लग सकता है। हिंदी भाषी समाज में तो आशीर्वाद, नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, पायलागू, राम-राम, राधे-राधे, हरे कृष्ण बोलने का चलन है। दिन में चाहे किसी भी समय मिले। ये संबोधन व प्रयोग उस समाज की संस्कृति व भौलिकता के साथ जुड़े हुए हैं।

रूप के स्तर पर व्येतिरेक का उदाहरण-

तू बैठ, तुम बैठो, आप बैठिए/बैठें के लिए अंग्रेजी में अनुवाद होगा – You sit down, आदर सूचक के रूप होगा You please sit down. वाक्य के स्तर पर, पदक्रम, लिंग, वचन, काल अन्वय, उपपद आदि में भी व्येतिरेक का सामना करना पड़ता है। छात्रों, आप इसका उदाहरण अनुवाद की समस्या खंड में प्रशानिक अनुवाद में देख सकते हैं। अंग्रेजी में आर्टिकल का प्रयोग होता है। उसका अनुवाद अर्थ के रूप में करना होता है। उदाहरण-

(1) Narendra Modi is a good orator. = नरेंद्र मोदी अच्छे वक्ता हैं। (एक वक्ता का प्रयोग नहीं होगा)

(2) The snake was in the room. = वह साँप कमरे में था।

(3) A snake was in the room. = कमरे में साँप था।

अनुवादक को व्येतिरेक को समझना होगा। व्येतिरेकी विश्लेषण से अनुवादक को संभावित कठिनाइयों का पहले से पता चलेगा और अनुवाद करने में आसानी होगी। इस तरह हम देखते हैं कि व्येतिरेकी भाषा विज्ञान में किया जाने वाला भाषा वैज्ञानिक अध्ययन अनुवाद में उपयोगी होता है।

अनुवाद और ध्वनि विज्ञान

अनुवाद करते समय अनुवादक को प्रायः दो प्रकार के शब्दों का सामना करता पड़ता है। पहला प्रकार - स्रोत भाषा के शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में समान अर्थ वाले शब्दों की खोज और उनका का प्रयोग। दूसरा प्रकार - समान अर्थ देने वाले शब्द जब लक्ष्य भाषा में उपलब्ध नहीं होते हैं तब स्रोत भाषा के शब्द का लिप्यांतरण करना होता है। दूसरे प्रकार के शब्दों के लिए अनुवादक को ध्वनि विज्ञान के सहयोग की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के रूपांतरण का संबंध वर्तनी से है।

स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा की ध्वनियों को समझने के लिए वर्णनात्मक ध्वनि विज्ञान और उनकी तुलना करके लक्ष्य भाषा में शब्द निर्माण के लिए तुलनात्मक ध्वनि विज्ञान उपयोगी होता है।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की ध्वनियों की तुलना के समय चार प्रकार की ध्वनियाँ प्राप्त होती हैं -

1) कुछ ध्वनियाँ दोनों भाषाओं में समान होती हैं -

वैज्ञानिक दृष्टि से ऐसा कम ही होता है कि दो भिन्न भाषाओं की ध्वनियाँ पूर्णतः समान हो। लेकिन सामान्यतः देखने पर काफ़ी भाषाओं के काफ़ी ध्वनियाँ समान होती हैं। जैसे कि -

- हिंदी में ग्, ब्, न्, म्, य्, स्, फ्

अंग्रेजी ग्, ब्, न्, म्, य्, स्, फ् (G, B, N, M, Y, S-C, F)

ये समान ध्वनित होने वाले व्यंजन हैं। लिप्यांतरण में इनका आसानी से प्रयोग किया जा सकता है।

गैजेट, बल्ब, मेरी क्रिसमस, सलून, फ्रांस जैसे शब्दों के लिए।

2) कुछ ध्वनियाँ जो लगभग समान होती हैं –

लगभग समान का अर्थ है, ऐसी ध्वनियाँ जो समीप होती हैं किंतु पूरी तरह समान नहीं होती हैं। जैसे कि –

- हिंदी में च वर्ग के व्यंजन स्पर्श-संघर्षी ध्वनियाँ – च, छ, ज, झ
संस्कृत में ये वर्ण केवल स्पर्श ध्वनियों के चिह्न हैं।
- इसी तरह संस्कृत का न् दंत्य है जबकि हिंदी में न् वत्सर्य है।
- अरबी का ज़ (ज़े, दंत्य-वत्सर्य) हिंदी के ज़ (वत्सर्य) से भिन्न है।

अनुवादक को इस तरह की समीपता व भिन्नता को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य भाषा के निकटवर्ती ध्वनि में लिप्यांतरण करना होता है।

3) कुछ ध्वनियाँ दोनों में होती हैं, किंतु एक-दूसरे से काफ़ी भिन्न होती हैं –

इस वर्ग की ध्वनियाँ उच्चारण और श्रवण के स्तर पर भिन्न होती हैं। जैसे कि –

- अरबी के ज़ोय, ज़वाद, ज़ाल का ज़ क्रमशः हिंदी के ज़ालिम/जालिम, ज़रूरी / जरूरी, ज़ात/जात के ज़/ज से भिन्न हैं।

4) कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हैं जो, स्रोत भाषा में होती हैं किंतु उनको समान, लगभग समान या उनसे मिलती-जुलती ध्वनियाँ लक्ष्य भाषा में नहीं होती हैं-

इस वर्ग की ध्वनियों के कारण अनुवादक के सामने लिप्यांतरण की समस्या उत्पन्न होती है। जैसे कि तमिल (तमिल), मल्यालम (मलयालम) आदि। ऐसी स्थिति में उच्चारण के अनुसार लिप्यांतरण करना चाहिए या फिर मूल उच्चारण में लिप्यांतरण संभव नहीं हो तो, नीकटवर्ती ध्वनि में सरलीकरण करना चाहिए। जैसे कि ऊपर किया गया है। लिप्यांतरण करते समय ध्वनि के उच्चारण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकत है। उदा-

रुसो (Rousseau), मेइये (Meillet), डीपो (Depot), साइकॉलजी (Psychology) आदि।

ऊपर की गई चर्चा के अनुसार कहा जा सकता है कि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में ध्वनियों को रखते समय अनुवादक को ध्वनिग्राम तथा संध्वनि की दृष्टि से विचार करना चाहिए। ध्वनिग्राम का अर्थ है किसी भाषा के स्वर व व्यंजन और संध्वनि का अर्थ है भाषा में प्रयुक्त होने वाले ध्वनिग्राम के विभिन्न रूप। इसे उदाहरण से समझने का प्रयास करेंगे –

अंग्रेजी में एक व्यंजन ध्वनिग्राम है – क, जो कभी k, c तथा q द्वारा लिखा जाता है।

(1) Coat, Camp, (2) Cow (3) Sky (4) Quotation

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो अंग्रेजी में क की इन चार संध्वनियों का प्रयोग होता है। ये चारों संध्वनियों के समूह को क ध्वनिग्राम कहा जाता है। अर्थात् भाषा में उच्चारण करते समय वास्तव में संध्वनियों का प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद और अनुलेखन

अनुवाद में अनुलेखन भी लिप्यंतरण की तरह ही उपयोगी भाषा वैज्ञानिक उपकरण है। इसका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा या पारिभाषिक शब्दों के लिए किया जाता है। प्रायः इन शब्दों का अनुवाद नहीं किया जाता बल्कि उन्हें मूल रूप में ही लक्ष्य भाषा में लिख दिया जाता है। यह लिपि विज्ञान के अंतर्गत आता है। जैसे कि - संस्था का नाम, कार्यक्रम का शीर्षक या किसी उपकरण का नाम स्रोत भाषा में लिखे व उच्चारित शब्द के अनुसार ही लक्ष्य भाषा में लिखा जाना चाहिए। जैसे कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (Oxford university), वूमेन्स डे आउट कार्यक्रम (Women's Day Out event), कंप्यूटर (Computer), वाइड प्लेट मिल (Wide Plate Mill) आदि।

अनुवाद और अर्थ विज्ञान

प्रिय छात्रों, आप जानते ही हैं, अनुवाद का मुख्य उद्देश्य अर्थ का संप्रेषण है। स्रोत भाषा में व्यक्त किए गए अर्थ को लक्ष्य भाषा में ले जाना। अनुवाद करते समय अर्थ में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। भाषा विज्ञान की एक शाखा जिसमें भाषा के अर्थ पक्ष का अध्ययन किया जाता है। उस शाखा को अर्थ विज्ञान कहते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि अनुवाद और अर्थ विज्ञान दोनों ही भाषा के अर्थ से जुड़े हुए हैं और इसी कारण अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए अर्थ विज्ञान एक कुशल सहयोगी सिद्ध हो सकता है। किसी भी विषय की कृति या साहित्य के अर्थ को समझने के लिए गहराई से पढ़ने की जरूरत होती है। अनुवादक के लिए जरूरी होता है कि वह अनुवाद किए जाने वाले सामग्री या साहित्य में प्रयुक्त कोशार्थ, लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ को समझे। अनुवादक को चाहिए कि वह शब्दबंधों, पद बंधों, उप वाक्यों, वाक्यों के सामान्य अर्थ और अपेक्षित अर्थ तक पहुँचे। भाषा में प्रोयग किए गए मुहावरे व लोकोक्तियों और विशेष प्रयोगों के शब्दार्थ और लक्षणार्थ के संबंधों को समझकर अनुवाद करना होता है। इसके अभाव में अनुवाद प्रभावी तो होगा ही नहीं, बल्कि ठीक-ठाक भी नहीं होगा। पाठक को अनूदित सामग्री पढ़ते समय ऐसा लगना चाहिए कि वह अपनी भाषा का साहित्य पढ़ रहा है। ऐसा तभी होगा जब अनुवादक पूरी लगन के साथ स्रोत भाषा के अर्थ को ग्रहण करके उस अर्थ को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप रूपांतरित करे। स्रोत भाषा के अर्थ को समझने, उसे ग्रहण के लिए अर्थ विज्ञान का ज्ञान अनुवादक के काम आएगा।

अनुवाद करते समय अर्थ ग्रहण व उसे निश्चित करने के लिए अनुवादक को मुख्य रूप से स्रोत भाषा पाठ के लेखक का स्थान, साहित्य में वर्णित देश-काल, वातावरण, संदर्भ, काल, लिंग, वचन, समास, उपसर्ग व प्रत्यय, शब्द शक्ति, व्यंग्य, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, विशेष प्रयोग, बलाधात, भाषा का अनुतान, समानार्थी शब्द चयन को सूक्ष्मता से समझकर ग्रहण करके कुशलता से अभिव्यक्त करना पड़ेगा। इनके कुछ उदाहरणों से अर्थ विज्ञान के अंतर्गत आने वाले इन तत्वों को आसानी से समझा जा सकेगा।

(1) स्थान : अंग्रेजी शब्द है 'रेस्टरूम'। अमेरिका में इसका प्रयोग पाखाने / प्रसाधन के लिए किया जाता है, जबकि भारत में रेल्वेस्टेशन पर यात्रियों के आराम के लिए बनाए गए विश्रामगृह

को रेस्टर्स्म कहा जाता है। अंग्रेजी में रेलवे स्लीपर को टाई (Tie) कहते हैं। इसकी जानकारी नहीं होने पर सामान्यतः गले में बांधने वाली टाई समझने की संभावना है। इसी तरह कुछ और उदाहरण देख सकते हैं। यहाँ भारतीयों के सामान्य ज्ञान की अंग्रेजी शब्द और कोष्ठक में अंग्रेजों द्वारा, विशेषकर अमेरिकी अंग्रेजी में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द दिए जा रहे हैं - चैक (बिल), बिल (करेंसी नोट), टैक्सी (कैब), पेट्रोल (गैसोलीन), आर्थिक वर्ष / वित्त वर्ष - Financial Year (fiscal year), मोटर कार (आटोमोबाइल), लिफ्ट (एलीवेटर) आदि। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में जमींदार जमीन के स्वामी को कहते हैं जबकि हरियाना में जमीन जोतनेवाले को। इस तरह के स्थानीय प्रोयगों के अर्थ समझना अनुवादक के लिए बेहद जरूरी होता है।

(2) देशकाल, लिंग तथा वचन : हरिजन शब्द कभी हरिभक्त के लिए प्रयोग में लिया जाता था, किंतु अब इसका प्रयोग अद्भूत के लिए किया जाता है। इसी तरह आकाशवाणी शब्द पहले देववाणी के अर्थ में प्रयोग में था, जिसे अब हम आल इंजिया रेडियो के कार्यालय के नाम से जानते हैं। अनुवाद किए जाने वाली सामग्री में इस तरह के शब्द आएंगे तो उनके प्रयोग के काल का परिचय प्राप्त करना आज के अनुवादक की जिम्मेदारी है।

लिंग के आधार पर कई भाषाओं में अर्थ निर्धारण में सहायता होती है। संस्कृति में मित्र और आम शब्द का प्रयोग पुलिंग तथा नपुंसक लिंग में होता है। पुलिंग में मित्र का अर्थ है सूर्य, आम का अर्थ है आम के फलों का वृक्ष और नपुंसक लिंग में मित्र शब्द का अर्थ है दोस्त, आम का अर्थ है आम फल। इसी तरह तथा गो शब्द रुक्षी लिंग में गाय का द्योतक है जबकि पुलिंग में बैल का। अंग्रेजी के शब्द है wood-woods, air-airs, water-waters, iron-irons ये शब्द एक दूसरे के एक वचन-बहुवचन नहीं हैं। दोनों शब्दों के अर्थ में भिन्नता है: wood - लकड़ी, ईंधन, woods - एक बड़े क्षेत्र में उगने वाले विभिन्न पेड़ों के समूह; air-हवा, जीवन शैली, airs-अकड़, जिसमें कृत्रिमता और दिखावा होता है, water- "जल" (एकवचन रूप) पानी के एक क्षेत्र या विस्तार (जैसे नदी, झील या समुद्र) के अर्थ में है। waters- "जल" (बहुवचन रूप) एक विशेष स्थान के जल निकाय के अर्थ में है। उदाहरण: हैदराबाद का पानी, हरिद्वार का पानी, अंडमान द्वीप समूह का पानी। स्रोत भाषा में प्राप्त इस तरह के प्रयोगों का अनुवादक को ज्ञान होना चाहिए।

(3) संदर्भ : शब्द, पद, पदबंध, उपवाक्य, ऐसे होते हैं जिनके कोशार्थ और व्यंग्यार्थ सुरलहर (Intonation) आदि किसी भी कारण से एक से अधिक अर्थ प्रकट हो सकते हैं। संदर्भ के आधार पर ही एक अपेक्षित अर्थ संप्रेषित होगा। उदाहरण के लिए संस्कृत का शब्द है सैंधव। संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ नमक या घोड़ा संप्रेषित होता है।

(4) समास, उपसर्ग और प्रत्ययों के प्रयोग से कथन व अर्थ संप्रेषण में वैविध्यता उत्पन्न होती है। जैसे जल और वायु दोनों शब्द जब समास के रूप में प्रयुक्त होते हैं तो उनका अर्थ सामान्य से

विशेष हो जाता है। हार शब्द में आ, वि, स, प्र आदि उपसर्ग के जुड़ने से और क्रोधी, प्रमाण, व्यथा, मुखर, शिक्षा आदि में इत प्रत्यय के जुड़ने से अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। शब्द सामान्य से विशेष हो जाता है।

(5) शब्द शक्ति और व्यंग्य : शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं – अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना। प्रशासनिक साहित्य में अभिधा का प्रयोग किया जाता है। लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग कविता, कहानी, नाटक आदि में प्रयोग होता है। विषय व संदर्भ के अनुसार इन शब्द शक्तियों का प्रयोग समझ में आएगा। मैथिलीशरण गुप्त की कविता का अंश है - अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी। यहाँ अबला, आँचल, पानी शब्द लक्ष्यार्थ प्रेषित करते हैं। राम बड़ा गधा है यह वाक्य व्यंग्यार्थ प्रकट कर रहा है। इन दोनों ही उदाहरणों में अभिधा से काम नहीं चलेगा। इस तरह के प्रयोगों को अनुवादक का समझना बेहद जरूरी होता है। अन्यथा, अनुवाद में अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

(6) मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में विशिष्टता आती है। पानी-पानी होना या to throw a party में पानी को न तो वाटर कहना है और throw को फेंकना। इनके विशिष्ट अर्थ को ग्रहण करके ही अनुवादक इनका सही अनुवाद या समानार्थी अभिव्यक्ति की खोज कर सकता है।

(7) बलाघात और अनुतान से भी अर्थ निर्धारण किया जाता है। जैसे कि रूसी भाषा में Zamok एक शब्द है जिसके उच्चारण के समय बलाघात Za पर हो, तो शब्द का अर्थ किला होगा और यदि बलाघात mok पर हो, तो अर्थ होगा ताला। वाक्य के स्तर पर भी बलाघात से अर्थ परिवर्तन होता है। जैसे – ‘मोहन आया और खाना खाकर चला गया’ में और पर बल देने से सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ प्रकट होता है। कुछ भाषाएँ ऐसी होती हैं जिसमें अनुतान (सुरलहर) से अर्थ में परिवर्तन होता है। चीनी तथा अफ्रिका की एफ्रिक भाषा में इसके सटीक उदाहरण मिलते हैं। जैसे कि चीनी भाषा में मा का अर्थ घोड़ा, एक कपड़ा, माँ और गाली देना हो जाता है। एफ्रिक भाषा में ekreedidie वाक्य के दो अर्थ प्रकट होते हैं – (1) तुम्हारा नाम क्या है? (2) तुम क्या सोचते हो? इस तरह हम देखते हैं कि भाषा विज्ञान की शाखा अर्थ विज्ञान अनुवादक के लिए उपयोगी सहायक सिद्ध होगी। अध्ययन और अभ्यास से अर्थ विज्ञान का सही उपयोग किया जा सकेगा।

अनुवाद और वाक्य विज्ञान

अनुवाद में स्रोत भाषा की वाक्य संरचना को ग्रहण करके लक्ष्य भाषा की वाक्य संरचना के अनुकूल वाक्य बनाया जाता है। भाषा विज्ञान की शाखा वाक्य विज्ञान भाषा में प्रयोग किए गए वाक्यों के अध्ययन में मददगार साबित होगी। अनुवादक को वाक्य विज्ञान की व्यावहारिक जानकारी होनी चाहिए। मोटे तौर पर वाक्य की दो संरचनाएँ होती हैं – बाह्य संरचना तथा आंतरिक संरचना। इसके अतिरिक्त भाषाओं में व्याकरण के अंगों के अनुसार भी वाक्य संरचना

में अंतर होता है। वाक्यों में संज्ञा, सर्वनाम के अलावा लिंग, वचन, काल और कारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इनसे अर्थ निर्धारण होता है। वाक्य में पदक्रम का अत्यधिक महत्व होता है। वाक्य के अर्थ संप्रेषण में विराम चिह्नों की भूमिका भी काफी महत्वपूर्ण होती है। अनुवाद करते समय अनुवादक को वाक्य संरचना की समस्या से रू-ब-रू होना पड़ता है।

बाह्य संरचना तथा आंतरिक संरचना

वाक्यः श्रेया घोषाल गानेवाली है।

इस वाक्य के दो अर्थ हो सकते हैं – (1) श्रेया घोषाल गायक कलाकार है। (2) श्रेया घोषाल अब गीत गानेवाली है। बाह्य संरचना में वाक्य का एक ही अर्थ प्रकट होता है जबकि गहराई में जाने से सामान्य से दिखने वाले वाक्य से दूसरा अर्थ भी प्रकट होता है। यही वाक्य की आंतरिक संरचना है।

बाह्य-मैंने दौड़ते हुए शेर को मारा।

आंतरिक – (1) जब मैंने शेर को मारा तब मैं दौड़ रहा था।

(2) जब मैंने शेर को मारा तब शेर दौड़ रहा था।

हिंदी और अंग्रेजी के वाक्य संरचना में काफी अंतर है। हिंदी के वाक्य सामान्यतः कर्ता, कर्म, क्रिया के क्रम में होते हैं जब कि अंग्रेजी के वाक्य में यह क्रम कर्ता, क्रिया, कर्म का होता है।

हिंदी: राम ने रावण को मारा। अंग्रेजी: Rama killed Ravana.

स्रोत भाषा की वाक्य रचना लक्ष्य भाषा की वाक्य रचना के समान नहीं होती। इसलिए लक्ष्य भाषा के अनुरूप वाक्य बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्य के शब्दों में कभी-कभी व्याकरणिक परिवर्तन भी करना पड़ सकता है।

उदाहरण के लिए

तेलुगुः ना पेरु बालाजी। (న~పేరు బాలాజీ)

हिंदी: मेरा नाम बालाजी है।

तेलुगु भाषा के वाक्य में 'है' का प्रयोग नहीं है।

अंग्रेजी: He speaks well. (क्रिया विशेषण)

हिंदी: वह अच्छा वक्ता है। (क्रिया)

कारक चिह्न के प्रयोग में अंतर देखिए-

अंग्रेजी: He has faith in his wife.

हिंदी: उसे अपनी पत्नी पर विश्वास है।

लिंग वचन काल को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुवाद करना चाहिए।

समान्यतः हिंदी में इस वाक्य का अनुवाद होगा मैं ज्वर से पीड़ित हो रहा हूँ। यह अटपटा अनुवाद है। हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुवाद होगा – मुझे ज्वर है या मैं

ज्वरग्रस्त हूँ या मैं ज्वर से पीड़ित हूँ। इन तीनों अनुवादों में पहला अनुवाद सबसे अच्छा माना जाएगा।

अनुवाद करते समय कभी-कभी एक वाक्य से अधिक वाक्य अथवा अधिक वाक्य से एक वाक्य करने की आवश्यकता पड़ती है। जैसे – अंग्रेजी एक वाक्य का हिंदी में दो वाक्यों में अनुवाद -

Apart from a share to be paid to his nearest surviving relatives, royalties from this book will therefore go to the Council for the annual award of two prizes for the best essay on Islam by a non-Muslim and on Hinduism by a Muslim citizen of India or Pakistan.

अतः इस किताब की रायल्टी का एक हिस्सा, तो उनके निकटतम जीवित संबंधियों तो चला जाएगा और बाकी परिषद को दे दिया जाएगा। परिषद इस रकम से प्रतिवर्ष दो पुरस्कार दिया करेगी – एक पुरस्कार तो इस्लाम पर किसी गैर-मुसलमान द्वारा लिखे गए सर्वश्रेष्ठ निबंध पर दिया जाएगा और दूसरा हिंदू धर्म पर भारत या पाकिस्तान के किसी मुसलमान नागिरक द्वारा लिखे गए सर्वश्रेष्ठ निबंध पर।

अनुवाद और रूपविज्ञान

रूप का अर्थ है पद। वाक्य की रचना शब्दों के समूहों से होती है। वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, सहायक क्रियाएँ और कारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। अनुवाद को रूपांतरण भी कहते हैं। अर्थात् रूपों का अंतरण। स्रोत भाषा के रूपों का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण किया जाता है। रूपांतरण करने वाले अनुवादक को यदि रूप विज्ञान का ज्ञान होगा तो वह अच्छा अनुवाद कर सकता है। रूप विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जिसमें वाक्य के रूपों का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता है। अतः अनुवादक स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के रूप-रचना से भली भाँति परिचित होगा तो अनुवाद करते समय रूपों का अंतरण करने में आसानी होगी। इस कार्य में रूप विज्ञान उसकी सहायता कर सकता है।

हिंदी में रूप रचना मुख्यतः:

(1) प्रत्ययों से - संज्ञा से विशेषण – क्रोध + ई = क्रोधी; विशेषण से संज्ञा - सुंदर + ता = सुंदरता; संज्ञा से क्रियाविशेषण – कृपा से कृपया; विशेषण से क्रिया विशेषण – मुख्य से मुख्यतः; सर्वनाम से विशेषण – तुम से तुम्हारा; संज्ञा से क्रिया – जूता से जुतिया (ना); क्रिया से विशेषण – सो से सोता या सोया; क्रिया से क्रियाविशेषण – सो से सोते

(2) उपसर्गों से - संज्ञा से संज्ञा - वि + भाग = विभाग; प्रत्यय से विशेषण - वि + ज्ञ = विज्ञ; विशेषण से विशेषण - सु + विज्ञ = सुविज्ञ; संज्ञा से विशेषण - ला + जवाब = लाजवाब; संज्ञा

से क्रियाविशेषण - आ + जीवन = आजीवन; विशेषण से क्रिया विशेषण - दर + असल = दरअसल

(3) समासों से - जिलाधीश, राजकुमार, कार्यपालक आदि

उपर्युक्त (1), (2), (3) में दो या तीन के मिश्र रूप भी हो सकते हैं। जैसे - अव्यावहारिकता आदि।

(4) पुल्लिंग रूपों से त्रिलिंग रूप - लड़का-लड़की, बालक-बालिका, अच्छा-अच्छी, दौड़ता-दौड़ती।

(5) एकवचन से बहुवचन - लड़का-लड़के, दौड़ता-दौड़ते, बड़ा-बड़े, चला-चले

(6) मूल रूप से विकृत रूप - लड़का-लड़के, अच्छा-अच्छे।

(7) संज्ञा तथा सर्वनाम से कारकीय रूप की रचना - गधा से गधे ने, गधों पर, गध की या तू से तुम, तुझे, तुम्हें आदि

(8) विशेषण के तुलनात्मक रूप - बेहतर, बहतरीन, लघुतर, लघुतम, श्रेष्ठ, श्रेष्ठतम।

(9) धातु से क्रिया रूप - कालबोथख - है, था आदि; कृदंत - चलता, चला, चलना आदि; तिड़न्त-चले, चलूँ, चलो आदि।

स्रोत तथा लक्ष्य दोनों भाषाओं की रूप रचना से तथा शब्द रचना से यदि अनुवादक परिचित होगा तो वह उनके आधार पर स्रोत भाषा के चयन को पहचान सकेगा और उसके अनुरूप लक्ष्य भाषा में चयन कर पाएगा। रूपों के ज्ञान से वह नवनिर्मित शब्दों या रूपों को पहचान सकता है और आवश्यकता पड़ने पर लक्ष्य भाषा में नए शब्दों या रूपों का निर्माण भी कर सकता है।

भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि अनुवादक में कारयित्री प्रतिभा होती है। अपनी इसी प्रतिभा के कारण वह अनुवाद करते समय प्रचलित शब्दों के स्थान पर नए शब्द या रूप बना सकता है। ऐसा करने के लिए जरूरी है कि अनुवादक लक्ष्य भाषा के रूप रचना के नियमों से अवगत हो। इसका ज्ञान अनुवादक को रूप विज्ञान से मिल सकता है। इसी के चलते प्रभावशाली के बहुप्रयोग से बचने के लिए प्रभावी शब्द भी चल पड़ा। घुसपैठ के लिए अंग्रेजी शब्द है इनफ़िल्ट्रेटर या इनट्रूडर। इसका हिंदी में समानार्थी शब्द बना घुसपैठिया। अब इसका प्रयोग चल पड़ा है। इसी तरह अंग्रेजी के फिल्माइज के लिए हिंदी में फिल्माना शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है।

शब्द निर्माण के संबंध में एक किस्सा मिलता है। रेडियो पर कार्यक्रम चल रहा था पर्यायों की खोज में। उसमें रामचंद्र टंडन, बच्चन और भोलानाथ तिवारी चर्चा कर रहे थे। चहलकदमी की तर्ज पर उन्होंने अंग्रेजी शब्द इनिशिएटिव (initiative) के लिए 'पहलकदमी' शब्द बनाया जो अब आम प्रयोग बन गया है। To take initiative के लिए पहलकदमी करना का प्रयोग सामान्य हो गया है।

अतः इस प्रकार यदि शब्द रचना या रूप रचना के नियम का ज्ञान अनुवादक के लिए उपयोगी ही नहीं बल्कि अनिवार्यतः आवश्यक है।

अनुवाद और शब्दविज्ञान

शब्दविज्ञान, नाम से स्पष्ट है, भाषा विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत शब्दों का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है। अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम इकाई है - शब्द। शब्दविज्ञान का ज्ञान अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है। वाक्य का निर्माण शब्दों के अर्थगत क्रम से ही होता है और भाषा में अर्थ का संप्रेषण वाक्य से होता है। अनुवाद में संप्रेषित अर्थ का स्थानांतरण किया जाता है। शब्द के अंतर्गत भाषा की वे सारी इकाइयाँ आती हैं जो सार्थक और स्वतंत्र होती हैं - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय। इन्हीं शब्दों में संबंध तत्व जोड़कर कारक व क्रिया के रूप बनाए जाते हैं और ऐसे निर्मित रूपों से वाक्य बनते हैं। पूर्व खंडों में भाषा विज्ञान की शाखाओं - रूपविज्ञान तथा वाक्यविज्ञान के अंतर्गत भाषा की विभिन्न इकाइयों में शब्द निर्माण पर चर्चा की गई है। हमने जाना कि आवश्यकता के अनुसार अनुवाद करते समय अनुवादक को उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास आदि से नए शब्दों की रचना करनी पड़ती है।

अनुवादक को शब्द विज्ञान का ज्ञान होने पर वह अनुवाद करते समय शब्द भंडार का वर्गीकरण व शब्द चयन आसानी से कर पाएगा। हिंदी का शब्द भंडार निम्नानुसार है:

(1) इतिहास - निर्माण के आधार पर हिंदी का शब्द भंडार चार भागों में वर्गीकृत है।

तत्सम - शुद्ध संस्कृत शब्द, जैसे - गृह, नृत्य, रात्रि, चंद्र, सूर्य, कर्म आदि

तद्धव - तत्सम शब्दों से बिगड़ कर या विकसित हुए शब्द, जैसे - घर, नाच, रात, चंदर, सूरज, करम आदि।

विदेशी - लॉर्ड-लाट, सिगनल-सिंगल, स्टेशन-टेशन, बाग-बाग, दारोगा-दरोगा आदि

देशज - लोटा, चटाई, लाठी, फूस, घूसा, अटकल, अलबेला आदि शब्द जो लोकभाषा में अधिक प्रयोग किए जाते हैं।

अनुवादक को इतिहास के आधार पर शब्द चयन करने की आवश्यकता पड़ती है, विशेषकर जब वह किसी काल विशेष की कृति का अनुवाद कर रहा हो। उदाहरण के लिए यदि अनुवादक शायर गालिब की जीवनी का हिंदी में अनुवाद कर रहा हो तो उर्दू (अरबी-फारसी, तुर्की भाषा के शब्द) व तद्धव शब्दों का अधिक प्रयोग होगा, तिलक द्वारा रचित गीता का अनुवाद करते समय संस्कृत निष्ठ शब्दावली अर्थात् तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक होगा, उसी तरह यदि गांधी जी की किसी पुस्तक का अनुवाद हिंदी में किया जाए तो उसमें हिंदुस्तानी अर्थात् आम बोलचाल की शब्दावली काम में आएगी। इसी तरह किसी कहानी, नाटक, में पात्रों के अनुसार शब्द चयन करने की आवश्यकता होती है। पात्र अंग्रेजी में डॉक्टर होगा तो उसकी बातचीत में अंग्रेजी शब्द आएँगे, हकीम होगा तो उर्दू तथा वैद्य होंगे तो संस्कृत या तत्सम शब्द होंगे। उदाहरण के लिए

• डॉक्टर - मेरी वाइफ बीमार है।

- हकीम – मेरी बीवी की तबीयत ख़राब है।
- वैद्य – मेरी पत्नी अस्वस्थ है।

इसी तरह सीता राजकुमारी या रानी होगी और मुमताज शाहज़ादी या बेगम होगी। इसका विपरीत होने पर शब्द प्रयोग में दोष कहा जाएगा, क्योंकि शब्द का प्रयोग स्थान, भाषा, संस्कृति की पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है।

(2) अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण – अभिधा, लक्षणा, व्यंजना। शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद में इनका ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है। उदाहरण के लिए वह मूर्ख है और वह गधा है वाक्यों में मूर्ख अभिधार्थी शब्द है जबकि गधा लक्षणार्थी। उसको काम दे रहे हो, वह तो गधा है, में गधा व्यंजनार्थी शब्द है।

(3) ध्वनि (4) तुक (6) मात्रा और (7) वर्ण के आधार पर शब्द निर्माण व चयन होता है। इनका प्रयोग काव्य में अधिक होता है। अनुवादक को अनुवाद करते समय इस तरह की शब्दावली के लिए लक्ष्य भाषा में शब्द चयन करना होगा। इसीलिए कहा जाता है कि काव्य अनुवाद करने की कठिनाई में यह भी एक कारण है। उदाहरण-

- ध्वनि - घंटा टन टना रहा है,
- तुक - ओ पालन हारे / निर्जुण ओ न्यारे, ये
- मात्रा (दोहा)-
काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।/ पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।
- वर्ण - दिवस का अवसान समीप था। / गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु-शिखा पर थी अब राजती। / कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।

(7) प्रयोग के आधार पर शब्द के तीन प्रकार है – सामान्य, अर्धपारिभाषिक और पारिभाषिक।

- सामान्य शब्द – अन्न, देश, फूल, पेड़, कागज़, रोशनी आदि
- अर्धपारिभाषिक शब्द – ये शब्द सामान्य बोलचाल में सामान्य शब्द की तरह और विशिष्ट विषयों में पारिभाषिक शब्द की तरह प्रयुक्त होते हैं – बोली (सामान्य - बोलना) (भाषा विज्ञान – डायलेक्ट), धातु (सामान्य – सोना, चाँदी आदि) (व्याकरण – क्रिया की धातु)।
- पारिभाषिक शब्द – इन शब्दों का प्रयोग केवल विशिष्ट विषयों में ही होता है। इनका निश्चित अर्थ होता है। जैसे – गणित में – त्रिभुज, दशमलव, शून्य आदि

प्रिय छात्रों, इस तरह आपने जाना कि अनुवाद में भाषाविज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञान बहुत उपयोगी होता है।

अनुवाद एक भाषिक व्यापार है। अनुवाद का संबंध दो भाषाओं से है। अनुवाद में मूलतः दो भिन्न भाषाओं का आमना-सामना होता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

अनुवाद करते समय अनुवादक को बहुआयामी भूमिका निभानी होती है। उसे पाठक, भाषा विश्लेषक, विषय विशेषज्ञ और द्विभाषी बनना पड़ता है। इन भूमिकाओं को निभाने की क्षमताओं और अक्षमताओं का प्रभाव अनूदित पाठ पर दिखाई देता है। अनुवादक इन भूमिकाओं में जितना कुशल होता है, अनुवाद उतना ही अच्छा होता है। अनुवाद करते समय अनुवादक का सामना भाषा की कई वैज्ञानिक समस्याओं से होता है। भाषाविज्ञान की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान अनुवादक की मदद करेगा। अनुवाद में कभी शब्दानुवाद तो कभी भावानुवाद करना होता है। जहाँ शब्दानुवाद करने पर अर्थ संप्रेषित नहीं होता दिखाई दे तो उसकी व्याख्या पाद टिप्पणी में करना अच्छा माना जाता है। इससे स्रोत भाषा का कथ्य लक्ष्य भाषा के पाठक तक पहुँच सकता है। अनुवाद करते समय आने वाली समस्याओं में दो प्रकार की समस्याएँ आती हैं- अर्थपरक और शैलीपरक। अर्थपरक में सामाजिक-सांस्कृति संदर्भ व शब्दावली, हास्य विनोद, रिश्ते-नाते की शब्दावली, लोक बिंब, आलंकारिक प्रयोग, मिथक, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, समानार्थी शब्दों में से उपयुक्त शब्द के चयन की समास्याओं का और शैलीपरक में स्वनिमस्तरीय समस्याएँ जिसमें शब्दों के ध्वनिमूलक शब्द, अलंकार, लिप्यंतरण, ध्वन्यनुकूलन, शब्दस्तरीय, रूपस्तरीय, वाक्यस्तरीय समास्याओं का सामना करना पड़ता है।

अनुवाद और भाषाविज्ञान के अंतः संबंध के खंड में हमने जाना कि आधुनिक भाषाविज्ञान अर्थपरक, सांस्कृतिक एवं शैलीपरक समस्याओं के समाधान की खोज करने में मददगार साबित हो सकता है। लेकिन अनुवाद करने के इच्छुक व्यक्ति को यह अवश्य समझना होगा कि अनुवाद का कार्य यंत्र बनकर नहीं किया जा सकता है। उसमें सौंदर्यशास्त्रीय एवं कालत्मक पहलू भी होता है। इससे यह समझना चाहिए कि अनुवाद की समस्याओं का विश्लेषण में स्रोत एवं लक्ष्य भाषा- भाषियों के सौंदर्यपरक अवधारणाओं को भी ध्यान में रखना जरूरी है। अर्थ विज्ञान, प्रतीक विज्ञान, शैलीविज्ञान, समाज विज्ञान के साथ-साथ सौंदर्यशास्त्र के समन्वय से अनुवादक एक अच्छा अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है। इसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। अनुवादक को शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान से अवश्य लाभ होगा। ।

बोध प्रश्न –

- (1) अनुवाद भाषाविज्ञान की किस शाखा के अंतर्गत आता है ?
- (2) अनुवाद करते समय कौन-सी दो प्रकार की समस्याएँ आती है ?

3.4 पाठ सार

आज पूरी दुनिया एक गाँव बन गई है। इसे जोड़ने का माध्यम है सूचना, सूचना प्रौद्योगिकी, और इंटरनेट और अनुवाद। लोग अब स्मार्ट फोन, कंप्यूटर या लैपटॉप के माध्यम से दुनियाभर के लोगों से संपर्क कर सकते हैं। इन उपकरणों में उपलब्ध इंटरनेट की मदद से भाषा का अनुवाद भी किया जा सकता है। इसके लिए कई ऐप्स भी उपलब्ध हैं, जैसे कि एप्पल ट्रांस्लेट, स्पीच टेक्सट, गूगल ट्रांस्लेट आदि।

कुछ साल पहले टीवी देखना और लैंडलाइन फोन ही आम लोगों के लिए संचार के प्रमुख इलेक्ट्रिक माध्यम थे। लेकिन आज तकनीक के नए उत्पादों जैसे कि इंटरनेट और अनुवाद एप्स के द्वारा लोगों को भाषाओं के माध्यम से जोड़ने की संभावना बढ़ गई है। इससे सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि हो रही है। इस कार्य के लिए गुणवत्तापूर्ण अनुवाद की मांग भी बढ़ी है। डिजिटल अनुवाद के लिए कई उपकरण और एप्स उपलब्ध हैं, लेकिन सटीकता की समस्या भी है। इस समस्या के समाधान भाषा विज्ञान में मिल सकते हैं। भाषा विज्ञान अनुवादकों की सहायता करता है और सही रूप में भाषा की प्रकृति को समझने में मदद करता है।

अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में कहे गए या लिखी हुई सामग्री को दूसरी भाषा में पुनः व्यक्त करना या लिखना। ऐसा करते समय मूल अर्थ का नुकसान नहीं होना चाहिए। अनुवाद करने के दौरान अनुवादक को दो भिन्न भाषाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक, और भाषाई परिप्रेक्ष्य को समझना होता है। वह स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में अर्थ को नुकसान पहुँचाए बिना स्थानांतरण करने के लिए अनुवादक को पाँच चरणों - पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, समायोजन, और मूल से तुलना - से गुजरना होता है। इस प्रक्रिया में, अनुवादक को स्रोत भाषा के लेखक के रूप में सोचना और लक्ष्य भाषा के पाठक के रूप में काम करना पड़ता है।

अनुवादक के पास अनुवाद के लिए किसी प्रकार के विषय आ सकते हैं-साहित्यिक या साहित्येतर। साहित्य की विविध विधाओं में कविता का अनुवाद करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को मूल कवि की भावना और विचारों को समझने के साथ-साथ उन्हें उत्तम रूप से लक्ष्य भाषा में अंतरित करने की कला भी आनी चाहिए। अनुवादक यदि कवि हो तो अनुवाद सहज लगेगा। अनुवादक को मूल लेखक की भाषिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखना होता है।

इसी तरह, साहित्येतर अनुवाद में विषय से संबंधित और भाषा के तत्वों से संबंधित समस्याओं का सामना होता है। विविध विषयों के अनुवाद में, अनुवादक को अधिक तकनीकी और विषयवार ज्ञान की आवश्यकता होती है। अनुवादक में विषय के विशेष शब्दावली, शैली, और संदेश को सही ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए। साहित्य के अनुवाद के दौरान साहित्य में व्यक्त भावना और संवेदनाओं को सही ढंग से प्रकट करना महत्वपूर्ण होता है, जबकि साहित्येतर अनुवाद में विषय संप्रेषण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यक होती है। भाषा, समाज में संवाद व संचार का मूल्य सेतु है। इनके अध्ययन का विज्ञान भाषाविज्ञान कहलाता है। भाषा विज्ञान के छः मुख्य अंग हैं जो भाषा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते हैं। ये अंग हैं: 1. ध्वनि विज्ञान (Phonetics), 2. शब्द विज्ञान (Morphology), 3. रूप

विज्ञान (Syntax), 4. वाक्य विज्ञान (Semantics), 5. अर्थ विज्ञान (Pragmatics) और 6. लिपि विज्ञान (Orthography)

ये अंग भाषा की विभिन्न दिशाओं में अध्ययन करते हैं और भाषा के संरचना, उपयोग, और उसके संप्रेषण के विविध तत्वों को समझने में मदद करते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि अनुवाद में भाषाविज्ञान के ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अनुवाद एक भाषिक व्यापार है। अनुवाद का संबंध दो भाषाओं से है। अनुवाद में मूलतः दो भिन्न भाषाओं का आमना-सामना होता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं का ज्ञान होना अनिवार्य है।

अनुवाद करते समय अनुवादक को बहुआयामी भूमिका निभानी होती है। उसे पाठक, भाषा विश्लेषक, विषय विशेषज्ञ और द्विभाषी बनना पड़ता है। अनुवाद भाषाविज्ञान के अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है। आधुनिक भाषाविज्ञान अर्थपरक, सांस्कृतिक एवं शैलीपरक समस्याओं के समाधान की खोज करने में मददगार साबित हो सकता है।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. फोन या कंप्यूटर में उपलब्ध विभिन्न ऐपों से अनुवाद करने में सहयता हो सकती है।
2. अनुवाद कला और विज्ञान का सम्मिश्रण है।
3. अनुवाद करने के लिए भाषाविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।
4. अनुवाद में भाषाविज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण है।
5. अनुवादक भाषा विज्ञान के सिद्धांतों की मदद से और अभ्यास से अनुवाद करने का कौशल विकसित कर सकता है।

3.6 शब्द संपदा

1. सूचना प्रौद्योगिकी	=	सूचना के संचालन तथा संसाधन की प्रौद्योगिकी
2. भाषाविज्ञान	=	भाषा के अध्ययन का विज्ञान
3. अनुवादक	=	अनुवाद करने वाला
4. स्रोत भाषा	=	भाषा जिससे अनुवाद किया जाना है
5. लक्ष्य भाषा	=	भाषा जिसमें अनुवाद किया जाना है
6. व्येतिरेक	=	भेद, अंतर, भिन्नता
7. अनुप्रयोग	=	किसी भी सिद्धांत का व्यवहारिक प्रयोग
8. अर्थविज्ञान	=	शब्द या वाक्य के अर्थ का अध्ययन करने वाल विज्ञान
9. रूपविज्ञान	=	रूप का अध्ययन करने वाल विज्ञान
10. शब्दविज्ञान	=	शब्द का अध्ययन करने वाल विज्ञान

11. समाज भाषाविज्ञान =	भाषा को प्रभावित करने वाले सामाजिक तत्वों का अध्ययन करने वाल विज्ञान
12. ध्वनिविज्ञान =	मानव मुख से उच्चरित ध्वनियों का अध्ययन करने वाला विज्ञान
13. सामाजिक =	समाज से संबंधित
14. सांस्कृतिक =	संस्कृति से संबंधित
15. सिद्धांत =	निश्चित मत, उस्तुति

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- (1) अनुवाद का सामान्य परिचय लिखकर उसकी प्रक्रिया पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
- (2) अनुवाद की समस्याओं की चर्चा कीजिए।
- (3) भाषा विज्ञान का सामान्य परिचय लिखते हुए उसकी विभिन्न शाखाओं के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
- (4) अनुवाद में भाषा विज्ञान की भूमिका पर अपने विचार उदाहरणों सहित लिखिए।
- (5) अनुवाद में सहायता करने वाले प्रकारों का परिचय परिचय लिखिए।

खंड (ब)

(ब) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

- (1) व्येतिरेकी भाषाविज्ञान किस तरह अनुवादक की सहायता कर सकता है?
- (2) अर्थविज्ञान क्यों अनुवाद के लिए उपयोगी है, लिखिए।
- (3) वाक्य विज्ञान की परिभाषा लिखते हुए अनुवाद में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए।
- (4) साहित्यिक अनुवाद और प्रशासनिक अनुवाद में क्या अंतर है?
- (5) ध्वनिविज्ञान से क्या आशय है, इसकी अनुवाद में क्या भूमिका हो सकती है?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. आज पूरी दुनिया में लगभग कितनी भाषाएँ बोली-समझी जाती हैं?

(अ) 7,000	(आ) 5000	(इ) 3000	(ई) 2000
-----------	----------	----------	----------
2. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का अनुवाद पोर्टल है-

(अ) हिंदी शब्द सिंधु	(आ) कंठस्थ	(इ) गूगल ट्रान्सलेट	(ई) नेवर पापागो
----------------------	------------	---------------------	-----------------

3. भाषा के अंगों, पहलुओं और प्रकारों का अध्ययन करनेवाला..... कहलाता है।
 (अ) अनुवादक (आ) अध्यापक (इ) भाषाविद (ई) पत्रकार
4. भारत सरकार के कामकाज में प्रयुक्त होने वाली हिंदी को किस नाम से जाना जाता है?
 (अ) साहित्यिक हिंदी (आ) कार्यालयीन हिंदी
 (इ) बाजार की भाषा (ई) सरकार की भाषा
5. भाषा की अर्थपूर्ण लघुतम इकाई है.....।
 (अ) ध्वनि (आ) वाक्य (इ) लिपि (ई) शब्द

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

-फोन के कैमरे से ली गई पाठ मद्रित तस्वीरों का अनुवाद कर सकता है।
- इंटरनेट जैसी तकनीक के द्वारा लोगों को जोड़कर दूरियों को समीपता में बदला जा रहा है।
- अधिक सटीक अनुवाद के लिए के ज्ञान की आवश्यकता होती है।
- अनुवाद करते समय अनुवादक कोचरणों से गुजरना होता है।
- प्रशासन की भाषा सुगठित होने के साथ-साथ , तथाहोनी चाहिए।

III. सुमेल कीजिए –

- | | |
|---------------------------|-------------------------------|
| 1. भाषा विज्ञान | (अ) अनुवाद का एप |
| 2. ई- सरल हिंदी वाक्य कोश | (आ) लिपि विज्ञान |
| 3. गूगल अनुवाद | (इ) लक्ष्य भाषा |
| 4. स्रोत भाषा | (उ) अर्थ विज्ञान |
| 5. अनुलेखन | (इ) राजभाषा विभाग, भारत सरकार |

3.8 पठनीय पुस्तकें

- अनुवाद विज्ञान : भोलानाथ तिवारी
- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग : डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया
- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग : डॉ. जी. गोपीनाथन
- अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य : संपादक – प्रो. दिलीप सिंह, प्रो. ऋषभदेव शर्मा
- अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : संपादक – प्रो. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी

इकाई 4 : अनुवाद का महत्व, सार्थकता और उपयोग

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूलपाठः अनुवाद का महत्व, सार्थकता और उपयोग

4.3.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ

4.3.2 अनुवाद की परिभाषा

4.3.3 अनुवाद का स्वरूप

4.3.4 साहित्य एवं अनुवाद

4.3.5 शिक्षा एवं अनुवाद

4.3.6 व्यवसाय, पर्यटन एवं अनुवाद

4.3.7 प्रशासन और अनुवाद

4.3.8 संचार क्रांति और अनुवाद

4.3.9 सूचना प्रौद्योगिकी एवं अनुवाद

4.3.10 अनुवाद की उपयोगिता

4.3.11 अनुवाद की सार्थकता

4.4 पाठ का सार

4.5 पाठ की उपलब्धि

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1. प्रस्तावना

प्रिय छात्रों ! एम.ए.चतुर्थ सत्र का यह तेरहवां प्रश्न-पत्र, जिसका शीर्षक है - अनुवाद सिद्धांत। इस प्रश्न पत्र की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में आप अनुवाद का महत्व, सार्थकता और उसके उपयोग संबंधी जानकारी प्राप्त करेंगे। छात्रों ! अनुवाद संबंधी आपकी जानकारी को ताजा करने के लिए इकाई का प्रारंभ अनुवाद का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप से किया गया है।

छात्रों ! वैसे तो हम सभी जानते हैं कि भारत एक बहु भाषी देश है और अपनी मातृभाषा या अपने आस-पास की भाषा को छोड़कर अन्य भाषाओं का ज्ञान रख पाना सभी के लिए संभव नहीं है। ऐसे में एक दूसरे की बातों या विचारों को समझने के लिए हमें एक ऐसी भाषा या माध्यम की जरूरत होती है जिसके जरिए दोनों के बीच संवाद स्थापित हो। ऐसी परिस्थिति में अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के लिए, हाल ही के दिनों में भारत के वर्तमान

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी चीन के अध्यक्ष श्री जिनपिंग के साथ तमिलनाडु के महाबलीपुरम का भ्रमण किया था तो उनके बीच अनुवादक की भूमिका निभा रहे थे तमिलनाडु के एक आई एफ एस अधिकारी श्री मधुसूदन रवींद्रन जो हिंदी, मलयालम अंग्रेजी और मातृ भाषा तमिल के अतिरिक्त चीन की भाषा मंदारिन पर अच्छी पकड़ रखते थे। उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि अनुवाद और अनुवादक दोनों ही दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करते हैं। छात्रों! उपरोक्त उदाहरण से आपको स्पष्ट हो गई होगी कि यदि दो भाषाओं का सही ज्ञान हो तो आप भी अनुवादक बन सकते हैं जो आपके जीविकोपार्जन का साधन बन सकता है। हमारा लक्ष्य न केवल आपका ज्ञान वर्धन कराना बल्कि अपने आप को रोजगार के लिए तैयार करना भी है।

इसी प्रस्तावना के साथ, हम आशा करते हैं कि इस पाठ के अध्ययन से अनुवाद संबंधी पूरी जानकारी आप प्राप्त कर लेंगे। तो चलिए, अब देर किस बात की? पाठ में चलते हैं।

4.2 : उद्देश्य

छात्रों! एम.ए. चतुर्थ सत्र, प्रश्न पत्र 13 अनुवाद सिद्धांत की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में आप अनुवाद का महत्व, सार्थकता एवं उपयोगिता से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे। लेकिन इससे पहले अनुवाद की प्रकृति, अनुवाद के प्रकार आदि की भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। अतः इस इकाई के अध्ययन से आप-

- अनुवाद का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप को समझ सकेंगे।
- अनुवाद की प्रकृति को स्पष्ट कर सकेंगे।
- अनुवाद के प्रकार तथा अनुवाद संबंधी अन्य विवरण को समझ सकेंगे।
- अनुवाद के महत्व को समझ सकेंगे।
- आप जान सकेंगे कि एक सार्थक अनुवाद किसे कहा जाता है।
- अनुवाद उपयोगी क्यों है या अनुवाद करने से क्या-क्या लाभ हैं इस संबंध में भी जानकारी एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- इसके साथ ही आप जान सकेंगे कि अनुवाद कार्य में एक अनुवादक की क्या भूमिका होती है।

4.3 : मूल पाठ : अनुवाद का महत्व, सार्थकता और उपयोग

अनुवाद मानव जीवन के प्रारंभ से ही चली आ रही प्रक्रिया या गतिविधि है। अनुवाद को एक भाषिक क्रिया कहा जाता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद का महत्व प्राचीन काल से ही स्वीकृत है। वर्तमान में भूमंडलीकरण के कारण द्विभाषिकता की स्थिति में वृद्धि हो रही है। जीवन के प्रत्येक कार्य-व्यापार में भाषा एवं अनुवाद की आवश्यकता बढ़ रही है। अनुवाद के बढ़ते महत्व एवं उपयोगिता को समझने से पहले अनुवाद की व्युत्पत्ति एवं अर्थ परिभाषा को जान लेना जरूरी है।

प्रिय छात्रों! आप सभी जानते ही हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है। यहां भाषा, संस्कृति, धर्म, रीति-रिवाज, पहनावा, रहन-सहन, खान-पान सभी में विविधता पाई जाती है। ऐसे में एक-दूसरे के साथ संवाद स्थापित करने के लिए भाषा या अनुवाद का सहारा लिया जा सकता

है। साहित्य संस्कृति का वाहक होता है और किसी निश्चित साहित्य के अनुवाद से उस निश्चित भाषा में रचित न केवल साहित्य का बल्कि पूरी संस्कृति का ज्ञान हो जाता है। आज जब दुनिया सिमट गई है, पूरा विश्व एक गांव में बदल गया है, ऐसे में न केवल देश भर में बल्कि पूरे विश्व की संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, तकनीक आदि से जुड़ने के लिए अनुवाद एक महत्तम मध्यम के रूप में कार्य कर रहा है। इस दृष्टि से भी अनुवाद का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। तो चलिए, अनुवाद के महत्व को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझने का प्रयास करें-

प्राचीन काल में अनुवाद का उपयोग :

छात्रों! अनुवाद कोई नई प्रक्रिया नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में अनुवाद का महत्व रहा है लेकिन जिस रूप में आज हम अनुवाद की बात करते हैं, उस रूप में अनुवाद प्रयुक्त न होने के बावजूद अनुवाद का अस्तित्व आती प्राचीन है। यह भी कहा जाता है कि मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य होता रहा है। मनुष्य पहले से ही घुमक्कड़ी प्रवृत्ति का रहा है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, बसना फिर आगे बढ़ना। ऐसे में भिन्न-भिन्न प्रांतों की भाषा-बोली को आत्मसात करने तथा अपने विचारों को समझाने मनुष्य ने भाषा और अनुवाद दोनों का प्रयोग करता आया है। संस्कृति सभ्यता के विकास के साथ भाषा और अनुवाद दोनों ही विकसित होते गए, ऐसा कहना गलत नहीं होगा। दुनिया के जितनी भी महान रचनाएं हुई हैं उनका अनुवाद दूसरी भाषाओं में हुआ है। यूनान मिस्र चीन आदि की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद का विशेष स्थान रहा है। संस्कृत साहित्य का दुनिया भर की भाषाओं में अनुवाद मिलता है। भारत के दो महान ग्रंथ रामायण और महाभारत पूरे भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया की भाषाओं में अनुवाद के रूप में चाहे पूर्णतः अनुवाद हो या मूल पाठ के रूपांतरण के रूप में या फिर पुनः सृजन के रूप में। भागवत या उपनिषद, अनुवाद मिलता है। पूरे एशिया में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है। हिंदी के आदिकाल की प्रारम्भिक रचनाएं जैन तथा बौद्ध साहित्य के प्रभाव से लिखे गए हैं या अनूदित हैं। अंग्रेजों के भारत आने के बाद पहला काम जो उन्होंने किया वह था बाइबल का भारतीय भाषाओं में अनुवाद। बीसवीं सदी से अनुवाद प्रक्रिया को मान्यता प्राप्त होने लगी। वैदिक युग के पुनः कथन से लेकर आज के Translation तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव के साथ बहुमुखी-बहुआयामी रूप को सिद्ध कर चुका है। आज विस्तृत फलक पर अनुवाद का प्रयोग हो रहा है। आज अनुवाद एक ऐसा माध्यम बन चुका है जिसके जरिए सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक आदान-प्रदान संभव हो पाया है।

बोध प्रश्न :

1. अनुवाद को अंग्रेजी में कहते हैं।
2. सदी से अनुवाद को मान्यता प्राप्त होने लगी।
3. एशिया में धर्म का प्रचार प्रसार अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है।

4.3.1 अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ :

अनुवाद शब्द मूलतः संस्कृत का तत्सम शब्द है जो अनु उपसर्ग तथा वाद के संयोग से बना है। संस्कृत के वद् धातु में घञ प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप वाद होता है। वद् धातु का अर्थ है बोलना या कहना और वाद का अर्थ है कहने की क्रिया या कही हुई बात। अनु उपसर्ग अनुवर्तिता के अर्थ में व्यवहृत होता है। वाद में यह अनु उपसर्ग जुड़कर बनने वाले शब्द को अनुवाद कहते हैं जिसका अर्थ होता है-प्राप्त कथन को पुनः कहना। अनुवाद की यह व्युत्पत्ति भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा से सम्बद्ध है। प्राचीन काल में भारत में गुरुकुल पद्धति प्रचलन में थी और शिक्षा की मौखिक परंपरा प्रचलन में थी। इसलिए गुरु के कथनों को दोहराया जाता था। इसी को अनुवचन अथवा अनुवाद कहा जाता था। इसके अतिरिक्त अनुवाद को व्याख्या, भाष्य या टीका के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता था, जिससे कही गई बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए पुनः व्याख्या की जाए।

भारत के महान वैयाकरण पाणिनी ने अपने अष्टाध्यायी में ‘अनुवादे चरणानाम’ कहा है, जिसका अर्थ होता है- पहले कही गई किसी बात को फिर से कहना, पुनः उच्चारण करना। एक अन्य महान विद्वान भर्तृहरि ने भी अनुवाद का प्रयोग इसी अर्थ में ‘आवृत्तिरनुवादो वा’ कहा है अर्थात् जिसकी आवृत्ति होती है वह अनुवाद है। शब्दार्थ चिंतामणी में अनुवाद के लिए दो व्युत्पत्तियां दी गई हैं: ‘प्राप्तस्य पुनःकथनम्’ व “ज्ञातार्थस्य प्रतिपदनम्”। इसका भी तात्पर्य यही है कि जो बात पहले कही गई है, उसे दोहराना। कोश में भी अनुवाद का अर्थ दुहराना या आवृत्ति ही होता है। वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिंदी कोश में इसका अर्थ दिया है- सामान्य रूप से आवृत्ति (दुहराना), व्याख्या, उदाहरण या समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति। व्याख्यात्मक आवृत्ति या उल्लेख का पुनरुल्लेख। हिंदी में अनुवाद शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के translation के पर्याय के रूप में किया जाता है।

शुरू-शुरू में हिंदी में भी अनुवाद शब्द को संस्कृत शब्द के अर्थ-प्रसंग में ही लिया जाता रहा। इसलिए इसका पर्याय अनुवचन, अनुवाक, अनुकथन, पश्चकथन, टीका, भाषानुवाद, आवृत्ति आदि शब्द प्रचलन में रहे। लेकिन कालांतर में विशेषतः आधुनिक काल में हिंदी में इसका प्रयोग अंग्रेजी के Translation शब्द के पर्याय के रूप में किया जाने लगा। संस्कृत की भांति, अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द translation भी दो शब्दों के मेल से बना है यथा, trans(भाषा के पार) +lation(ले जाना)।

Translation शब्द की व्युत्पत्ति मूलत लैटिन भाषा का शब्द :translatio से हुई है जिसका अर्थ होता है पार ले जाना। यह शब्द trans तथा ferre के मेल से बना है जिसका अर्थ होता है एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना। अर्थात् -, एक स्थान बिंदु से दूसरे स्थान बिंदु पर ले जाना। यहां एक स्थान बिंदु स्रोत भाषा या ‘source language’ है तो दूसरा स्थान

बिंदु लक्ष्य भाषा या-target language है और ले जाने वाली वस्तु मूल या स्रोत भाषा में निहित अर्थ या संदेश होती है।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में ट्रैन्स्लैशन का अर्थ इस प्रकार दिया गया है- 'a written or spoken rendering of the meaning of a word, speech, book etc in an another language.(अर्थात्, अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण है। किसी एक भाषा के शब्द, कथन, पुस्तक आदि का दूसरी भाषा में लिखित या मौखिक प्रस्तुतीकरण है।) इसी प्रकार वेबस्टर डिक्शनरी में 'Translation is a rendering from one language or representational system into another. Translation is an art that involves the recreation of work in another language, for readers with different background कहा गया है। (अर्थात्, अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण अथवा प्रतिनिधित्व की पद्धति है। अनुवाद ऐसी कला है, जिसमें भिन्न पृष्ठ-भूमि वाले पाठकों के लिए किसी रचना का किसी और भाषा में पुनर्सृजन होता है।)

उपरोक्त दोनों कथनों से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद एक ऐसी कला है जिसमें मौखिक या लिखित शब्दों के अर्थ को, वाक या किताब को दूसरी भाषा में इस प्रकार ले जाया जाता है जिससे दूसरी परिस्थिति या माहौल में रहने वाले पाठक के मन को छू लें।

छात्रों! हमें विश्वास है कि अब तक की सामग्री के पठन से आपके मन में ट्रैन्स्लैशन/अनुवाद के संबंध में कुछ हद तक स्पष्ट चित्र उभरी होगी। फिर भी उसकी पुष्टि के लिए हम आपको बता दें - अंग्रेजी के Translation शब्द के पर्याय के रूप में हिंदी में अनुवाद शब्द का प्रयोग होता है। अनुवाद का सामान्य अर्थ है एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना या ले जाना। अतः अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। अनुवाद जिस भाषा से किया जाता है उसे स्रोत भाषा कहते हैं और जिस भाषा में किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं। जो अनुवाद कार्य करता है, उसे अनुवादक कहते हैं। एक कुशल अनुवादक वही होता है जिसे दोनों भाषाओं का उचित ज्ञान होता है।

इस विवरण के साथ चलिए छात्रों, अनुवाद की परिभाषा की ओर चलते हैं।

बोध प्रश्न

1. अनुवाद की व्युत्पत्ति बताइए।
2. अष्टाध्यायी किसी रचना है?
3. अष्टाध्यायी में अनुवाद के बारे में क्या कहा गया है?
4. शब्दार्थ चिंतामणी में अनुवाद के संबंध में क्या लिखा गया है?

4.3.2 अनुवाद की परिभाषा

सामान्यतः अनुवाद कर्म में एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त किया जाता है। लेकिन फिर भी विद्वानों ने अनुवाद को विभिन्न दृष्टिकोणों में परिभाषित किया है।

पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने अनुवाद को परिभाषित किया है। तो छात्रों! चलिए, देखते हैं कि न-किन विद्वानों ने अनुवाद को किन-किन शब्दों में परिभाषित किया है।

क) पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं

- **ई.ए नाइडा** : अनुवाद का तात्पर्य है स्नोत-भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य-भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है फिर शैली के स्तर पर।
- **जॉन कर्निंगटन** : लेखक ने जो कुछ कहा है, अनुवादक को उसके अनुवाद का प्रयत्न तो करना ही है, जिस ढंग से कहा, उसके निर्वाह का भी प्रयत्न करना चाहिए।
- **सैमएल जॉनसन** : मूल भाषा की पाठ्यसामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना अनुवाद है।
- **कैटफोड़** : एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापना ही अनुवाद है।
- **हैलिडे** : अनुवाद एक संबंध है जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं।
- **फॉरस्टन** : एक भाषा की पाठ्य सामग्री के तत्त्वों को दूसरी भाषा में स्थानांतरित कर देना अनुवाद कहलाता है। यह ध्यातव्य है कि हम तत्त्व या कथ्य को संरचना से हमेशा अलग नहीं कर सकते हैं।
- **न्यूमार्क** : अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

उपरोक्त पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को यदि हम ध्यान से पढ़ें तो हम समझ पायेंगे कि नाइडा ने अनुवाद में अर्थ पक्ष, शैली पक्ष के साथ समतुल्यता पर बाल दिया है। नाइडा ने मूल पाठ के शिल्प की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्व दिया है तो कैटफोर्ड ने अर्थ की तुलना में शिल्प संबंधी तत्त्वों को महत्व दिया है। सैमएल जॉनसन ने अनुवाद में भावों की रक्षा की बात कही है तो न्यूमार्क ने अनुवाद-कर्म को शिल्प मानते हुए निहित संदेश को प्रतिस्थापित करने की बात कही है। हैलिडे अनुवाद को प्रक्रिया या उसके परिणाम के रूप में न देख कर उसे दो भाषा-पाठों के बीच ऐसे संबंध के रूप में परिभाषित करते हैं, जो दो भाषाओं के पाठों के मध्य होता है। कुल मिलाकर इन सभी विद्वानों की परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद एक भाषा पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा पाठ में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का परिणाम है।

ख) भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएं

- **भोलानाथ तिवारी** : भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग। इस प्रकार अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों की अभिव्यक्ति होती है।
- **देवेंद्रनाथ शर्मा** : विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद है।

- **तेजस्विनी निरंजना:** अनुवाद असमान शक्ति संबंध के लिए एक अतिरिक्त रूप है जो उपनिवेश अथवा उपनिवेशित की स्थिति को परिभाषित करता है।
- **बालेंदु शेखर तिवारी :** अनुवाद एक भाषा समुदाय के विचार और अनुभव सामग्री को दूसरी भाषा समुदाय की शब्दावली में लगभग यथावत संप्रेषित करने की सोदैश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- **विनोद गोदरे :** अनुवाद, स्रोत भाषा में अभिव्यक्ति विचार अथवा व्यक्ति रचना या सूचना साहित्य को यथासंभव मूल भवन के समानांतर बोध एवं संप्रेषण के धरातल पर लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति करने की प्रक्रिया है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर 'अनुवाद' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है- 'अनुवाद, मूल-भाषा या स्रोत-भाषा में निहित अर्थ व शैली को यथा संभव सहज समतुल्य रूप में लक्ष्य भाषा की प्रकृति व शैली के अनुसार परिवर्तित करने की सोदैश्यपूर्ण प्रक्रिया है।

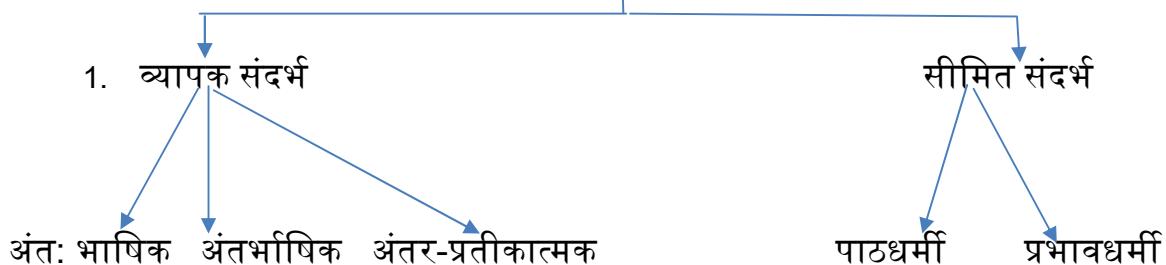
बोध प्रश्न :

1. अनुवाद की परिभाषा देने वाले दो विदेशी विद्वानों के नाम लिखिए।
2. अनुवाद की परिभाषा देने वाले किन्हीं दो भारतीय विद्वानों के नाम लिखिए।
3. 'अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों की अभिव्यक्ति होती है'-किसने कहा है।
4. ने अनुवाद-कर्म को शिल्प माना है।

4.3.3 अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद के स्वरूप पर चर्चा करते हुए उसे मूलतः दो संदर्भों में देख गया है।

अनुवाद का स्वरूप



अनुवाद के स्वरूप को व्यापक और सीमित दो संदर्भों में देखा जाता है।

4.3.3.1 अनुवाद का सीमित संदर्भः

सीमित संदर्भ में अनुवाद को एक भाषिक क्रिया माना गया है। सीमित स्वरूप में अनुवाद को दो भाषाओं के मध्य होने वाले अर्थ का अंतरण माना जाता है। इसके दो आयाम होते हैं-

- क) पाठधर्मी आयाम तथा
- ख) प्रभावधर्मी आयाम

- क) **पाठधर्मी आयाम:** जैसे नाम ही सूचित करता है, ऐसे अनुवाद जिसमें मूल पाठ के धर्म को निभाया जाता है अर्थात् मूल पाठ को ठेस न पहुंचाते हुए अनुवाद किया जाता है। ऐसे अनुवादों में अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह मूल पाठ के प्रति ईमानदार हो। और अनुवादक इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि मूल पाठ की आत्मा अनुवाद के दौरान नष्ट न हो। इसका तात्पर्य यह कि ऐसे अनुवादों में अनुवादक को किसी भी प्रकार की छूट नहीं मिलती है। उसे मूल पाठ के कथ्य तथा शिल्प दोनों का समान ध्यान रखना होता है। और यथासंभव लक्ष्य भाषा में लाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में कार्यालयी, विधि, विज्ञान, तकनीकी, सूचना तथा अन्य ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद किया जाता है।
- ख) **प्रभावधर्मी अनुवाद:** इसमें भी नाम ही सूचित करता है प्रभाव धर्म को निभाना, अर्थात् पाठ के प्रभाव को केंद्र में रखकर अनुवाद करना। स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा के पाठक एवं समाज पर भी वैसा ही असर पड़े, इसलिए इसमें लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल अनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक को कुछ हद तक छूट मिलती है, लेकिन लक्ष्य भाषा का समाज, संस्कृति आदि का ज्ञान होना आवश्यक है। साहित्य के अंतर्गत कविता का अनुवाद प्रभावधर्मी अनुवाद होता है।

बोध प्रश्न -

1. अनुवाद के स्वरूप को कितने संदर्भों में देखा जाता है?
 2. कविता का अनुवाद किसके अंतर्गत आता है?
 3. विज्ञान, सूचना आदि किस प्रकार के अनुवाद हैं?
 4. सीमित स्वरूप में अनुवाद को दो के मध्य होने वाले अर्थ का अंतरण माना जाता है।
- 4.3.3.2 अनुवाद का व्यापक संदर्भ :**

व्यापक संदर्भ में अनुवाद को प्रतीकांतरण माना गया है। अर्थात् दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के मध्य होने वाला 'अर्थ का अंतरण माना जाता है'। इनके तीन वर्ग हो सकते हैं-

- क) **अंतःभाषिक अनुवाद (Intra Lingual Translation)**
- ख) **अंतरभाषिक अनुवाद (Inter lingual translation)**
- ग) **अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter semiotic translation)**
- क) **अंतःभाषिक अनुवाद** से तात्पर्य है एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त पाठ को उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था में रखना अथवा प्रस्तुत करना। अर्थात् एक ही भाषा के दो भिन्न प्रतीकों के मध्य अनुवाद करना अंतःभाषिक अनुवाद होता है। उदाहरण के लिए हिंदी की किसी कविता का अनुवाद किसी गद्य में करना या किसी कहानी को कविता में बदलना। संस्कृत में लिखी गई टीकाएं इसके उदाहरण हैं जहां संस्कृत में लिखे गए काव्य को सरल टीकाओं में व्यक्त किया जाता है।
- ख) **अंतरभाषिक अनुवाद :** एक भाषा के प्रतीकों में व्यक्त पाठ को दूसरी भाषा के प्रतीकों में अंतरण करना अंतरभाषिक अनुवाद होता है। इसमें दो भिन्न भाषा प्रतीकों का होना

आवश्यक है। इसमें अनुवादक को न केवल स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा की संरचना, प्रकृति आदि से परिचित होना पड़ता है। इसके साथ ही दोनों भाषाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं आदि की सम्यक जानकारी का होना आवश्यक है। इसे अंग्रेजी में Proper Translation कहते हैं। आजकल इस प्रकार के अनुवाद की अधिक मांग होती है। सृजनात्मक तथा ज्ञानात्मक साहित्य का प्रसार इस प्रकार के अनुवाद से ही संभव है क्योंकि इसमें दोनों भाषाओं की सक्रिय भूमिका होती है।

g) अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद: इसमें किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है। इसे रूपांतरण भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए- किसी उपन्यास, कहानी या नाटक का धारावाहिक के रूप में रूपांतरण करना। यहां अंतरण भाषिक न होकर रूपगत होता है। शरतचंद्र, प्रेमचंद, शेक्सपियर, कमलेश्वर या किसी अन्य रचनाकार की रचना को आदि की रचनाओं को फ़िल्म के रूप में या धारावाहिक के रूप में अंतरण करना। इसमें प्रतीक-1 का संबंध भाषा से ही होता है, जब कि प्रतीक-2 का संबंध किसी दृश्य माध्यम से होता है। अमृता प्रीतम के पिंजर उपन्यास का 'पिंजर' फ़िल्म, कमलेश्वर की काली आंधी उपन्यास का आंधी फ़िल्म, यू आर अनंतमूर्ति के संस्कार उपन्यास का संस्कार फ़िल्म, प्रेमचंद के निर्मला उपन्यास का निर्मला धारावाहिक आदि इस प्रकार के अनुवाद के कुछ उदाहरण हैं।

बोध प्रश्न -

1. व्यापक संदर्भ में अनुवाद को माना गया है।
2. अंतर -प्रतीकात्मक अनुवाद में प्रतीक-1 का संबंधसे होता है।
3.अनुवाद को अंग्रेजी में Proper Translation कहते हैं।
4. संस्कृत में लिखी गई टीकाएंप्रकार के अनुवाद माने जाते हैं।
5. Intra Lingual Translation को हिंदी मेंकहते हैं।

4.3.4 साहित्य एवं अनुवाद

सहितस्य भाव: साहित्य। अर्थात् जो सब के हित की बात करता है वही साहित्य है। साहित्य का मूल उद्देश्य मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना है। सभ्यता का जैसे-जैसे विकास होता गया वैसे-वैसे ही साहित्य लेखन होता गया और उसके साथ ही उनका अनुवाद भी होता गया। इसलिए यह कहना ठीक रहेगा कि साहित्य के साथ ही अनुवाद कदम से कदम मिलकर चल रहा है। पहले भी बताया गया है कि रामायण महाभारत आदि का दुनिया भर की भाषाओं में अनुवाद हुआ है। विश्व साहित्य के माध्यम से हम फ्रेंच रूस की क्रांति को समझ सकते हैं। साहित्य के अनुवाद के माध्यम से हमारे सीखने-सिखाने की क्रिया निरंतर चलती रहती है। अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने से वहां की संवेदनाएं, विचारधारा, जीवन-अनुभूतियों और साहित्य शैली का परिचय मिलता है। साहित्य के अनुवाद के माध्यम से हम किसी निश्चित

समाज और संस्कृति को बेहतर समझ सकते हैं। इससे हमारी चिंतन शक्ति और साहित्य सृजन विकसित होती है। विश्व साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है। आज अनुवाद के माध्यम से निम्नलिखित साहित्यों का अध्ययन संभव हो पाया है-

- भारतीय साहित्य का अध्ययन।
- अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अध्ययन।
- तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन।

भारतीय साहित्य के अध्ययन ने पूरे भारत देश की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है। इस अध्ययन से हम समझ पाते हैं कि भारत क्यों अनेकता में एकता का देश हैं। उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से पश्चिम, रीति-रिवाज, संप्रदाय, रहन-सहन, खान-पान में ऊपरी स्तर पर भेद होने पर भी एक आंतरिक समानता पाई जाती है जिसे समझने के लिए अनुवाद हमारी सहायता करता है। हिंदी ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य के अध्ययन से हमें पता चलता है कि लगभग भारत की सभी भाषाओं के साहित्य लेखन अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। बौद्ध और जैन प्रभाव पूरे भारत वर्ष पर रहा है। मध्यकाल के भक्ति आंदोलन का प्रभाव पूरे भारत वर्ष में देखी जा सकती है। स्वतंत्रता की चिंगारी पूरे देश भर में एक समान सुलग रही थी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य ने पूरे भारत के और विदेशी रचनाकारों को प्रभावित किया है।

अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के अनुवाद से पता चलता है कि दुनिया के विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य में ज्ञान का विपुल भण्डार छिपा हुआ है। सूफियों के दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रचलन से ही भारत में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का अनुवाद शुरू हुआ था, लेकिन इसे एक व्यवस्थित स्वरूप आधुनिक युग में ही प्राप्त हुआ। विलियम शेक्सपियर, डी.एच. लॉरेंस, मोपासाँ तथा सार्व जैसे चिन्तकों की रचनाओं के अनुवाद से भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ। कालिदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं प्रेमचन्द की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ। छायावाद पश्चिम के रोमांटिसीजम का परिणाम है। प्रगतिवाद मार्क्सवाद से विकसित हुई है। भारतीय धर्म दर्शन आयुर्वेद, योग शास्त्र आदि की विशेषता यदि विश्व भर में आज समाहित है तो अनुवाद के मध्यम से ही यह संभव हो पाया है।

दुनिया के विभिन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा इस बात का पता लगाया जाता है कि देश, काल और समय की भिन्नता के बावजूद विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य क्यों हैं? अनुवाद के द्वारा ही जो तुलनीय है वह तुलनात्मक अध्ययन का विषय बनता है। प्रेमचन्द और गोर्की, निराला और इलियट तथा राजकमल चौधरी एवं मोपासाँ और इस प्रकार के तमाम साहित्य एवं साहित्यकारों का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव हो सका है।

बोध प्रश्न -

1. सूफियों के दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रचलन से भारत मेंसाहित्य का अनुवाद शुरू हुआ था।
2. छायावाद पश्चिम केका परिणाम है।
3. हिंदी में प्रगतिवाद से विकसित हुई है।

4.3.5. शिक्षा और अनुवाद

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष स्थान है। पूरी दुनिया ज्ञान के भंडार से भरा हुआ है। दुनिया के कोने-कोने में व्याप्त ज्ञान राशि को विद्यार्थी या शोधकर्ता तक पहुंचाने का कार्य अनुवाद से संभव हो पाता है। अनुवाद के माध्यम से ही शिक्षार्थियों को नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराई जा सकती है। स्कूल-कालेजों में भारतीय साहित्य के साथ-साथ अंग्रेजी और विदेशी साहित्य भी पढ़ाया जाता है। यहां तक कि फ्रेंच, जर्मन, जापानी आदि भाषाओं को स्कूल-कालेजों में अनुवाद के सहारे पढ़ाया और सिखाया जाता है। इसके माध्यम से वैश्विक परिदृश्य को समझने में छात्र सक्षम हो पाता है। अध्ययन के लिए भारत के छात्र विदेश जाते हैं और विदेशी छात्र भारत आते हैं, तब अनुवाद की विशेष भूमिका होती है।

4.3.6 व्यावसाय, पर्यटन एवं अनुवाद

आज, उद्योग व्यवसाय आयात निर्यात आदि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संभव हो पाया है और इसके पीछे अनुवाद के योगदान को ठुकराया नहीं जा सकता। ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी या प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास तेजी से हुआ है उसके विकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का भारतीयकरण कर इन्हें लोकोन्मुख करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद को महत्वपूर्ण पद पर आसीन करता है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात् केन्द्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और प्रतिष्ठानों में राजभाषा प्रभाग की स्थापना हुई जहाँ अनुवाद कार्य में प्रशिक्षित हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी अधिकारी कार्य करते हैं। आज रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद सबसे आगे है। दुनिया ग्लोबल गांव बन गया है। ऐसे में पर्यटन हेतु पूरे विश्व का द्वार खुला हुआ है। आजकल पर्यटन एक बड़े व्यवसाय के रूप में उभरा है। विभिन्न पर्यटन स्थलों की जानकारी लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध है। यहां तक कि आजकल व्यवसाय या पर्यटन कोई भी विभाग संबंधी विवरण हो आपको अपनी भाषा में उपलब्ध कराया जाता है। सूचना पट्ट, ब्रोशर्स, मार्गदर्शिका सभी विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होते हैं। पर्यटन संस्कृति के विकास और संस्कृति के आदान-प्रदान में भी विशेष योगदान देता है।

बोध प्रश्न :

1. दुनिया गांव बन गया है।
2. बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्धके क्षेत्र में अनुवाद को महत्वपूर्ण पद पर आसीन करता है।

3. संविधान में हिंदी कोका दर्जा दिया गया है।

4.3.7 प्रशासन और अनुवाद

भारत में अलग-अलग राज्यों की राजभाषा वहां की भाषा होती है जिसमें प्रत्येक राज्य का कार्य संचालित होता है। संघ की राजभाषा हिंदी है और यह प्रावधान दिया गया है कि कार्यालयीन कार्य हिंदी और अंग्रेजी में किया जाना चाहिए। तात्पर्य यह कि प्रशासनिक कार्य द्विभाषा में चलता है। और जहां द्विभाषा कार्य करता है वहां अनुवाद का महत्व अपने आप सिद्ध हो जाता है। अंग्रेजी में उपलब्ध सभी दस्तावेजों को हिंदी में अनुवाद किया जाता है। प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली तैयार की गई है। प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद का विशेष महत्व को नकार नहीं सकते हैं।

4.3.8 संचार क्रांति और अनुवाद

आज, जनसंचार माध्यम का पूरा व्यवसाय अनुवाद पर केंद्रित है। दुनिया भर की खबरें 24 घंटे आपकी अपनी भाषा में परोसी जाती हैं उसके पीछे अनुवाद का बहुत योगदान होता है। कोई भी समाचारपत्र, रेडियो व टीवी चैनल ऐसा नहीं है, जहां अनुवाद की जरूरत महसूस न होती हो। विज्ञापन, कार्टून उद्योग, फिल्म में डबिंग, आदि में अनुवाद की भूमिका होती है। संवाददाता से लेकर संपादक तक सभी को किसी न किसी स्तर में अनुवाद करना ही पड़ता है। सफल पत्रकार बनने के लिए पत्रकारिता के साथ अनुवाद में दक्ष होना आवश्यक है।

संचार क्रांति के इस दौर में आडियो बुक्स की हम बात करते हैं जिसके जरिए दुनिया भर की कहानियों को आपकी अपनी भाषा में परोसी जाती है। यह अनुवाद के बिना कैसे संभव हो पाता?

वर्तमान में सिनेमा एक साथ ही पांच-सात भाषाओं में रिलीज होती है। भारतीय सिनेमा केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी काफी प्रचलित होते हैं। हिंदी फिल्मों के गाने पूरे विश्व में पसंद किए जाते हैं। डबिंग और सबटाइटलिंग फिल्म इंडस्ट्री की बुनियादी जरूरत है जो अनुवाद पर टिकी हुई है। अनुवाद का सहारा लेकर सिनेमा बुलंदियों को छू रहा है। टाइटेनिक फिल्म इसका बहुत बड़ा उदाहरण है।

आज ओटीटी के माध्यम से हम अपनी भाषा में वेब-सीरीज देख सकते हैं जो दूरदर्शन के धारवाहिक से भी ज्यादा प्रचलित होते जा रहे हैं। इसी प्रकार ओटीटी में कोरिया, चीनी, जापानी आदि विदेशी भाषा की वेब सीरीज अब भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो रहे हैं। यूट्यूब, फ़ेसबुक, इंस्टाग्राम चाहे कोई भी आधुनिक प्लॉटफार्म को लीजिए, विषय आपकी भाषा में उपलब्ध हो जाती है। तात्कालिक अनुवाद में गूगल अनुवाद की अपनी सीमाएं होने के बावजूद शाब्दिक अनुवाद या शब्दों के अर्थ को तुरंत गूगल के माध्यम से जाना जा सकता है। वर्तमान संचार क्रांति हमारे सम्मुख है जिसमें अनुवाद की भूमिका स्वतः सिद्ध होती है।

इसी क्रम में विज्ञापन भी एक ऐसा क्षेत्र है जहां अनुवाद की यहां भूमिका होती है। जनसंचार माध्यम के सभी क्षेत्रों में अनुवाद के महत्व को देखते हुए तथा अनुवाद को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नेशनल ट्रांसलेशन मिशन का गठन किया है।

4.3.9 सूचना प्रौद्योगिकी एवं अनुवाद

छात्रों! हम सभी जानते हैं कि वर्तमान दौर सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति ने पूरे विश्व को सूचनाओं से भर दिया है। आज चुटकी भर में सूचनाएं हमें उपलब्ध हो जाते हैं। आज सूचना के इतने गैजेट्स तथा एप उपलब्ध हैं जो आपकी अपनी भाषा में मिलते हैं। चिकित्सा, व्यापार, पर्यटन सभी क्षेत्रों में जो सूचनाएं मिलने लगी हैं उससे पूरा विश्व एक गांव बन गया है। आज का युग डिजिटल युग है। इस डिजिटल युग की एक और विशेषता है सूचना का अपनी भाषा में उपलब्ध होना जो कि अनुवाद के सहारे ही संभव हो पता है। मशीनी अनुवाद का इसमें बहुत बड़ा योगदान होता है।

छात्रों! आपकी जानकारी के लिए कुछ ऐसे क्षेत्रों की चर्चा यहां की गई है जहां पर अनुवाद का प्रयोग अनिवार्यतः किया जाता है। लेकिन, आपको यह जान लेना चाहिए कि ऐसे और भी कई क्षेत्र हैं जहां अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है या की जाती है। इस दृष्टि से हम यही समझ सकते हैं अनुवाद व्यापक स्तर पर व्याप्त अनिवार्य प्रक्रिया है अंतः इस क्षेत्र में जीविकोपार्जन की अतीव संभावनाएं हैं।

4.3.10 अनुवाद की उपयोगिता :

छात्रों! अब तक अपने अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप एवं महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त की। अनुवाद के महत्व को पढ़ने के बाद आप स्वयं समझ चुके होंगे कि अनुवाद एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया या माध्यम है। आज अनुवाद के कारण एक भाषा एवं भाषिक इकाई को दूसरी भाषा की तुलना में अपने साहित्य एवं विकसित ज्ञान-विज्ञान का अंदाजा लगता है, वहीं अनुवाद द्वारा किसी भाषा की मानसिकता एवं प्रकृति का हमें पता भी चलता है। अनुवाद वर्तमान की जरूरत है। अनुवाद वह दीपक है जो तम से प्रकाश की ओर हमें ले चलता है। भारत में आजादी के बाद विकास की योजनाएं बनने लगी, शिक्षा, प्रशासन, विधि आदि क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं पर दबाव बढ़ने लगी थी, तब भारतीय भाषाओं में विशेषतः हिंदी में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की आवश्यकता पड़ी। इस कठिन कर्म को अंजाम देने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तभी से अनुवाद का महत्व विविध क्षेत्रों में बढ़ता ही जा रहा है। विधि के क्षेत्र में बदलाव की जरूरत है क्योंकि आज भी न्यायालय में अंग्रेजी ही प्रयुक्त होती है। निचली अदालतों में कागजात स्थानीय या प्रादेशिक भाषाओं में होते हैं, लेकिन कामकाज की भाषा अंग्रेजी होती है। जब मामला सर्वोच्च न्यायालय में पहुंचता है तब सारे दस्तावेजों का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में अनुवादकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

यदि आपके पास सारे प्रमाण पत्र हिंदी में हैं और आपको दक्षिण भारत में किन्हीं कारण वश रहना पड़ता है, तब आपके सभी दस्तावेजों का अंग्रेजी अनुवाद करवाना पड़ता है, अन्यथा उसे स्वीकृत नहीं किया जाएगा। इसी क्रम में, दक्षिण भारत में स्थित केंद्र सरकार के अंतर्गत कार्यरत विभागों जैसे पवन ऊर्जा, टेक्सटार्डल इंडस्ट्री आदि विभागों के वार्षिक रिपोर्ट को हिंदी में प्रस्तुत करना अनिवार्य होता है क्योंकि केंद्र की राजभाषा हिंदी है। अंतः राजभाषा

अधिनियम के अंतर्गत त्रै-मासिक बैठक हो या कोई अन्य दस्तावेज या रिपोर्ट उसका हिंदी अनुवाद करवाया जाता है। इसमें भी अनुवादक की भूमिका अहम होती है।

मीडिया के क्षेत्र में अनुवाद का एक अप्रतिम उदाहरण है। आज सूचनाएं तुरंत ही प्राप्त हो जाते हैं। हर क्षेत्रीय भाषा में मीडिया आज उपलब्ध है। इन क्षेत्रीय चैनलों पर उपलब्ध होने वाली सूचनाएं एवं समाचार अनुवाद प्रक्रिया के ही परिणाम होते हैं। कार्यालयों में अनुवाद संबंधी रोजगार की पूरी संभावना होती है। बैंकों में तथा अन्य विभागों में हिंदी अनुवादक का पद होता है और अनुवाद की अहम भूमिका होती है।

राजभाषा हिंदी के प्रग्रामी प्रयोग में अनुवाद की महत्वपूर्ण और अपरिहार्य आवश्यकता को देखते हुए 1 मार्च 1971 को गृह मंत्रालय के अधीन केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई और केंद्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों, आदि के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य का अनुवाद कार्य केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। यह ब्यूरो अनुवाद प्रशिक्षण देने का कार्य भी करता है।

मशीनी अनुवाद के माध्यम से आज अनुवाद कार्य किया जाता है। मशीनी अनुवाद को एक विशिष्ट कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा संचालित किया जाता है। मशीनी अनुवाद मूलतः अनुवाद कार्य को तेज गति से करने और सरल बनाने के एक उपकरण के रूप में कार्य करता है। लेकिन मशीनी अनुवाद की अपनी सीमाएं और चुनौतियां भी हैं। फिर भी इस बात की पुष्टि होती है कि अनुवाद का अपना महत्व है इसलिए मशीनी अनुवाद विकसित हुआ है।

फिल्म इंडस्ट्री, कार्टून फिल्म, लिखित साहित्य, विज्ञापन जैसे हर क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

बोध प्रश्न :

1.अनुवाद को एक विशिष्ट कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा संचालित किया जाता है।
2. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापनाको हुई थी।
3. किन्हीं दो क्षेत्र बताएं जहां अनुवाद का महत्व हो।
4. translation कौन सी भाषा का शब्द है?

4.3.11 अनुवाद की सार्थकता

हमारे दैनिक जीवन में अनुवाद का बहुआयामी महत्व है। आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व स्वयं सिद्ध है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष योगदान होता है। भारत के संविधान में कुल 22 भाषाएं मान्यता प्राप्त हैं। उन सभी भाषाओं के बीच संपर्क साधने और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में अनुवाद की अहम भूमिका होती है। हिंदी और अंग्रेजी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस द्विभाषिकता स्थिति में अनुवाद बहुत काम आता है। इतना ही नहीं, अनुवाद दो भाषा व संस्कृति के बीच सेतु का कार्य करता है। किसी भाषा में रचित साहित्य से हम उस भाषा के समाज व संस्कृति को जान सकते हैं किंतु अनुवाद के माध्यम से हम दूसरी भाषा की संस्कृति को भी समझ सकते हैं। वर्तमान युग विज्ञान और प्रौद्योगिक युग है। विज्ञान का सृजन अनेकों भाषाओं में अनुवाद के कारण ही संभव हो पाया है। ईसाई धर्म हो, इस्लाम धर्म हो, बौद्ध धर्म हो या दुनिया का कोई भी धर्म हो, प्रचार के लिए

अनुवाद का ही चयन किया जाता है ताकि ज्यादा-से ज्यादा लोगों में या समुदाय में धर्म का प्रचार हो।

सही और सार्थक अनुवाद के लिए अनुवादक की भूमिका अहम होती है। चूंकि अनुवादक को दोनों भाषाओं का परिपूर्ण ज्ञान का होना जरूरी है। अनुवाद की प्रकृति विषय पर निर्भर करती है। शिक्षा, व्यवसाय, विज्ञान, साहित्य, अध्यात्म, राजनीति आदि क्षेत्रों में अनुवाद को एक विशिष्ट शैली में करना पड़ता है।

जै। डब्ल्यू गएटे का कथं है- ‘अनुवाद की अपूर्णता के संबंध में कोई चाहे जो भी कहे, परंतु अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और महानतम् कार्य है।’ अनुवाद की संकल्पना न होती तो फिर हमारा ज्ञान सीमित हो जाता। आजकल विशिष्ट अनुशासन के रूप में अनुवाद को महत्व दिया जा रहा है। शिक्षण संस्थानों में अनुवाद विषयक शिक्षण दिया जा रहा है।

प्रो. जी. गोपीनाथन के शब्दों में - “अनुवाद मानव की मूलभूत एकता की व्यक्ति-चेतन एवं विश्व-चेतन के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है।” अंतः वर्तमान में अनुवाद अपनी संकुचित साहित्यिक परिधि को लांघकर विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर रहा है। बाजारों में, उद्योग-व्यापारों में, शासकीय व्यवस्था में, साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का योगदान रहता है। वसुधैवकुटुंबकम् या विश्वकुटुंबकम् के स्वप्न को साकार करने की दिशा में अनुवाद की भूमिका उल्लेखनीय है। कुल मिलकर कहा जा सकता है कि अनुवाद की भूमिका वर्तमान युग में केवल भाषा और साहित्य तक सीमित न होकर हमारी संस्कृति, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय एकता का कारक बनता जा रहा है। विश्व संस्कृति, विश्व सभ्यता, विश्व बंधुत्व के बीच एकता स्थापित करने में अनुवाद सेतु का कार्य करता है।

4.4. प्रस्तावना

प्रिय छात्रों ! अब तक आपने अनुवाद से संबंधित जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। विकासशील समाज में अनुवाद अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान परिस्थितियों में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है। शिक्षा से लेकर विज्ञान, संचार, प्रौद्योगिकी, विज्ञापन, सिनेमा आदि सभी क्षेत्रों में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुवाद विधि एवं कानून के क्षेत्र में बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। अनुवाद के महत्व को अंगीकार करते हुए भारत सरकार ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की है। अनुवाद में स्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा में अनूदित किया जाता है। जो अनुवाद करता है उसे अनुवादक कहते हैं।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुए -

- अनुवाद से संबंधित जानकारी प्राप्त किए होंगे।
- अनुवाद की विदेशी विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा को समझ गए होंगे।
- अनुवाद की भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषा को समझ गए होंगे।
- अनुवाद के स्वरूप से संबंधित जानकारी प्राप्त कर ली है।

- अनुवाद के महत्व की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली है।
- अनुवाद की उपयोगिता एवं सार्थकता को समझ चुके हैं।
- व्यावसायिक क्षेत्र, बाजार, बैंक, व्यापार आदि में अनुवाद के महत्व से संबंधित विवरण प्राप्त कर चुके हैं।
- सिनेमा, ओटीटी, संचार माध्यम में प्रयुक्त अनुवाद को समझ चुके हैं।
- अनुवादक के महत्व को समझ गए होंगे।

4.6 शब्द संपदा

1. भूमंडलीकरण : एक प्रक्रिया जिसमें दुनिया भर के विभिन्न देशों और संस्थाओं के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा तकनीकी संबंधों में समन्वय बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। अंग्रेजी में इसे globalization कहते हैं।
2. व्यवहृत : प्रयुक्त, व्यवहार में होने वाला
3. द्विभाषिक : दो भाषाओं का ज्ञान
4. ओटीटी : ओवर द टॉप, एक ऐसी तकनीक जिसमें इंटरनेट के जरिए वीडियो सामग्री वितरित करने की प्रक्रिया का प्रबंधन करने में सक्षम बनती है।
5. प्रतिस्थापित : replaced, कार्य चलाने हेतु किसी के पद पर नियुक्त करना, बदलना

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. अनुवाद से आप क्या समझते हैं- स्पष्ट करें।
2. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्व है?
3. किन्हीं दो पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषा लिखिए।
4. किन्हीं दो भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई अनुवाद की परिभाषा लिखिए।
5. विज्ञापन में अनुवाद की क्या भूमिका होती है? अपने शब्दों में लिखिए।
6. संचार माध्यम और अनुवाद – अपना विचार लिखिए
7. आज के संदर्भ में क्या अनुवाद एक सार्थक प्रक्रिया है? अपने विचार व्यक्त करें।
8. वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में अनुवाद की क्या भूमिका होती है?

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

1. अनुवाद के अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. अनुवाद की व्युत्पत्ति संबंधी विवरण बताएं।
3. आपकी दृष्टि में अनुवाद क्या है?
4. आपके अनुसार अनुवाद क्यों महत्वपूर्ण है?
5. फिल्म इंडस्ट्री में अनुवाद का क्या महत्व होता है?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. translation मूलतः शब्द है-

अ) रूस	आ) ग्रीस	इ) लैटिन
--------	----------	----------
2. अनुवाद में कितनी भाषाएं होती हैं

अ) एक	आ) चार	इ) दो
-------	--------	-------
3. दुहराना के लिए यह शब्द प्रयुक्त होता है-

अ) दुहना	आ) दुगुना	इ) आवृत्ति
----------	-----------	------------
4. अनुकथन इसके लिए प्रयुक्त किया जाता है-

अ) सेन्सस	आ) अनुवाद	इ) व्युजिनेस
-----------	-----------	--------------
5. आज का युगयुग है

अ) डिजिटल	आ) अकादमिक	इ) पैडमिक
-----------	------------	-----------

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति .

1. जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसेभाषा कहते हैं।
2. विज्ञापन से.....को बढ़ावा मिलता है।
3. जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसेभाषा कहते हैं।
4. हिंदी भाषा में अनुवाद के लिएऔरशब्द भी प्रयुक्त होते हैं।
5. समतुल्यता का तात्पर्य है

III सुमेल कीजिए

1. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो	चीन
2. पाणिनी	1971
3. मंदारिन	अष्टाध्यायी
4. डबिंग	कंप्यूटर
5. मशीनी अनुवाद	संचार क्रांति
6. आडियो बुक्स	फिल्म

4. 8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और समस्याएं, डॉ रविंद्रनाथ श्रीवास्तव एवं डॉ कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1985
2. अनुवाद विविध आयाम, डॉ पूरनचंद टंडन एवं डॉ हरीश कुमार सेठी, तथशिला प्रकाशन, दिल्ली 1998
3. अनुवाद: प्रक्रिया एवं परिदृश्य, डॉ रीताराणी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004
4. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, डॉ कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008
5. अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रयोग, छबिल कुमार मेहर, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, 2016

इकाई 5: काव्यनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूल पाठ: काव्यनुवाद की समस्याएँ

5.3.1 काव्य का परिचय

5.3.2 अनुवाद एवं अनुवाद की प्रासंगिकता

5.3.3 काव्यनुवाद परंपरा एवं वर्तमान

5.3.4 अनुवाद: भारतीय परंपरा

5.3.5 भारतीय कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद

5.3.6 काव्यनुवाद की समस्याएँ

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

भूमंडलीकरण के वर्तमान परिवेश में भाषा अपनी सीमाओं को पार कर 'ग्लोबल विलेज' जैसी संकल्पनाओं से जुड़ रही है जिसके परिणामस्वरूप अनुवाद की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में तो अनुवाद की भूमिका और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो रही है। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुवाद की प्रासंगिकता बहुत बढ़ी है। इस उत्तर आधुनिक दौर में अनुवाद एक ऐसी सञ्चार्इ बनकर उभरा है कि अब हर कोई यह मानने लगा है कि दुनिया का काम अनुवाद के बिना नहीं चल सकता है। अनुवाद केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि सामाजिक राजनीतिक व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को भी प्रभावित करने की क्षमता रखती है। अनुवाद का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

जैसा कि हम जानते हैं। ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी है, तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी है तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव की अंतवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार के लिए अत्यन्त उपयोगी होता है। कुछ लोगों की धारणा है कि काव्यनुवाद

असंभव है तथा यह नहीं हो सकता है। किन्तु ऐसी बात नहीं है, वास्तव में कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन है, लेकिन असंभव नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि विश्व में अब तक बहुत सारी कविताओं का अनुवाद हुआ है।

5.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- काव्य के अर्थ से परिचित हो सकेंगे।
 - अनुवाद के अर्थ से परिचित हो सकेंगे।
 - काव्यनुवाद के परंपरा को जान सकेंगे।
 - काव्यनुवाद की समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
-

5.3 मूल पाठ: काव्यनुवाद की समस्याएँ

5.3.1 काव्य का परिचय

काव्य कविता या पद्य, साहित्य की एक विद्या है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। इसका प्रारंभ भरतमुनि से समझा जा सकता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है काव्य वह वाक्य रचना है जिसमें चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो अर्थात्, वह जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है। काव्य के विषय में भारतीय साहित्य में आलोचकों की बड़ी ही समृद्ध परंपरा है - आचार्य विश्वनाथज्ञ, पंडितराज जगन्नाथ, पंडित अंगिकादत्त व्यास, आचार्य श्रीपति, भामह आदि संस्कृत के विद्वानों से लेकर आधुनिक आचार्य रामचंद्र शुक्ल तथा जयशंकर प्रसाद जैसे प्रसिद्ध कवियों तथा महादेवी वर्मा ने कविता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए अपने अपने मत व्यक्त किए हैं। कविता मनुष्य को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित धेरे से उपर उठाती है और शेष सृष्टि से रागात्मक सम्बन्ध जोड़ने में सहायक होती है। काव्य में सत्यंशित सुंदरन की भावना भी निहित होती है। जिस काव्य ने यह सब कुछ पाया जाता है वह उत्तम काव्य माना जाता है।

काव्य के भेद-

काव्य के भेद दो प्रकार से किए गए हैं-

(1) स्वरूप के अनुसार

(2) शैली के अनुसार

(1) स्वरूप के अनुसार काव्य के दो भेद हैं-

श्रव्यकाव्य एवं दृश्यकाव्य

श्रव्यकाव्य- जिस काव्य का रसास्वादन दूसरे से सुनकर या स्वयं पढ़ कर किया जाता है उसे श्रव्य काव्य कहते हैं। जैसे रामायण और महाभारत श्रव्य काव्य के भी दो भेद होते हैं - 'प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य के दो भेद होते हैं- महाकाव्य एवं खण्डकाव्य

(2) शैली के अनुसार काव्य के भेद

(1) पद्य काव्य - इसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है, जैसे गीतांजलि

(2) गद्य काव्य - इसमें किसी कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है, जैसे जयशंकर प्रसाद की कमायनी

(3) चंपू काव्य - इसमें गद्य और पद्य दोनों का समावेश होता है। मैथिलीशरण गुप्त की यशोधरा चंपू काव्य है।

5.3.2 अनुवाद एवं अनुवाद की प्रासंगिकता

अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। इसके ज़रिए भाषा विशेष के साहित्य में अंतर्निहित अभिव्यक्तियों, संवेदनाओं, विचारधाराओं, जीवनानुभूतियों, सांस्कृतिक तत्वों का परिचय मिलता है। अनुवाद आज जीवन व्यवहार का अनिवार्य अंग बन चुका है। अनुवाद एक कृति को दूसरी कृति में कायांतरित करने की कला है। अनुवाद सृजन है, पुनर्रचना है और एक प्रकार से मौलिक लेखन भी। अनुवाद अत्यन्त प्राचीन एवं श्रम साध्य कला है जिसका महत्व आज प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है। अनुवाद - अध्ययन आधुनिक युग की माँग है। आज अनुवाद ने साहित्य के क्षेत्र की अपनी सीमा को लाँघकर मानव व्यवहार को सभी क्षेत्रों को अपनी सीमा में सम्मिलित कर लिया है।

आधुनिकरण की सतत प्रक्रिया से जो नया चिन्तन, नई दिशा और नया दृष्टिकोण आ रहा है, उससे अनुवाद की कलात्मक, वैज्ञानिक और शिल्पपरक प्रकृति में नए-नए आयाम जुड़ रहे हैं। आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान की नवीन क्षेत्र खुल रहे हैं, कंप्यूटर एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति हो रही है। वहाँ अनुवाद विज्ञान की महत संवयसिद्ध होने लगी।

एक भाषा में अभिव्यक्त भावों, विचारों, अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को दूसरी भाषा में सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में सजीव प्रस्तुतीकरण अनुवाद है। अनुवाद से रचना या साहित्य का प्रचार क्षेत्र व्यापक हो रहा है।

अनुवाद: अर्थ एवं परिभाषा

अनुवाद शब्द का मूल 'वद्' धातु से है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इसका अर्थ है बोलना या कहना। 'वद्' धातु में 'घज्' प्रत्यय और 'अनु' उपसर्ग जोड़कर अनुवाद शब्द उत्पन्न हुआ। 'अनु' का अर्थ है- पीछे, साथ-साथ, बाद में आदि। इस प्रकार अनुवाद का अर्थ है किसी के कहने के बाद कहना, पुनःकथन अथवा पुनरूक्ति।

‘अनुवाद’ पहले दर्शनशास्त्र का पारिभाषिक शब्द था। न्यायसूत्र में इसका प्रयोग इस प्रकार मिलता है-

विद्यर्थवादानुवाद वचन विनियोगात्
विधिविहित स्यानुवचन मनुवाद।।

अर्थात् विधि और विहित का अनुवचन ही अनुवाद है।

‘शब्दार्थ चिन्तामणी’ कोश में अनुवाद का अर्थ “प्राप्तस्य पुनः कथने” या ज्ञातार्थस्थ प्रतिपादने अर्थात् पहले कहे गए अर्थ का फिर से कहना बताया गया है। उपनिषदों में इसका प्रयोग आवृत्ति के अर्थ में किया गया है।

भारतीय दर्शन मीमांसा, उपनिषद तथा वैदिक साहित्य में छाया, भाषा, टीका, व्याख्या, भावानुवाद, भाषान्तरण, तरजुमा आदि अनेक शब्द प्रचलित हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में पारिभाषिक शब्द के रूप में अनुवाद शब्द को मान्यता मिली।

हिन्दी में अनुवाद शब्द का प्रयोग अंग्रेजी में Translation शब्द के पर्याय में प्रचलित है। यह Trans और lation के योग से बना है। Trans का अर्थ है ‘पार’ और lation शब्द लैटिन भाषा से है जिसका अर्थ है ले जाने की क्रिया। अतः Translation का अर्थ हुआ इस पार से उस पार या दूसरे पारे ले जाना।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुसार- “भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों की प्रतिस्थापना, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।

डॉ. एन.ई विश्वनाथ अय्यर का मानना है कि अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करने तक सीमित नहीं। एक भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरी रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। अनुवाद की प्रविधि के दौरान भाषिक समन्वय हो जाता है।

अनुवाद विज्ञान के प्रणेता नाइडा के अनुसार Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style.

अर्थात् ऋतु भाषा के संदेश को लक्ष्य भाषा में अर्थ तथा शैली के दृष्टि से निकटतम सहज समतुल्यों द्वारा पुनर्सृजित करना ही अनुवाद है।

प्रसिद्ध भाषाविद्वान न्यूमार्क के मतानुसार अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।

ए.ए रिचार्ड्स के अनुसार Translation is one of the most complex activities in Cosmos अर्थात् अनुवाद पूरे ब्रह्माण्ड में सबसे जटिल प्रक्रिया है। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक

जे.सी. कैटफार्ड के अनुसार Translation is the replacement of textual material in one language (SL), by equivalent textual material in another language (TL). अर्थात् अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कह सकते हैं कि अनुवाद कर्म में मूल पाठ सामग्री पर ध्यान केन्द्रित करना अत्यन्त आवश्यक है। एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था को दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में सावधानी से भाषान्तर करने का प्रयास है। लक्ष्य भाषा के अनुकूल उसकी भाषिक संरचना एवं सांस्कृतिक पहलुओं को समझकर स्रोतभाषा के समतुल्य एवं निकटतम स्तर पर अनुवाद कार्य करें।

भूमंडलीकरण के कारण आज अनुवाद हमारी सामाजिक आवश्यकता बन गया है। इसलिए इसके विविध आयामों एवं पहलुओं पर काफी गंभीर विवेचन और विश्लेषण की प्रक्रिया चल रही है। अनुवाद के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक विवेचन में भी काफी गहन चिन्तन की आवश्यकता है।

5.3.3 काव्यानुवाद परंपरा एवं वर्तमान

ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी है तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव की अंतवृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। कवि की अनुभूति की सघनता एवं गहनता की परिणति काव्य का अनुवाद सबसे दुष्कर कार्य है। क्योंकि साहित्य के अन्य विधाओं से हटकर कविता सर्वाधिक सृजनशील विधा है। कविता असल में कवि मन की भावात्मक अभिव्यक्ति है।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहुँचाना। इसलिए ही प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं कठिनाइयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपान्तर अपनी भाषा के सहृदय समाज को सौंपने का महान कार्य करता है।

काव्यानुवाद की परंपरा काफी पुरानी है। फिर भी ज्यादातर अनुवादक मूल सृजन तक न पहुँचकर अनुकूलता या अधिक से अधिक व्याख्याकार तक सीमित हो जाता है। प्रतिभाशील कुछ अनुवादक ही पुनसृज्जन में सफल हो पाते हैं। काव्यानुवाद संबंधित कई विद्वानों ने अपना विचार व्यक्त किया है। ज्यादातर विद्वानों ने काव्यानुवाद को दुस्साध्य एवं दुष्कर कार्य माना है। क्योंकि मूल भाषा की साहित्यक संवेदना अपनी प्रकृति में इतनी विशिष्ट होती है कि उसका दूसरी भाषा में अवतरण प्रायः असंभव सा होता है।

भोलानाथ तिवारी काव्यानुवाद को किसी कविता का यथा संभव निकटतम समतुल्य रखने पर ज़ोर देते हुए कहते हैं कि काव्य कला अन्ततः उन शब्दों पर निर्भर होती है जिनके द्वारा उसकी अभिव्यक्ति होती है और यहाँ शब्द केवल अर्थ का भाववाहक नहीं होता, उसकी

अपने आप में कुछ सत्ता-महत्ता होता है, उसकी अपनी ध्वनि होती है, अपना संगीत होता है अपना विशिष्ट संस्कार, परिवेश, इतिहास और रूपवैभव होता है।

काव्यानुवाद में अनुवादक द्वारा सर्वप्रथम स्रोत भाषा की सामग्री का सतही दृष्टि से अध्ययन किया जाता है और उसका अर्थ ग्रहण किया जाता है साथ ही उसका काव्यशास्त्रीय अर्थ समझा-परखा जाता है। स्रोत भाषा की सामग्री में विद्यमान बिंब, प्रतीक, अलंकारों को समझने का प्रयास होता है। अगला चरण है रस सम्मत अर्थ की अभिव्यक्ति करने के लिए उपयुक्त शब्दावली का चयन/पर्याय-चयन, शब्द गूंफन एवं अभिव्यक्तिकरण के पश्चात इसका अनुशीलन किया जाता है। फिर भावानुशीलन किया जाता है और अन्त में काव्य को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित किया जाता है।

कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कि ध्वन्यात्मक अभिव्यक्तियों का अनुवाद तथा नाद सौन्दर्य, छन्द, अप्रस्तुत विधान और साहित्यमूलक शब्दावली का अनुवाद। अर्थात् काव्य का अधिकांश हिस्सा ध्वन्यार्थमूलक व्यंग्यार्थपरक, निहितार्थमुक्त, संकेत प्रधान तथा गूढार्थ से युक्त होता है। इन सभी पहलूओं को समझने एवं लक्ष्यभाषा में सार्थक रूप से प्रस्तुत करने में एक प्रतिभाशाली अनुवादक ही सफल हो पाता है। काव्य की ध्वनि एवं शैली लयात्मक है, अनुवादक को इन तत्वों को भी अनुवाद में समाविष्ट करना है।

हर भाषा की संरचना अलग स्तर की होती है। मलयालम - हिन्दी काव्यानुवाद के संदर्भ में देखा जाये तो मलयालम द्राविड संस्कृति की भाषा है तो हिन्दी आर्य संस्कृति की। दोनों में अपनी-अपनी सांस्कृतिक परंपरा है।

5.3.4 अनुवादः भारतीय परंपरा

भारत में अनुवाद की बहुआयामी परंपरा प्राचीनकाल से चली आ रही है। संस्कृत के वैदिक, औपनिषदिक तथा पौराणिक साहित्य से होती हुई यह परंपरा मध्यकाल तक चली आई। मध्यकाल में संतों ने संस्कृत और पालि के साहित्य, दर्शन, धर्म, नीति आदि अनुवाद करके जनजागरण किया। 19वीं शताब्दी में भारतीय प्राचीन ग्रन्थों के साथ-साथ पश्चिमी साहित्य विशेषकर अंग्रेजी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों के भी अनुवाद हुए। भारतीय भाषाओं में से ज्यादातर बंगला भाषा के श्रेष्ठ साहित्यकारों जैसे बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, शरदचन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विविध साहित्य विधाओं का अनुवाद हुआ।

अनुवाद के भारतीय विद्वानों में सर्वश्री आर. रघुनाथराव, वासुदेवन नंदन प्रसाद, नगेन्द्र, डॉ. भोलानाथ तिवारी, डी.पी. पटनायक, प्रो. हरीश द्विवेदी, डॉ. सुरेश कुमार, सुजीव मुखर्जी, प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, जी.गोपिनाथन, विश्वनाथ अय्यर तथा कैलाशचन्द्र भाटिया उल्लेखनीय हैं।

5.3.5 भारतीय कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद

भारत में संस्कृत से भारतीय भाषाओं में अनुवाद की लंबी परंपरा है। संस्कृत में लिखित साहित्य अपनी गुणवत्ता और साहित्यिक वैशिष्ट्य के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राचीन भारत और उसकी संस्कृति को समझने का रास्ता संस्कृत में रचित साहित्य से प्राप्त होता है। भास, कालिदास, अश्वघोष, देर्डा, भवभूति, बाणभट्ट जैसे अनेक रचनाकारों की रचनायें भारतीय एवं विश्व भाषाओं में भी अनूदित हुए। पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में काफी अनुवाद कार्य हुआ। प्राकृत से संस्कृत में अनुवाद का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण 'गुणाद्य की वृहत कथा' है। क्षेमेन्द्र ने इन कथाओं का अनुवाद 'कथा सरित्सागर वृहत्कथा मंजरी' में शामिल किया है। अपभ्रंश में लिखा गया जैन ग्रन्थों का अनुवाद संस्कृत में होता था। बौद्ध दर्शन की रचनायें पालि में मिलती हैं जिनका अनुवाद श्रीलंका में बुद्ध के निर्वाण के 520 वर्ष बाद प्राप्त हुआ।

संस्कृत में रचित रामायण और महाभारत जैसी कालजयी रचनाओं का अनुवाद प्राकृत भाषाओं में हुआ तथा पुराणों के अनुवाद संस्कृत से कई क्षेत्रिय भारतीय भाषाओं में हुआ है। भारतीय साहित्य एवं अनुवाद के अध्येता डॉ. ए.के. रामानुजन ने 300 रामायणों की बात की है। अधिकांश अनूदित रामायण में अपने देश एवं भाषा का प्रभाव है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में दक्षिण की प्राचीनतम भाषा तमिल में काफी महत्वपूर्ण अनुवाद हुआ है। संस्कृत से कई ग्रन्थों का सीधा अनुवाद तमिल में किया गया है। तमिल के प्रथम व्याकरण 'तोलकाप्पियम' में अनूदित ग्रन्थों को 'वृषिनूल' संज्ञा दी गई है। तमिल में जैनकथा, बौद्धकथा, महाभारतकथा आदि पर आधारित जो रचनाएँ लिखी गई उनका स्वरूप एक प्रकार से अनुवाद ही है। अनुवाद के क्षेत्र में बंगला और मराठी भाषा का भी उल्लेखनीय स्थान है। बंगाल के कवियों में माइकल मधुसूदनदत्त, महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, बेकिमचन्द्र एवं मराठी के बाल गंगाधर तिलक की रचनाओं का कई भारतीय भाषाओं अनुवाद हुआ है।

भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य से जोड़ने में हिन्दी की अहम भूमिका है। अधिकांश कृतियाँ पहले हिन्दी में अनूदित होते हैं बाद में अन्य भारतीय भाषाओं में। हिन्दी साहित्य के इतिहास को परखने पर यह मालूम पड़ता है कि भारतेन्दु काल में अनुवाद कार्य काफी सार्थक रूप से हुआ। स्वयं भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक 'मरचेंट आफ वेनिस' का हिन्दी अनुवाद 'दुर्लभ बन्धु' नाम से किया।

भारतेन्दु के बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी युग में भी अनूदित रचनाएँ उपलब्ध हैं। स्वयं प्रेमचन्द्र ने उर्दू में लिखित अपने ही उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में किया। आगे चलकर रामचन्द्रशुक्ल मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पंत, बच्चन, श्रीधर पाठक आदि कई हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकारों ने अनुवाद साहित्य को श्रीवृद्धि की।

5.3.6 काव्यनुवाद की समस्याएँ

जैसा कि हम जानते हैं, अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। इसके ज़रिए भाषा विशेष के साहित्य में अंतनिहित अभिव्यक्तियों, संवेदनाओं, विचारधाराओं, जीवनानुभूतियों, सांस्कृतिक तत्वों का परिचय मिलता है। अनुवाद आज जीवन व्यवहार का अनिवार्य अंग बन चुका है। अनुवाद एक कृति को दूसरी कृति में कायांतरित करने की कला है। यह सृजन है, पुनर्रचना है। अनुवाद अत्यन्त प्राचीन एवं श्रम साध्य कला है।

आधुनिकरण की सतत प्रक्रिया से जो नया चिन्तन, नई दिशा और नया दृष्टिकोण आ रहा है, उससे अनुवाद की कलात्मक, वैज्ञानिक और शिल्पपटक प्रकृति में नए-नए आयाम जुड़ रहे हैं। आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान के नवीन क्षेत्र रुच रहे हैं, कंप्यूटर एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति हो रही है। वहाँ भी अनुवाद विज्ञान की महत्ता दिखाई देती है। अब मैं काव्यानुवाद तथा काव्यानुवाद की मुय कठिनाइयों पर चर्चा करूँगी।

जैसा कि हम जानते हैं ज्ञान के साहित्य का अनुवाद प्रबुद्ध मानव के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी है तो काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद मानव की अंतर्वृत्तियों की समृद्धि एवं परिष्कार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। कविता के अनुवाद को लेकर विद्वानों में काफी विवाद चल रहा है। कुछ लोगों की धारणा है कि काव्यानुवाद असंभव है तथा यह नहीं हो सकता। किन्तु ऐसी बात नहीं है, वास्तव में कविता का अनुवाद करना बहुत कठिन है, लेकिन असंभव नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि विश्व में अब तक बहुत सारी कविताओं को अनुवाद हुआ है।

काव्यानुवाद का मुख्य लक्ष्य है, विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक पहुँचाना। इसलिए ही प्रत्येक युग का साहित्यकार विविध बाधाओं कठिनाइयों से जूझता हुआ भी विभिन्न भाषाओं की अमर रचनाओं का रूपान्तर अपनी भाषा के सहृदय समाज को देने का कार्य करता है।

(1) कविता की रचना प्रक्रिया की विविध जटिलताओं को अच्छी तरह से समझने वाला सहृदय ही कविता का उत्तम अनुवाद कर सकता है।

(2) काव्य अनुवादक दो भाषाओं, दो संस्कृतियों और दो पृष्ठभूमियों के बीच पुल का निर्माण करता है।

(3) वह दो संस्कृतियों के बीच साज्ञात्कार का माध्यम बनता है। और इसी कारण कालिदास, होमर, शेक्सपियर आदि बहुत से महान कवियों की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति संभव हो सकी है। इससे हमें यह मालूम होता है कि आज के समय में काव्यानुवाद को बहुत प्रधानता दी जाती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम देखते हैं कि कविता के अनुवाद की बहुत सी समस्याएँ हैं। जैसे-

(1) स्रोत भाषा के सभी शब्दों की लक्ष्य भाषा में समान अभिव्यक्ति की समस्या।

साहित्यकार अपनी रचनाओं में शब्दों का प्रयोग चुनकर करता है वह जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वे शब्द प्रायः अपना कोशीय अर्थ के अतिरिक्त अपनी ध्वनि से कुछ और अर्थ भी देते हैं। ध्वनि और अर्थ का यह संबंध उन चुने हुए शब्दों की विशेषता होती है और इनके कारण कविता में एक विशेष जीवंतता आ जाती है। किन्तु अनुवाद के कारण प्रायः इन शब्द का प्रतिशब्द कोशीय अर्थ ही दे पाता है, अतः ध्वनि या वर्ण आदि के स्तर का इसी कारण अनुवाद सही नहीं हो पाता है।

हर भाषा के हर शब्द का अपना अर्थ बिंब होता है, जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से संबंधित होता है। जैसे अंग्रेज़ी कवि की कविता में प्रयुक्त Spring शब्द का ठीक शब्द हिंदी में बसंत नहीं हो सकता क्योंकि अंग्रेज़ी भाषा के स्प्रिंग का चित्र और भारतीय बसंत के चित्र भिन्नता पाई जाती है।

(2) अलंकारों की समस्या - काव्य प्रायः अलंकार प्रधान होते हैं, किन्तु एक भाषा के अलंकारों का दूसरी भाषा में सही सही उतार पाना एक कठिन कार्य होता है और कभी कभी तो असंभव भी होता है। अनुप्रास आदि शब्दालंकारों में तो यह कठिनाई और भी देखी जाती है जैसे कनक कनक ते सौगुन' का किसी भाषा में तब तक अनुवाद नहीं हो सकता जब तक उस भाषा में कोई ऐसा शब्द न हो जिसका अर्थ 'सोना' तथा 'धतूरा' दोनों हो।

(3) छंदों का अनुवाद - जैसा कि हम जानते हैं कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, अतः उसका अपना प्रभाव भी होता है। भारतीय भाषाओं में एक प्रकार के छंद हैं, तो फारसी आदि में दूसरी तरह है तथा यूरोपीय भाषाओं में और भी अलग है इन परिस्थितियों में भी अनुवादक को कठिनाई आती है। मूल के जैसा अनुवाद नहीं हो पाता है।

(4) काव्यनुवाद में अनुवादक के व्यक्तित्व का भी प्रभाव देखा जाता है कवि हृदय ही काव्यनुवाद के साथ न्याय कर सकता है, क्योंकि कविता का अनुवाद अन्य अनुवादों से भिन्न होता है अर्थात् यह प्रकार से पूनर्चना होता है। अतः इसी कारण एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यनुवाद दूसरे से भिन्न होता है।

(5) एक भाषा की काव्य रचना की अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में लाना मुश्किल होता है। कवि जो अपनी कविता में कहता है, उसका सौंदर्य हमें उसी भाषा में अच्छा लगता है। किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने से मूल रचना के जैसी बात नहीं आती है।

(6) कविता की शैली - एक भाषा की कविता को दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय उसकी काव्यशैली ज़रूर नष्ट हो जाती है अनुवादक मूल कृति की शैली को यथावत् या समतुल्य बनाए रखने में पूरी तरह से सफल नहीं हो पाता है।

अतः अंत में हम कह सकते हैं कि काव्य का अनुवाद एक कठिन कार्य है उसमें बहुत अधिक सतर्कता की आवश्यकता है। तथा काव्य का अनुवाद पहले तो पद्य-रूप में ही करने का प्रयास करना चाहिए जब बहुत अधिक कठिनाइयाँ आ रही हैं तभी उसे गद्य रूप में अनुवाद करें।

5.4 पाठ सार

लोगों में आज समाकलीन साहित्य को पढ़ने की ललक बढ़ती जा रही है। इस कारण आज विश्व भर में साहित्यक अनुवाद की बड़ी माँग है। भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में तो अनुवाद की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है। इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषाई दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति के युग में अनुवाद एक महत्वपूर्ण कार्य है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं- अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी एवं अरबी के अतिरिक्त हिंदी, स्पेनिश आदि भाषाओं का महत्व भी अनुवाद के क्षेत्र में निरंतर बढ़ रहा है। मारिशस, फ्रीजी, सूरीनाम आदि देशों की प्रमुख भाषा के रूप में और विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़नेवाली भाषा के रूप में हिन्दी एक व्यापक एवं प्रभावी अनुवाद माध्यम बनती जा रही है।

अतः यह कहा जा सकता है कि बहुभाषिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक समाज को जोड़ने का दायित्व हिंदी अनुवाद के माध्यम से एक हद तक पूरा हुआ है। आज अनुवाद की वजह से ही हम अपने ही देश की अन्य संस्कृति तथा आचार-व्यवहार था साहित्य से परिचत हैं। भारत बहुत पहले से ही इतना विशाल और बहुविध संस्कृतियों का देश रहा है कि अनुवाद के बिना यह जान पाना संभव नहीं हो पाता कि किस देश की क्या विशेषता है? अगर अनुवाद न होता तो हम आज तक कई मामलों में अनभिज्ञ बने रहते और समाज का इतना विकास न हुआ होता। चूंकि भारत की राजभाषा हिन्दी है इस कारण भी हिन्दी एक ऐसी भाषा के रूप में रही है जिसने बहु-संस्कृति और बहु-भाषिक समाज को एक सूत्र में बाँधे रखा है। अतः इस कथन से पूर्णतः सहमत हुआ जा सकता है कि हिन्दी अनुवाद ने बहु-भाषिक, बहु-जातीय और बहु-सांस्कृतिक समाज को जोड़ने का दायित्व पूरा किया है।

अंत में हम कह सकते हैं कि काव्य का अनुवाद एक कठिन कार्य है उसमें बहुत अधिक सतर्कता की आवश्यकता है। तथा काव्य का अनुवाद पहले तो पद्य-रूप में ही करने का प्रयास करना चाहिए जब बहुत अधिक कठिनाइया आ रही है तभी उसे गद्य रूप में अनुवाद करना चाहिए।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. काव्य के विषय में भारतीय आलोचकों अर्थात् संस्कृत के विद्वानों से लेकर आधुनिक आचार्यों के मतों को देखा गया।
 2. काव्य के भेदों से अवगत हुए।
 3. अनुवाद एवं अनुवाद की प्रासंगिकता के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।
 4. काव्यानुवाद के मुख्य लक्ष्यों से अवगत हुए विश्व की अमर कृतियों को विश्व के पाठकों तक इसी काव्यानुवाद के द्वारा ही पहुँचाया जा सकता है।
 5. काव्यानुवाद के कारण किस प्रकार भारतीय कृतियों का अनुवाद सम्भव हुआ उसको भी समझाया गया है।
 6. काव्यानुवाद करने में कौन-कौन सी कठिनाइया आती है उनको भी इस इकाई में वर्णन किया गया है।
-

5.6 शब्द संपदा

- | | | |
|------------------|---|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. काव्य | - | कविता, कवि-कर्म |
| 2. बौद्धिक विकास | - | बुद्धि संबंधी विकास, पढ़ने लिखने से संबंधित |
| 3. परिष्कार | - | गलती दूर करने की क्रिया, परिमार्जन सुधार |
| 4. साहित्य | - | सभी भाषाओं में गद्य एवं पद्य की वे समस्त पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य और मनभाव, बुद्धिमता तथा व्यापकता से प्रकट किए गए हो। |
| 5. स्वरूप | - | बनावट |
| 6. शैली | - | ढंग, तरीका, रीति |
| 7. श्रव्यकाव्य | - | केवल सुनने योग्य काव्य |
| 8. दृश्यकाव्य | - | केवल देखने योग्य |
| 9. दुष्कर | - | जिसे करना कठिन हो। |
| 10. कालजयी | - | जो काल को जीत चुका हो, जो सदैव प्रासंगिक हो। |
| 11. शिल्प | - | बनावट, ढंग, किसी कथाकार या रचनाकार द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया जाने वाला भावाभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग जो से अधिक व्यापक माना जाता है। |

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. काव्य के अर्थ एवं भेदों पर विचार कीजिए।
2. अनुवाद के अर्थ एवं परिभाषा पर विचार कीजिए।
3. काव्यनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. काव्य के भेदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. काव्यनुवाद का मुख्य लक्ष्य क्या है? चर्चा कीजिए।
3. भारतीय कृतियों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद से क्या-क्या लाभ है? चर्चा कीजिए।

खण्ड (स)

I सही विकल्प चुनिए।

1. श्रव्यकाव्य के उदाहरण है?
(क) रामायण (ख) नाटक (ग) नुकङ्ग (घ) एकांकी
2. प्रबंध काव्य के कितने भेद होते हैं?
(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार
3. मैथिलीशरण गुप्त कृत यशोधरा किस प्रकार का काव्य है?
(क) महाकाव्य (ख) खण्डकाव्य (ग) गद्यकाव्य (घ) चंपूकाव्य

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. काव्यनुवाद में अनुवादक के व्यक्तित्व का देखा जाता है।
2. एक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यनुवाद दूसरे से होता है।
3. अनुवाद आज जीवन व्यवहार का अनिवार्य है।

III सुमेल कीजिए

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| (1) आचार्य विश्वनाथ | (क) आधुनिक आचार्य |
| (2) आचार्य रामचंद्र शुक्ल | (ख) संस्कृत के विद्वान |
| (3) दृश्यकाव्य | (ग) नाटक |
-

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर, 1972
2. डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद भाषाएँ, समस्याएँ, स्वाती प्रकाशन, 1986
3. डॉ. कृष्णकुमार भाटिया, अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1885

इकाई 6: कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ: कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

6.3.1 कथा साहित्य का अर्थ

6.3.2 कथा साहित्य के अनुवाद की अवधारणा

6.3.3 महत्वपूर्ण रचनाएँ एवं उनके अनुवाद

6.3.4 कथा साहित्य के अनुवाद का सांस्कृतिक संदर्भ

6.3.5 कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

6.3.6 कथा साहित्य के अनुवाद के महत्वपूर्ण बिन्दु

6.4 पाठ सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

कथा साहित्य का मतलब ऐसे साहित्य से है जो भाव व कल्पना प्रधान हो। कथा साहित्य अपने विषयों को उभारने के लिए प्रतीक, रूपक आदि का उपयोग करता है। ऐसा नहीं है कि कथा साहित्य में तथ्यात्मकता का अभाव होता है। तथ्यात्मक भी इसमें बहुत अधिक पाई जाती है। अतः अस्मिता विमर्श संबंधी विभिन्न संदर्भों में कथा साहित्य को समानांतर इतिहास की तरह देखा गया है। लेकिन जब हम कथा साहित्य को भाव व कल्पना प्रधान कहते हैं, तब इसका मतलब तथ्यों सत्यों एवं घटनाओं की प्रस्तुति से है। यह प्रस्तुति अपने मूल स्वरूप में भावप्रधान होती है जिसका उद्देश्य केवल इतिहास की तहर सूचना प्रदान करना नहीं है बल्कि हमारे समाज के विभिन्न सत्यों को भावात्मक रूप में प्रस्तुत करना है। ताकि यह अधिक प्रभावकारी हो सके। जहाँ तक कथा साहित्य के अनुवाद की बात है, तो इसमें अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह रचनाकार तथा रचना दोनों को आत्मसात कर सके, तथा उसे अपनी भाषा में पुनः प्रस्तुत करे। इसलिए अक्सर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद को पुनः सृजन या नवसृजन भी कहा जाता है।

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई अध्ययन से आप-

- कथा साहित्य के अर्थ को समझ सकेंगे।
- कथा साहित्य के अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भों से परिचित हो सकेंगे।
- कथा साहित्य के अनुवाद में किन-किन समस्याओं का समना करना पड़ता है उसे अवगत होंगे।
- कथा साहित्य के अनुवाद के मुख्य बिन्दुओं से अवगत होंगे।

6.3 मूल पाठ : कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

6.3.1 कथा साहित्य का अर्थ

कहानी और उपन्यास से संबंधित साहित्य के सम्मिलित रूप को कथा साहित्य कहा जाता है। ये दोनों गद्य की दो महत्वपूर्ण विधाएँ हैं। इनका विकास आधुनिक काल में हुआ है। गद्य की यह एक लोकप्रिय विद्या मानी जाती है। ये विधाएँ संवेदना, कथ्य, शिल्प और संचेतना की दृष्टि से प्राचीन भारतीय कथा और आख्यायिका की परम्परा से भिन्न तथा आधुनिकता की चेतना से परिपूर्ण हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजी सभ्यता, शिक्षा एवं साहित्य के प्रसार, भारतीय स्वाधीनता-संघर्ष और विभिन्न सामाजिक-धार्मिक आन्दोलनों के फलस्वरूप हिंदी साहित्य जगत में व्यापक परिवर्तन हुआ। भारतेन्दु युग में हिंदी नयी चाल में ढली, ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली ने ले लिया, पद्य के साथ साथ गद्य रचना की प्रवृत्ति विकसित ही नहीं हुई बल्कि वह इतनी प्रबल एवं प्रतुख हुई कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल को हिंदी साहित्य के आधुनिक काल को गद्य काल की संज्ञा ही देनी पड़ी। आधुनिक काल में गद्य के आविर्भाव की शुक्ल जी ने एक साहित्यिक घटना कहा है और साथ में यह भी कहा है कि इस काल में साहित्य के अन्दर जितनी अनेकरूपता का विकास हुआ है उतनी अनेकरूपता का विधान कभी नहीं हुआ था। जैसा कि हम जानते हैं इसके पहले पद्य की प्रधानता थी। आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक का पूरा हिन्दी साहित्य पद्य साहित्य ही है।

आधुनिक काल में अपने विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए गद्य का सहारा लिया गया साथ ही उसके अनेक रूपों को भी विकसित किया गया जिनमें निबंध, कहानी, उपन्यास, आलोचना, आत्मकथा, संस्मरण रेखाचित्र आदि प्रमुख हैं।

6.3.2 कथा साहित्य के अनुवाद की अवधारणा

विश्व की भिन्न-भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से जो संवाद और समन्वय का संबंध बनता है, वह भाषा और साहित्य की उदार संस्कृति को जन्म देता है। आज विश्व के किसी भी कोने में जब कुछ घटता है तो उसे हम तुरंत जानना चाहते हैं। अनुवाद एक ऐसा माध्यम है,

जिससे दो संस्कृतियों को समझने का अवसर मिलता है ये दो संस्कृतियों के बीच पुल का काम करता है। अनुवाद के कारण पूरा विश्व एक समाज लगता है। तथा पूरा साहित्य मानवीय भावनाओं का आख्यान है।

जैसा कि हम जानते हैं कि कथा साहित्य में जितना महत्व कथा का होता है उतना ही महत्व उसके पात्रों, चरित्र चित्रण और परिवेश निर्माण का भी होता है। कथा साहित्य सीधी सरल विद्या न होकर बहुपात्रीय विद्या है जिसमें अनेक पात्रों का जीवन उनके अनुभवों संवेदनाओं परिस्थितियों के समन्वय में विकसित होता है। सामाजिक पृष्ठभूमि एवं पात्रों को लेखक बड़े जतन से एक साथ बुनता है। इसमें समय एक कैनवस की तरह पूरे आख्यान की पृष्ठभूमि का वितान बनता है और उस समय में जीते जागते पात्र मानवीय स्वभाव एवं संवेदना की अलग इकाई के रूप में समय और समाज की पृष्ठभूमि में दिखाया जाता है। लेखक अपने लिए जिस शैली और भाषा को चुनता है वह पूरी कथा में अलग से दिखाई पड़ता है। इसमें लेखक का व्यक्तित्व दिखाई देता है। समय और समाज को पकड़ते हुए लेखक अपने पात्रों की धड़कन की आवाज़ भी अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों को सुनाता है। कथा साहित्य के अनुवाद के लिए विशेष प्रतिमा की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान भी होना आवश्यक है।

अनुवादक के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वह मूल पाठ को सर्वप्रथम समझे और सही अर्थ प्राप्त करें, साथ ही दूसरी भाषा में वह उसे इस तरह निर्मित करें कि अनुवाद का पढ़ने वाला भी मूल लेखक के सही मकसद को समझ पाए। कुछ लोग यह मानते हैं कि कथा साहित्य का अनुवाद कविता के अनुवाद की अपेक्षा आसान होता है। कविता में छंद, बिंब प्रतीक और रूपक को ठीक ठीक दूसरी भाषा में उतारना अत्यंत कठिन है जबकि कथा साहित्य गद्यात्मक होने के कारण अनुवाद के लिए अनुकूल और सुविधाजनक है। कथा साहित्य एक रचनात्मक विद्या है, अतः उसकी रचना अत्यंत संक्षिप्त है, जिसमें अनेक तत्व एक साथ काम करते हैं।

बोध प्रश्न

- कथा साहित्य किस प्रकार की विद्या है?

6.3.3 महत्वपूर्ण रचनाएँ एवं उनके अनुवाद

जैसा कि हम जानते हैं कथा साहित्य के अनुवाद का इतिहास बहुत ही प्राचीन काल से चला आ रहा है। यदि लोक कथाओं के रचना संसार में देखा जाए तो एक ही कहानी लगभग सभी भाषाओं में पाई जाती है। प्रिंटिंग प्रेस और गद्य के विकास के साथ साथ अनुवाद का विकास भी होने लगा। उपनिवेशवाद के समय में भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में कई तरह के अनुवाद हुए। भारतेंदु के समय में संस्कृत तथा अंग्रेजी से हिंदी भाषा में अनेक अनुवाद हुए। जैसेशेक्सपियर के नाटकों का हिंदी में अनेक साहित्यकारों ने अनुवाद किया जिनमें रांगेय राघव, अमृतराय, रघुवीर सहाय शामिल हैं। इसी तरह बहुत सारे रूसी साहित्य का अनुवाद हिंदी में

हुआ है। जिसमें “लियो तालस्ताँय, गोर्की, चेखव आदि लेखकों की रचनाएँ पाई जाती हैं। विश्व की बहुत सी भाषाओं की कलासिक रचनाएँ भी हिंदी में उपलब्ध हैं। जिनमें फ्रांज काफका अल्बर कामू, सात्र, सिमोन-द-बोउआर आदि अनेक नाम लिए जा सकते हैं।

भारतीय भाषाओं के बीच भी बहुत अनुवाद हुए हैं। विशेष रूप से साहित्य अकादमी और भारतीय ज्ञानपीठ ने भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद कराए। जैसे रवींद्रनाथ ठाकुर अमृता प्रीतम, मंटो, दया पवार आदि अनेक नाम हैं जिनकी रचनाओं का सफल अनुवाद अलग अलग भारतीय भाषाओं में हुए हैं। अनुवाद के कारण ही ये सभी लेखक केवल एक भाषा के साहित्य के प्रतिनिधि न होकर सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की परंपरा की शोभा है। इसी तरह से हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाओं के अन्य भारतीय भाषाओं, अंग्रेजी तथा विश्व की भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। इन्हीं कारणों से प्रेमचन्द की लोकप्रियता विश्व प्रसिद्ध है। जैनेंद्र अन्नेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु भीष्म साहनी, कृष्ण सोबती, कुँवर नारायण, निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश मन्नू भंडारी मृदुला गर्ग, असगर वजाहत आदि अनेक रचनाकारों की महत्वपूर्ण कृतियों के अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध हैं। भूमंडलीकरण के कारण अंग्रेजी के लोकप्रिय साहित्य की हिंदी में पढ़ने की माँग बढ़ रही है। इन्हीं सब कारणों से आज कल प्रमुख प्रकाशन समूह अनुवादों का प्रकाशन प्रमुखता के साथ कर रहे हैं और बाजार तथा लोकप्रियता की दृष्टि से कथा साहित्य के अनुवाद को क्षेत्र में अब बहुत विस्तार हो रहा है।

बोध प्रश्न

- रांगेय राघव ने किसके नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया?

6.3.4 कथा साहित्य के अनुवाद का सांस्कृतिक संदर्भ

कथा साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ का बहुत अधिक महत्व देखा जाता है। जिस किसी देश या भाषा के साहित्य के विषय में बात हो रही है तो अनुवादक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह पूरे सांस्कृतिक संदर्भ को समझता हो। कभी कभी सांस्कृतिक संदर्भों के कारण ही यह कह दिया जाता है कि वहाँ अनुवाद संभव नहीं है। भारत जैसे बहुलतावादी देश में दो भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहाँ की विभिन्न भाषाएँ साझे यथार्थ की साझी हैं। उनके बीच सेतु का कार्य अनुवाद द्वारा ही संभव है।

भारतीय मूल के लेखकों द्वारा अंग्रेजी में किया गया लेखन भारतीय सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्त करता है अर्थात् अंग्रेजी भाषा वहाँ विदेशी या अन्य भाषा नहीं रह जाती है। वह भारतीय संवेदना अनुभव एवं भाषा की साक्षी प्रस्तुत करती है और उसके साथ-साथ मानवीय गरिमा के उस व्यापक परिदृश्य को भी विकसित करती है जहाँ देश और भाषा की सीमाएँ निरस्त हो जाती हैं।

6.3.5 कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

साहित्य का हमारे समाज और संस्कृति से बहुत गहरा जुड़ाव होता है। कथा साहित्य में समाज में समाज और संस्कृति का प्रतिबिम्ब हमारे साहित्य में देखने को मिलता है। कथा साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के दोनों के समाज, संस्कृति और जनता की चित्तवृत्तियों का विशेष ध्यान रखना होता है। किसी भी रचनाकार के साहित्यिक परम्परा को बहुत अच्छी तरह से जाने बिना हम उसकी रचनाओं के तत्व को नहीं समझ सकते और अगर हम रचना के तत्व को नहीं समझ सकेंगे तो उसका अनुवाद प्रभावी नहीं होगा।

कथा साहित्य में व्यापक जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए कथा साहित्य का अनुवाद अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। समाज, संस्कृति परिवेश और सामाजिक क्रियाओं - प्रतिक्रियाओं के सूरम अन्वेषणा की आवश्यकता कथा-अनुवाद में होती है। इनुवादक का कार्य साहित्यकार से अधिक चुनौतीपूर्ण और व्यापक होता है।

अनुवाद एक प्रकार से पुनर्सृजन है। साहित्य के मूल तत्व को समझना बहुत आसान नहीं होता, इसके लिए जिस भाषा में कृति है, उस भाषा संस्कृति को जानना और जीना बहुत आवश्यक होता है। इसके साथ-साथ स्रोत भाषा को भी उसके अपेक्षाकृत समझना बहुत अनिवार्य होता है।

अनुवाद अपने आप में एक महत्वपूर्ण काम है इसके लिए भाषा के साथ-साथ संस्कृति और सभ्यता के सूक्ष्म तत्वों को बहुत ध्यान से तथा समझ बुझकर ही अनुवाद करना चाहिए जिससे हम स्रोत भाषा की सामग्री को हुबहु लक्ष्य भाषा में संप्रेषित कर सकें।

कथा साहित्य के अनुवाद में उपन्यास और कहानी के अनुवाद में भी भिन्नता पाई जाती है। उपन्यास अधिक वर्णनात्मक होता है। इसके अनुवाद में वर्णनात्मक के सहज प्रवाह और तार्किकता पर ध्यान देना आवश्यक होता है। उपन्यास में कथा, चरित्र, संदर्भ तथा उसके भीतर रचे बसे द्वैत को पकड़ना अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसके साथ ही यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि उपन्यास की कोटियाँ अलग-अलग होती हैं। अतः सभी उपन्यास अलग-अलग प्रकार से अनुवाद की मांग करते हैं।

कथा साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में तीन समस्याएँ प्रमुख हैं, भाषा के विभिन्न रूप, वातावरण, आंचलिकता तथा स्रोत भाषा के अनुरूप परिवेश बनाने की है। रचना यदि अनुवादक देश की ही है तो अनुवादक को परिवेश गढ़ने में ज्यादा समस्या नहीं होती है, परंतु यदि परिवेश विदेशी संस्कृति से संबंधित है, तो अनुवादक को उसके अनुवाद में कठिनाई होगी।

कथा साहित्य के पाठ का अनुवाद करने के लिए भाषा के विभिन्न रूपों और उनके प्रयोग पर भी ध्यान देना अनिवार्य होता है। भाषा तथा शब्दावली के प्रयोग तथा प्रयोक्ता समुह का ध्यान रखना भी अनिवार्य होता है अतः भाषा का प्रयोग उसके पात्रों के अनुसार भिन्न-भिन्न

होता है। अतः कथा में किसी अध्यापक की भाषा का रूप और स्तर अलग होगा जबकि एक किसान की भाषा का स्तर अलग होगा। अगर अनुवादक इन दोनों की भाषा के स्तरों में अंतर करने में असमर्थ रहता है, तो मूल पाठ का कथ्य और भाव अधिकतम निकट के साथ लक्ष्य भाषा में लाना कठिन हो जाएगा।

कथा साहित्य की भाषा में केवल सपाटबयानी नहीं होती है, इसमें भी कविता और नाटक की तरह लक्षणा, व्यंजना का प्रयोग किया जाता है। यदि कथा साहित्य भारतीय भाषा में है, तो एक भारतीय अनुवादक के लिए इसका अनुवाद देश, काल और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में करना आसान होता है, लेकिन विदेशी भाषा में होने पर उसको अनुवाद में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। कथा साहित्य की भाषा के ये पक्ष अनूदित पाठ के आधार पर अनुवाद की समस्याओं का अध्ययन करने को प्रेरित करते हैं।

कथा साहित्य के अनुवाद की एक और प्रमुख समस्या देखने में यह आती है कि इसमें प्रयुक्त शब्दों में यदि एकार्थकता है तो कथा साहित्य का महत्व कम हो जाता है। इसे कथा साहित्य का दोष भी माना जाता है। अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कथा साहित्य के अनुवादक को किसी भी कृति को अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

- (1) स्रोत भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए
- (2) लक्ष्य भाषा का भी उसे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए
- (3) अनुवादक को रचनाकार के समाज और जीवन के विविध संदर्भों का अध्ययन
- (4) दोनों भाषाओं के साथ-साथ समाज और संस्कृति का अच्छा अध्ययन
- (5) पात्र-परिवेश के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण एवं विवेचन करना।

6.3.6 कथा साहित्य के अनुवाद के महत्वपूर्ण बिन्दु

कथा साहित्य का अनुवाद करते समय हमें कुछ मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए सर्वप्रथम अनुवाद करते समय हमें खुला-खुला लिखना चाहिए एक लाइन का स्पेस छोड़ना चाहिए जिससे बाद में वहीं सुधार करने में सहायता मिलती है। कभी कभी कुछ शब्द ऐसे आ जाते हैं जिसके कारण अनुवाद करने में रुकावट आती है ऐसी स्थिति में कुछ देर के लिए उसे वैसे ही छोड़ देना चाहिए और फिर उसे दोबारा से नए तौर से उसे ठीक रना चाहिए। कथा साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में यह भी देखा जाता है कि लेखक अपने यर्थात् को कल्पना और संवेदना के माध्यम से दिखना चाहता है। ऐसे में अनुवादक के सामने यह चुनौती है कि वह दूसरी भाषा में उस अनुभव की पुनः सृजित करे। जैसे अगर शेक्सपियर, ब्रेख्ट, जैसे रचनाकार जो विश्व के साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं। उनकी रचनाओं को किसी भी भाषा में अनुवाद करने के लिए केवल शब्द के सही अर्थ या वाक्य को खोजने से सही अनुवाद नहीं होगा। जैसे इन रचनाकारों ने मानवीय भावनाओं को अपने समय के विशाल पटल पर बुना

है, उसे ही अनुवाद में साकार करना होगा। अनुवादक के पास सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए और ग्रहणशील मन भी जो अलग-अलग बिंदुओं पर एक से अधिक पद्धतियों का इस्तेमाल कर लगभग मूल रचनाकार के ही समान ही कृति को प्रस्तुत कर सके। कथा साहित्य के अनुवादक के लिए यह बहुत बड़ा दायित्व है।

6.4 पाठ सार

छात्रों आपने इस इकाई में यह जाना कि कथा साहित्य किसे कहते हैं, व कथा साहित्य के अन्तर्गत मुख्य रूप से कौन-कौन सी गद्य की विधाएँ आती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कथा साहित्य का अनुवाद अपने आप में एक बहुत जटिल कार्य है। क्योंकि इसमें अनुवादक से अपेक्षा केवल दो भाषाओं का ज्ञान नहीं है बल्कि दो भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ दो संस्कृतियों की गहरी समझ होना भी बहुत जरूरी है, और इसके साथ ही, अनुवादक को साहित्य विशेष के प्रति गहरी समझ होना भी अनिवार्य है। कथा साहित्य के अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती उसकी संस्कृति के अनुसार भाषा का प्रयोग है। कोई भी कथा अपने समाज का पूर्ण रूप से चित्रण करती है। उस समाज के अनुभव विशेष को एक अनजानी भाषा में पुनः स्थापित करना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य माना जाता है। रचना में प्रयुक्त परिवेशगत शब्द, अनुभूतियां, लोकोक्तियाँ और मुहावरे तथा समाज विशेष के भीतर से उपजी कथा - ये सभी एक अनुवादक के लिए चुनौती की तरह होते हैं जिसको नज़र में रखते हुए अनुवादक को अनुवाद करना होता है। अनुवाद की इस प्रक्रिया में अनुवादक की यह जिम्मेदारी होती है कि वे लक्ष्यभाषा में उस समाज की अनुभूतियों, व अभिव्यक्तियों को पुनः सृजित करें। इसीलिए सर्जनात्मक साहित्य का काम पाठ के पुनः सृजन के समान ही होता है।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

- कथा साहित्य से क्या तात्पर्य है अर्थात् कथा साहित्य कहानी और उपन्यास में संबंधित साहित्य के सम्मिलित रूप को कहते हैं।
- ये दोनों गद्य की दो महत्वपूर्ण विद्याएँ हैं।
- आधुनिक काल में अपने विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए गद्य का सहारा लिया गया था।
- अनुवाद के माध्यम से हमें दो संस्कृतियों को समझने का अवसर प्राप्त होता है।
- कथा साहित्य का अनुवाद करते समय अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों के समाज संस्कृति और जनता की चित्तवृत्तियों का ज्ञान होना चाहिए।
- कथा साहित्य का अनुवाद बहुत ही चुनौतीपूर्ण होता है।
- कथा साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का ज्ञान होना चाहिए।
- पात्र परिवेश के सूक्ष्म तत्वों का विश्लेषण और विवेचन इसके अन्तर्गत देखा जाता है।

6.6 शब्द संपदा

1. अनुवाद	-	तर्जुमा, भाषांतर
2. कथासाहित्य	-	साहित्य की वह शैली है जिसमें जटिल कथानक और चरित्र होते हैं। जैसे उपन्यास और कहानी
3. अनुवादक	-	एक व्यक्ति एक भाषा से दूसरे भाषा में लिखित संदेश का अनुवाद करता है।
4. भाव प्रधान	-	भावों की तीव्रता या प्रचुरतावाला, भावृक
5. संस्कृति	-	परिष्कृति, संस्कार
6. संवाद	-	वार्तालाप, डाइलोग
7. नवसृजन	-	नवीनता
8. लोक कथाओं	-	किसी मानव समुह की साज्जी अभिव्यक्ति जो कथाओं कहावतों, चुटकुलों और अन्य रूपों में होती है।
9. विचारधारा	-	किसी समाज या समूह में प्रचलित विचारों का समुच्चय

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कथा साहित्य के अनुवाद के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है।
2. कथा साहित्य का अनुवाद एक जटिल कार्य है। स्पष्ट कीजिए।
3. कथा साहित्य के अनुवाद के सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कथा साहित्य के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
2. कथा साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाओं के अनुवाद पर चर्चा कीजिए।
3. कथा साहित्य के अनुवाद में आनेवाली मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

ਖਣਡ (ਸ)

। सही विकल्प चुनिए

1. कथा साहित्य के अन्तर्गत गद्य की कौन सी दो विद्या आती है।

(क) कहानी, नाटक (ख) नाटक, उपन्यास

(ग) उपन्यास, कहानी (घ) निबन्ध, उपन्यास

2. असगर वजाहत का सम्बन्ध किस साहित्य से है।

॥ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अनुवाद के माध्यम से दो संस्कृतियों के बीच एक पुल बनता

2. कथा साहित्य सीधी सरल विद्या न होकर विद्या है।

III सुमेल कीजिए

- | | |
|---------------------------|-------------------|
| (1) अनुवाद | (क) वर्णनात्मक |
| (2) उपन्यास | (ख) आधुनिक आचार्य |
| (3) आचार्य रामचंद्र शुक्ल | (ग) पुनःसृजन |

6.8 पठनीय पुस्तकें

- (1) डॉ. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, किताबघर 197

- (2) डॉ. ऎन.ई विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद, भाषाएँ समस्याएँ स्वाती प्रकाशन 1986

- (3) डॉ. कृष्णकुमार भाटिया, अनुवाद कला सिद्धान्त और ब्रह्मो प्रयोग,

तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली 1885

इकाई 7: नाटक के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ – नाटकानुवाद की समस्याएँ

7.3.1 नाटक का संक्षिप्त परिचय

7.3.2 नाटकानुवाद का स्वरूप

7.3.3 नाटक अनुवाद की प्रक्रिया

7.3.4 नाटकानुवाद की समस्याएँ

7.3.4.1 नाटकानुवाद और शिल्प

7.3.4.2 नाटक के संवाद

7.3.4.3 नाटक का देशकाल एवं वातावरण

7.3.4.4 सांस्कृतिक की समस्याएँ

7.3.3.5 रंगमंच का ज्ञान

7.3.4.6 मुहावरें और लोकोक्तियों की समस्या

7.3.4.7 अनुवाद एवं भाषा

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7. 1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व बढ़ रहा है। अन्य भाषाओं की संस्कृति को जानने की उत्सुकता बढ़ रही है। अनुवाद से अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। मनुष्य जीवन में ज्ञानार्जन करने का एक साधन के रूप में अनुवाद को माना जाता है। दूसरी भाषाओं की सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विषयों का ज्ञान अनुवाद के माध्यम से किया जाता है। विदेशी संस्कृति एवं रचना पद्धति को जान सकेंगे। साहित्यिक अनुवाद में नाटक अनुवाद विशिष्ट होता है। यह अभिनय किया जाता है। अनुवाद के मूल कृति का अर्थ स्नोत भाषा सुरक्षित रखना चाहिए। इसमें शब्दों के संदर्भ के अनुसार स्नोत भाषा में अर्थ स्पष्ट किया जाता है। नाटक अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसी समस्यों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- नाटक का संक्षिप्त परिचय से अवगत हो सकेंगे.
- नाटके के अनुवाद के बारे में जानेंगे.
- नाटक के अनुवाद की प्रक्रिया के बारे में जानेंगे.
- नाटकानुवाद में आने वाली समस्याओं से परिचित हो सकेंगे.

7.3 मूल पाठ – नाटकानुवाद की समस्याएँ

7.3.1 नाटक का संक्षिप्त परिचय –

साहित्यिक विधाओं में से एक नाटक विधा महत्वपूर्ण है, जिसे रंगमंच पर खेला जाता है। नाटक में प्रमुखतः कथानक होता है और उसके पात्रों का अभिनय महत्वपूर्ण होता है। रंगमंच से पाठक या दर्शक को रस्वाद किया जाता है। भारत में सबसे पहले नाटक संस्कृत भाषा मिलते हैं। हिंदी साहित्य में नाटक की परंपरा आधुनिक काल में भारतेंदु से मिलती है। भारतेंदु ने अनेक नाटकों का अनुवाद किया है और मौलिक नाटकों की भी रचना की है। विदेशी नाटकों का भी अनुवाद किया गया है। भारत भी बहु भाषायी देश होने के कारण भारत के अन्य भाषाओं में नाटकों का अनुवाद किया जाता है। संस्कृत में नाटक के तीन तत्व माने गए हैं- वस्तु, नेता और रस आदि। आम तौर पर नाटक के तत्व कथावस्तु, पात्र योजना एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन एवं संवाद, देशकाल एवं वातावरण, भाषा शैली। नाटकीयता एवं अभिनेयता और रस आदि हैं।

बोध प्रश्न –

- हिंदी में नाटक परंपरा कब से मिलती है ?

साहित्य की विधाओं का वर्गीकरण दो वर्गों में किया जाता है - दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। नाटक मूलतः दृश्य काव्य है। नाट्य साहित्य का महत्व इस तथ्य से जाना जा सकता है कि इसे 'पंचम वेद' के नाम से जाना जाता है। रंगमंच नाटक का प्राण तत्व होता है। नाटक की उपयोगिता इसी में है कि दर्शक उसे देखकर अधिक से अधिक आनंद प्राप्त करे। 'नाट्यशास्त्र' के रचनाकार भरतमुनि ने यहाँ तक माना है कि योग, कर्म और शास्त्र तथा सभी शिल्पों का नाटक में समावेश पाया जाता है। नाटक के द्वारा देश की सांस्कृतिक परंपरा की रक्षा होती है। इसीलिए साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक एक बहुचर्चित एवं लोकप्रिय विधा है। नाटक और मानव जीवन का हमेशा से संबंध रहा है। मनुष्य जीवन के विभिन्न पहलुओं से विषय चुनकर नाटकों की रचना की जाती है। नाटक में जिस युग अथवा समय का चित्रण किया जाता है, पात्रों की वेशभूषा, संवाद, अभिनय और मंच सज्जा द्वारा उस युग के परिवेश को दर्शक के सामने प्रस्तुत करने का यत्न किया जाता है। इस प्रकार नाटक दर्शक को उस युग के समाज से जोड़ता है। यह जु़ड़ाव ही नाटक की प्रासंगिकता का आधार होता है।

नाटक एक प्रभावशाली कला है। इसका असर दर्शक पर सीधा पड़ता है। दर्शक इसके माध्यम से लोकोत्तर आनंद का अनुभव करता है। भरतमुनि ने 'लोकवृत्त के अनुकरण' को नाटक की प्राथमिक विशेषता माना है।

यहाँ उन्होंने नाटक के तीन मूल लक्षणों का संकेत किया है -

1. नाटक अनेक भावों से युक्त होता है।
2. नाटक में अनेक अवस्थाएँ होती हैं।
3. नाटक में लोकवृत्त का अनुकरण किया जाता है।

अर्थात् वह लोक में प्रसिद्ध आच्यान को अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करने वाली विधा है। नाटक की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो अन्य विधाओं में नहीं पाई जातीं। इसी कारण वह अन्य विधाओं से अलग स्थान रखता है। औँखों से प्रत्यक्ष रूप से इसे हम देखते हैं, इसी कारण इसके सभी तत्व कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि के तत्वों से अधिक महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। नाटकों में कथावस्तु का क्रमिक विकास बहुत ही स्पष्टता से दिखाया जाता है। वैसा अन्य विधाओं में नहीं पाया जाता। इसका कारण यह है कि नाटकीय कथा को अनेक दृश्यों में दिखाया जाता है। इन विशेषताओं के आधार पर आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है कि - 'नाटक वह कृति है - (1) जिसकी कथावस्तु इतिहास-पुराण प्रसिद्ध हो, (2) जिसमें अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों का वर्णन हो, (3) जिसमें अंक संख्या 5 से 10 तक हो, (4) जिसका नायक उच्च वर्ग में उत्पन्न धीर, वीर, साहसी और प्रतापी हो, (5) जिसमें प्रधान रस वीर अथवा शृंगार हो तथा अन्य रस सहायक हों, (6) जिसमें संवाद आदि का उचित समावेश हो।'

वर्तमान समय में इस परिभाषा में काफी बदलाव आ चुका है, तो भी इसे शास्त्रीय दृष्टि से नाटक की परिपूर्ण परिभाषा कहा जा सकता है। कुल मिलाकर, नाटक साहित्य उस विधा का नाम है जिसमें किसी लोकवृत्त के पात्रों को अभिनय तथा संवादों के माध्यम से रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। डॉ. दशरथ ओझा के शब्दों में "जब लोगों की क्रियाओं का अनुकरण अनेक भावों और अवस्थाओं से परिपूर्ण होकर किया जाए तो वह नाटक कहलाता है।" स्पष्ट है कि नाटक का मूल तत्व उनकी मंचीयता है, क्योंकि नाटक एक दृश्यकाव्य है। अतः नाटक का रंगमंच पर खेला जाना आवश्यक होता है।

संस्कृत नाट्यशास्त्र में नाटक के तीन तत्वों की चर्चा मिलेगी - 1. कथावस्तु, 2. नायक तथा 3. रस। लेकिन वर्तमान काल में नाटक के सात प्रमुख तत्व स्वीकृत हैं -

1. कथानक या कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र चित्रण

3. संवाद या कथोपकथन
4. देशकाल वातावरण
5. भाषा-शैली
6. उद्देश्य या संदेश
7. अभिनेयता या रंगमंच

7.3.2 नाटकानुवाद का स्वरूप

साहित्यिक विधाओं में से एक नाटक विधा भी महत्वपूर्ण होती है। नाटक एक दृश्य विधा के अंतर्गत माना जाता है इसके अनुवाद की समस्या अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न है। नाटक जनसाधारण की चीज है जो दूसरी विधाओं की अपेक्षा नाटक का दर्शकों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। कहानी विधा घर में बैठकर पढ़कर आनंद ले सकता है और कविता का कवि सम्मेलनों में आनंद ले सकता है। नाटक में प्रत्येक रूप में पात्रों के अभिनय को देख सकते हैं पात्रों के एक-दूसरे से संवाद करने की शैली को देखा जाता है। जब पाठक नाटक का वाचन करता है तो उसके मस्तिष्क में बिम्ब निर्माण होते हैं। नाटकों में अनेक रसों का समिश्रण होता है। नाटक दो प्रकार के माने जाते हैं एक पठनीय और दूसरा अभिनेय। इसी के आधार पर नाटक अनुवाद भी दो प्रकार माना जाता है। नाटक के अनुवादक को स्नोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना जरूरी होता है “अनुवाद के लिए दो भाषाओं का अच्छा ज्ञान ही प्रर्याप्त नहीं है, रंग परम्पराओं की सम्पूर्ण पहचान और मूल नाटक से जुड़ी रंग-परंपरा की विशिष्ट पहचान भी होनी चाहिए।” अनुवादक को रंगमंच का थोड़ा बहुत ज्ञान होना आवश्यक होना चाहिए तब वह अनुवाद एक सफल अनुवाद माना जाता है। “नाटक के अनुवाद के लिए रंगमंच का व्यवहारिक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। नाटक में बहुत सारी तकनीकी बातें होती हैं। जिन्हें अनुवादक को जानना जरूरी हो जाता है अन्यथा वह अनुवाद कर नहीं सकेगा।” (अनुवाद : संवेदना और सरोकार – पृ.154) अनुवाद में मूल नाटक के बिम्ब को दूसरी भाषा में उसी तरह के बिम्ब को सुरक्षित रखने की समस्या होती है। नाटक एक संवादात्मक शैली विधा है इसमें वर्णन नहीं होता है। मूल नाटक की सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए नाटक का अनुवाद किया जाता है।

बोध प्रश्न –

- नाटकानुवाद के समय अनुवादक को किस बात का ज्ञान होना चाहिए ?

7.3.3 नाटकानुवाद की प्रक्रिया

नाटक का अनुवाद करने से पहले दो भाषी अनुवादक की जरूरी होती है जो मूल भाषा से स्नोत भाषा या लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। अनुवादक मूल कृति का चयन करके उसका अध्ययन करना और उसकी कथावस्तु को समझाना आवश्यक होता है। नाटक में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ को खोजना जरूरी होता है। अनुवाद में सन्दर्भ के अनुसार और सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार शब्दों का सही गठन किया जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व के आधार

पर संवादों का अनुवाद किया जाता है. नाटककार का मंतव्य और रचना का परिवेश की जानकारी प्राप्त करना अव्यशायक होता है. इसी के आधार पर मूल कृति का मूल अर्थ या संदेश स्वोत भाषा में दिया जाता है.

बोध प्रश्न –

- नाटकानुवाद की प्रक्रियाँ में प्रयुक्त होने वाली दो भाषाओं को क्या कहा जाता है ?

7.3.4 नाटकानुवाद की समस्याएँ

अन्य विधाओं का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है उसी तरह से नाटक विधा का भी अनुवाद करते समय अनेक समस्याएँ आती है. रीतारानी पालीवाल ने अपनी 'अनुवाद प्रक्रिया और परिदृश्य' किताब में कहती है कि "नाटकानुवाद में मूल समस्या मूल नाटक के बिम्ब को दूसरी भाषा में उसी तरह या नजदीकी बिम्ब के द्वारा सुरक्षित रखना होता है." (पृ. 85) अनुवादक को मूल नाटक की परंपरा और दो भाषाओं के रंगमंच का ज्ञान होना आवश्यक होता है. 'अनुवाद संवेदना और सरोकार' किताब में डॉ. सुरेश सिंहल कहते हैं कि "समाज विशेष की नाल्य परम्पराओं में सांस्कृतिक स्तर पर स्वीकृति गुप्त भाषायी संकेत होते हैं जो कि चुटकुलों, श्लेषों, अश्लिलों टिप्पणियों स्थानीय व्यंगयों आदि के रूप में व्यक्त होते हैं." (पृ. 155) क्षेत्र के अनुसार भाषा एवं संस्कृति होती है. जैसे जैसे क्षेत्र बदलता है वैसे वैसे ही भाषा और संस्कृति बदलती है इस लिए अनुवाद के समय भाषा और संस्कृति का ध्यान रखना आवश्यक है. नाटक के अनुवाद के समय में आनेवाली समस्याएँ निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है.

बोध प्रश्न –

- नाटकानुवाद की समस्याएँ के बारे में रीतारानी पालीवाल का क्या कथन है ?

7.3.4.1 नाटकानुवाद और शिल्प

अनुवाद में प्रधान समस्या शिल्पगत है जो नाटक में विषय वस्तु, कथानक, चरित्र, विचार तत्व, कार्य-व्यापार, संघर्ष गीति-तत्व, आदि सभी कुछ संवादात्मक कला के माध्यम से व्यक्त है. भाषा के अनुसार शिल्प भी परिवर्तन होते हैं इसलिए अनुवादक को शिल्प का ध्यान रखना आवश्यक होता है. नाटक में प्रत्येक पात्र का विशिष्ट शैली पर बल देता है की कला या व्यक्तित्व अलग-अलग होती है.

7.3. 4.2 नाटक के संवाद

नाटक के पात्रों द्वारा किया गया संवाद की भाषा में आने वाला उतार-चढाव, अनुवाद की भाषा में ध्वनियों और नाद में स्वराघात और व्यंजन-ध्वनियों की योजना में विविधता को ध्यान देना आवश्यक हैं, नहीं तो यह अनुवाद के बाद जब रंगमंच पर जाकर असफल हो जाएगा. भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार पात्रों का उच्चारण अलग-अलग होता है. अनुवादक को ध्वनिमूलक स्वभावानाओं से परिचित होना चाहिए.

बोध प्रश्न –

- नाटक में शिल्प क्या होता है?

7.3. 4.3 नाटक का देशकाल एवं वातावरण

नाटककार अपने देशकाल के अनुसार नाटक की रचना करता है। अनुवादक को उस कृति का देशकाल का ध्यान रखना आवश्यक होता है। लेकिन अनुवादक के सामने अपने देश के लोगों के अनुसार उसका अनुवाद करें या ना करें यह एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी होती है।

नाटकानुवाद में वातावरण एक महत्वपूर्ण घटक हैं जो उसका अनुवाद करना कठिन कार्य होता है।

7.3. 4.4 सांस्कृतिक की समस्याएँ

परिवेश के अनुसार संस्कृति में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। जब नाटक का अनुवाद किया जाता है तो सांस्कृतिक तत्वों का ध्यान देना अनिवार्य होता है। मूल कृति की सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखने की समस्या होती है। यह अनुवादक के लिए बहुत कठिन कार्य होता है। मूल कृति के पात्र के नाम की बड़ी समस्या होती है। विदेशी नाम भारतीय को रस्वाद उत्पन्न नहीं कर सकेगी इसके लिए अपने परिवेश अर्थात् भारतीय नामों से भारतीय पाठकों के लिए रस्वाद उत्पन्न हो सकता है। अपने अपने परिवेश के अनुसार समाज में अनैतिकता एवं अक्षीलता होती है, उसका भी अनुवाद करना अनुवादक के लिए बहुत बड़ी समस्या होती है। अनैतिकता एवं अक्षीलता स्थान सापेक्ष, संस्कृति सापेक्ष और समय सापेक्ष होती है। किसी किसी क्षेत्र में कोई बात सम्मानजनक होती है तो कहीं अपमानजनक होती है। परिवेश के अनुसार वेशभूषा भी अलग-अलग होती है। अनुवादक को वेशभूषा की भी समस्या उत्पन्न करती है।

बोध प्रश्न –

- देशकाल क्या होता है ?
- सांस्कृतिक से तात्पर्य क्या है ?

7.3.3.5 रंगमंच का ज्ञान

नाटक के अनुवादक के लिए सबसे पहले शर्त यह है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए। मूल नाटक की परंपरा का ज्ञान और जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उसका रंगमंच का ज्ञान होना आवश्यक तत्व माना जाता है। अनुवादक जब तक मूल नाटक की परंपरा को नहीं जानेगा तब तक उस नाटक के प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड़ पायेगा तथा लक्ष्य भाषा के नाटक में रस उत्पन्न करना असफल हो जाएगा। रंगमंच के व्यवहारिक ज्ञान के आभाव के कारण अनुवादक को अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनुवादक को नाटक के संपादन और अभ्यास की पूरी प्रक्रिया में निर्देशक और अभिनेताओं से संबंध रहन चाहिए। ताकि वह अपने अनुवाद की मूल कमियों को समझकर परिष्करण दे सके और मंच की विशिष्टताओं को सुरक्षित भी रख सके।

बोध प्रश्न –

- नाटक में किस बात का ज्ञान होना चाहिए।

7.3. 4.6 मुहावरें और लोकोक्तियों की समस्या

भाषा को सुशोभित या प्रभावित करने के लिए मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। नाटकानुवाद करते समय स्नोत भाषा के मुहावरें और लोकोक्तियाँ मिलने पर उसके समान लक्ष्य भाषा में भी अर्थ एवं शब्दों की दृष्टि से मुहावरें और लोकोक्तियाँ का खोज करना होता है। अगर दोनों भाषा के मुहावरें और लोकोक्तियाँ समान मिल जाए तो ठीक है नहीं तो स्नोत भाषा के भाव को लक्ष्य भाषा में व्यक्त किया जाता है। स्नोत भाषा के पाठकों के लिए जितना रस मिलता है उतना लक्ष्य भाषा के पाठकों को नहीं मिलता। भाव साम्यता के अभाव में अर्थ के अनर्थ हो जाने की संभावनाएँ अधिक रहती हैं।

बोध प्रश्न –

- लोकोक्तियाँ से तात्पर्य क्या है ?

7.3. 4.7 अनुवाद एवं भाषा

नाटकानुवाद में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनुवाद में भाषा प्रमुख तत्व है जो इसीके माध्यम से स्नोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है। डॉ. सुरेश सिंहल कहते हैं कि “नाटक में स्वराधात, वाक्य विन्यास और बोलचाल की भाषा की प्रयोग की समस्या होती ही। यहाँ भी अनुवादक को स्नोत भाषा और लक्ष्य भाषा में शैली ध्वनि आदि के सूक्ष्म परिवर्तनों के प्रति सावधान रहना पड़ता है।” (पृ. 155)

भाषा में आने वाले शब्द का उच्चारण एवं उनका प्रयोग सही से करना पड़ता है। अनुवाद में मध्यस्थ भाषा के माध्यम से अनुवाद करने पर अर्थ-निर्धारण की समस्याएँ आती हैं। भाषा परिवर्तनशील हैं इसमें स्थानीय बोलियों, आँचलिक शब्द के समतुल्य शब्दों को लक्ष्य भाषा में खोजने की समस्या होती है। नाटक अनुवाद भाषा में सरलता और तीव्र संवेदना क्षमता ये दोनों गुण अत्यंत आवश्यक हैं। नाटक का भाषा अक्सर शिष्ट भाषा एवं अनौपचारिक जन भाषास का समन्वित रूप होती है और अनुवाद को जीवंत बनाने के लिए मूल के इस मिश्रण की कला की पहचान होना आवश्यक है। अनुवाद की भाषा भी मूल के समान पात्रानुकूल, भावानुकूल और प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। नाटक अनुवाद में वाक्य रचना बहुत ही सरल होनी चाहिए। छोटे वाक्यों, अधूरे वाक्यों, एकाक्षरी वाक्यों, कर्ता और सरनाम का लोप करके, प्रश्नवाचक वाक्यों को सहज बनाकर संवादों को सहज एवं स्वाभाविक बनाया जाता है।

बोध प्रश्न –

- अनुवाद के लिए मुख्य माध्यम क्या है ?

7.4 पाठ सार

साहित्यिक विधाओं में से एक नाटक विधा महत्वपूर्ण है, जिसे रंगमंच पर खेला जाता है। नाटक में प्रमुखतः कथानक होता है और उसके पात्रों का अभिनय महत्वपूर्ण होता है। रंगमंच से पाठक या दर्शक को रस्वाद किया जाता है। भारत में सबसे पहले नाटक संस्कृत भाषा मिलते हैं।

हिंदी साहित्य में नाटक की परंपरा आधुनिक काल में भारतेंदु से मिलती हैं। नाटक एक दृश्य विधा के अंतर्गत माना जाता है इसके अनुवाद की समस्या अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्न है। नाटक के अनुवादक को स्नोत भाषा और लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना जरुरी होता है।

नाटक का अनुवाद करने से पहले दो भाषी अनुवादक की जरुरी होती है जो मूल भाषा से स्नोत भाषा या लक्ष्य भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। अनुवादक मूल कृति का चयन करके उसका अध्ययन करना और उसकी कथावस्तु को समझाना आवश्यक होता है। नाटक में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ को खोजना जरुरी होता है। अनुवाद में सन्दर्भ के अनुसार और सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार शब्दों का सही गठन किया जाता है। अन्य विधाओं का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है उसी तरह से नाटक विधा का भी अनुवाद करते समय अनेक समस्याएँ आती हैं।

अनुवाद में प्रधान समस्या शिल्पगत है जो नाटक में विषय वस्तु, कथानक, चरित्र, विचार तत्व, कार्य-व्यापार, संघर्ष गीति-तत्व, आदि सभी कुछ संवादात्मक कला के माध्यम से व्यक्त है। अनुवाद की भाषा में ध्वनियों और नाद में स्वराघात और व्यंजन-ध्वनियों की योजना में विविधता को ध्यान देना आवश्यक हैं, नहीं तो यह अनुवाद के बाद जब रंगमंच पर जाकर असफल हो जाएगा। नाटककार अपने देशकाल के अनुसार नाटक की रचना करता है। अनुवादक को उस कृति का देशकाल का ध्यान रखना आवश्यक होता है। परिवेश के अनुसार संस्कृति में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। जब नाटक का अनुवाद किया जाता है तो सांस्कृतिक तत्वों का ध्यान देना अनिवार्य होता है। मूल कृति की सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखने की समस्या होती है। अपने अपने परिवेश के अनुसार समाज में अनैतिकता एवं अक्षीलता होती है, उसका भी अनुवाद करना अनुवादक के लिए बहुत बड़ी समस्या होती है। अनैतिकता एवं अक्षीलता स्थान सापेक्ष, संस्कृति सापेक्ष और समय सापेक्ष होती है। भाषा को सुशोभित या प्रभावित करने के लिए मुहावरें और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है। नाटकानुवाद करते समय स्नोत भाषा के मुहावरें और लोकोक्तियाँ मिलने पर उसके समान लक्ष्य भाषा में भी अर्थ एवं शब्दों की दृष्टि से मुहावरें और लोकोक्तियाँ का खोज करना होता है। अनुवाद में भाषा प्रमुख तत्व है जो इसीके माध्यम से स्नोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है। अनुवाद में मध्यस्थ भाषा के माध्यम से अनुवाद करने पर अर्थ-निर्धारण की समस्याएँ आती हैं।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस अध्याय के अध्ययन से निम्नलिखित उपलाधियाँ प्राप्त हुए –

- नाटकों का संक्षिप्त परिचय से अवगत हुए हैं।
- नाटकानुवाद के स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें हैं।
- नाटक अनुवाद की प्रक्रियाँ से अवगत हुए हैं।
- नाटक अनुवाद में आने वाली समस्याओं से परिचित हुए हैं।
- नाटकानुवाद के समय विशिष्ट समस्याओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

7.6 शब्द संपदा

1. ज्ञानार्जन	=	ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञानोपलब्धि
2. मौलिक	=	मूल तत्व या सिद्धांत से संबंध रखने वाला, मूलभूत
3. अभिनय	=	कलाकारी, अदाकारी, नाटकर्म (एकिंटंग)
4. रंगमंच	=	नाटक खेले जाने का स्थान, नाट्यशाला (स्टेज)
5. पाठक	=	पाठ पढ़ने वाला, पाठ करने वाला.
6. दर्शक	=	नाटक देखने वाली जनता
7. कथोपकथन	=	वार्तालाप, बातचीत, संवाद
8. बिम्ब	=	अक्स, प्रतिमूर्ति, (इमेज)
9. स्वोत भाषा	=	जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है.
10. लक्ष्य भाषा	=	जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है.
11. परिवेश	=	वातावरण, माहौल, परिधी
12. स्वराधात	=	शब्द के उच्चारण के समय किसी व्यंजन या स्वर पर अधिक जोर देना.
13. अनैतिकता	=	अनैतिक होने की अवस्था या भाव, मर्यादाहीन
14. परिष्करण	=	परिष्कार करने की क्रिया
15. आँचलिक	=	ग्रामीण क्षेत्र
16. समन्वित	=	जिसका समन्वय हुआ हो, जिसमें सामंजस्य हो

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- नाटकनुवाद में भाषिक समस्याएँ पर चर्चा कीजिए।
- नाटकनुवाद में सांस्कृतिक समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।
- नाटकानुवाद का स्वरूप बताते हुए उसके प्रक्रियाँ पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए। 200

- नाटकानुवाद की प्रक्रिया को बताइए।
- नाटकानुवाद में भाषिक सफलता पर चर्चा कीजिए।
- नाटकानुवाद में परिवेश या वातावरण स्पष्ट कीजिए।
- नाटकानुवाद में लोकोक्तियाँ पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (स)

I सही विकल्प चुनिए

1. हिंदी में नाटक विधा किस काल के अंतर्गत आती है ?
(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिकाल
2. नाटक प्रदर्शन के स्थान को क्या कहते हैं ?
(क) रंगमंच (ख) मैदान (ग) बाजार (घ) समारोह
3. नाटक अनुवादक को किस का ज्ञान आवश्यक चाहिए ?
(क) कविता करने का (ख) रंगमंच का (ग) वाचन करने का (घ) कहानी लिखने का
4. नाटक की मूल भाषा को क्या कहा जाता है ?
(क) लक्ष्य भाषा (ख) अनुदित भाषा (ग) स्नोत भाषा (घ) कोई नहीं
5. नाटक अनुवादक कम से कम कितनी भाषा जानना चाहिए ?
(क) 1 (ख) 2 (ग) 3 (घ) 4

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे भाषा कहा जाता है।
2. नाटक पर खेला जाता है।
3. नाटक अनुवादक को कम से कम भाषा को जानना चाहिए।
4. जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है उसे भाषा कहा जाता है।

III सुमेल कीजिए

1. हिंदी में नाटक का काल अ) स्नोत भाषा
2. जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है आ) आधुनिक काल
3. जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है इ) रंगमंच
4. नाटक प्रदर्शन का स्थान ई) लक्ष्य भाषा

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद और संवेदना और सरोकार – डॉ. सुरेश सिंहल
2. अनुवाद प्रक्रिया और परिदृश्य
- 3 अनुवाद सिद्धांत – भोलानाथ तिवारी
- 4 अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. जी. गोपीनाथन

8. सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ : सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

8.3.1 संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा

8.3.2 संस्कृति एवं अनुवाद

8.3.3 सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

8.3.3.1 नामकरण की समस्या

8.3.3.2 खान-पान की समस्या

8.3.3.3 त्योहारों की समस्या

8.3.3.4 वेशभूषा की समस्या

8.3.3.5 रीति-रिवाज की समस्या

8.3.3.6 अभिव्यक्ति की संस्कृति की समस्या

8.3.3.7 सांस्कृतिक घटनाओं की समस्या

8.3.3.8 सांस्कृतिक शीर्षक की समस्या

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

मानव समाज परिवर्तन शील है. वह समय और स्थान के अनुसार परिवर्तन होता है. खान-पान, वेशभूषा और भाषा अलग-अलग होती है. उनका रहन-सहन, रीति-रिवाज, त्योहार आदि अलग-अलग होते हैं. विभिन्न मानव व्यवहार को संस्कृति का नाम दिया गया है. अपने-अपने परिवेश, भाषा, धर्म, जाति के अनुसार कुछ नियम गढ़ लेते हैं उसी नियमों को हम संस्कृति कहते हैं. भारत में देखा जाएं तो यहाँ अनेक धर्म और जाति के साथ अनेक भाषाओं की भी संस्कृति अलग-अलग है. जब हम एक भाषा की संस्कृति अन्य किसी दूसरी भाषाओं को परिचित कराते हैं तब अनुवाद की आवश्यकता होती है. ऐसे अनुवाद के लिए अनुवादक को अनेक समस्याओं से दृजना पड़ता है. जैसे – खान-पान, वेशभूषा, त्योहार और रीति-रिवाज आदि.

खोत भाषा की संस्कृति और लक्ष्य भाषा की संस्कृति समान हो तो अनुवादक आसानीसे अनुवाद कर सकता है लेकिन जब दोनों भाषाओं की संस्कृति अलग हो तो अनुवादक की मुश्किलें

बढ़ जाती है। इस इकाई के माध्यम से सांस्कृतिक अनुवाद की समस्याओं के बारे में हम अध्ययन करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- संस्कृति शब्द से परिचित होंगे।
 - संस्कृति के अनुवाद की जानकारी प्राप्त करेंगे।
 - अनुवाद की समस्याओं से परिचित होंगे।
 - सांस्कृतिक पाठ की समस्याओं को जानेंगे।
-

8.3 मूल पाठ : सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

छात्रों! हम पहले सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ में संस्कृति के बारे में संक्षिप्त में जानेंगे और उसके अनुवाद की समस्याओं का अध्ययन करेंगे।

8.3.1 संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा

विश्व एक है मगर उसमें संस्कृति और भाषा अनेक हैं। इस संसार में मानव जीवन शैली अलग-अलग है। यहाँ संस्कृति का तात्पर्य या अर्थ है 'सिखा हुआ व्यवहार' है अर्थात् कोई भी व्यक्ति बचपन से अब तक जो सिखा हुआ है जैसे- खाना-पीना, बात करना, भाषा का ज्ञान अर्जित करना, धर्म, जाति, वेशभूषा, रीति-रिवाज, त्योहार करना, लोक गीत गाना आदि संस्कृति के अंतर्गत माना जाता है। यह सभी अपने अपने समूह के साथ-साथ जीवन व्यतीत करने के नियम या विधान को संस्कृति माना जाता है। यही नियम या विधान कालांतर तक चलते रहता है।

संस्कृति को अंग्रेजी में 'culture' कहा जाता है। 'culture' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'cultura' शब्द से मानी जाती है। संस्कृति का शाब्दिक अर्थ – 'संस्कार' का रूपांतर माना जाता है। संस्कृति में कला, संगीत, वास्तुविज्ञान, शिल्प कला, दर्शन, धर्म और विज्ञान आदि आते हैं। संस्कृति में रीति-रिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीने की पद्धति आदि सम्मिलित हैं।

संस्कृति को दो आधार पर माना जाता है - भौतिक और अभौतिक। भौतिक संस्कृति में वेशभूषा, खान-पान, घरेलु सामान आदि आते हैं। अभौतिक संस्कृति के अंतर्गत विचार, आदर्श भावना और विश्वास आता है।

परिभाषा -

संस्कृति की परिभाषा अनेक विद्वानों ने विभिन्न दी है जो इस प्रकार से हैं -

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार "मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो स्वजन करता है उसे संस्कृति कहते हैं।"

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार - "संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे समस्त जीवन में विद्यमान में व्याप्त है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक रूढियों के अनुभव का हाथ है।"

वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार – “ वास्तव में संस्कृति वह है जो सूक्ष्म एवं स्थूल मन एवं कर्म अध्यात्म जीव एवं प्रत्यक्ष जीव में कल्याण करती है।”

8.3.2 संस्कृति एवं अनुवाद

मानव जीवन में एक दूसरे की संस्कृति को जानना आवश्यक होता है। यहाँ संस्कृति का सामान्य अर्थ मानव जीवन शैली, साहित्य, धर्म, ललित कलाएँ आदि बाते हमारे चिंतन में आती है। लेकिन संस्कृति शब्द व्यापक अर्थ में है। संस्कृति मानव जीवन के कण-कण में समाहित है। उसका रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, जाति, लोक गीत, कला, साहित्य, भाषा आदि है। अन्य भाषा या परिवेश की संस्कृति को जानने के लिए अनुवाद की जरूरी है।

भारत जैसे बहुभाषी देशों में अनुवाद की आवश्यकता और बढ़ जाती है क्योंकि एक ही देश में अनेक भाषाएँ होती हैं और उनकी अलग-अलग संस्कृति है। वर्तमान में भारतीय समाज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं। दैनिक जीवन में पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रयोग कर रहा है। दैनिक जीवन में पाश्चात्य भाषा के शब्द का प्रयोग करने लगे हैं इसे अनुदित शब्द भी कहा जाता है।

मेज - टेबल

कुरसी - चेर

दफ्तर - ऑफिस

घड़ी - वाच

चम्मच - स्पून

नास्ता - ब्रेकफास्ट

8.3.3 सांस्कृतिक पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

भाषा में ऐसे शब्द होते हैं कि वे अन्य किसी दूसरे भाषा में उसका अर्थ नहीं बता सकते हैं क्योंकि दोनों भाषाओं की संस्कृति अलग-अलग होती है। जैसे कि मराठी में मंगलसूत्र है उसे कोई भी भारतीय असनीसे समझ सकता है लेकिन विदेशियों के लिए समझना मुश्किल होता है इस लिए इसका अनुवाद नहीं बल्कि उसे पाद टिप्पणी देखकर समझाना पड़ता है। ऐसे अनेक शब्दों के अनुवाद की समस्याएँ होती हैं। वे निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

8.3.3.1 नामकरण की समस्या

व्यक्ति या साहित्यिक पात्र के नाम अपने-अपने परिवेश के अनुसार होते हैं। जब हम नाम का अनुवाद किसी दूसरी भाषाओं में करना चाहते हैं तो लक्ष्य भाषा के पाठक को रस उत्पन्न नहीं होगा। जो स्नोत भाषा के पाठक रस प्राप्त करते हैं। जैसे- उर्दू के बेगम नाम का अनुवाद औरत या बाई रख दे तो वह लक्ष्य भाषा के पाठकों को ठीक नहीं लगेगा। उस नाम को बताना चाहते हैं तो उसका अनुवाद नहीं किया जाता बल्कि उसी नाम को बताना पड़ता है तब लक्ष्य भाषा के पाठकों को रस प्राप्त होता है। ऐसे में अनुवादक को उस नाम का अनुवाद के जगह व उसी शब्द को जैसा कि तैसा ही रख देता है। इसका स्पष्टीकरण पाद टिप्पणी में देता है। जब

साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक पाठकों के नाम अपने परिवेश के अनुसार नाम रख कर लक्ष्य भाषा के पाठकों में रस उत्पन्न करता है।

8.3.3.2 खान-पान की समस्या

मानव जीवन में जीने के लिए महत्वपूर्ण तत्व भोजन है। लेकिन सभी मानव एक जैसा भोजन पदार्थ सेवन नहीं करता क्योंकि परिवेश के अनुसार उसका भोजन होता है। जैसे – चावल, रोटी, मॉस, अन्य पदार्थ। एक देश की खाद्य सामग्री प्रायः दूसरे देश की संस्कृति खाद्य सामग्री से सर्वतः भिन्न होती है। मानव संस्कृति में खान-पान एक महत्वपूर्ण तत्व है। जब अनुवादक स्रोत भाषा के खान-पान का अनुवाद करता है तो उसे लक्ष्य भाषा में उसी प्रकार रख देना पड़ता और उसका स्पष्टीकरण पाद टिपण्णी में देता है। कुछ-कुछ तो लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा का नाम ही लिया जाता है जैसे – अंग्रेजी के 'Mango Shake' के लिए मैंगो शेक Sandwich के लिए सैंडविच, Ice-cream के लिए आइस क्रीम, cake के लिए केक आदि। कुछ नाम जैसे के तैसे रख कर उसका पाद टिपण्णी में विवरण देना चाहिए जैसे- बेगन का भरता के लिए Baigan ka bharata (a dish prepared from meshed and fried bringles), 'इडली' Idli (South Indian dish prepared from rice flour steam boiler Item) यही लक्ष्य भाषा में समझाने के लिए मुश्किल होता है, ऐसे ही अनुवादक को कई अन्य समस्याएँ जूझना पड़ता है।

8.3.3.3 त्योहारों की समस्या

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में अनेक धर्म के अनेक त्योहार हैं यह भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व है। जिस त्योहार को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिलती है ऐसे त्योहारों का अनुवाद आसानीसे किया जाता है जैसे – दिवाली, रमजान, क्रिसमस आदि। लेकिन जो त्योहार अपने देश, समाज, धर्म और जाति तक ही सीमित रहते हैं वैसे त्योहारों का अनुवाद करना मुश्किल होता है। क्योंकि ऐसे त्योहारों से लक्ष्य भाषा के पाठक परिचित नहीं होते हैं। ऐसे शब्द या त्योहार के अनुवाद के समय अनुवादक इसे पाद टिपण्णी में स्पष्टीकरण देना आवश्यक होता है। जैसे – संक्रांति, बकरीद, होली, पोंगल, उगादी आदि। विभिन्न भाषा के विभिन्न त्योहार का अनुवाद करना कठिन कार्य होता है।

8.3.3.4 वेश भूषा की समस्या

विभिन्न परिवेश, देश या भाषा के अनुसार विभिन्न पोशाख होता है। ऐसे दैनिक जीवन में आने वाले वस्तुओं के नामों का अनुवाद करना अनुवादक के सामने एक कठिन समस्या होती है। जैसे की भारतीय समाज में जनेऊ, धोती, कुर्ता, सिंदूर, मंगलसूत्र आदि संस्कृति के सूचक हैं। ऐसे शब्दों के अनुवाद के समय विदेशी (लक्ष्य) भाषा के अनुवादक को जटिल समस्याओं से गुजरना पड़ता है। वैसे शब्द को जैसा कि तैसा ही रख देना चाहिए और उसका स्पष्टीकरण पाद टिपण्णी में देना जरूरी होता है। ऐसे ही विदेशी भाषा की वेश भूषा को भारतीय भाषा में अनुवाद करते समय उसका स्पष्टीकरण पाद टिपण्णी में करना आवश्यक होता है। विभिन्न देशों

में वातावरण या मौसम के अनुसार वेश भूषा का धारण किया जाता है. इन वेश भूषा के नाम भी अलग-अलग होते हैं ऐसे में अनुवादक को सतर्क रहकर उसका अनुवाद करना चाहिए. विभिन्न देशों में छ्री या पुरुषों के विभिन्न आभूषण होते हैं. वही आभूषण लक्ष्य भाषा में न हो तो उसका अनुवाद करने के लिए अनुवादक के सामने अनेक समस्याएँ खड़ी होती हैं.

8.3.3.5 रीति-रिवाज की समस्या

मानव जीवन में पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही परंपरा या संस्कार को ही रीति-रिवाज कहा जाता है. मानव समाज में रीति-रिवाज का बड़ा महत्व होता है. प्रत्येक समाज में शिशु जन्म से लेकर बुद्धापा की मृत्यु तक रिवाज किया जाता है. परिवेश के अनुसार अलग अलग संस्कृति होती है. जैसे की भारतीय समाज में जब शिशु का जन्म होता है तो उसका नामकरण, केशकर्तन, युवा अवस्था में विवाह करना, और अंतिम संस्कार करना आदि भारतीय समाज की संस्कृति होती है. लेकिन भारतीय समाज में भी अलग - अलग भाषा में यह सब संस्कृति अलग-अलग होती है. यही संस्कृति पाश्चात्य देशों में विभिन्न होती है. इसीका अनुवाद करना अनुवादक के लिए मुश्किल का कार्य होता है. अनुवादक को लक्ष्य भाषा के रीति-रिवाज का ज्ञान होने से उसका अनुवाद कार्य आसान होने की संभावना होती है.

8.3.3.6 अभिव्यक्ति की संस्कृति की समस्या

सांस्कृतिक अनुवाद में अभिव्यक्ति की संस्कृति की समस्या आती है. जो कि अपनी भाषा में कुछ विशेषताओं के अनुरूप उस संस्कृति की भाषा विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ होती हैं. उसी के आधार पर सांस्कृतिक वाक्य या शब्द का प्रयोग किया जाता है. कुछ अभिव्यक्तियाँ अर्थ के आधार पर किया जाता है. जैसे कि लक्ष्मण रेखा पार करने का अर्थ है संकट से दूर होना है. इसमें लक्ष्मण रेखा का अर्थानुवाद किया जा सकता है. लेकिन इसका पाद टिप्पणी में स्पष्टीकरण देना पड़ता है. इसका अंग्रेजी अनुवाद - Exceeding one's limit is to invite troubles.

इस अनुवाद में ख्रोत भाषा के बिम्ब लक्ष्य भाषा में लुप्त होते हैं

1) उनमें महाभारत का युद्ध छिड़ गया.

(The engaged themselves in a fierce battle)

2) मेरे सहानुभूति शब्दों ने उसके लिए संजीवनी-बूटी जैसा काम किया.

(My sympathetic words proved to be the best remedy for him)

सांस्कृतिक अनुवाद में कुछ समीपवर्ती अनुवाद करते समय भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. जैसे -

1) यह मेज उठाना तो शिवधनुष के समान है.

(Lifting this heavy tables is hazardous like lifting shiva's dhanusha)

2) उनमें कौरव-पांडव जैसा वैर है.

(They are sworn enemies like kaurava-paandava)

जब विदेशी भाषा में अनुवाद करते समय 'शिवधनुष' और 'कौरव-पांडव' का अर्थ पाद टिप्पणी में स्पष्ट करना पड़ता है।

8.3.3.7 सांस्कृतिक घटनाओं की समस्या

सांस्कृतिक घटनाओं का अनुवाद करना अनुवादक के लिए बड़ी चुनौती है। सांस्कृतिक घटनाएँ किसी संस्कृति-विशेष का अर्थपूर्ण पहलू हुआ करती है। ऐसी घटनाओं के अनुवाद में भी अनुवादक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये घटनाएँ उस संस्कृति-विशेष से जुड़ी होती हैं और उससे हटकर इनका अनुवाद असंभव है। ऐसी स्थिति में घटनाओं का अनुवाद घटना-रूप में करना ही श्रेयस्कर होता है और उसका सांस्कृतिक संदर्भ एवं विवरण पाद-टिप्पणी में करना चाहिए। उदहारण के लिए 'कामायनी' में जलप्लावन की घटना, रामायण में चित्रकूट में भरत-मिलाप, राम को वनवास दिया जाना, लंका दहन, सीता-स्वयंवर, महाभारत में द्रौपदी चीरहरण आदि।

8.3.3.8 सांस्कृतिक शीर्षक की समस्या

सांस्कृतिक तत्वों के अनुवाद की अंतिम समस्या सांस्कृतिक शीर्षकों की है। किसी भी कृति का शीर्षक प्रायः किसी-न-किसी विशेष सांस्कृतिक प्रसंग का प्रतिनिधित्व करता है और समस्त प्रसंग के भाव को अपने में समेटे हुए होता है। उदाहरण के लिए प्रेमचंद का गोदान, कफन, निराला की राम की शक्तिपूजा, प्रसाद की कामायनी और उसके उपशीर्षक 'श्रद्धा, इडा, मन, चिंता आदि अनेक सांस्कृतिक संदर्भों को छिपाए रहते हैं। इनके अनुवाद के लिए भी पहले बनाई जा चुकी पद्धतियों में से किसी एक को यथास्थिति अपनाया जा सकता है।

8.4 पाठ सार

मानव समाज परिवर्तन शील है। वह समय और स्थान के अनुसार परिवर्तन होता है। विश्व एक है मगर उसमें संस्कृति और भाषा अनेक हैं। इस संसार में मानव जीवन शैली अलग-अलग है। यहाँ संस्कृति का तात्पर्य या अर्थ है 'सिखा हुआ व्यवहार' है अर्थात् कोई भी व्यक्ति बचपन से अब तक जो सिखा हुआ है जैसे- खाना-पीना, बात करना, भाषा का ज्ञान अर्जित करना, धर्म, जाति, वेशभूषा, रीति-रिवाज, त्योहार, लोक गीत गाना आदि संस्कृति के अंतर्गत माना जाता है। संस्कृति की परिभाषा देते हुए डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' कहते हैं कि "संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे समस्त जीवन में विद्यमान में व्याप्त है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक रूढ़ियों के अनुभव का हाथ है।"

संस्कृति और अनुवाद में संस्कृति का सामान्य अर्थ और मानव जीवन शैली, साहित्य, धर्म, ललित कलाएँ आदि बाते हमारे चिंतन में आती है। लेकिन संस्कृति शब्द व्यापक अर्थ में होता है। संस्कृति मानव जीवन के कण-कण में समाहित होती है। उसका रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, जाति, लोक गीत, कला, साहित्य, भाषा आदि है। अन्य भाषा या परिवेश की संस्कृति को जानने के लिए अनुवाद की जरूरी होती है। अनुवाद के माध्यम से मानव अपने सांसारिक जीवन शैली का ज्ञान प्राप्त करता है।

संस्कृति परिवेश और भाषा के अनुसार बदलती रहती है। इसलिए सांस्कृतिक पाठ का अनुवाद करते समय अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है जैसे - नामकरण की समस्या, खान-पान की समस्या, त्यौहारों की समस्या, वेशभूषा की समस्या, रीति-रिवाज की समस्या, अभिव्यक्ति की संस्कृति की समस्या, सांस्कृतिक घटनाओं की समस्या, सांस्कृतिक शीर्षक की समस्या आदि हैं। अनुवादक को ऐसे समस्या आने पर वह अनुवाद कृति में पाद टिपण्णी देखकर उसका स्पष्टीकरण देना आवश्यक होता है।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त हुई वे निम्न प्रकार से हैं -

1. संस्कृति की अवधारणा और अनेक विद्वानों के परिभाषा को समझा गया।
2. संस्कृति और अनुवाद के संबंध से संबंधित जानकारी प्राप्त हुई।
3. सांस्कृतिक अनुवाद की विविध समस्याओं से परिचित हुए हैं।
4. सांस्कृतिक अनुवाद में सांस्कृतिक शब्दों का पाद टिपण्णी में स्पष्टीकरण देना आवश्यक होता है।

8.6 शब्द संपदा

- | | | |
|-------------------|---|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. वेश-भूषा | = | कपडे आदि पहनने का तरीका या ढंग, पोशाक, पहनावा |
| 2. रीति-रिवाज | = | ऐसी परम्पराएँ या संस्कार जो पीढ़ी दर पीढ़ी मानव जातियों में चली आ रही हो, रस्म-रिवाज |
| 3. त्योहार | = | प्रतिवर्ष किसी निश्चित तिथि को मनाया जाने वाला कोई धार्मिक या सांस्कृतिक उत्सव, पर्व, (फेस्टिवल) |
| 4. खान-पान | = | खाने और पीने की क्रिया या भाव या ढंग |
| 5. वास्तु विज्ञान | = | वास्तुकला से संबंधित विज्ञान |
| 6. शिल्प कला | = | दस्तकारी का कौशल, हाथों का हुन्हर, |
| 7. पर्व | = | उत्सव, त्योहार |
| 8. दर्शन | = | किसी विचारक, लेखक नेता आदि की विचारधारा या सिद्धांत जैसे गांधी दर्शन, चार्वाक दर्शन |
| 9. संस्कार | = | जन्म से लेकर मृत्यु तक किए जाने वाले वे सोलह कृत्य जो धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के लिए जरुरी हैं, जैसे मुंडन, विवाह आदि |
| 10. भौतिक | = | शरीर संबंधी, पार्थिव, प्रत्येक रूप |
| 11. सृजन | = | उत्पन्न या जन्म देने की क्रिया या भाव, सृष्टि, उत्पत्ति |
| 12. सूक्ष्म | = | बहुत बारीक या महीन, छोटा |
| 13. स्थूल | = | बड़े आकर का, बड़ा |

14. कण = किसी पदार्थ का अंश या दाना

15. पाश्चात्य संस्कृति = विदेशी संस्कृति

16. मंगलसूत्र = स्त्रियों द्वारा गले में पहना जाने वाल एक आभूषण

17. खाद्य सामग्री = खाने का सामन, पदार्थ

18. स्पष्टीकरण = किसी बात को स्पष्ट या साफ़ करना

19. अनुवादक = अनुवाद करने वाला

20. अभिव्यक्ति = अभिव्यक्त करने की क्रिया जिसे पूर्ण सम्प्रेषण हो सके.

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

ਖਣਡ (ਅ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. संस्कृति और अनुवाद को स्पष्ट कीजिए।
 2. सांस्कृतिक पाठ में अनुवादक को आने वाली समस्याओं का वर्णन कीजिए।
 3. अनुवाद में सांस्कृतिक समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

ਖਣਡ (ਕ)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में दीजिए। 200

1. अनुवाद में अभिव्यक्ति की संस्कृति की समस्या का वर्णन कीजिए।
 2. अनुवाद में खान-पान की समस्या को बताइए।
 3. अनुवाद में रीति-रिवाज की समस्या बताइए।
 4. अनुवाद में सांस्कृतिक घटनाओं का वर्णन कीजिए।

ਖਣਡ (ਸ)

। सही विकल्प चुनिए

1. 'culture' शब्दिक अर्थ क्या है ?

2. “सूक्ष्म एवं स्थूल मन एवं कर्म अध्यात्म जीव एवं प्रत्यक्ष जीव में कल्याण करती है.” यह किस की परिभाषा है ?

- (क) डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार
(ग) वासुदेव शरण अग्रवाल

- (ख) डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'
(घ) डॉ. सुरेश सिंहल

3. रामधारी सिंह दिनकर की निम्नलिखित संस्कृति की परिभाषा दी है -
(क) मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो स्वजन करता है
(ख) जो हमारे समस्त जीवन में विद्यमान में व्याप्त है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक रूढ़ियों के अनुभव का हाथ है।

- (ग) जो सूक्ष्म एवं स्थूल मन एवं कर्म अध्यात्म जीव एवं प्रत्यक्ष जीव में कल्याण करती है।
(घ) इनमें से कोई नहीं

॥ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे भाषा कहा जाता है।
- Application का हिंदी अनुवाद होता है।
- 'राम की शक्ति' का अनुवाद अंग्रेजी में होता है।
- जिस भाषा का अनुवाद किया जाता है उसे भाषा कहा जाता है।

॥ सुमेल कीजिए

- | | |
|-----------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1. डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार | अ) "जो सूक्ष्म एवं स्थूल मन एवं कर्म अध्यात्म जीव एवं प्रत्यक्ष जीव में कल्याण करती है।" |
| 2. डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' | आ) मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो स्वजन करता है |
| 3. वासुदेव शरण अग्रवाल | इ) "जो हमारे समस्त जीवन में विद्यमान में व्याप्त है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक रूढ़ियों के अनुभव का हाथ है।" |

8.8 पठनीय पुस्तकें

- अनुवाद संवेदना और सरोकार - डॉ. सुरेश सिंहल
- अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. जी. गोपीनाथन

इकाई 9 : वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ : वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

9.3.1 साहित्येतर अनुवाद : वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

9.3.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग : शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

9.3.3 हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन

9.3.4 वैज्ञानिक पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

9.3.5 तकनीकी पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

9.4 पाठ सार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र का अनुवाद साहित्येतर अनुवाद के अंतर्गत आता है। साहित्यिक विधाओं का अनुवाद जिस तरह किया जाता है, उसी प्रक्रिया को अपनाकर वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य मूलतः सूचनापरक साहित्य है। अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना अनुवादक के लिए नितांत आवश्यक है। इसके साथ ही वैज्ञानिक संकल्पनाओं के बारे में भी स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। जहाँ तक हो सके इस तरह के अनूदित पाठों को पारदर्शी बनाए रखना चाहिए। इस इकाई में वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद से संबंधित समस्याओं तथा उनके निदान के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

9.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- सामान्य साहित्य और वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के बीच निहित अंतर को समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली संबंधी नियमों को जान सकेंगे।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के प्रकारों के बारे में समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली से संबंधित विविध विचारधाराओं से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- वैज्ञानिक पाठों के अनुवाद करते समय उत्पन्न समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
- तकनीकी पाठों के अनुवाद करते समय उत्पन्न समस्याओं को भी जान सकेंगे।

9.3 मूल पाठ : वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

विज्ञान अथवा विशिष्ट ज्ञान। इसमें सूचनाओं, तथ्यों, संक्षिप्तियों एवं आंकड़ों का आदान-प्रदान एक व्यवस्थित ढंग से किया जाता है। इस तरह के पाठ निर्माण में अभिधात्मक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जहाँ सामान्य और साहित्यिक भाषा में लक्षणा और व्यंजना का भाषिक प्रयोग किया जाता है, वहाँ वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में सिर्फ और सिर्फ अभिधा का प्रयोग किया जाता है।

हर रोज, हर वक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेज गति से विकास हो रहा है। अतः नित नए शब्दावली और संकल्पनाएँ सामने आ रही हैं। इन पाठों के अनुवाद में काफी कठिनाइयाँ होती हैं। छात्रो! आइए, अब हम विस्तार से वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

9.3.1 साहित्येतर अनुवाद : वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद

वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ को साहित्य से इतर अर्थात् साहित्येतर माना जाता है। परंपरागत रूप से विभाजित विधाओं - नाटक, कविता, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी आदि को साहित्यिक विधाओं के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। इन विधाओं से अलग अर्थात् कार्यालय, प्रशासन, बैंक, कृषि, गणित, ज्योतिष, वाणिज्य, सिनेमा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों से संबंधित विधाओं को साहित्येतर विधाओं के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। साहित्यिक विधाएँ वस्तुतः सृजनात्मक होती हैं। इनमें कल्पना का समावेश रहता है। साहित्यकार अपने अनुभव जगत को कल्पना की सहायता से चित्रित करता है और अपने पाठकों को एक अलग दुनिया में ले चलता है। यहाँ अतिशयोक्तिपूर्ण प्रसंगों का भी समावेश देखा जा सकता है। दूसरी ओर साहित्येतर पाठों में कल्पना का कोई स्थान नहीं होता। प्रिय छात्रो! वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद के बारे में पढ़ने से पहले साहित्यिक और वैज्ञानिक भाषा में निहित अंतर को समझने की कोशिश करेंगे।

साहित्यिक एवं वैज्ञानिक भाषा

साहित्यिक भाषा में शब्द-शक्तियों, रस, छंद, अलंकार, प्रतीक, बिंब, लोकोक्ति, मुहवारे, सूक्ति आदि परंपरागत मानदंडों के अतिरिक्त अन्य बहुत से स्तरों पर अर्थ, अनुभूति व सौंदर्य प्रदान उक्तियों का प्रयोग किया जाता है। साहित्यिक भाषा वर्णनात्मक, विशेषणात्मक या तार्किक हो सकती है। एक तरह से साहित्य में मानव समाज की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। साहित्यिक भाषा कल्पना एवं अभिव्यंजना प्रधान होती है। इसके विपरीत वैज्ञानिक व तकनीकी भाषा सूचना प्रधान होती है। इसमें कल्पना व अभिव्यंजना का समावेश नहीं हो सकता है। साहित्य के परंपरागत मानदंडों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

वैज्ञानिक भाषा की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. वैज्ञानिक भाषा की वाक्य रचना सरल वाक्यों से निर्मित होती है।
2. वैज्ञानिक विषयों के वाक्य छोटे-छोटे और अर्थ में स्पष्ट होते हैं।
3. सूत्रबद्धता वैज्ञानिक भाषा की एक प्रमुख विशेषता है।
4. संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए वैज्ञानिक भाषा रेखाचित्र, तालिका और आंकड़ों का प्रयोग करती है।
5. वैज्ञानिक भाषा में शब्द चयन सावधानीपूर्वक किया जाता है।
6. मूल रूप से इसमें निदेशात्मक और विवरणात्मक वाक्य अधिक रहते हैं।

उपर्युक्त भाषिक विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक पाठ का अनुवाद करते समय वाक्य संरचना और शब्द चयन पर विशेष ध्यान रखना अनिवार्य है। जहाँ तक संभव हो, वहाँ तक सरल और पारदर्शी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हुए संकल्पनाओं को स्पष्ट करना चाहिए। इतना ही नहीं रेखाचित्रों, सूत्रों, आंकड़ों और तालिकाओं के प्रयोग से बात को आसानी से समझा जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

तथ्यपरकता : विज्ञान का क्षेत्र विशिष्ट होने के कारण इसकी कार्यप्रणाली भी विशिष्ट होती है।

विज्ञान का विषय सार्वभौमिक होता है। वैज्ञानिक भाषा में भाषा के सौंदर्यपक्ष पर बल नहीं दिया जाता, बल्कि तथ्यों पर बल दिया जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि विज्ञान का अध्ययन तथ्यों पर आधारित होता है। प्रकृति एवं प्राकृतिक वस्तुओं का अध्ययन मुख्य रूप से प्रयोग, पर्यवेक्षण और परीक्षण के आधार पर किया जाता है। इस तरह के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है।

सूक्ष्मता : विज्ञान का अध्ययन सूक्ष्म और जटिल संकल्पनाओं पर आधारित होता है। इसीलिए विज्ञान की भाषा में सूक्ष्मता का गुण स्वतः ही आ जाता है। सामान्य रूप से शब्दों का अर्थ बहुत व्यापक होता है। साहित्य के क्षेत्र में एक शब्द के लिए अनेक अर्थ होते हैं, लेकिन विज्ञान जैसे क्षेत्र में यह अर्थ सूक्ष्म हो जाता है, संकुचित हो जाता है। कुछ विशिष्ट संकल्पना को उजागर करने लग जाता है। उदाहरण के लिए देखें - प्रोग्राम और मेमोरी

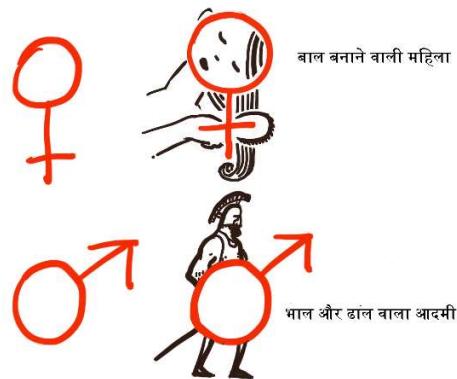
जैसे शब्दों का प्रयोग हम करते रहते हैं - आज का क्या प्रोग्राम है? तुम्हारी मेमोरी को क्या हो गया? जैसे प्रयोग देख सकते हैं। ये शब्द कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत सीमित हो गए। इसी प्रकार 'संसद' संस्कृत में सभा के अर्थ में प्रयुक्त होता है जबकि राजनीति विज्ञान में यह शब्द सूक्ष्म अर्थ में 'पार्लियामेंट' तक सीमित हो चुका है।

विशेष चिह्नों का प्रयोग : विज्ञान के क्षेत्र में सूक्ष्म संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सूत्रों, फार्मूलों, प्रतीकों आदि का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए:- β = बीटा, α = अल्फा, γ = गामा - ये भौतिक/ रासायनिक विज्ञान में आलफा, बीटा और गामा विकीरणों के लिए प्रयुक्त प्रतीक चिह्न हैं। इसी तरह गणित में $=, <, >, \neq, \leq, \infty$ आदि का प्रयोग किया जाता है। गणित में Δ प्रतीक त्रिकोण, डेल्टा आदि का सूचक है। कोरोना के संदर्भ में अब डेल्टा का प्रयोग एक नई प्रजाति को सूचित करने के लिए किया जा रहा है। रसायन विज्ञान में यह ताप का प्रतीक है। चिकित्सा शास्त्र में यह परिवार नियोजन के लिए प्रयुक्त होता है। सड़क के नियमों में यह त्रिकोण चेतावनी का प्रतीक है। सिनेमा में त्रिकोण का प्रयोग प्रेम संबंधों को सूचित करने के लिए किया जाता है - लव ट्राइएंगल। समाज विज्ञान में एक तत्व को दूसरे तत्व से जोड़ने की बात को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार कुछ विशेष प्रतीक चिह्नों को नीचे दिया जा रहा है जिनका प्रयोग रसायन शास्त्र में किया जाता है -

	हाइड्रोजन		कार्बन		ऑक्सीजन
	फॉस्फोरस		सल्फर		आयरन
	कॉर्पर		सीसा		सिल्वर
	गोल्ड		प्लैटिना		पारा

चित्र 1 : डाल्टन द्वारा सुझाए गए कुछ तत्वों के प्रतीक

रेखाचित्रों का प्रयोग : विज्ञान में रेखाचित्रों का अपना महत्व है। सूक्ष्म रूप से किसी संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए रेखाचित्रों का प्रयोग किया जाता है। जैसे -



संक्षिप्तियों का प्रयोग : वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद संक्षिप्तियों का अत्यंत महत्व है। जैसे

एपिल : एरैने पासेंजर पेलोड एक्सप्रेसिंग

नासा : नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन - राष्ट्रीय वैमानिकी और अंतरिक्ष प्रबंधन

राडार : रेडियो डिटेक्शन एंड रेंजिंग

सूत्रात्मकता : वैज्ञानिक भाषा वस्तुतः सूत्रात्मक भाषा होती है। विज्ञान के क्षेत्र में बात सूत्रों में की जाती है। उदाहरण के लिए भौतिकी में द्रव्यमान-ऊर्जा समतुल्यता के सिद्धांत के अनुसार यदि किसी वस्तु में द्रव्यमान है, तो उसमें उसके तुल्य एक ऊर्जा होती है। यदि ऊर्जा है, तो उसके तुल्य एक द्रव्यमान। अलबर्ट आइंस्टीन ने ऊर्जा और द्रव्यमान को इस सूत्र के माध्यम से व्यक्त किया है - $E = mc^2$ (E = ऊर्जा, m = द्रव्यमान, c = प्रकाश)। किसी वस्तु की चाल को उसके वेग और उसकी स्थिति में परिवर्तन की दर के साथ जोड़कर देखा जाता है। जैसे - $F = ma$ (F = बल, m = द्रव्यमान, a = त्वरण)

बोध प्रश्न

- साहित्यिक भाषा की दो विशेषताएँ बताइए।
- वैज्ञानिक भाषा की दो विशेषताएँ बताइए।
- साहित्यिक और वैज्ञानिक भाषा के बीच निहित एक अंतर बताइए।

9.3.2 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग : शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

प्रिय छात्रो! अब तक आप जान ही चुके हैं कि वैज्ञानिक भाषा सूत्रात्मक और तर्कसम्मत भाषा है। इसमें अभिधात्मक शब्दों का ही प्रयोग होता है। यह वह विशिष्ट क्षेत्र है जहाँ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग विषय और क्षेत्र के अनुरूप किया जाता है। यह भाषा विशिष्ट भाषा है अर्थात् एल एस पी - लैंग्वेज फॉर स्पेशल और स्पेसिफिक पर्पज़। दैनंदिन भाषा प्रयोग से अलग होने के कारण यह एक विशिष्ट प्रयुक्ति कहलाएगी। इस अर्थ में वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा एक विशिष्ट प्रयुक्ति है जिसमें पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य उस शब्द से है जिसे परिभाषित किया जाता हो। सामान्य शब्द भी किसी विशेष क्षेत्र में प्रयुक्त होने पर उस क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं।

प्रिय छात्रो! वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के बारे में जानने से पहले पारिभाषिक शब्दों के कुछ उदाहरण देख लें -

जल्दी = fast : जल्दी के लिए हिंदी में अनेक पर्याय उपलब्ध हैं। जैसे जल्दी - त्वरित, वेग, शीघ्र, तुरंत, फौरन आदि। इनमें से आप सभी शब्दों से परिचित होंगे। सामान्य रूप से दैनिक कार्यकलापों के लिए जल्दी, तुरंत, फौरन, शीघ्र शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वेग शब्द अपने आपमें पारिभाषिक शब्द है भौतिक विज्ञान के। वेग कहते ही उसके साथ वस्तु की चाल और गति की दिशा जुड़ जाते हैं।

अंग्रेजी 'fast' शब्द को ही लेंगे। इसका अर्थ है बहुत जल्दी। सामान्य रूप से हम इस शब्द का प्रयोग इस प्रकार करते हैं - come fast. (जल्दी आओ)। यदि हमें कहें कि 'he is observing a fast' तो इसका अर्थ होगा कि वह उपवास कर रहा है। भौतिक विज्ञान में इसी शब्द के साथ speed, velocity, acceleration और motion जुड़ जाते हैं। सभी शब्द उस क्षेत्र विशेष की पारिभाषिक शब्द बन जाती हैं।

जड़ = root : जड़ का सामान्य अर्थ है मूल। किसी झगड़े का जड़ अर्थात् मूल कारण। वनस्पति शास्त्र में जड़ का अर्थ है पौधे का वह भाग जो जमीन के अंदर है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में इसका अर्थ है चेतना रहित, जिसमें स्पंदन न हो, चेष्टाहीन, स्तब्ध, मंदबुद्धि।

'Root' शब्द भाषा के क्षेत्र में एक अर्थ में प्रयुक्त होता है, तो गणित, वनस्पति विज्ञान आदि में अन्य अर्थ में। गणित के क्षेत्र में 'square root' (वर्गमूल) और 'cube root' (घनमूल) बन जाता है, तो वनस्पति विज्ञान में पौधे का जड़। अंग्रेजी भाषा में 'root word' अर्थात् किसी शब्द का मूल रूप। 'root cause' (मूल कारण)।

कहने का तात्पर्य है कि सामान्य शब्द भी किसी विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होते ही उस क्षेत्र विशेष के लिए विशिष्ट पारिभाषिक शब्द बन जाता है। कुछ उदाहरण देखें -

ग्रहण : सामान्य रूप से भी बात करते समय कभी-कभी प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न हो जाए, तो हम कह देते हैं कि ग्रहण लग गया। वैज्ञानिक ढंग से बात करें, तो यह एक खगोलीय घटना है। यह घटना तब होती है जब कोई खगोलीय पिंड या अंतरिक्ष यान किसी अन्य पिंड की द्वाया में आता है या उसके और दर्शक के बीच कोई अन्य पिंड आ जाता है। यह एक अस्थायी स्थिति है। आम तौर पर सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के लिए ग्रहण शब्द का प्रयोग किया जाता है।

चेतना : यह मनोविज्ञान का पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है जागृत स्थिति। यह वह शक्ति है जो मनुष्य को आस-पास के वातावरण को देखने, समझने और उस पर चिंतन करने में सहायक सिद्ध होती है। चेतना के कारण ही मनुष्य में सब प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं।

आकाशगंगा : इसे क्षीरमार्ग भी कहा जाता है। इसमें हमारा सुर मंडल स्थित है।

रक्षा अनुसंधान के कुछ पारिभाषिक शब्द देखिए, जिन्हें आम जिंदगी में भी दूसरे अर्थ में प्रयोग करते हैं -

अग्नि : जमीन से जमीन पर प्रक्षेपित करने वाला परमाणु सक्षम प्रक्षेपास्त्र

अत्म : वायु से वायु प्रक्षेपास्त्र प्रणाली

आकाश : मध्य दूरी पर जमीन से हवा में प्रक्षेपित करने वाला प्रक्षेपास्त्र

त्रिशूल : कम दूरी पर जमीन से हवा में प्रक्षेपित करने वाला प्रक्षेपास्त्र

नाग : तीसरी पीढ़ी का टैंक भेदी प्रक्षेपास्त्र

लक्ष्य बिंदु : किसी अत्म का निश्चित लक्ष्य जो राडार से नियंत्रित किया जाता है।

प्रिय छात्रो! उपर्युक्त पारिभाषिक शब्दावली के सात आधार हैं - पारिभाषिकता, पारदर्शिता, विषय सापेक्षता, सूक्ष्मता, रूढ़ता, मानकता और शैलीकरण। आप जानते ही होंगे कि उन्नीसवीं शताब्दी में विज्ञान की प्रगति तेजी से हुई। यह वस्तुतः पश्चिमी देशों के वैज्ञानिक आविष्कारों का परिणाम है। इसके कारण नई-नई संकल्पनाओं का जन्म हुआ। साथ ही नई पारिभाषिक शब्दावली का प्रचलन शुरू हुआ। नए संकल्पनाओं को समझाने के लिए नए-नए शब्दों को बनाने की आवश्यकता महसूस हुई। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने 1950 में 'शब्दावली बोर्ड' की स्थापना की थी। तदुपरांत 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन हुआ।

शब्दावली आयोग का मुख्य उद्देश्य है नई-नई वैज्ञानिक एवं तकनीकी संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए नई-नई शब्दावली बनाना। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए विशेषज्ञ सलाहकार समितियों का गठन किया गया। इन समितियों में देश के लगभग सभी क्षेत्रों के विद्वान विशेषज्ञों, अध्यापकों, शिक्षाविदों एवं भाषाविदों को सम्मिलित किया गया। इस आयोग ने अत्यंत तेज गति से नए-नए तकनीकी शब्दों का निर्माण किया।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग निम्नलिखित कार्य करता है -

- अंग्रेजी-हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संबंध में द्विभाषी और त्रिभाषी शब्दावली तैयार करना।
- राष्ट्रीय शब्दावली का निर्माण करना।
- स्कूल और विभागीय स्तर की शब्दावली को पहचानना।
- अखिल भारतीय शब्दों की पहचान करना।
- पारिभाषिक शब्दकोशों व विश्वकोशों को तैयार करना।
- विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों, मोनोग्राफों और पत्रिकाओं को तैयार करना।

- ग्रंथ अकादमियों, पाठ्य-पुस्तक बोर्डों और विश्वविद्यालय प्रकोष्ठों को क्षेत्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तकों के लिए अनुदान देना।
- प्रशिक्षण/प्रबोधन कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के माध्यम से गढ़े गए और पारिभाषिक शब्दों का प्रचार-प्रसार करना और ध्यानपूर्वक उनकी समीक्षा करना।
- प्रकाशित सामग्री को निःशुल्क वितरण करना।
- राष्ट्रीय अनुदान मिशन को आवश्यक शब्दावली उपलब्ध कराना।

प्रिय छात्रो! उपर्युक्त कार्यों को संपन्न करने के लिए अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के लिए कुछ तकनीकों व सिद्धांतों का उपयोग करना पड़ता है। आयोग द्वारा शब्दावली निर्माण के लिए कुछ नियम निर्धारित किए गए। उन नियमों व सिद्धांतों को यहाँ यथावत् प्रस्तुत किया जा रहा है -

1. अंतरराष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं -
क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे - हाइड्रोजन, कार्बन डाइआक्साइड आदि।
ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे - डाइन (dyne),

कैलोरी (calorie), एम्पियर (ampere) आदि।

ग) ऐसे शब्दों जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं, जैसे - फारेनहाइट के नाम पर फारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टामीटर और एम्पियर के नाम पर एम्पियर आदि।

घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, भू-विज्ञान आदि की द्विपदीय नामावली।

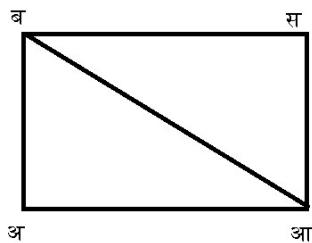
ङ) स्थिरांक।

च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे - रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटाँन, न्यूट्रॉन आदि।

छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक चिह्न और सूत्र जैसे - साइन, कोसाइन, टेनजंट आदि। गणितीय सूत्रों में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए।

2. प्रतीक, रोमन लिपि में अंतरराष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परंतु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे सेंटीमीटर, किलोमीटर के प्रतीक cm, pm आदि हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होंगे परंतु इनके नागरी संक्षिप्त रूप से.मी., कि.मी. हो सकते हैं। यह सिद्धांत बाल साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा परंतु विज्ञान और शिल्प विज्ञान की मानक पुस्तकों में केवल अंतरराष्ट्रीय प्रतीक ही प्रयुक्त किए जाते हैं।

3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्ति किए जा सकते हैं। जैसे - अ, ब, स आदि। इसे निम्नलिखित आरेख के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है -
परंतु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्ति करने चाहिए। जैसे साइन A और कॉस B।
4. संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए।
5. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुधार विरोधी और विशुद्धिवादी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।
6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथा संभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो -
क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं।
ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।
7. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं। जैसे - टेलेग्राफ, टेलेग्राम के लिए तार, कॉन्टीनेंट के लिए महाद्वीप, ऐटम के लिए परमाणु आदि।
8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं। जैसे - इंजन, मशीन, लावा, मीटर, प्रिज्म, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।
9. अंतरराष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण - अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण करना इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नवचिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हों और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएँ जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।
10. लिंग : हिंदी में अपनाए गए अंतरराष्ट्रीय शब्दों को अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।
11. संकर शब्द : वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द जैसे - ionization के लिए आयनीकरण, voltage के लिए वोल्टता, ringstand के लिए वलयस्टैन्ड, saponifier के लिए साबुनीकरण आदि के रूप सामान्य भाषाशास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।



12. वैज्ञानिक शब्दों में संधि और समास : कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन (-) लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित आदिवृद्धि का संबंध है, व्यावहारिक, लाक्षणिक आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है, परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।
13. हलंत : नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करना चाहिए, परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेन्ट न करके लेन्स, पेटेंट ही करना चाहिए।

पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में प्रमुख रूप से पारदर्शिता, सरलता, संक्षिप्तता तथा बोधगम्यता को ध्यान में रखना होगा। इन शब्दों के निर्माण में विद्वानों ने कुछ संप्रदायों को अपनाया जो इस प्रकार हैं - पुनरुत्थानवादी या राष्ट्रीयवादी धारा, लोकवादी धारा, अंतरराष्ट्रीयतावादी धारा और समन्वयवादी धारा।

पुनरुत्थानवादी या राष्ट्रीयवादी धारा

इस पद्धति में संस्कृत की धातुओं में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए शब्दों का निर्माण किया जाता है क्योंकि संस्कृत में जनन शक्ति होती है। अतः आसानी से नए-नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए देखें,

वद > वाद > विवाद > अनुवाद > संवाद

संवाद > परिसंवाद

अनुवाद > अनुवादनीयता > अनअनुवादनीयता

oxygen = प्राणवायु

लोकवादी धारा

इस पद्धति में लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

Education = तालीम

Pedagogy = तालीम शिक्षा

Labour-room = जड़ा-बड़ा घर/ प्रसूती कक्ष

अंतरराष्ट्रीयतावादी धारा

इस पद्धति के अनुसार अंतरराष्ट्रीय शब्दों का लिप्यंतरण करके यथावत प्रयोग किया जाता है। जैसे - राडार, बैंक, फोकस, रॉयलटी, ट्राफिक आदि।

समन्वयवादी धारा

इस पद्धति में यथासंभव सभी पद्धतियों को अपनाकर पारदर्शी शब्दों को अपनाया जाता है। जैसे - newspaper के लिए समाचार पत्र, अखबार; election के लिए निर्वाचन, चुनाव आदि।



रा = राष्ट्रीयवादी

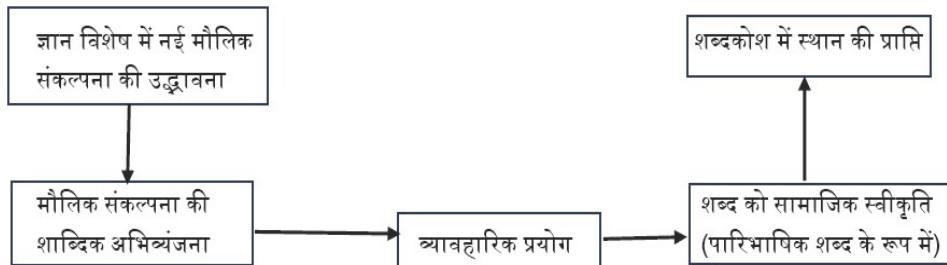
लो = लोकवादी

अं = अंतर्रक्षणतरीवादी

इन सब धाराओं के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में सहज एवं नियोजित शब्द निर्माण प्रक्रियाओं को अपनाया जाता है। शब्द ग्रहण, अनुकूलन, नवनिर्माण, अनुवाद, संकर शब्दों आदि का प्रयोग पाठ को सहज बनाने के लिए अनुवादक आवश्यकतानुसार कर सकता है।

सहज शब्द निर्माण प्रक्रिया : यह एक सामान्य प्रक्रिया है। इसके लिए किसी आयोग या विशेषज्ञ समिति के गठन की आवश्यकता नहीं है। हिंदी में बिजली शब्द का अर्थ विस्तार अंग्रेजी के एलेक्ट्रिसिटी की संकल्पना तक हो गया है। काला शब्द का भी अर्थ विस्तार हो गया। सामान्य रूप से काला शब्द कल्पण के भाव से जुड़ा हुआ है। काला नाग, काली जुबान, काला चोर आदि भाषिक अभिव्यक्तियों में काला शब्द संस्कृति के अर्थ को व्यंजित करता है। इसके समानांतर कुछ प्रयोग भी उपलब्ध हैं - काला धन, काला बाजार, काला कानून, काला धंधा आदि। ये सभी सामाजिक संस्कार की ओर इंगित करते हैं। ये वस्तुतः अंग्रेजी में प्रचलित black money, black market, black law, black deeds के शाब्दिक अनुवाद हैं। ऐसे प्रयोग में काला शब्द का अर्थ विस्तार दिखाई देता है। एक समय में सोवियत संघ के राष्ट्रपति गोर्बाचीव द्वारा प्रयुक्त 'ग्लास्नोस्स्त' और 'पेरेस्नोयिका' शब्द रातोंरात संचार माध्यमों के माध्यम से विश्वभर में प्रचलित हो गए। 'ग्लास्नोस्स्त' का अर्थ है साम्यवादी व्यवस्था में अमूलचूल परिवर्तन लाना और 'पेरेस्नोयिका' का अर्थ है जनता द्वारा उन्मुक्त आलोचना। इसी प्रकार वर्ष 2010 में फुटबाल के विश्व प्रतियोगिता के समय 'वाका-वाका' (अब अफ्रीका की बारी) और 'बुबुजेला' (अफ्रीका का

एक वाद्य यंत्र) पारिभाषिक शब्द बन गए। इस प्रकार नई संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सहज रूप से समाज में प्रयुक्त शब्दों



नियोजित शब्द निर्माण प्रक्रिया : यह प्रक्रिया भाषा नियोजन से संबद्ध है। अन्य भाषा में विकसित शब्दों को अपनी भाषा में ग्रहण करने के लिए नियोजित शब्द निर्माण प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इसमें पारिभाषिक शब्दों को योजनाबद्ध ढंग से निर्धारित किया जाता है। एक भाषा समाज में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों को दूसरी भाषा समाज में अपनाकर उनके समानार्थी शब्दों का निर्माण किया जाता है। बाद उन शब्दों को व्यावहारिक प्रयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया सायास नहीं होती।



बोध प्रश्न

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कब हुई?
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के कुछ कार्य बताइए।
- आयोग ने अंतरराष्ट्रीय शब्दावली के संबंध में क्या कहा?
- पारिभाषिक निर्माण में सहायक धाराओं के नाम बताइए।
- पारिभाषिक शब्दावली के सात आधार क्या हैं?
- सहज और नियोजित शब्द निर्माण की प्रक्रियाओं में क्या अंतर है?

9.3.3 हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन

प्रिय छात्रो! हम यही सोचते हैं कि विज्ञान पाश्चात्य देशों से प्राप्त अवधारणा है और वैज्ञानिक लेखन के लिए सिर अंग्रेजी ही सहायक भाषा हो सकती है। जब हिंदी वैज्ञानिक विषयक पुस्तकों को खोजने के लिए कहा जाता है, तो तुरंत उत्तर मिलता है कि आधारभूत सामग्री उपलब्ध नहीं है। प्रायः यह भी सुनने को मिलता है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान की संकल्पनाओं को व्यक्त नहीं किया जा सकता है। लेकिन यह धारणा बिल्कुल गलत है, निराधार है। हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का प्रकाशन काफी पहले से ही होता आ रहा है। अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं कि आधुनिक हिंदी साहित्य के जन्म होने के कुछ समय बाद से ही हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य सृजन आरंभ हो चुका था। इसका अभिप्राय यह है कि खड़ीबोली हिंदी में साहित्यिक रचना का प्रारंभ भारतेंदु काल से शुरू हुई और हिंदी में विज्ञान लेखन की परंपरा भी उसे काल से आरंभ हुई। हिंदी के आरंभिक लेखकों ने पुस्तक लिखने के साथ-साथ शब्द भंडार पर भी ध्यान देते थे।

स्कूल बुक सोसाइटी, आगरा ने 1847 में 'रसायन प्रकाश प्रश्नोत्तर' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की थी। 23 अगस्त, 1973 की 'कविवचन सुधा' में भारतेंदु ने एक टिप्पणी लिखी कि 'कायस्थ राजकीय पाठशाला के गणित विद्या के मुख्य अध्यापक पंडित लक्ष्मीशंकर मिश्र, एमए ने हिंदी भाषा में गणित विद्या की पूरी श्रेणी बनाने का संकल्प लिया है। उक्त महाशय ने सरल त्रिकोणमिती हिंदी में प्रस्तुत कर ली है।' (विनोद कुमार प्रसाद, भाषा और प्रद्योगिकी, पृ. 48)।

1862 में अलीगढ़ में साइंटिफिक सोसाइटी नाम से एक विज्ञान समिति बनाई गई थी। 1898 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने भूगोल, ज्योतिष, गणित, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन और दर्शनशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का संकल्प लिया था। बाबू शयमसुंदर दास के मार्गदर्शन में यह कार्य सुचारू रूप से चला। 1900 में गुरुकुल कांगड़ी ने एक कदम आगे चलकर विज्ञान सहित सहित सभी प्रकार की शिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाया। इस प्रकार नागरी प्रचारिणी सभा और गुरुकुल कांगड़ी के प्रयासों से हिंदी में वैज्ञानिक लेखन का मार्ग प्रशस्त होने लगा।

भारत के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य द्वितीय (1150) के ग्रन्थ 'सिद्धांत शिरोमणि' के अंतर्गत 'गोलाध्याय' में बताई गई वैज्ञानिक लेखन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं - वैज्ञानिक साहित्य की भाषा अधिक कठिन नहीं होनी चाहिए, उसमें अनावश्यक विवरण नहीं होने चाहिए, उसमें मूल सिद्धांतों की सही-सही और सटीक व्याख्या की जानी चाहिए, उसमें भाषागत स्पष्टता और गरिमा का निर्वाह किया जाना चाहिए और उसमें विषय को पर्याप्त उदाहरणों द्वारा पुष्ट किया जाना चाहिए।

आज भी हिंदी वैज्ञानिक लेखन से ऐसी ही अपेक्षाएँ हैं। हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की अनंत संभावनाओं को उपलब्ध कराने की दृष्टि से डॉ. रघुवीर के कार्य को कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन्होंने 1943-46 के दौरान लाहौर से हिंदी, तमिल, बंगला और कन्नड़ - इन चार

लिपियों में तकनीकी शब्दकोश प्रकाशित किया। बाद में 1950 में उनकी कंसोलिडेटड डिक्षनरी प्रकाशित हुई।

बोध प्रश्न

- 'रसायन प्रकाश प्रश्नोत्तर' कब और कहाँ से प्रकाशित हुई?
- भास्कराचार्य द्वितीय के ग्रंथ में बताई गई वैज्ञानिक लेखन की विशेषताएँ बताइए।

9.3.4 वैज्ञानिक पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

प्रिय छात्रो! अब तक आपने वैज्ञानिक भाषा से संबंधित अनेक सैद्धांतिक बातों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। अब हम वैज्ञानिक पाठ के अनुवाद से संबंधित समस्याओं को व्यावहारिक स्तर पर जानने की कोशिश करेंगे।

मूल पाठ : Appropriate distance between the seeds is necessary to avoid overcrowding of plants. This allows to get sufficient sunlight, nutrients and water from the soil. At times, a few plants may have to be removed to prevent overcrowding. (Class 8, Science, NCERT, pg 5)

अनूदित पाठ : पौधों को अत्यधिक होने से रोकने के लिए बीजों के बीच आवश्यक दूरी होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे पौधों को सूर्य का प्रकाश, पोशक एवं जल पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। अधिक घनेपन को रोकने के लिए कुछ पौधों को निकाल कर हटा दिया जाता है। (कक्षा 8, विज्ञान, एनसीआरटी, पृ.5)

विश्लेषण : उक्त उदाहरण में आप यह देख सकते हैं कि अवनावश्यक पौधों को बढ़ने से रोकने के लिए यह बताया गया है कि बीजों के बीच आवश्यक दूरी बनाए रखने के लिए कहा गया है तथा घनेपन को रोकने के लिए कुछ पौधों को निकाल कर हटाने के लिए कहा गया है। अनुवाद में सरल और पारदर्शी शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस तरह के भाषिक प्रयोग को उपकरणवादी प्रकार्य कहा जाता है। अर्थात् इस प्रकार्य से क्या आवश्यक है, इसका बोध होता है। कहने का आशय है कि चाहिए, आवश्यक है, अनिवार्य है, वांछित आदि उक्तियों का प्रयोग किया जाता है। लोक में प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है।

मूल पाठ : If a thunderstorm occurs there is always a possibility of lightning and cyclones accompanying it. So, we get time to take measures to protect ourselves from the damage caused by these phenomena. (Class 8, Science, NCERT, pg 156)

अनूदित पाठ : यदि तड़ित झंझा है तो इसके साथ सदैव तड़ित तथा चक्रवात की संभावना रहती है। अतः इन परिघटनाओं से होने वाली क्षति से बचाव के लिए हमारे पास समय होता है। (कक्षा 8, विज्ञान, एनसीआरटी, पृ.190)

विश्लेषण : उपर्युक्त उदाहरण में अन्वेषणात्मक प्रकार्य का प्रयोग किया गया है। अर्थात् इससे भावी संभावनाओं का अनुमान लगाया जाता है तथा योजनाओं को सूचित किया जाया है। उक्त उदाहरण में संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए तत्समनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

मूल पाठ : Electricity to the bulbs in a torch is provided by the electric cell.

Electric cells are also used in alarm clocks, wristwatches, transistor radios, cameras and many other devices. (Class 6, Science, NCERT, pg 85)

अनूदित पाठ : टॉर्च के बल्ब को विद्युत, विद्युत-सेल से मिलती है। विद्युत-सेल का उपयोग विद्युत-स्रोत के रूप में अलार्म घड़ी, कलाई घड़ी, रेडियो, कैमरा तथा आने युक्तियों में किया जाता है। (कक्षा 6, विज्ञान, एनसीआरटी, पृ.116)

विश्लेषण : उपर्युक्त उदाहरण में विषयबोधक प्रकार्य का प्रयोग किया गया है। अर्थात् इसमें विवरण व सूचनाएँ दी गई हैं। संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए प्रचलित अंतरराष्ट्रीय शब्दों का लिप्यंतरण किया गया है।

छात्रो! इससे स्पष्ट है कि वैज्ञानिक पाठ के अनुवादक को विषय के अनुरूप सरल तथ्यपरक पारदर्शी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अन्यथा वैज्ञानिक पाठ दुरुह बन जाएगा। सामान्य रूप से जब पाठ में सूत्रों, संक्षिप्तियों, द्विपदीय नामवाली आदि का समावेश हो, तो अनुवादक को सूझ-बूझ से काम लेना पड़ता है।

9.3.5 तकनीकी पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

अब तक हमने वैज्ञानिक पाठ के अनुवाद को देखा है। आइए, अब हम तकनीकी पाठ के अनुवाद के कुछ उदाहरण देखेंगे।

मूल पाठ : Bar Code Reader is a device that reads bar codes and converts them into electric pulses to be processed by a computer. (Class 6, Computer Science, Kendriya Vidyalaya, pg 5)

अनूदित पाठ : बार कोड रीडर एक ऐसा उपकरण है जो बार कोड को पढ़ता है और विद्युत संदर्भों को कंप्यूटर द्वारा संसाधित करता है।

विशेषण : उपर्युक्त उदाहरण में विषयबोधक प्रकार्य का प्रयोग किया गया है। इसमें अंतरराष्ट्रीय शब्दों का लिप्यंतरण किया गया है, संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए।

The CPU is a processing unit that functions as the engine of a computer. (सीपीयू एक प्रोसेसिंग यूनिट है जो कंप्यूटर के इंजन के रूप में कार्य करता है।)

RAM is a term for the computer's temporary data storage. (रैम कंप्यूटर के अस्थायी डेटा भंडारण के लिए प्रयुक्त शब्द है।)

इस तरह वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठों का अनुवाद करते समय विषय के अनुरूप सावधानी से शब्द चयन करके पाठक को दृष्टि में रखकर अनुवाद करेंगे तो पाठ आसानी से ग्राह्य होगा। जहाँ आवश्यक हो वहाँ सहज एवं नियोजित शब्द निर्माण प्रक्रियाओं को अपनाकर पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। वस्तुतः तकनीकी अनुवाद का उद्देश्य होता है नई तकनीकी जानकारी को नए श्रोताओं के सामने प्रस्तुत करना। आज कल तेजी से ई-लर्निंग बढ़ रहा है। अतः एप्स, सॉफ्टवेयर, ई-लर्निंग पाठ्यक्रमों के लिए तकनीकी अनुवाद की आवश्यकता बढ़ रही है। तकनीकी अनुवाद के लिए भाषायी दक्षता और विषय वस्तु का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए गुणवत्ता आश्वासन प्रक्रियाओं की भी आवश्यकता होती है।

9.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र एक विशिष्ट भाषिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में विशिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाता है। दैनिक व्यवहार में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वही शब्द विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होने पर उस क्षेत्र विशेष की पारिभाषिक शब्दावली बन जाते हैं। इन सामान्य शब्दों के पीछे एक निश्चित संकल्पना जुड़ जाती है। इस संकल्पना को अभिव्यक्त करने के लिए उन शब्दों को परिभाषित किया जाता है। ध्यान देने की बात है कि चिकित्सा, कानून और साहित्यिक क्षेत्रों की तरह वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद के लिए भी विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की सामग्री का अनुवाद करने के लिए अनुवादकों को विशिष्ट विषय वस्तु के विशेषज्ञ होना अनिवार्य है। विषय विशेषज्ञ ही सटीक अनुवाद प्रस्तुत कर सकते हैं जो एक गैर-तकनीकी या गैर-वैज्ञानिक उपयोगकर्ता भी आसानी से समझ सके।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक को कुछ बिंदुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। जैसे - पाठ का उद्देश्य, सूचनात्मक पाठ के प्रकार और लक्ष्य श्रोता। इनके अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए। एक ही विषय को जब भिन्न-भिन्न श्रोता समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करना हो, तो अनुवादक को लक्ष्य श्रोताओं पर अवश्य ध्यान देना होगा और सरल पारदर्शी शब्दों का प्रयोग करना होगा। वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादक आमतौर पर प्रशिक्षित भाषाविद् होते हैं जिन्होंने चयनित तकनीकी क्षेत्रों में सहायक ज्ञान के साथ-साथ विशेष अनुसंधान कौशल विकसित किया है। यह भी ध्यान रखने की बात है कि सिर्फ भाषा और विषय का ज्ञान होने मात्र से इस तरह के पाठों का अनुवाद करना न्यायसंगत नहीं होगा।

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. वैज्ञानिक और तकनीकी पाठ को सुचारू रूप से अनुवाद करने के लिए तीन चीजों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है - विभिन्न भाषाओं में पाठ संरचना को जानना, विशिष्ट भाषा क्षेत्र को पहचानना और विषय क्षेत्र को भी पहचानना।
2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र की संकल्पनाओं को समझाने के लिए प्रतीकों, संकेत चिह्नों सूत्रों, संक्षिप्तियों, आरेखों, रेखाचित्रों आदि का प्रयोग किया जाता है। अतः अनुवादक को सावधानी से इनका अनुवाद करना होगा।
3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द निर्माण में आवश्यकता के अनुसार सहज रूप से समाज में प्रचलित शब्दों का प्रयोग पारिभाषिक शब्दों के रूप में किया जा सकता। साथ ही शब्द ग्रह, अनुकूलन, अनुवाद और नवनिर्माण की प्रक्रियाओं को अपनाकर नियोजित रूप से शब्द निर्माण करके उन्हें प्रचलित किया जा सकता है।
4. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवादों के लिए भाषायी दक्षता और विषय वस्तु का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए गुणवत्ता आश्वासन प्रक्रियाओं की भी आवश्यकता होती है।
5. आधुनिक सूचना एवं प्रौद्योगिकी को एक भाषा से दूसरी भाषा के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना वैज्ञानिक अनुवाद का महत्वपूर्ण काम है।

9.6 शब्द संपदा

1. अन्वेषणात्मक प्रकार्य = इस प्रकार्य से भावी संभावनाओं का अनुमान लगाया जाता है तथा योजनाओं को सूचित किया जाता है।
2. अभिधा = (शब्द शक्ति) शब्दों का सीधा अर्थ
3. उपकरणवादी प्रकार्य = इस प्रकार्य से क्या आवश्यकता है, इसका बोध होता है। अर्थात् चाहिए, आवश्यक है, अनिवार्य है, वांछित आदि उक्तियों का प्रयोग किया जाता है।
4. निदेशात्मक = आदेशात्मक
5. प्रयुक्ति = प्रयोग होने की अवस्था/ विशिष्ट प्रयोग
6. प्रौद्योगिकी = औद्योगिक उत्पादन का विज्ञान/ टेक्नोलॉजी
7. लक्षणा = अभिधा शब्द शक्ति से भिन्न परंतु उसे अर्थ से संबंधित दूसरा अर्थ प्रकट करने वाली
8. विषयबोधक प्रकार्य = वैज्ञानिक प्रोक्ति में हर प्रयोग को स्पष्ट करने के लिए कार्यकारण प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् जिससे कि, जैसे की, यद्यपि, यदि, फिर भी, जो कि, अतः, क्योंकि, अगर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
9. व्यंजना = व्यंग्यार्थ

10. संक्षिप्तियाँ	= संक्षेपीकरण
11. सार्वभौमिक	= समस्त पृथ्वी पर फैला हुआ
12. सायास	= सहज रूप से

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- ‘वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य मूलतः सूचनापरक साहित्य है।’ इस तथ्य की पुष्टि कीजिए।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के निर्माण में किन-किन संप्रदायों अथवा धाराओं को अपनाया जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवाद करते समय किन-किन समस्याओं से अनुवादक को जूझना पड़ता है? प्रकाश डालिए।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

- साहित्यिक भाषा और वैज्ञानिक भाषा के बीच निहित अंतर को स्पष्ट कीजिए।
- हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की परंपरा को स्पष्ट कीजिए।
- पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका निर्धारित कीजिए।
- वैज्ञानिक साहित्य में रेखाचित्रों, संक्षिप्तियों और विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग क्यों किया जाता है? इनका अनुवाद करते समय में अनुवादक के समक्ष किस प्रकार की समस्या या सकती है?
- सामान्य शब्द किस तरह से पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

- वैज्ञानिक भाषा की एक विशेषता है क्या है? ()
 (अ) रोचकता (आ) सूत्रबद्धता (इ) द्वन्द्वात्मकता (ई) कल्पनाशीलता
- सूक्ष्म रूप से किसी वैज्ञानिक एवं तकनीकी संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए किसका प्रयोग नहीं किया जाता? ()
 (अ) रेखाचित्र (आ) आरेख (इ) संक्षिप्तियाँ (ई) लाक्षणिक अर्थ

3. इनमें से एक पारिभाषिक शब्दावली का आधार नहीं है? ()
 (अ) सूक्ष्मता (आ) मानकता (इ) रूढिवादिता (ई) व्यंजकता
4. वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ के अनुवादक को किस तरह के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए? ()
 (अ) दुर्लभ (आ) अबोधगम्य (इ) पारदर्शी (ई) नवनिर्मित

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठों में के लिए स्थान नहीं होता।
- प्रकार्य में भावी संभावनाओं का अनुमान लगाया जाता है तथा योजनाओं को सूचित किया जाया है।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में अंतरराष्ट्रीय शब्दों का किया जाना चाहिए।
- के प्रयासों से हिंदी में वैज्ञानिक लेखन का मार्ग प्रशस्त होने लगा।
- नियोजित शब्द निर्माण प्रक्रिया में पारिभाषिक शब्दों को ढंग से निर्धारित किया जाता है।

III. सुमेल कीजिए

- | | |
|--------------|----------------------------------------|
| 1. व्यंजना | (अ) शब्दावली बोर्ड |
| 2. रघुवीर | (आ) साहित्यिक भाषा |
| 3. 1961 | (इ) वैज्ञानिक अनुवाद |
| 4. 1950 | (ई) पारिभाषिक शब्दकोश |
| 5. तथ्यपरकता | (उ) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग |

9.8 पठनीय पुस्तकें

- अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य : दिलीप सिंह, ऋषभदेव शर्मा (सं)
- अनुवाद की व्यापक संकल्पना : दिलीप सिंह
- अनुवाद विज्ञान : भोलानाथ तिवारी
- अनुवाद विज्ञान : राजमणि शर्मा
- अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

इकाई 10 : पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 मूल पाठ : पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ

10.3.1 सामान्य शब्द बनाम पारिभाषिक शब्द

10.3.2 पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण

10.3.3 पारिभाषिक शब्द के प्रकार

10.3.4 पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद : समस्या के विभिन्न स्तर

10.4 पाठ सार

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

10.6 शब्द संपदा

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! अब तक हमें साहित्येतर अनुवाद विशेष रूप से वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठ को अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष उपस्थित होने वाली समस्याओं की चर्चा कर चुके हैं। आप जान ही गए होंगे कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी पाठों का संबंध पारिभाषिक शब्दों से है। अतः इन पारिभाषिक शब्दों की जानकारी के अभाव में अनुवादक सही अनुवाद नहीं कर सकता। पारिभाषिक शब्दों के चयन के समय भी उसके सामने समस्या उत्पन्न होना स्वाभाविक है। तो आइए, इस इकाई में हम पारिभाषिक शब्दावली के लक्षण, निर्माण पद्धतियों से संबंधित विभिन्न मत, पारिभाषिक शब्दों के विविध प्रकार तथा उनके अनुवाद से जुड़ी समस्याओं की चर्चा करेंगे।

10.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द के बीच निहित अंतर को समझ सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ और स्वरूप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के लक्षणों को समझ सकेंगे।

- पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के बारे में जान सकेंगे।
- पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों से अवगत हो सकेंगे।
- विभिन्न स्तरों पर पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।

10.3 मूल पाठ : पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ

प्रिय छात्रो! साहित्यिक और साहित्येतर - दोनों क्षेत्रों में कुछ विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वे शब्द उन क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। नई-नई संकल्पनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए नई भाषिक उक्तियों का प्रयोग किया जाता है। यदि हम भाषा के बारे में बात करें, तो यह हमारी जरूरतों को पूरी करने का प्रमुख साधन भी है और साध्य भी। भाषा का प्रयोग हम वस्तुतः दो तरह से करते हैं। एक वह भाषा रूप जो हमारी दैनिक कार्यकलापों के लिए सहायक सिद्ध हो। इसे एल जी पी (LGP) अर्थात लैंग्वेज फॉर जनरल पर्फॉर्मेंस - सामान्य व्यवहार की भाषा कहा जाता है। इसके विपरीत एक और भाषा रूप है जिसे एल एस पी (LSP) अर्थात लैंग्वेज और स्पेशल ऑर स्पेसिफिक पर्फॉर्मेंस कहा जाता है। यह विशिष्ट भाषा रूप ही प्रयोजनमूलक भाषा है, जो हमारी रोजी-रोटी से जुड़ी हुई है। इस भाषा रूप में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है। आइए! अब हम सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के बीच निहित अंतर को समझने की कोशिश करेंगे और इस विशिष्ट भाषा रूप की जानकारी प्राप्त करेंगे।

10.3.1 सामान्य शब्द बनाम पारिभाषिक शब्द

प्रिय छात्रो! अध्ययन की दृष्टि से हम समझने के लिए चीजों को वर्गीकृत करते हैं। अब हम यहाँ शब्दों को भी अर्थ की दृष्टि से वर्गीकृत करके समझने की कोशिश करेंगे। मानव अपने आपको भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त करता है, एक-दूसरे से संप्रेषित करता है तथा अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। इस दृष्टि से कहें तो, भाषा एक संचार उपकरण है जिसका उपयोग हर कोई अपने दैनिक जीवन में आदान-प्रदान के साधन के रूप में करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि भाषा संप्रेषण का सशक्त साधन है। इसके माध्यम से विचारों व भावनाओं के साथ-साथ अवधारणाओं, तथ्यों एवं संकल्पनाओं को भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। सुबह से लेकर रात तक हम अपनी दैनंदिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। यदि ध्यान से देखें तो यह स्पष्ट होता है कि हम आदि से लेकर अंत तक सिर्फ और सिर्फ शब्दों का ही प्रयोग विभिन्न तरीके से कर रहे हैं। अर्थ की दृष्टि से शब्दों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द।

सामान्य शब्द से तात्पर्य उन शब्दों से है जिनका प्रयोग बोलचाल में किया जाता है। इन्हें सीखने के लिए कोई विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है। इन शब्दों को हम अपने परिवार से तथा परिवेश से अनुकरण के माध्यम से सीख सकते हैं और प्रयोग कर सकते हैं। हम ऐसा करते भी हैं। कहने का अर्थ है कि सामान्य शब्दों को सीखने के लिए कोई विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। सामान्य शब्दावली में विवरण, निर्देश, सामान्य जानकारी शामिल हो

सकते हैं। चीखने, चिल्लाने, डॉटने, हर्ष व्यक्त करने, दुखी होने आदि क्रियाकलापों के लिए हम इन्हीं सामान्य शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं। सामान्य रूप से हम अपने विचारों को अभिव्यक्त करते समय लाक्षणिक एवं व्यंग्य उक्तियों तथा अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों का भी प्रयोग करते रहते हैं। यही वस्तुतः सामान्य बातचीत की प्राण शक्ति है। कुछ उदाहरण के माध्यम से इस बात को समझने की कोशिश करेंगे। पलंग, कुर्सी, सोफा आदि सामान्य शब्द हैं। ये ही शब्द काष्ट कला में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। गूँथना, तड़का लगाना, सेंकना, बेलना, काटना आदि सामान्य क्रिया शब्द हैं जिनका प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में सुबह से लेकर शाम तक किसी न किसी रूप में करते रहते हैं। लेकिन ये ही शब्द पाकशास्त्र में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं, जिनके पीछे निश्चित संकल्पना और परिभाषा स्वतः ही जुड़ जाती है। इसी तरह मानव शरीर के अंग चिकित्सा शास्त्र में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। व्याकरण और भाषाविज्ञान में 'ध्वनि' पारिभाषिक शब्द है, किंतु वह सामान्य भाषिक व्यवहार का सामान्य शब्द है - आवाज।

सामान्य शब्दावली के विपरीत विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली की संज्ञा दी जाती है। नाम से ही स्वयं स्पष्ट हो रहा है कि इन शब्दों के साथ एक निश्चित परिभाषा जुड़ी हुई है। ये किसी विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करने वाले शब्द हैं। इनकी अर्थ सीमा परिभाषित और निश्चित होती है। उदाहरण के लिए साहित्य, विज्ञान, प्रशासन, कार्यालय, बैंक, कृषि, कानून, अस्पताल, भवन निर्माण कार्यालय आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहा जाता है। ये शब्द उस क्षेत्र विशेष में उसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। ये पूर्ण रूप से पारिभाषिक शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए आत्मा, परमात्मा, जीवात्मा, अद्वैत आदि दर्शनशास्त्र के पारिभाषिक शब्द हैं तो चेतन, अहं, पराहं, इदं आदि मनोविज्ञान के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द हैं। इसी प्रकार लोहा, सोना, चाँदी, जिंक आदि धातुविज्ञान के विशिष्ट शब्द हैं तो जमा, साख, क्रृष्ण, अग्रिम, कर्ज, ब्याज, विलेख, नवीकरण, निविल आदि बैंकिंग शब्दावली हैं।

अनुवादक को ही नहीं हर किसी को शब्द-प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए। उन शब्दों के प्रयोग में विशेष सावधानी रखनी आवश्यक है जिनका प्रयोग किसी विशिष्ट क्षेत्र के संदर्भ में होता है। यहाँ उदाहरण स्वरूप कुछ शब्दों को देखेंगे -

शब्द	सामान्य संदर्भ में	बैंकिंग के संदर्भ में
Accommodation	आवास	निभाव
Advance	आगे बढ़ना	अग्रिम
Balance	तौल	शेष
Chest	सीना	तिजोरी
Crossing	चौराहा	रेखांकन
Draw	खींचना	पैसा निकालना

Interest	रुचि	ब्याज
Net	जाल	निविल
Tender	कोमल	निविदा

कुछ परिभाषाएँ

संचार : इसका सामान्य अर्थ है सूचना या जानकारी दूसरों तक पहुँचाना। यह अंग्रेजी के 'कम्यूनिकेशन' का हिंदी रूपांतर है। इसके साथ एक निश्चित परिभाषा जुड़ चुकी है। संचार अर्थात् किसी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को अथवा किसी एक व्यक्ति से कई व्यक्तियों को कुछ सार्थक चिह्नों, संकेतों या प्रतीकों के संप्रेषण से सूचना, जानकारी, ज्ञान या मनोभाव का आदान-प्रदान करना संचार है।

ग्रहण : किसी खगोलीय पिंड का दूसरे खगोलीय पिंड द्वारा छिपाया जाना या अन्य खगोलीय पिंड की छाया से गुजरना। प्रायः सूर्य और चंद्र के संदर्भ में ग्रहण शब्द का प्रयोग किया जाता है।

आकाशगंगा : समस्त ब्रह्मांड में करोड़ों की संख्या में विद्यमान खगोलीय सत्ताओं में एक। बहुत सारे ग्रह मिलकर एक सौर मंडल का निर्माण करते हैं। आकाशगंगा एक विशालकाय रूप है जिसमें सौर मंडल के साथ-साथ धूल के कणों, बहुत सारी गैसों का भी संयोजन रहता है। आकाशगंगा गुरुत्वाकर्षण बल से पूर्णतया जुड़ा रहता है।

गुरुत्वाकर्षण बल : वह बल जो वस्तुओं को पृथ्वी के केंद्र की ओर गिरने का कारण बनता है।

वेग : किसी निश्चित दिशा में कण अथवा पिंड के स्थिति-परिवर्तन की समय-सापेक्ष दर।

इस प्रकार अनेक क्षेत्रों में सामान्य अर्थ वाले शब्द कुछ और विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो सकते हैं। अतः पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के अभाव में वैज्ञानिक, तकनीकी जैसे किसी विशिष्ट क्षेत्र को समझना-समझाना आसान नहीं। पारिभाषिक शब्दावली की सहायता से किसी विचार या संकल्पना को समझाने के लिए नए शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन होने पर हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में गतिशीलता आई। पारिभाषिक शब्दावली प्रयोजनमूलक हिंदी का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के 'टेक्निकल' शब्द का हिंदी पर्याय है। इस अर्थ में पारिभाषिक शब्द वह शब्द है जो किसी विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र में एक सुनिश्चित निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है।

पारिभाषिक शब्दों को कुछ विद्वानों ने अपने मतानुसार परिभाषित करने का प्रयास किया है। डॉ. रघुवीर के अनुसार पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हो। अर्थात् जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती हैं, वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी यह मानते हैं कि पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति, विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों में प्रयुक्त होते हैं, तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट

अर्थ में सुनिश्चित रूप से पारिभाषिक होते हैं। अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि जो शब्द सामान्य व्यवहार से अलग विशिष्ट क्षेत्र में विशेष संदर्भ और अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं।

बोध प्रश्न

- सामान्य शब्द किसे कहते हैं?
- पारिभाषिक शब्द से क्या तात्पर्य है?
- डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द के रूप में किन शब्दों को माना?
- शब्दकोश की सहायता से इन पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए - accommodation, automation, cryptography, deactivation, data base
- डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द के रूप में किन शब्दों को माना?

पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ

प्रिय छात्रो! पारिभाषिक शब्दावली का महत्व निर्विवाद है। विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों के लिए पारिभाषिक शब्दावली की अत्यंत आवश्यकता होती है। पारिभाषिक शब्दावली कि कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

- अर्थ की दृष्टि से पारिभाषिक शब्दों का अर्थ सुनिश्चित होना चाहिए। भ्रामक और संदिग्ध स्थिति से बचना चाहिए।
- उच्चारण की दृष्टि से पारिभाषिक शब्द सरल और सुव्यवस्थित होना चाहिए।
- एक संकल्पना के लिए एक ही पारिभाषिक शब्द होना चाहिए।
- हर शब्द का स्वतंत्र अस्तित्व होना चाहिए।
- किसी एक क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान दूसरा शब्द नहीं ले सकता।
- पारिभाषिक शब्दों का ध्वनि की दृष्टि से अनुकूलन (ग्रहण करने वाली भाषा की ध्वनि व्यवस्था के अनुरूप) आवश्यक है।
- यथासाध्य पारिभाषिक शब्द छोटा होना चाहिए।
- पारिभाषिक शब्द ऐसे होने चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर उपसर्ग व प्रत्यय आदि जोड़कर उससे अन्य शब्द सरलता से बनाए जा सके। उदाहरण के लिए मानव > मानवता > मानवीय > मानवीयता > मानवीकरण > मानविकी आदि।

बोध प्रश्न

- पारिभाषिक शब्दावली की कुछ विशेषताएँ बताइए।

10.3.2 पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण

भारत में मूलतः पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में संस्कृत की मूल धातुओं में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर नए-नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। अनुवाद में विशेष रूप से साहित्येतर

अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ सामग्री के अनुरूप अनुवादक को लक्ष्य भाषा में अनुवाद करना होता है। अतः उसे विषय के अनुरूप अनेक प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता होती है। पिछली इकाई में हमने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के संबंध में पारिभाषिक शब्दों के निर्माण संबंधी विचारधाराओं/ पद्धतियों के बारे में अध्ययन कर ही चुके हैं। उन्हीं शती में ही कई संस्थाओं और विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया था। शब्दावली आयोग के गठन के साथ इस कार्य ने एक सुव्यवस्थित रूप लिया।

प्रिय छात्रो! हम जाना ही चुके हैं कि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण प्रक्रिया में प्रमुख रूप से राष्ट्रीयवादी धारा, अंतरराष्ट्रीयवादी धारा, लोकवादी धारा और समन्वयवादी धारा को अपनाया जाता है। भाषा को आधुनिक बनाने की प्रक्रिया पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया जाता है। यह प्रक्रिया दो स्तरों पर संपन्न होती है, जिसे निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है -

पहले स्तर में सामान्य भाषा को मानकीकरण की प्रक्रिया अपनाकर मानक भाषा के रूप में परिवर्तित किया जाता है। तदनुसार उसे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अपनाकर आधुनिक बनाया जाता है।

सामान्य भाषा → मानकीकरण की प्रक्रिया → मानक भाषा → आधुनिकीकरण की प्रक्रिया → आधुनिक भाषा

सामान्य भाषा/ हिंदी को मानक और आधुनिक बनाने के बाद द्वितीय स्तर प्रारंभ होता है। इस स्तर में आधुनिक भाषा से पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जाता है और नवनिर्मित शब्दों का अनुवाद किया जाता है। अनुवाद की प्रक्रिया को अलग से अपनाकर भी कुछ पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जाता है।

सामान्य हिंदी → मानक हिंदी → आधुनिक भाषा → पारिभाषिक शब्द → अनुवाद

उपर्युक्त स्तरों के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया जाता है। पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में विद्वानों में परस्पर विरोधी मत-मतांतर उठ खड़े हुए। इन्हें ही हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण से संबंधित विविध संप्रदायों, विचारधाराओं अथवा स्कूलों की संज्ञा दी जाती है। इन संप्रदायों में राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय, अंतरराष्ट्रीयतावादी संप्रदाय, लोकवादी संप्रदाय, हिंदुस्तानी संप्रदाय और समन्वयवादी संप्रदाय प्रमुख हैं।

राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय

इस विचारधारा को संस्कृतवादी अथवा पुनरुद्धारवादी, प्राचीनवादी संप्रदाय भी कहा जाता है। इस विचारधारा के पक्षधर लोग भारतीय भाषाओं की सारी की सारी पारिभाषिक शब्दावली संस्कृत से लेने के पक्ष में हैं।

पक्ष के तर्क : संस्कृत हमारे देश की प्राचीन भाषा है। यह धातु, प्रत्यय, उपसर्ग तथा समास शक्ति के कारण बड़ी उर्वरा है। संस्कृत में प्रजनन शक्ति हैं। अतः बड़ी सरलता से नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। थर्मल, थर्मामीटर, थर्मलिसिस जैसे अंग्रेजी शब्दों में 'थर्म' शब्द से बनने वाले लगभग पचास पारिभाषिक शब्द हैं। ऐसे में 'थर्म' के लिए हम अपना कोई शब्द स्थिर कर लें और फिर उसके आधार पर इस शूंखला के अन्य शब्द बनाए। जैसे:- थर्म > ताप। थर्मल > तापीय; थर्मलबेल्ट > तापीय कटिबंध; थर्मल केपासीटी > तापीय धारिता आदि। इससे स्पष्ट है कि संकल्पनासूचक शब्द हमारी अपनी भाषाओं के होनी चाहिए।

विपक्ष के तर्क : शुद्धतावाद के कारण अनेक कठिन शब्द सुझाए गए जिन्हें स्वीकार्यता प्राप्त नहीं हुई। जैसे:- मेज > पटल; बल्ब > विद्युतकंद; पेन > मसीपथ; किलोमीटर > सहस्रमाँ; मीटर > मान; पेट्रोल > मारतेल। ऐसे पर्याय भाषा को जटिल बनाने के कारण अपने आप अस्वीकार्य हो गए।

अंतरराष्ट्रीयतावादी संप्रदाय

अधिकांश वैज्ञानिक तथा अंग्रेजी परंपरा के लोग इसी संप्रदाय के पक्षधर हैं। वे चाहते हैं कि अंग्रेजी तथा अंतरराष्ट्रीय शब्दावली को ज्यों का त्यों ले लिया जाए।

पक्ष के तर्क : अंतरराष्ट्रीय अंग्रेजी शब्दावली का प्रचार विश्व में सर्वाधिक है। अंग्रेजी से परिचित होने पर वैज्ञानिकों को विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य को समझने में सरलता होगी। इस रास्ते को अपनाने से अनुवादक या लेखक के लिए पारिभाषिक शब्दावली की समस्या सदा के लिए सुलझ जाएगी।

विपक्ष के तर्क : अंग्रेजी के सारे पारिभाषिक शब्द हिंदी पचा नहीं भी नहीं सकती। किसी भी समुन्नत देश में ऐसा नहीं है कि सारे के सारे पारिभाषिक शब्द किसी दूसरी भाषा से लिए जाए। मूलतः यह प्रश्न देश के व्यक्तित्व और अस्मिता से जुड़ा हुआ है। इसलिए सारे शब्द हम अंग्रेजी से नहीं ले सकते।

इस संप्रदाय में भी शब्द ग्रहण के संबंध में दो मत हैं। कुछ लोग academy, interim, parabola, technique, comedy, nitrogen आदि शब्दों का ज्यों-का-त्यों लेना चाहते हैं। दूसरे वे लोग हैं जो इन शब्दों को हिंदी की ध्वनि व्यवस्था के अनुरूप अनुकूलित करके शब्द बनाने के पक्षधर में हैं। जैसे :- अकादमी, अंतरिम, परवलय, तकनीक, कामदी, नत्रजन आदि।

लोकवादी संप्रदाय

इस संप्रदाय ने या तो जनता की भाषा से शब्द ग्रहण की हैं या जन-प्रचलित शब्दों के योग से नए शब्द बनाए हैं। जैसे:- defector > दलबदलू/ आया राम गया राम; infiltrator > घुसपैठिया; maternity home > जन्मा घर; power house > बिजली घर। इसमें सान्द्रह नहीं कि यह संप्रदाय हिंदी के प्रकृति के अनुकूल है। लेकिन इसकी सीमा यह है कि लोकवादी सोच से हिंदी के लिए सभी प्रकार के पारिभाषिक शब्द नहीं बनाए जा सकते हैं। अतः केवल लोकवादी संप्रदाय से हिंदी का काम नहीं चल सकता।

हिंदुस्तानी संप्रदाय

इसे प्रयोगवादी संप्रदाय भी कहा जाता है। उच्च हिंदी और उच्च उर्दू के स्थित मध्य शैली को हिंदुस्तानी शैली की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के पं. सुंदरलाल और हिंदुस्तानी कल्वर सोसाइटी ने इस धारा का समर्थन किया।

इस धारा ने हिंदी-उर्दू के समन्वय तथा सरल शब्दावली पर बल दिया, लेकिन इसकी विडंबना यह है कि बोलचाल की शब्दों, संस्कृत शब्दों और अरबी-फारसी शब्दों की खिचड़ी से ऐसे शब्द बनाए गए जो हास्यास्पद प्रतीत होते हैं। जैसे:- acceleration > चाल-बढ़ाव; reactionary > पलटकारी; incorporate > एकतान करना; emergency > अचानकी; pedagogy > तालीम विद्या।

स्पष्ट है कि इस संप्रदाय के शब्द इतने अटपटे और हास्यास्पद हैं कि किसी ने इन शब्दों की ओर गंभीरता से देखा तक नहीं।

समन्वयवादी संप्रदाय

राष्ट्रीयतावादी, अंतरराष्ट्रीयतावादी, हिंदुस्तानी, लोकवादी संप्रदायों की मान्यताओं और सीमाओं का अध्ययन करने पर किसी भी व्यक्ति को यह अनुभव होना स्वाभाविक है कि किसी एक अकेले संप्रदाय से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण संबंधी बहुमुखी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

मध्यवादी या समन्वयवादी मत के अनुसार सुविधा की दृष्टि से और यह आवश्यक है कि अंतरराष्ट्रीय शब्दावली, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, आधुनिक भाषाओं, प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य, विभिन्न बोलियों आदि से शब्द ग्रहण और नूतन शब्द निर्माण की नीतियों का समन्वय किया जाए। वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने भी इसी संप्रदाय का समर्थन करते हुए भारतीय भाषाओं से पारिभाषिक शब्दावली की कमी को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए -

- यथासंभव अंतरराष्ट्रीय शब्दावली को लिया जाए। इनमें जिन शब्दों को मूल रूप में लिया जा सकता हैं उन्हें ज्यों का त्यों प्रयोग किया जाए। जिनमें परिवर्तन या अनुकूलन की आवश्यकता हो वहाँ उन नियमों को अपनाकर शब्द बनाया जाए।

- हमारी भाषाओं ने जिन अंग्रेजी शब्दों को आत्मसात कर लिया है उनका यथावत प्रयोग किया जाए।
- प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य से चलने वाले तथा सभी दृष्टियों से सटीक शब्दों को लिया जाए।
- पारिभाषिक शब्दावली में अखिल भारतीयता का गुण लाने के लिए यह उचित होगा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा बोलियों में पाए जाने वाले उपयुक्त शब्दों को यथा संभव ग्रहण कर लिया जाए।
- शेष आवश्यक शब्दों के लिए नए शब्द बनाने के अलावा हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है। परंतु नए शब्द बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उस शब्द का वर्तमान प्रयोग और अर्थ क्या है, क्योंकि कभी-कभी शब्दों का प्रयोग मूल अर्थ की सीमाओं से अलग हट जाता है। ऐसी स्थिति में उत्पत्तिपरक अर्थ के स्थान पर प्रयोगपरक अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए।

इससे यह स्पष्ट है कि हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के संबंध में अनेक विचारधाराएँ और मतभेद प्रचलित हैं। ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि हिंदी की शब्दावली अनेक स्रोतीय हैं और साथ ही उसमें उच्च हिंदी, उच्च उर्दू और हिंदुस्तानी जैसी अलग-अलग शैलियाँ भी पाई जाती हैं।

बोध प्रश्न

- पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया सामान्य रूप से कितने स्तरों पर संपन्न होती है?
- संस्कृतवादी अथवा राष्ट्रीयतावादी संप्रदाय के विरुद्ध विद्वानों ने क्या तर्क दिए?
- समन्वयवादी सिद्धांत से क्या अभिप्राय है?
- पं. सुंदरलाल किस धारा/ संप्रदाय के समर्थक हैं?

10.3.3 पारिभाषिक शब्द के प्रकार

छात्रो! अब तक आपने सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द के बीच निहित अंतर तथा पारिभाषिक शब्दों कि विशेषताएँ एवं उनकी निर्माण सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ही चुके हैं। अब थोड़ी सी चर्चा हम पारिभाषिक शब्दों के प्रकारों पर करेंगे।

अध्ययन की सुविधा हेतु हम पारिभाषिक शब्दों को कुछ कसौटियों के आधार पर वर्गीकृत कर सकते हैं - स्रोत के आधार पर, रचना के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, अर्थ की सूक्ष्मता-स्थूलता के आधार पर, शब्दों में पदीय इकाइयों के आधार पर तथा विषय के आधार पर।

- (i) **स्रोत के आधार पर :** स्रोत के आधार पर तत्सम, तद्धव, देशज, विदेशी और शंकर शब्दों के रूप में पारिभाषिक शब्दों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

तत्सम शब्द : संस्कृत के समान - कृषि, वित्त, सत्यापन, तुलन पत्र, वाणिज्य, कार्यालय, अनुदान, आपूर्ति, ह्रास, श्रम, उद्योग, संयुक्त, निधि, वाहक, विकल्प

तद्धव शब्द : संस्कृत से बदला हुआ रूप - भत्ता

देशज शब्द : देश में जन्मा हुआ - निपटान, निकासी, डाकघर, चालू लेखा, लेनदेन, खुरदरा, हुलाई, सुपुर्दगी, पट्टा, कटौती, घूस, दिवाला

विदेशी शब्द : अन्य भाषाओं से आगत शब्द - बैंक, ड्राफ्ट, बिल, पेशगी, मियादी, जमानती, दस्तावेज, मसौदा, अंतरिम, अकादमी

संकर शब्द : दो भाषाओं के शब्दों का मेल - प्रवेश रजिस्टर, चिकित्सा बिल, जिलाधीश

भाषा में पहले से प्रयुक्त शब्द : इस वर्ग में वे शब्द आते हैं जो लक्ष्य भाषा में पहले से विद्यमान हों। जैसे - हिंदी में जीव, चूना, नस, बिजली आदि। ऐसे शब्द शुद्ध पारिभाषिक भी हो सकते हैं। जैसे - व्याकरण और भाषाविज्ञान में। दूसरी ओर इस वर्ग में ऐसे भी शब्द हो सकते हैं जो मूलतः सामान्य हों। जैसे - वनस्पति शास्त्र में जड़ (मूल), किंतु शास्त्र विशेष में पारिभाषिक शब्द के रूप में ही उनका प्रयोग पहले से हो सकता है। जैसे - दर्शनशास्त्र में मुक्ति या मोक्ष।

दूसरी भाषा से ग्रहीत शब्द : दूसरी भाषा से लिए गए पारिभाषिक शब्द भी मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - एक तो वे जो प्रायः अपने मूल रूप में ही ले लिए गए हों। जैसे - कार्बन, राडार, माउस, मीटर, लीटर, कालशियम आदि। दूसरा प्रकार उन शब्दों से संबंधित हैं जिन्हें लक्ष्य भाषा की ध्वनि व्यवस्था या ध्वनि प्रकृति के अनुरूप अनुकूलित कर लिया गया हो। जैसे - अकादमी (academy), अंतरिम (interim)। हिंदी में ली गई पारिभाषिक शब्दों में अंतरराष्ट्रीय पारिभाषिक शब्द, अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द, संस्कृत पारिभाषिक शब्द और भारतीय भाषाओं व बोलियों से लिए गए पारिभाषिक शब्द शामिल हैं।

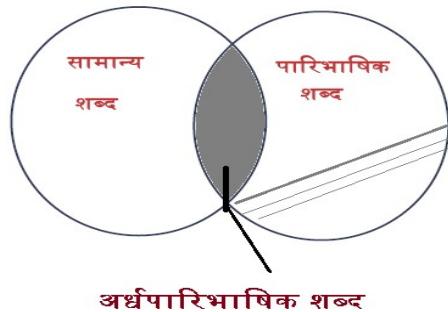
नवनिर्मित शब्द : कभी-कभी पहले वर्ग के अभाव में तथा दूसरे वर्ग के शब्द को किसी कारणवश ग्रहण न कर पाने की स्थिति में लक्ष्य भाषा के अनुवादक को दो या इससे अधिक शब्द धातु में उपसर्ग व प्रत्यय आदि जोड़कर गढ़ने पड़ते हैं। हिंदी में विभिन्न विज्ञानों के लिए ऐसे काफी शब्द गढ़े गए हैं। जैसे - रूपिम (morpheme), मंत्रालय (ministry), मंत्रिमंडल (cabinet), निदेशक (director), कुलसचिव (registrar), संपादकीय (editorial), निविदा (tender), देयता (liability), तदर्थ (ad hoc) आदि।

(ii) रचना के आधार पर : इसके आधार पर पारिभाषिक शब्दों को दो रूपों में विभाजित किया जा सकता है - मूल और यौगिक।

मूल शब्द : अर्थात् शब्द के मूल रूप। जैसे नियम, उपस्थिति, पत्र, प्रमाण, मानक

यौगिक शब्द : उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्द - अधिनियम, अनुपस्थित, परिपत्र, प्रमाणीकरण, मानकीकरण

(iii) प्रयोग के आधार पर : प्रयोग के आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो प्रकार हैं - पूर्ण पारिभाषिक और अर्धपारिभाषिक।



कभी-कभी दो या दो से अधिक रूपों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाता है। जैसे:-

आरक्षण	रिजर्वेशन	Reservation
क्षति	नुकसान	Loss
क्षेत्र	इलाका	Region/ Area
वृद्धि	इजाफा	Increase
ऋण	कर्ज	Loan
लाइसेंस	अनुज्ञासि	Licence
भाव, मूल्य	कीमत, दाम	Price

एक ही शब्द के लिए भिन्न पर्याय भी हो सकते हैं। अतः संदर्भ के अनुसार सावधानी से प्रयोग करना चाहिए। जैसे:-

Home Consumption	निजी खपत
Home Industry	गृह उद्योग
Home Market	देशी बाजार
Home Trade	आंतरिक व्यापार
Fixed Market	स्थिर बाजार
Fixed Price	निश्चित मूल्य
Fixed Deposit	मियादी जमा
Fixed Capital	अचल पूँजी
Fixed Asset	स्थायी संपत्ति

Fixed Target

निर्धारित लक्ष्य

जो शब्द सिर्फ पारिभाषिक अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं उन्हें पूर्ण पारिभाषिक शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्दों का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान के विशिष्ट क्षेत्रों में होता है। जैसे व्याकरण, गणित, विज्ञान आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त शब्द। उदाहरण के लिए दशमलव, क्षेत्रफल, ज्यामिति आदि गणित के पारिभाषिक शब्द हैं। द्रव्यमान, गुरुत्वाकर्षण, अणु, क्वांटम आदि भौतिक विज्ञान के पारिभाषिक शब्द हैं। रूपिम, स्वनिम, ध्वनिग्राम आदि भाषाविज्ञान के पारिभाषिक शब्द हैं। इनका एक सुनिश्चित अर्थ है जो इसी संकल्पना के लिए प्रयुक्त है। अतः ऐसे शब्द पूर्ण पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि सामान्य रूप से हर दिन प्रयुक्त होने वाले शब्द किसी विशिष्ट विषय क्षेत्र में प्रयुक्त होने पर वे उस क्षेत्र के पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं। ऐसे शब्दों को अर्धपारिभाषिक शब्द कह सकते हैं, क्योंकि उनका प्रयोग दोनों क्षेत्रों में हो रहा है। उदाहरण के लिए 'रस' शब्द को ही लेंगे। सामान्य रूप से रस का अर्थ किसी फल को निचोड़ने से प्राप्त द्रव्य पदार्थ। जैसे आम का रस, गन्ने का रस, नींबू का रस आदि। यही 'रस' शब्द जब काव्यशास्त्र में प्रयुक्त होता है, तो उसके साथ एक निश्चित अर्थ और परिभाषा जुड़ जाती है। यहाँ 'रस' का अर्थ होता है अलौकिक आनंद। इसी प्रकार तेज, शक्ति, कार्य, जड़, हरी, अंक आदि कुछ अर्धपारिभाषिक शब्द हैं। अंग्रेजी के fast, speed, root, colon, memory आदि भी अर्धपारिभाषिक शब्द हैं।

(iv) अर्थ की सूक्ष्मता-स्थूलता के आधार पर

संकल्पनाबोधक शब्द : जो सूक्ष्म संकल्पनाओं, प्रत्ययों या अवधारणाओं को व्यक्त करे - गणित में : दशमलव (decimal), बिंदु (point), समीकरण (equation), वर्गमूल (square root), घात (power A²)।

भौतिकी में : गति/ चाल (motion), त्वरण (acceleration), वेग (velocity), द्रव्यमान (mass), भार (weight), ध्वनि (sound), ध्रुवण (polarisation), अनुनाद (resonance), ऊर्जा (energy)।

दर्शन में : मुक्ति (salvation), आत्मा (soul), द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (dialectical materialism)।

मनोविज्ञान में : व्यक्तित्व (personality), हीनताग्रंथि (inferiority complex), उच्चता ग्रंथि (superiority complex), अहं (ego)

वस्तुबोधक शब्द : जो वस्तुओं को बोधित करे -

रसायन शब्द में : कैल्शियम, सोडियम, हीलियम, कार्बन, सल्फर, आयोडीन, पोटाशियम

जंतुविज्ञान में : कोशिका (cell), ऊतक (tissue), जीवद्रव्य (protoplasm), नाड़ी (nerve), धमनी (artery), शिरा (vein)।

वनस्पति विज्ञान : पर्णहरिम (chlorophyll), ज़इलम (xylem), फ्लोयम (phloem), बीजपत्र (cotyledons)

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आम तौर से यह माना जाता है कि संकल्पनाबोधक शब्द यथासाध्य अपनी भाषा के होने चाहिए क्योंकि उनसे अनेक दूसरे शब्दों को भी बनाने पड़ सकते हैं। वस्तुबोधक पारिभाषिक शब्दों को आवश्यक होने पर दूसरी भाषाओं से लेने पर भी विशेष हानि नहीं होगी क्योंकि इनसे बहुत अधिक अन्य शब्द बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

एकार्थी शब्द : यंत्र, कोश

अनेकार्थी शब्द : रस, अंक, द्रव्य, विधि

(v) शब्द में पदीय इकाइयों के आधार पर : इस आधार पर पारिभाषिक शब्द तीन प्रकार के हो सकते हैं - एकपदीय, द्विपदीय और त्रिपदीय

एकपदीय : जिसमें एक पद हो - धमनी

द्विपदीय : जिसमें दो पद हों। वनस्पति विज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में ऐसे नाम प्रायः मिलते हैं। जैसे 'आम' के लिए 'मैंगिफेरा इंडिका' या 'मोर' के लिए 'पावो क्रिस्टाटस'। 'मेढ़क' के लिए 'राना टिग्रिस'। ऐसे नामों में पहला नाम वंश का तथा दूसरा जाति का होता है। दो शब्दों वाले पारिभाषिक शब्द अन्य विज्ञानों में भी हो सकते हैं, किंतु उन्हें प्रायः द्विपदीय नहीं कहते। जैसे गणित में 'चक्रवृद्धि व्याज' या भाषाविज्ञान में 'निकटस्थ अवयव'।

त्रिपदीय : जिसमें तीन पद हों। ये दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जिनमें पहला शब्द वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा प्रजाति का होता है। जैसे मनुष्य के सिर के 'जूँ' के लिए 'पेडिक्यूलस हयुमानस कैपिटिस' या शरीर के अन्य भागों के 'जूँ' के लिए 'पेडिक्यूलस हयुमानस कॉरपोरिस' अथवा 'आधुनिक मानव' के लिए 'होमो सैपियन्स सैपियन्स' तथा 'प्राचीन मानव' के लिए 'होमो सैपियन्स नियान्दरतेलेनसिस' का प्रयोग। दूसरे प्रकार के त्रिपदीय पारिभाषिक शब्दों में पहला नाम वंश का, दूसरा जाति का तथा तीसरा अन्वेषक का होता है। जैसे 'मोर' के लिए 'पावो क्रिस्टाटस लिन्नेयस'। इस तरह के त्रिपदीय पारिभाषिक शब्दावली अन्य विज्ञानों में भी हो सकते हैं। जैसे भाषाविज्ञान के 'रूपांतरक प्रजनक व्याकरण' - किंतु इस तरह के पदों को त्रिपदीय नहीं कह सकते।

यों तो पारिभाषिक शब्द चार पदीय भी कभी-कभी मिलते हैं, किंतु इनमें वस्तुतः नाम तीन ही होते हैं। एक नाम संशोधक का जोड़ देने से शब्द चार हो जाते हैं।

जैसे:- वंश + जाति + प्रजाति + अन्वेषक + संशोधक + अन्वेषण/ संशोधन वर्ष

(vi) विषय के आधार पर : इसके आधार पर जितने विषय होंगे उतने प्रकार के पारिभाषिक शब्द होंगे। कहने का आशय है कि दर्शनशास्त्र, संचार माध्यम, शिक्षा, मौसम विज्ञान, कृषि विज्ञान, जीवविज्ञान, वाणिज्य, खेल आदि।

बोध प्रश्न

- पारिभाषिक शब्दावली को वर्गीकृत करने की कुछ कसौटियों के बारे में बताइए।

10.3.4 पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद : समस्या के विभिन्न स्तर

अनुवादक को विशेष रूप से वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवादों में पारिभाषिक शब्दों के निर्धारण की समस्या आती है। सामान्य शब्द कोश में समानार्थी शब्द मिलते हैं। सामान्य शब्द कोश में समानार्थी शब्द मिलते हैं, पारिभाषिक शब्द नहीं। लेकिन कई बार अनुवादक को पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करना पड़ता है। ऐसी स्थिति से निपटाने के लिए अनुवादक को पारिभाषिक शब्दावली निर्माण संबंधी व्याकरणिक युक्तियों की जानकारी बहुत आवश्यक होती है। अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक को तीन प्रकार की भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं -

- (1) मूल पाठ के पाठक के रूप में - जहाँ उसकी मुख्य समस्या अर्थ ग्रहण की होती है।
- (2) द्विभाषिक के रूप में - जहाँ उसकी मुख्य समस्या समतुल्य शब्दों के निर्धारण में होती है।
- (3) लक्ष्य भाषा के लेखक के रूप में - उसकी समस्या मूल पाठ के संदेश को पुनर्निर्मित कर लक्ष्य भाषा के वाक्य-विन्यास और प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत करना और आवश्यक होने पर नए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करना पड़ता है।

सामान्य रूप से अनुवाद में वाक्य के स्तर पर विचारों का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण होता है, परंतु वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादों में शब्द के स्तर पर अनुवाद किया जाता है। कभी-कभी भावानुवाद की भी आवश्यकता पड़ती है, जैसे - green revolution: हरित क्रांति, red tapism: लाल फीताशाही, black money: काला धन, तो कभी शाब्दिक अनुवाद की - outstation cheque: बाहरी चेक।

भावानुवाद की दृष्टि से अनुवाद करते समय तकनीकी शब्दों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों के लिए हिंदी के तकनीकी पर्यायों का प्रयोग करते समय अनुवाद में यह विवेक आवश्यक है कि कहाँ और किस प्रकार के तकनीकी पर्यायों का प्रयोग करना चाहिए। तकनीकी शब्द अनुवाद में सहायक होते हैं। जैसे - 'food ministry' के लिए 'खाद्य मंत्रालय' के स्थान पर 'भोजन मंत्रालय' का प्रयोग करने से अनर्थ हो सकता है। छात्रो! अब हम पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद में अनुवादक को होने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा करेंगे।

अर्थ ग्रहण की समस्या

स्रोत भाषा के पाठक के रूप में अनुवादक का मुख्य कार्य मूल पाठ का अर्थ ग्रहण करना होता है। इसके लिए अनुवादक को विषय का ज्ञान जरूरी है। यह ज्ञान उसे विषय के अध्ययन से या शब्द कोशों तथा विशेषज्ञों की सहायता से प्राप्त होता है। जैसे - विषय से अनभिज्ञ कोई भी सामान्य अनुवादक 'Researches in Petrology' का 'पेट्रोल विज्ञान में हुए अनुसंधान' और 'Labour Room' का 'श्रमिक कक्ष' कर सकता है, जबकि सही अनुवादक इनका अनुवाद 'शैलिकी में हुए अनुसंधान' और 'प्रसूति गृह' करता है। आज समाज में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, बैंकिंग आदि से संबंधित विभागों में पर्याप्त अनुवाद कार्य हो रहा है। इन विषयों से संबंधित अनुवादों को बृहत पारिभाषिक शब्द कोश की सहायता मिल सकती है।

पर्याय निर्धारण की समस्या

द्विभाषिक के रूप में अनुवादक की मुख्य समस्या समतुल्य अर्थ तथा शब्द निर्धारण की होती है। वह स्रोत भाषा के पारिभाषिक शब्द के लिए संभावित समानार्थी शब्द ढूँढ़ता है। पूरे वाक्य या संदर्भ की कसौटी में उन्हें परखना है और उनमें से किसी एक का चयन करना है। इस कार्य में अनुवादक को विषय के ज्ञान के साथ-साथ दोनों भाषाओं की जानकारी सहायक सिद्ध होता है। इनके अलावा तकनीकी कोशों में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित पारिभाषिक शब्दावली संग्रह को मुख्य आधार मानना चाहिए।

अनुवादक को यह याद रखना चाहिए कि किसी भी भाषा में पूर्ण पर्याय नहीं मिलते हैं। इसके आधार पर एक भाषा की शब्द के लिए दूसरी भाषा में समानार्थी शब्द मिलना संभव नहीं है। अनुवाद प्रक्रिया के समतुल्यता का सिद्धांत इसी अवधारणा पर आधारित है। जैसे : हिंदी के 'बर्फ' शब्द का पूरा अर्थ प्रकट करने के लिए अंग्रेजी में कम-से-कम दो समानार्थी शब्द- snow और ice उपलब्ध हैं। इसी तरह अंग्रेजी शब्द 'general' के लिए हिंदी में कम-से-कम आठ समानार्थी शब्द उपलब्ध हैं - सामान्य, साधारण, आम, सार्वजनिक, मुख्य, प्रधान, महा, जेनरल।

पुनर्रचना और शब्द निर्माण की समस्या

समतुल्य अर्थ का निर्धारण करने के बाद अनुवादक को लक्ष्य भाषा लेखक के रूप में लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप पाठ का निर्माण करना पड़ता है। इसके साथ-साथ वाक्य विन्यास और शैली को भी ध्यान में रखना पड़ता है। पारिभाषिक शब्द का समानार्थी शब्द कोश में नहीं मिले तो नए शब्दों का भी निर्माण करने की आवश्यकता पड़ती है। मुख्य रूप से अनुवादक को इसी में ही समस्या आ जाती है; क्योंकि हमेशा नए शब्दों का निर्माण नहीं किया जा सकता। यथासंभव भाषा-भंडार में उपलब्ध ऐसे शब्दों का चयन किया जाए जो नई संकल्पना के गुण-धर्म का बोध कराने में समर्थ हो जिससे उपसर्ग, प्रत्यय आदि के जोड़ने से अभीष्ट अर्थबोध कराने वाले शब्द उत्पन्न किया जा सके। हिंदी में पारिभाषिक शब्द निर्माण के लिए इस प्रकार की व्याकरणिक युक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

नए तकनीकी अर्थों के लिए शब्दों को रूढ़ बना दिया जाता है। इस संदर्भ में शब्द नए और पुराने दोनों अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। इस स्थिति को अर्थ-विस्तार कहा जाता है। जैसे:- radio : आकाशवाणी, electricity : विजली, liberation : विमोचन, profit and loss : लाभ और हानि।

जो शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं या प्रयुक्त होते थे, ऐसे शब्दों के अर्थों को संकुचित कर विशेष तकनीकी अर्थों के लिए रूढ़ कर दिया जाता है। यह अर्थ-संकोच की स्थिति है। जैसे:- parliament : संसद, census : जनगणना, female petitioner : याचिका।

कभी-कभी अनुवादक को उपयुक्त शब्द नहीं मिलते, तब नए शब्दों का सृजन करना पड़ता है। शब्दों का सृजन करके अभीष्ट अर्थों का आरोपण किया जाता है। इस स्थिति को शब्द-सृजन कहा जाता है। जैसे:- faculty : संकाय, air hostess : विमान परिचारिका, television: दूरदर्शन, engineer : अभियंता।

कुछ शब्द मूल भाषा के शब्दों के शाब्दिक अनुवाद से भी प्राप्त होते हैं, लेकिन निर्माण में भावानुवाद को ज्यादा उपयुक्त मानते हैं। जैसे:- outstation cheque : बाहरी चेक, third world : तृतीय विश्व, golden jubilee : स्वर्ण जयंती, poverty line : गरीबी रेखा, benefit of doubt : संदेह-लाभ।

शब्दानुवाद और भावानुवाद के अलावा शब्दों के अंतरराष्ट्रीय भाषाओं से भी हिंदी के प्रत्यय और उपसर्ग को जोड़कर भी शब्द बनाए जाते हैं। जैसे:- bank : बैंक, notice : नोटिस, railway : रेलवे, motor : मोटर, voltage : वोल्टता, registration : रिजस्ट्रीकरण, share holder : शेयर धारक।

वास्तविक अनुवाद कार्य के दौरान अनुवादक के सामने उपर्युक्त समस्याओं के अलावा अन्य प्रकार की समस्याएँ भी आ सकती हैं। लेकिन अनुवादक को यदि अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दावली के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों आयामों की जानकारी हो, तो वह हर समस्या का समाधान स्वयं निकाल सकता है।

बोध प्रश्न

- पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद करते समय सामान्य रूप से अनुवादक के सामने किस प्रकार की समस्या आ सकती है?
- अर्थ ग्रहण से क्या अभिप्राय है?
- अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक को कितनी प्रकार की भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं?

10.4 पाठ सार

प्रिय छात्रों! अब आप समझ ही चुके होंगे कि पारिभाषिक शब्द अभिधार्थ में ही ग्रहण किए जाते हैं। पारिभाषिक शब्द का अर्थ शास्त्र द्वारा निर्धारित होता है। पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द को कहते हैं जो विषय-विशेष में प्रयुक्त हों, जिसकी विषय या सिद्धांत के प्रसंग में सुनिश्चित परिभाषा हो। इन शब्दों का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में किया जाता है। जब कोई भाषा समाज नई संकल्पनाओं और खोजों को किसी अन्य देश से उदार लेता है अथवा आत्मसात करता है, तो इस स्थिति के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करना पड़ता है। ऐसा करने के लिए लक्ष्य भाषा समाज मूल भाषा समाज से कुछ शब्दों को ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लेता है और कुछ शब्दों के लिए अपनी प्राचीन शब्द संपदा में से शब्द ग्रहण करता है। कुछ अवसरों पर बहुप्रचलित शब्दावली में से भी शब्द लेने पड़ते हैं। लेकिन शब्दों को ग्रहण करने या नए शब्द निर्मित करने का यह कार्य अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर सकता है क्योंकि यदि पारिभाषिक शब्दावली के विकास का कार्य सुनियोजित न हो तो हर अनुवादक, हर लेखक और हर विद्वान नए शब्दों की अपनी टक्साल खुलकर बैठ जाएंगा। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि पारिभाषिक शब्दावली के लिए निर्धारित शब्द पर विविध विद्वान एकमत हो जिससे एकरूपता, मानकता और सर्वस्वीकार्यता जैसे गुणों का समावेश हो सकता है।

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र में शब्दों का प्रयोग विशेष अर्थ को प्रकट करने के लिए किया जाता है। ऐसे शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।
2. पारिभाषिक शब्द संकल्पनात्मक होती है और इनकी मूल प्रवृत्ति अर्थों का सूक्ष्मीकरण है। इससे पारिभाषिक शब्द सूक्ष्म अर्थ के वाचक बन जाते हैं।
3. स्रोत भाषा पाठक के रूप में अनुवादक का मुख्य कार्य मूल पाठ का अर्थ ग्रहण करना होता है। इसके लिए उसे विषय का ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव में अर्थ का अनर्थ हो सकता है।
4. पर्याय निर्धारण करने में भी अनुवादक के समक्ष समस्या उत्पन्न होगी क्योंकि समानार्थी शब्द मिलना आसान नहीं है।
5. नए-नए शब्दों को निर्मित करते समय भी अनेक तरह की समस्याएँ आ सकती हैं क्योंकि हर भाषा की प्रकृति अलग होती है।

10.6 शब्द संपदा

- | | | |
|-----------------|---|---------------------------------------------------------------------------------|
| 1. अनुकूलन | = | काट-छाँट कर उपयुक्त बनाना |
| 2. अर्थ विस्तार | = | सीमित अर्थ में प्रयोग होने वाले शब्द बाद में उनके अर्थ में विस्तार पाया जाता है |
| 3. अर्थ संकोच | = | विस्तृत अर्थ में प्रयोग होने वाले शब्दों का सीमित अर्थ में प्रयोग |
| 4. पारिभाषिक | = | जिसका अर्थ परिभाषा द्वारा सूचित किया जाए |

5. प्रयोजनमूलक	=	किसी उद्देश्य या प्रयोजन की सिद्धि में सहायता करने वाला
6. संकल्पना	=	अवधारणा
7. संचार	=	गमन, पारिभाषिक रूप में इसका अर्थ संकुचित होकर अंग्रेजी के कम्यूनिकेशन - संप्रेषण के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा
8. संप्रेषण	=	किसी बात को प्रेषित करना या पहुँचाना
9. समतुल्य	=	समान या समरूप

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग **500** शब्दों में दीजिए।

- ‘पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान के अभाव में वैज्ञानिक, तकनीकी जैसे किसी विशिष्ट क्षेत्र को समझना-समझाना आसान नहीं।’ इस उक्ति को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
- पारिभाषिक शब्दों के विभिन्न प्रकारों की चर्चा कीजिए।
- पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद करते समय अनुवादक को किन-किन स्तरों पर समस्याएँ हो सकती हैं? स्पष्ट कीजिए।
- हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के संबंध में अनेक विचारधाराएँ और मतभेद क्यों प्रचलित हैं? स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग **200** शब्दों में दीजिए।

- सामान्य शब्द बनाम पारिभाषिक शब्दों के बीच निहित अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
- पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं? उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।
- पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में केवल राष्ट्रीयतावादी एवं अंतरराष्ट्रीयतावादी सिद्धांत क्यों नहीं अपनाया जा सकता? तर्क प्रस्तुत कीजिए।
- पारिभाषिक शब्दों के निर्माण प्रक्रिया में समन्वयवादी सिद्धांत का परिचय दीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

- यह पारिभाषिक शब्दावली का गुण नहीं है? ()
(अ) पारदर्शिता (आ) सूत्रबद्धता (इ) व्यंग्योक्ति (ई) संकल्पनात्मकता

2. 'Factory Act' शब्द का हिंदी पर्याय क्या है? ()
 (अ) फैक्ट्री अभिनय (आ) फैक्ट्री अधिनियम (इ) फैक्ट्री नियम (ई) फैक्ट्री विधि
3. 'रस' किस प्रकार का शब्द है? ()
 (अ) सामान्य (आ) अर्धपारिभाषिक (इ) पूर्ण पारिभाषिक (ई) व्यंजक शब्द
4. पारिभाषिक शब्दों का अर्थ कैसे होना चाहिए? ()
 (अ) दुरुह (आ) सुनिश्चित (इ) भ्रामक (ई) संदिग्ध

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

- भाषा हमारी रोजी-रोटी से जुड़ी हुई है।
- विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को शब्दावली की संज्ञा दी जाती है।
- पारिभाषिक शब्द निर्माण में समान पर्याय मिलना कठिन होने के कारण सिद्धांत को अपनाकर पर्याय बनाए जाते हैं।
- पं. सुंदरलाल पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत के समर्थक हैं।
- पारिभाषिक शब्दों का ध्वनि की दृष्टि से आवश्यक है।

III. सुमेल कीजिए

1. Fixed Capital (अ) चल पूँजी
2. Floating Capital (आ) पूँजीकृत
3. Reserved Capital (इ) पूँजीकरण
4. Capitalization (ई) अचल पूँजी
5. Capitalized (उ) सुरक्षित पूँजी

10.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य : दिलीप सिंह, ऋषभदेव शर्मा (सं)
2. अनुवाद की व्यापक संकलन : दिलीप सिंह
3. अनुवाद विज्ञान : भोलानाथ तिवारी
4. अनुवाद विज्ञान : राजमणि शर्मा
5. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

इकाई 11 : मानविकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ : मानविकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

11.3.1 मानविकी का क्षेत्र

11.3.2 मानविकी पाठ का अनुवाद

11.3.3 समाजशास्त्र पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

11.3.4 राजनीतिशास्त्र पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

11.4 पाठ सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! मानविकी अकादमिक विषय है। इसमें मानव समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें मनुष्य द्वारा पूछे गए मूलभूत प्रश्न भी शामिल होते हैं। वस्तुतः इस शास्त्र के अंतर्गत विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक या काल्पनिक विधियों का प्रयोग करके मानवीय स्थिति का अध्ययन किया जाता है। मानविकी में दर्शन, धर्म, भाषाविज्ञान, विदेशी भाषाएँ, इतिहास, भाषा-कला (साहित्य, लेखन, वकृत्व, बयानबाजी, कविता आदि), प्रदर्शनकला (थिएटर, संगीत, नृत्य आदि) और दृश्य कला (पेंटिंग, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, फ़िल्म निर्माण आदि) का अध्ययन शामिल है। इस इकाई में हम प्रमुख रूप से समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के पाठ के अनुवाद के संबंध में चर्चा करेंगे।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- मानविकी के संबंध में सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे।
- मानविकी के क्षेत्र के बारे में जान सकेंगे।
- मानविकी के अध्ययन के उद्देश्य से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।

- समाजशास्त्रीय पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं व उनके समाधान से अवगत हो सकेंगे।
- राजनीतिशास्त्रीय पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं व उनके समाधान से परिचित हो सकेंगे।

11.3 मूल पाठ : मानविकी पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

प्रिय छात्रों! मानविकी पाठ से अभिप्राय उन ज्ञानशाखाओं से है जिनका संबंध मानव विचार और संस्कृति से है। जैसे साहित्य, दर्शन और कला। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य व्यावसायिक कौशल के बजाय सामान्य ज्ञान और बौद्धिक कौशल प्रदान करना है। यह कहा जा सकता है कि मानविकी के माध्यम से हम इस मूलभूत प्रश्न पर विचार करते हैं कि मानव होने का क्या अर्थ है। मानविकीशास्त्र अकसर इस तरह के प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए सुराग तो दे देती है, लेकिन उत्तर कभी पूरा नहीं करती। एक तरह से संकेत मात्र करती है। मानविकी शास्त्र यह बताता है कि कैसे लोगों ने एक ऐसी दुनिया की नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक समझ बनाने की कोशिश की है जिसमें तर्कहीनता, निराशा, अकेलापन और मृत्यु जन्म, दोस्ती, आशा और अन्य कारण के समान ही विशिष्ट हो जाते हैं। कहने का अभिप्राय है कि अकेले ज्ञान और कौशल मानव को सुखी और सम्मानजनक जीवन की ओर नहीं ले जा सकते। उच्च नैतिक मानकों और मूल्यों को वस्तुनिष्ठ सत्य की खोजों से ऊपर रखने का कार्य करता है मानविकीशास्त्र। इसके अंतर्गत मनुष्य की स्थिति, मूल्य और अर्थपूर्ण जीवन सम्मिलित होते हैं। तो आइए, अब हम इस शास्त्र के क्षेत्र विस्तार पर विचार करेंगे।

बोध प्रश्न

- मानविकी से क्या अभिप्राय है?
- मानविकीशास्त्र क्या करता है?

11.3.1 मानविकी का क्षेत्र

मानविकी में मानव जगत और समाज का आलोचनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। सामान्य रूप से इस क्षेत्र में सभी भाषाएँ, इतिहास और दर्शन जैसे लोकप्रिय विषयों को शामिल किया जाता है। ये वे ज्ञान शाखाएँ हैं जो मनुष्य और उसकी संस्कृति से संबंधित हैं। Humanities मानविकी का अंग्रेजी पर्याय है। वस्तुतः मानविकी अकादमिक अनुशासन है। इस शास्त्र में मानव समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें मनुष्यों द्वारा पूछे गए कुछ मूलभूत प्रश्न भी शामिल होते हैं। पुनर्जागरण के दौरान मानविकी शब्द का प्रयोग शास्त्रीय साहित्य और भाषा के अध्ययन के लिए किया गया था। मानविकी का अध्ययन पहले विश्वविद्यालयों में धर्मनिरपेक्ष पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था; लेकिन आज, मानविकी को प्राकृतिक विज्ञान, गणित और व्यावहारिक विज्ञान अर्थात् प्रशिक्षण के बाहर अध्ययन के किसी भी क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस शास्त्र में ऐसी

विधियों का उपयोग किया जाता है जो मुख्य रूप से आलोचनात्मक, काल्पनिक या व्याख्यात्मक होती हैं और जिनमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तत्व होते हैं।

आओ! यह कहा जा चुका है कि मानविकीशास्त्र में दर्शन, धर्म, विदेशी भाषाएँ, इतिहास, मनोविज्ञान, भाषा-कला (साहित्य, लेखन, वक्तृत्व, भाषण, कविता आदि), प्रदर्शन कला (थ्रिएटर, संगीत, नृत्य आदि) और दृश्य कला (पेंटिंग) मूर्तिकला, फोटोग्राफी, फिल्म निर्माण आदि का अध्ययन शामिल है। अब हम इनमें से कुछ शाखाओं की चर्चा करेंगे।



दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र का आशय है युक्तिपरक तत्व ज्ञान प्राप्त करना। यह ज्ञान प्रेम से युक्त ज्ञान है। प्रायः मनुष्य जिंदगी में अनेक प्रश्नों व समस्याओं से जूझता रहता है। कभी-कभी तो अवसाद के समय में वह चिंतन-मनन करने लगता है कि वह कौन है? वह इस संसार में जन्म क्यों लिया? उसके जीवन का क्या लक्ष्य है? उसे किस प्रकार समाज में जीना चाहिए? समाज क्या है? जीवन क्या है? भगवान कौन हैं? इस संसार की सृष्टिकर्ता कौन हैं? मनुष्य निरंतर कर्म, आत्मा, नियति, जीव, परमात्मा, जन्म, मृत्यु, मोक्ष, पंचभूत आदि के बारे में सोचता रहता है, लेकिन इन प्रश्नों का कोई निश्चित समाधान नहीं मिलेगा। हर मनुष्य के लिए इन प्रश्नों का समाधान अलग-अलग ही होगा। ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका समाधान तत्वचिंतन के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इनका तात्त्विक विवेचन दर्शनशास्त्र में किया जाता है।

दर्शन का अर्थ यहाँ किसी चीज को देखना या अवलोकन करना नहीं, अपितु इसका उद्देश्य है यह शिक्षा देना इस संसार में मानव जन्म लेने के बाद वह किस प्रकार से नियंत्रित और

संयमित रूप से दूर-दृष्टि, भविष्य दृष्टि तथा अंतर्दृष्टि के साथ जीवन यापन कर सकता है। इस संसार में ऐसा कोई जीव नहीं है जो अपार सुखों का अनुभव कर रहा हो, दुख के बारे में जानता ही नहीं हो। मनुष्य का मन एक तिलिस्मी खोह है, जिसमें अनेक रहस्य छिपे हुए रहते हैं। उसे समझने के लिए जितनी कोशिशें की जाती हैं, उतना ही उलझ जाते हैं। मानव मन दुखों का खान है। इसी वजह से सुख-शांति भंग हो जाते हैं। दर्शनशास्त्र इसका विवेचन करता है और इनके पीछे निहित कारणों पर प्रकाश डालता है। दर्शन में आशा का संदेश निहित है। ईसा मसीह हो या हजरत मुहम्मद, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, कंफ्यूसियस हो या स्वामी विवेकानंद, गुरु नानक, अरविंद, बुद्ध आदि महान चिंतकों व दार्शनिकों ने दर्शनशास्त्र के अलग-अलग पक्षों पर विचार करके कुछ सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। ये सिद्धांत संयम के साथ जीने के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

दर्शनशास्त्र के विषयों को अनुवाद करते समय अनेक तरह की समस्याएँ आना स्वाभाविक हैं। यह इसलिए होता है कि दर्शनशास्त्र के विचारों में रहस्यमयता, गूढ़ता तथा जटिलता अधिक होती है।

- मानविकीशास्त्र में किन पहलुओं का अध्ययन किया जाता है?
- दर्शन शास्त्र का उद्देश्य क्या है?

इतिहास और समाजशास्त्र

इतिहास और समाजशास्त्र के अनुवाद में समस्या सांस्कृतिक शब्दावली के अनुवाद करते समय आती है। हर संस्कृति अपने में विशिष्ट होती है। उन विशेषताओं के कारण उस संस्कृति की भाषा में कुछ विशिष्ट शब्द और अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ऐसे शब्दों और अभिव्यक्तियों का अनुवाद करते समय समस्या होना स्वाभाविक है। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयों का अनुवाद करते समय अनुवादक को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान मन तथा उसकी प्रक्रियाओं का अध्ययन है। हमारी मानसिक प्रक्रियाएँ व्यवहार के रूप में प्रकट होती हैं। इसलिए मनोविज्ञान को व्यवहार का अध्ययन भी कहा जा सकता है। मनोविज्ञान संबंधी सामग्री का अनुवाद करते समय तथ्यों की प्रामाणिकता, शब्दावली, ग्रंथों के शीर्षक आदि का विशेष ध्यान देना आवश्यक है जिन्हें निम्नलिखित शीर्षकों में देखा जा सकता है -

(i) **भाषायी सामंजस्य** : मनोविज्ञान के क्षेत्र में भाषायी सामंजस्य का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मनोवैज्ञानिक शब्दों का अनुवाद करते समय यथासंभव मूल विषय के निकट होना चाहिए तथा सटीक पारिभाषिक शब्दों का चयन करना चाहिए।

(ii) **विषय का सामंजस्य** : इस क्षेत्र में विषय का सामंजस्य होना भी आवश्यक है। यदि इस स्तर पर कोई त्रुटि हुई तो, अर्थ का अनर्थ होने की संभावना है। उदाहरण के लिए मनोविज्ञान के क्षेत्र

में चेतन और अवचेतन के लिए क्रमशः consciousness और unconsciousness का प्रयोग किया जाता है, न कि सजीवता और निर्जीवता। साहित्यिक स्तर पर सजीवता और निर्जीवता का प्रयोग किया जा सकता है, पर मनोविज्ञान के संदर्भ में यह नितांत गलत है।

बोध प्रश्न

- मनोवैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद करते समय किन-किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए?

11.3.2 मानविकी पाठ का अनुवाद

आइए! हम मानविकी पाठ के अनुवाद से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे।

दर्शनशास्त्र विषयक पाठ के अनुवाद से संबंधित समस्याएँ

दर्शनशास्त्र के विषयों का अंग्रेजी से हिंदी अथवा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करते समय कुछ विशिष्ट तरह की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, क्योंकि दर्शनशास्त्र के विचारों में गूढ़ता तथा जटिलता अधिक है। दर्शनशास्त्र के पाठ का अनुवाद ही नहीं, अपितु व्याख्या में भी मतभेद होने के कारण समस्या होती है। इसके संबंध में नगेंद्र का मत उल्लेखनीय है। उनके अनुसार दर्शनशास्त्र जैसे विषयों में विचारों की विलक्षणता होने के कारण शब्दानुवाद संभव न होने पर भी भावानुवाद का सहारा लिया जा सकता है।

दर्शनशास्त्र के अनुवाद करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है -

1. **तथ्यों की प्रामाणिकता** : अनुवादक को दर्शनशास्त्र के किसी पुस्तक, अध्याय अथवा गद्यांश का अनुवाद करते समय उन तथ्यों की प्रामाणिकता की ओर ध्यान देना आवश्यक है। प्रमुख रूप से संस्कृति, धर्म और दर्शन से संबद्ध सामग्री। उदाहरण के लिए - Greek Philosophy is second to none. यदि अनुवादक सतही ज्ञान रखता हो तो इसका अनुवाद 'दर्शनशास्त्र किसी से पीछे नहीं है' कर सकता है, जो गलत है। इसका सही और सटीक अनुवाद होगा 'दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में यूनान का कोई मुकाबला नहीं।'
2. **शीर्षक** : दर्शनशास्त्र से संबंधित विभिन्न ग्रंथों एवं पुस्तकों का अनुवाद करते समय अनुवादक को उनके शीर्षकों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी अंग्रेजी के दो-दो अलग-अलग शब्दों का हिंदी अनुवाद में एक ही शब्द होता है। अतः अनुवाद को इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि शब्दों की आवृत्ति न हो। उदाहरण के लिए - एडवर्ड गिब्बन की पुस्तक 'Decline and fall of Roman Empire' को लेकर अनुवादक के सामने 'Decline' और 'fall' शब्दों के संदर्भ में समस्या आना स्वाभाविक है। इन दोनों ही शब्दों के लिए हिंदी में अर्थ है - अवनति, ह्रास, पतन, गिरावट, विनाश आदि। इसलिए विशेषण शब्दों की पुनरावृत्ति न करते हुए इस शीर्षक का अनुवाद 'रोमन साम्राज्य का पतन' सटीक

होगा। कुछ और उदाहरण हैं - The Poverty of Philosophy (Karl Marx) - 'दर्शन दरिद्रता' (कार्ल मार्क्स), The Art of Living (Epictetus) - 'जीवन कला' (ऐपिकटीस)

3. शब्दावली का चयन : दर्शनशास्त्र में तीन प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है - पारिभाषिक, तकनीकी और सामान्य शब्द। पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दों के अनुवाद करते समय समस्या उत्पन्न होती है। संदर्भ के अनुसार सटीक शब्दों का चयन करना अनुवादक के आवश्यक है। उदाहरण के लिए दर्शनशास्त्र से संबंधित कुछ शब्द -

तत्त्वमीमांसा या पराभौतिकी :-

दर्शनशास्त्र की वह शाखा है, जो वास्तविकता के सिद्धांत एवं यथार्थ व स्वत्व/सत्ता की मूलभुत-मौलिक प्रकृति, अस्तित्व, अस्मिता, परिवर्तन, दिक् और समय, कार्य-कारणता, अनिवार्यता तथा संभावना के प्रथम (आद्य) सिद्धांतों (मूलनियम) का अध्ययन करती है। इसमें चेतना की प्रकृति और मन और पदार्थ के बीच संबंध, द्रव्य और गुण के बीच और क्षमता तथा वास्तविकता के बीच संबंध के बारे में प्रश्न शामिल हैं। (Metaphysics : branch of philosophy that examines the basic structure of reality. It is often characterized as first philosophy.)

ज्ञानमीमांसा :-

दर्शनशास्त्र की वह शाखा है जो ज्ञान का अध्ययन करती है। ज्ञानमीमांसा ज्ञान के कथित स्रोतों की जाँच करते हैं, जिसमें अवधारणात्मक अनुभव, तर्कबुद्धि, स्मृति और साक्ष्य शामिल हैं। वे सत्य, विश्वास, प्रमाणिकता और तर्कसंगतता के स्वभाव के बारे में प्रश्नों की भी जाँच करते हैं। (Epistemology : is the branch of philosophy that studies knowledge. It is also known as theory of knowledge and aims to understand what knowledge is, how it arises, what its limits are, and what value it has. It further examines the nature of truth, belief, justification, and rationality.)

सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ : इनसे संबंधित विषयों अथवा प्रतीकों का विशेष ध्यान देना आवश्यक है। पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ में प्रतीकों का अलग-अलग अर्थ होना स्वाभाविक है। उद्धरण के लिए पाश्चात्य संदर्भ में उल्लू विवेक का प्रतीक है, जबकि भारतीय परिप्रेक्ष्य में मूर्ख का।

बोध प्रश्न

- दर्शनशास्त्र से संबंधित पाठ का अनुवाद करते समय किन विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है?

मनोवैज्ञानिक पाठ के अनुवाद से संबंधित समस्याएँ

मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की विशिष्टता यह है कि उसमें जो प्रचलित तकनीकी शब्द और अभिव्यक्तियाँ हैं उन्हीं का प्रयोग किया जाता है। अतः अनुवादक के लिए यह अनिवार्य है कि वह इस विशिष्ट भाषा-प्रयोग की जानकारी रखता हो, अन्यथा उसके लिए इसे समझना दुष्कर हो जाएगा। “अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद भारतीय भाषा या हिंदी में करना बाल्कनीय है क्योंकि अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ सामान्य भारतीय भाषा भाषियों के लिए पारदर्शी नहीं होते। यह भी कहा जा सकता है कि उनमें पारदर्शिता का अभाव रहता है। किंतु हिंदी में गढ़े जाने वाले शब्दों का पारदर्शी होना उनकी संप्रेषणीयता के लिए आवश्यक है। इस कारण पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करते समय संस्कृत का सहारा लेना उपयुक्त है, क्योंकि एक तो संस्कृत की शब्दावली प्रजनन शक्ति से संपन्न है तथा दूसरी ओर विभिन्न भारतीय भाषाओं में संस्कृत की बड़ी सीमा तक उभयनिष्ठता के कारण परस्पर बोधगम्यता विद्यमान है। संस्कृत धारुओं में उचित उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर हजारों पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है।” (गुरुमकोंडा नीरजा, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख, पृ.121)। उदाहरण के लिए -

Mind - मन, मानस

Conscious - चेतन

Subconscious - अवचेतन, अर्धचेतन

Unconscious - अचेतन

Ego - अहं

Complex - कुंठा, ग्रंथि, मनोग्रंथि

Libido - कामवृत्ति

Eros - जीवनवृत्ति

Thenetos - मृत्युवृत्ति

Histeria - मनोरोग

Electra - पितृरति

Oedipus - मातृरति

इस प्रकार तकनीकी क्षेत्र होने के कारण मनोवैज्ञानिक पाठ का अनुवाद करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों के ज्ञान की विशेष अपेक्षा होती है। इन पाठों का अनुवाद यथासंभव पाठधर्मी होना श्रेयस्कर है।

बोध प्रश्न

- मनोवैज्ञानिक पाठ का अनुवाद किस प्रकार होना चाहिए?

11.3.3 समाजशास्त्र पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

छात्रो! अब तक आपने मानविकी पाठ के अनुवाद से संबंधित जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब हम थोड़ी सी चर्चा समाजशास्त्र के पाठ के अनुवाद की समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा करेंगे।

समाजशास्त्र समाज का वह विज्ञान है जिसमें मानव समाज के विभिन्न स्वरूप, संरचना व प्रक्रियाओं का क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र में सामाजिक घटनाओं का अध्ययन व मानवीय संबंधों की जटिलता के अध्ययन का विश्लेषण किया जाता है। वस्तुतः सामाजिक संबंध तीन प्रकार के हो सकते हैं - (1) व्यक्ति तथा व्यक्ति के बीच, (2) व्यक्ति तथा समूह के बीच और (3) समूह और दूसरे समूह के बीच। व्यक्ति और व्यक्ति के बीच संबंध रिश्तेनातों को जन्म देता है तो व्यक्ति और समूह के बीच के संबंध अंतर्गत अध्यापक और छात्रों के समूह को अंकित किया जा सकता है। तीसरी श्रेणी के अंतर्गत क्रिकेट के दो टीम अथवा दो राजनैतिक दलों को लिया जा सकता है। समाजशास्त्रीय पाठ के कुछ उदाहरण देखेंगे -

स्रोत भाषा पाठ : महात्मा गांधी ने हमें बहुत-सी बातें सिखलाई हैं। सबसे बड़ी बात उन्होंने यह बताई कि साधन ही साध्य होता है। दूषित साधन और खराब रास्ते हमें कभी अच्छे उद्देश्य तक नहीं पहुँचा सकते। अच्छे उद्देश्य या साध्य के लिए अच्छे या पवित्र साधन चाहिए। हमारे देश में जो घटनाएँ हुई हैं उनसे इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि केवल नेक और ऊँचे साधनों द्वारा ही हम अच्छे यानी 'समाजवादी' समाज के लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।

लक्ष्य भाषा पाठ : Mahatma Gandhi has taught us many things. The greatest thing he said was that the means are the end. Corrupt means and bad paths can never lead us to a good goal. For a good purpose or fair ends, good or fair means are required. From the events that have taken place in our country, we can conclude that only through noble means can we reach the goal of a good society i.e. 'socialist society'.

विश्लेषण : स्रोत पाठ में प्रयुक्त शब्द साधन के लिए लक्ष्य पाठ में means और साध्य शब्द के लिए end का प्रयोग किया गया है। अनूदित पाठ मूल स्रोत पाठ के निकट है। अनुवाद में भाषा

की प्रकृति का यथासंभव ध्यान रखा गया है। यह तभी संभव होगा जब अनुवादक को भाषा ज्ञान के साथ-साथ विषय का ज्ञान भी हो। अन्यथा अनुवाद करते समय भ्रामक स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। सामान्य रूप से यदि विषय का ज्ञान न हो तो साधन के लिए resource तथा साध्य के लिए provable, workable अथवा practicable भी किया जा सकता है जो गलत है।

सोत भाषा पाठ : Culture gives us code of conduct - the proper, acceptable ways of doing things. Human societies would be chaotic if they didn't have cultures that allow people to live together under the same set of general rules. Culture can also sometimes lead to tragedy.

लक्ष्य भाषा पाठ : संस्कृति हमें आचार संहिता प्रदान करती है - जो काम करने के उचित, स्वीकार्य तरीके हैं। यदि मानव समाज में ऐसी संस्कृतियाँ न हों जो लोगों को सामान्य नियमों के तहत एक साथ रहने की अनुमति देती हों, तो मानव समाज अराजक हो जाएँगे। संस्कृति कभी-कभी त्रासदी का कारण भी बन सकती है।

विश्लेषण : अनूदित पाठ में लक्ष्य भाषा की प्रकृति को पूर्ण रूप से ध्यान में रखा गया है। लक्ष्य पाठ बोधगम्य है।

छात्रो! समाजशास्त्री पाठ में नाते-रिश्ते की शब्दावली का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसका सीधा संबंध उस समाज या संस्कृति की विशिष्ट प्रकृति पर निर्भर रहता है। भारतीय भाषा समाज में नाते-रिश्ते की शब्दावली का व्यापक रूप विद्यमान है, जबकि अंग्रेजी में इसका अभाव है। अतः अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष रिश्ते-नाते की शब्दावली के स्तर पर समस्या होना स्वाभाविक है। रक्त संबंध, वैवाहिक संबंध तथा अधिकार एवं उत्तराधिकार के आधार पर रिश्ते-नाते की शब्दावली का वर्गीकरण किया जाता है। उदाहरण के लिए हिंदी भाषा समाज में नानी, दादी दो अलग-अलग रिश्तों को दर्शने वाले शब्द हैं। नानी - माँ की माँ हैं और पिता की माँ दादी हैं। इन दोनों ही रिश्तों के लिए अंग्रेजी में Grandmother एक ही शब्द है। इसी प्रकार मामा, चाचा, ताऊ, मौसा, फूफा, मौसी, ताई, बुआ जैसे रिश्ते भारतीय समाज में विद्यमान हैं। इन सब के लिए अंग्रेजी में एक ही शब्द है uncle। अतः इस तरह के रिश्ते-नाते शब्दों का अनुवाद करते समय प्रायः अनुवादक mother's mother, father's mother, mother's brother, father's brother, father's father, father's sister, mother's father, mother's sister जैसे प्रयोग करते हैं।

प्रायः भाषाओं में अनेक ऐसे शब्द पाए जाते हैं जो अपने मूल अर्थ से भिन्न अर्थ में समाज में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए 'मामू' शब्द रिश्ते-नाते की शब्दावली में माँ के भाई के लिए प्रयोग होता है। जबकि मुंबईया हिंदी में या कहे बोलचाल की हिंदी में यह शब्द पुलिस वालों के लिए प्रयुक्त है। इसी प्रकार समुराल जेल के अर्थ में प्रयुक्त है। हफ्ता, सुपारी आदि शब्द समाज में अपने कोषीय अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। अतः अनुवादक को समाजभाषिक परिप्रेक्ष्य को समझना अनिवार्य है।

बोध प्रश्न

- नीचे दिए गए स्रोत पाठ का लक्ष्य भाषा पाठ में अंतरित कीजिए -

wealth of the countryside was drained away through the revenue collection of machinery, making economic viability of farming so precarious that the farmer could not withstand failure of rain and their natural disasters.

भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के राष्ट्रवादी विश्लेषण का प्रमुख हिस्सा सरकार की सेना, पुलिस तथा अन्य विभागों में होने वाले खर्च की आलोचना है। यह खर्च इतना अधिक था कि विकास में लगने वाले पूँजीनिवेश को नकार दिया गया। उदाहरण के लिए सिंचाई कार्यों में इतने कम खर्च का प्रावधान था जिसे ब्रिटिश इंडिया आर्मी और रेलवे के उदार खर्च को सामने रखकर साफ-साफ समझा जा सकता है।

11.3.4 राजनीति पाठ का अनुवाद : समस्या व समाधान

छात्रो! अब हम राजनीति पाठ के अनुवाद से संबंधित समस्याओं को देखेंगे। राजनीति शास्त्र एक स्वतंत्र शास्त्र है। नगर-राज्यों की स्थिति एवं राजनैतिक गतिविधियों से संबंधित ज्ञान को राजनीति विज्ञान अथवा राजनीति शास्त्र कहा जा सकता है। कालांतर में इसका क्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक हो चुका है। सदा ही राजनीति सामाजिक जीवन में निर्णायक भूमिका निभाई है। यह शास्त्र वस्तुतः समता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे राजनैतिक विचारों पर बल देता है। साथ ही स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। मानव जीवन के राजनैतिक विचारों को प्रभावित करने में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक आदि तत्व भी महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। राजनीति विज्ञान का अध्ययन अन्य सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के बिना अधूरा माना जाता है। आज की लोकतांत्रिक पद्धति में चुनाव, राजनैतिक घटनाओं आदि को मानव व्यवहार प्रभावित करता है। अतः राजनैतिक व्यवहार का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। इस राजनैतिक शास्त्र के ज्ञान से मानव अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के बारे में जान सकता है। अतः एक भाषा में निहित राजनैतिक पाठ का अनुवाद करना आवश्यक है। राजनैतिक पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक को सतर्क रहना अनिवार्य है। भाषा ज्ञान

के साथ-साथ विषय का ज्ञान एवं राजनीति से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना नितांत अनिवार्य है। आइए! अब हम कुछ राजनैतिक पाठ के अनुवाद और उससे संबंधित समस्याओं का अध्ययन करेंगे।

स्रोत भाषा पाठ : As a leader of NAM, India's response to the ongoing cold war was two-fold. At one level, it took particular care in staying away from the two alliances. Second, it raised its voice against the newly decolonized countries becoming part of these alliances.

लक्ष्य भाषा पाठ : गुटनिरपेक्ष आंदोलन नेता के रूप में शीट युद्ध के दौर में भारत ने दो स्तरों पर अपनी भूमिका निभाई। एक स्तर पर, भारत ने सजग और सचेत रूप से अपने को दोनों महाशक्तियों की खेमेबंदी से अलग रखा। दूसरे, भारत ने उपनिवेशों के चंगुल से मुक्त हुए नव-स्वतंत्र देशों के महाशक्तियों के खेमे में जाने का पुरजोर विरोध किया।

विश्लेषण : स्रोत पाठ में प्रयुक्त NAM Non-Align Movement का संक्षिप्तीकरण है। इसका हिंदी अनुवाद है गटनिरपेक्ष आंदोलन। इसी का प्रयोग लक्ष्य पाठ में किया गया है। 'At one level, it took particular care in staying away from the two alliances' का शाब्दिक अनुवाद होगा 'एक स्तर पर, उसने दोनों गठबंधनों से दूर रहने में विशेष सावधानी बरती' लेकिन लक्ष्य भाषा पाठ की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए 'एक स्तर पर, भारत ने सजग और सचेत रूप से अपने को दोनों महाशक्तियों की खेमेबंदी से अलग रखा' का प्रयोग किया गया है। इससे लक्ष्य भाषा पाठक को ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वे अनुवाद पढ़ रहे हैं। 'alliances' के लिए 'महाशक्तियों' का प्रयोग किया गया है।

स्रोत भाषा पाठ : लोकतंत्र शासन का एक ऐसा रूप है जिसमें शासकों का चुनाव लोग करते हैं।

लक्ष्य भाषा पाठ : Democracy is a form of Government in which the rulers are elected by the people.

विश्लेषण : भाषा की प्रकृति को पूर्ण रूप से अनुवाद में सुरक्षित रखा गया है।

संसदीय भाषा

राजनीति शास्त्र की शब्दावली पर ध्यान से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिशास्त्र की शब्दावली इतिहास, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का समन्वित रूप है। राजनीतिशास्त्र के संदर्भ में थोड़ी सी चर्चा संसदीय भाषा पर करेंगे। संसद में हर सत्र में बातचीत, बहस, वाद-विवाद और भाषणों के बीच कुछ ऐसे शब्द निकल कर आते हैं, जिन पर हँगामा भी मचता है और आपत्ति भी होती है। इसमें तरह-तरह के शब्द होते हैं, जो अपमानजनक हो सकते हैं और फब्ती करने

वाले भी और भावनाओं को आहृत करने वाले भी। कुछ शब्द संसद की बोलचाल में इस्तेमाल नहीं होते। इन्हें असंसदीय शब्द माना जाता है। संसद में सांसदों के लिए बनी आचार संहिता कहती है कि हम ऐसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं कर सकते, जो अशोभनीय हों।

जुमलाजीवी, खून से खेती, गद्दार जैसे बहुत शब्दों को बहस के दौरान या सदन में इस्तेमाल से प्रतिबंधित कर दिया गया। रिश्वत, ब्लैकमेल, रिश्वतखोर, चोर, डाकू, लानत, धोखा, नीच, कपटी और डार्लिंग जैसे शब्द भी असंसदीय शब्द माने जाते हैं। एक संसद सदस्य को ठग, कटूरपंथी, चरमपंथी, भगोड़ा नहीं कहा जा सकता। किसी भी सदस्य या मंत्री पर जान-बूझकर तथ्यों को छिपाने, भ्रमित करने या जानबूझकर भ्रमित होने का आरोप नहीं लगाया जा सकता। किसी भी अनपढ़ संसद सदस्य को 'अंगूठा छाप' नहीं कहा जा सकता। शर्मिंदा, दुर्व्यवहार, विश्वासघात, भ्रष्ट, नाटक, पाखंड और अक्षम भी लोकसभा और राज्यसभा दोनों में असंसदीय माने जा रहे हैं। स्कंबैग (Scumbag), शिट (Shit), बैड - जैसे संसद सदस्य बुरा आदमी हैं) और बैंडिकूट (Bandicoot), उल्टा चोर कोतवाल को डांटे, उच्छ्व, अहंकार, कांव-कांव करना, काला दिन, गुंडागर्दी, गुलछर्दा, चौकड़ी, तड़ीपार, दोहरा चरित्र, दादागिरी, तलवे चाटना, अनर्गल, अनपढ़, अंट-शंट, गुल खिलना, गुंडों की सरकार, चोर-चोर मौसेरे भाई जैसी उक्तियों का प्रयोग संसद में वर्जित हैं।

छात्रो! आप आन ही चुके हैं कि कुछ शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग संसद में नहीं किया जा सकता है। संसदीय भाषण का नमूना देखेंगे।

प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू का खाद्य समस्या पर दिया गया भाषण (18 नवंबर, 1952)

स्रोत भाषा पाठ : श्रीमान्, माननीय सदस्यों को इस अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अधिकाधिक समय मिल जाए, इस कारण मैं इस विवाद में बाधा देने में हिचकिचा रहा था। मेरे सहयोगी खाद्य मंत्री बाद में विवाद का पूरा-पूरा उत्तर देंगे। XXX यह खाद्य समस्या पिछले कुछ वर्षों से हमारी एक अत्यंत कठिन समस्या रहे हैं, और जैसा सदन को विदित है, खाद्य मंत्रालय को, वह चाहे किसी के भी अधीन रहा हो, बहुत भारी झंझटें झेलनी पड़ी हैं।

लक्ष्य भाषा पाठ : Sir, I have hesitated to intervene in this debate because I wanted hon. Members to have as much time as possible to discuss this most important matter. My colleague the food minister will reply to the debate fully later on. XXX This question of food has been one of our most difficult questions during the last few years, and I suppose the Food Ministry, whoever has been the incumbent of it, has had to face very difficult problems, as the House knows.

विश्लेषण : मूलबद्ध अनुवाद। स्रोत पाठ में प्रयुक्त 'श्रीमान्' संबोधन को लक्ष्य पाठ में भाषा की प्रकृति के अनुरूप 'Sir' का प्रयोग किया गया है। लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप ही अनुवाद किया गया है। विवाद के लिए लक्ष्य पाठ में 'debate' शब्द का प्रयोग किया गया है। यदि अनुवादक राजनैतिक भाषिक प्रयुक्ति से परिचित नहीं है, तो वह सामान्य रूप से इसके लिए dispute, controversy, brawl या फिर contention का प्रयोग कर सकता है, जो संदर्भ के अनुसार अनुचित हैं। इससे यह स्पष्ट है कि राजनैतिकशास्त्र के पाठ के अनुवाद करते समय सिर भाषा का ज्ञान होने से काफी नहीं है, अपितु अनुवादक को विषय का समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। साथ ही उस विषय से संबंधित भाषिक उक्तियों का ज्ञान भी। इतना ही नहीं राजनैतिक क्षेत्र में वर्जित शब्दों के बारे में जानकारी होना नितांत आवश्यक है।

राजनीति पाठ की विशेष अभिव्यक्तियाँ

- बयान को लेकर चुनाव आयोग ने लगाई फटकार (Election Commission reprimanded for the statement)
- बल का प्रयोग (usage of force)
- लोकसभा चुनाव में गरमा-गर्मी (aggressive Lok Sabha elections)
- लोकसभा सीटों पर त्रिकोणीय चुनावी लड़ाई (The three-cornered poll/ Electoral battle for Lok Sabha seats)
- चुनावी महासमर (Electoral battle)
- कुर्सी के लिए जीना-मारना (Anything for the Party Chair)
- चूहे-बिल्ली का खेल (Combat between opposition and ruling party)

बोध प्रश्न

- राजनैतिक पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक को किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

11.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! अब तक आपने मानविकी पाठ के अनुवाद की समस्याओं का अध्ययन किया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हो ही चुका है कि मानव समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन मानविकी के अंतर्गत किया जाता है। यदि अनुवादक को भाषा एवं विषय का ज्ञान न हो तो वह अनुवाद के साथ न्याय नहीं कर सकता। मानविकी पाठ का क्षेत्र विस्तृत है। इसका अनुवाद करते समय अनुवादक को सतर्क रहना अनिवार्य है, क्योंकि अनुवाद में मात्र पर्यायों को रख देने से काम नहीं चलता। राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों के अनुवाद में अनुवादक को पूरी तरह से सावधान रहना पड़ता है। हर राष्ट्र, समाज तथा

वर्ग के कुछ निजी प्रतीक होते हैं और उनका अपना एक विशिष्ट संदर्भ सापेक्ष अर्थ होता है। अतः अनुवादक को सतही ज्ञान रखने से काम नहीं चलेगा, अपितु उसे गहन स्तर पर उतरकर अर्थ को समझकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप तथ्यों को रूपांतरित करना होगा। जब तक अनुवादक चीजों को आत्मसात नहीं करेगी, तब तक वह अनुवाद के साथ न्याय नहीं कर सकता। अन्यथा भ्रामक स्थितियाँ ही पैदा होंगी।

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान से संबंधित पाठों का अनुवाद करते समय अनुवादक को भाषा के साथ-साथ विषय और उस क्षेत्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना अनिवार्य है। सिर ज्ञान ही नहीं, बल्कि दक्षता और अधिकार होना अपेक्षित है।
2. हर राष्ट्र, समाज तथा वर्ग के कुछ निजी प्रतीक होते हैं और उनका अपना एक विशिष्ट संदर्भ सापेक्ष अर्थ होता है। अतः अनुवादक को सतही ज्ञान रखने से काम नहीं चलेगा, अपितु उसे गहन स्तर पर उतरकर अर्थ को समझकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप तथ्यों को रूपांतरित करना होगा।
3. दर्शनशास्त्र के पाठ का अनुवाद ही नहीं, अपितु व्याख्या में भी मतभेद होने के कारण समस्या होती है। अतः अनुवादक को तथ्यों की प्रामाणिकता, विभिन्न ग्रंथों एवं पुस्तकों के शीर्षकों पर ध्यान देने के साथ-साथ शब्दावली का चयन करते समय अत्यंत सावधानी भरतनी चाहिए।
4. मनोविज्ञान संबंधी सामग्री का अनुवाद करते समय तथ्यों की प्रामाणिकता, शब्दावली, ग्रंथों के शीर्षक आदि का विशेष ध्यान देना आवश्यक है, साथ ही भाषायी सामंजस्य और विषय का सामंजस्य भी आवश्यक है।
5. समाजशास्त्र के अनुवाद में समस्या सांस्कृतिक शब्दावली के अनुवाद करते समय आती है। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयों का अनुवाद करते समय अनुवादक को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए।

11.6 शब्द संपदा

- | | | |
|-----------------|---|-----------------------------------------------------------|
| 1. अचेतन | = | बेहोश, सुस, निर्जीव |
| 2. अर्धचेतन | = | पूरी तरह चैतन्य नहीं, अवचेतन |
| 3. चेतन | = | पूरी तरह होश में |
| 4. दर्शनशास्त्र | = | युक्तिपरक तत्व ज्ञान |
| 5. धर्मनिरपेक्ष | = | किसी धर्म की तरफदारी या पक्षपात न करना |
| 6. भावानुवाद | = | भावानुवाद में मूल के शब्द, वाक्यांश, वाक्य आदि पर ध्यान न |

	देकर भाव, अर्थ या विचार पर ध्यान दिया जाता है
7. शब्दानुवाद	स्रोत-भाषा के शब्द एवं शब्द क्रम को उसी प्रकार लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित करना

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- मानविकीशास्त्र का क्षेत्र निर्धारित करते हुए, दर्शन से संबंधित पाठ का अनुवाद करते समय किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं? प्रकाश डालिए।
- ‘राजनीतिशास्त्र की शब्दावली इतिहास, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र का समन्वित रूप है।’ इस कथन की पुष्टि उदाहरण देते हुए कीजिए।
- राजनीतिशास्त्र के संबंध में संसदीय भाषा के अनुवाद की समस्याओं पर अंग्रेजी-हिंदी के उदाहरण देते हुए विचार कीजिए।
- ‘तकनीकी क्षेत्र होने के कारण मनोवैज्ञानिक पाठ का अनुवाद करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों के ज्ञान की विशेष अपेक्षा होती है।’ अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद के संदर्भ में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

- इतिहास विषय की अनुवाद संबंधी प्रविधियों पर अंग्रेजी और हिंदी के संदर्भ में प्रकाश डालिए।
- मानविकी पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष किस तरह की समस्याएँ उत्पन्न होंगी? स्पष्ट कीजिए।
- समाजशास्त्री पाठ का अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं? स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

- दर्शनशास्त्र के विषयों का अनुवाद करते समय समस्याएँ क्यों आती हैं? ()
(अ) विषय की गूढ़ता (आ) तार्किकता (इ) पारिभाषिकता (ई) भाषा
- मनोविज्ञान संबंधी सामग्री का अनुवाद करते समय किस विषय पर ध्यान देना चाहिए?

()

(अ) पारिभाषिकता (आ) तार्किकता (इ) तथ्यों की प्रामाणिकता (ई) रहस्यमयता

3. किसी भी विषय का अनुवाद करते समय अनुवादक को किस बात पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए ? ()

(अ) पारिभाषिकता (आ) तार्किकता (इ) पारदर्शिता (ई) गूढ़ता

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. मनोवैज्ञानिक पाठों का अनुवाद यथासंभव होना श्रेयस्कर है।
2. दर्शनशास्त्र के विषयों में विचारों की विलक्षणता होने के कारण अनुवाद संभव न होने पर भी अनुवाद का सहारा लिया जा सकता है।
3. समाजशास्त्रीय पाठ के अनुवाद के लिए अनुवादक को परिप्रेक्ष्य को समझना अनिवार्य है।
4. ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयों का अनुवाद करते समय अनुवादक को से मुक्त होना चाहिए।

III. सुमेल कीजिए

- | | |
|------------------------|---------------------------|
| 1. मनोवैज्ञानिक पाठ | (अ) भावानुवाद |
| 2. दर्शनशास्त्र का पाठ | (आ) सामाजिक परिप्रेक्ष्य |
| 3. ऐतिहासिक पाठ | (इ) पाठधर्मी अनुवाद |
| 4. राजनैतिक पाठ | (ई) शाब्दिक अनुवाद |
| 5. समाजशास्त्रीय पाठ | (उ) तथ्यों की प्रामाणिकता |

11.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
2. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्णकुमार गोस्वामी
3. अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की व्यावहारिक परख : गुरुमकोंडा नीरजा
4. Dimensions of the Applied Linguistics : R.N.Srivastav & R.S.Gupta

इकाई -12 विधि पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 मूलपाठ : विधि पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

12.3.1 कार्यालयी अनुवाद और उसकी विशेषताएँ

12.3.2 विधि का अर्थ और परिभाषा

12.3.3 विधि पाठ का अर्थ

12.3.4 भारतीय संविधान और न्यायालयों की हिंदी

12.3.5 विधिपाठ का अनुवाद और उसकी समस्याएँ

12.4 पाठसार

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

12.6 शब्द संपदा

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

अनुवाद के कई क्षेत्र हैं। उन्हीं क्षेत्रों में एक प्रमुख क्षेत्र विधि है। विधि पाठ का अनुवाद भी किया जाता है। आज जबकि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य किया जा रहा है। अहिंदी प्रदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर भी बल दिया जा रहा है। इसमें विधि क्षेत्र भी काफी महत्वपूर्ण क्षेत्र है। काव्य, नाटक, कथा साहित्य के अनुवाद में तो थोड़ा बहुत इधर उधर होने पर चल जाता है लेकिन विधि क्षेत्र में यह थोड़ा बहुत काफी कुछ गलत कर और करवा सकता है। इसलिए विधि पाठ का अनुवाद करते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिए। यही वजह है कि विधि पाठ के अनुवाद की समस्याओं पर भी बात करना बहुत जरूरी होता है।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- कार्यालयी अनुवाद के विषय में संक्षेप में जान सकेंगे।
- कार्यालयी अनुवाद की विशेषताओं के विषय में बता पाएंगे।
- भारतीय संविधान और न्यायालयों की हिंदी के विषय में समझ सकेंगे।
- विधि का अर्थ बता सकेंगे।
- विधि की परिभाषा बता सकेंगे।
- विधि पाठ के तात्पर्य को समझ पाएंगे।
- विधि पाठ के अनुवाद पर बात कर सकेंगे।

- विधि पाठ के अनुवाद में आने वाली समस्याओं को समझ सकेंगे।

12.3 मूलपाठ : विधि पाठ के अनुवाद की समस्याएँ

प्रिय विद्यार्थियो ! अब हम विधि पाठ के अनुवाद को क्रमवार विभिन्न शीर्षकों और उपशीर्षकों के अंतर्गत समझने का प्रयास करेंगे-

12.3.1 कार्यालयी अनुवाद और उसकी विशेषताएँ

कार्यालय विभिन्न तरह के होते हैं। कुछ सरकारी और कुछ गैर सरकारी इत्यादि। कार्यालयों में अनुवाद का कार्य भी किया जाता है। इस तरह का अनुवाद क्योंकि कार्यालयों में कार्यालयों के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होता है इसलिए इसे कार्यालयी अनुवाद शब्द से अभिहित किया जाता है। इस विषय में भोलानाथ तिवारी लिखते हैं “कार्यालयी अनुवाद से आशय है, वह अनुवाद जो विभिन्न प्रकार के कार्यालयों में अंग्रेजी से हिंदी में किया जाता है।”

कार्यालयी अनुवाद में अलग-अलग प्रकार के प्रशासनिक कार्यालयों के अनुवाद शामिल हैं जैसे- बैंक से संबंधित अनुवाद, रेलवे से संबंधित अनुवाद, होटल से संबंधित अनुवाद, डाक से संबंधित अनुवाद, बीमा से संबंधित अनुवाद, न्यायालय से संबंधित अनुवाद (विधि क्षेत्र से संबंधित अनुवाद), विश्वविद्यालयों के अलग कार्यालयों में होने वाले अनुवाद, अलग अलग विभागों के सरकारी कार्यालय से संबंधित अनुवाद इत्यादि। आगे हम विधि पाठ के अनुवाद और उसकी समस्या पर पर तो बात अवश्य ही करेंगे।

बोध प्रश्न-

- कार्यालयी अनुवाद का क्या तात्पर्य है?
- कार्यालयी अनुवाद में किस किस तरह के कार्यालयों के अनुवाद शामिल किया जाता है?

जहां तक कार्यालयी अनुवाद की विशेषता का सवाल है तो इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- कार्यालयी अनुवाद करने के लिए प्राप्त सामग्री या पाठ मूलतः अभिधा प्रधान होती है। इसीलिए इसका अनुवाद करते समय अनुवाद में भी अभिधा प्रधान शब्दावली का इस्तेमाल होना चाहिए।
- कार्यालयी अनुवाद में प्रायः ये देखा गया है कि उसमें पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल होता है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य विषय है कि प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित अनुवाद हेतु पारिभाषिक शब्दों का अलग अलग इस्तेमाल होता है। उदाहरण के लिए बैंक और रेलवे के अनुवाद में अलग अलग पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल होता है। किसी न्यायालय से जुड़े कार्यालय में न्यायालय में प्रयोग में लाई जाने वाली शब्दावली दिखेगी।

3- कार्यालयी अनुवाद करते समय क्षेत्र विशेष को दृष्टिगत रखते हुए उसके अनुकूल शब्दावली या पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है और किया जाना भी चाहिए।

बोध प्रश्न-

- कार्यालयी अनुवाद की विशेषताएँ बताइए।

12.3.2 विधि का अर्थ और परिभाषा

‘विधि’ शब्द असल में विधाता से जुड़ा हुआ है। विधि का एक अर्थ लोग ईश्वर, या विधाता से भी लेते हैं। विधि का एक अर्थ तरीका भी है। जैसे किसी की मृत्यु हो जाने पर लोग कहते हैं यह तो विधि का विधान है। या दूसरा अर्थ लेते हुए कहा जाता है विवाह तो पूरे विधि-विधान से होना चाहिए। यहाँ विधि का जो अर्थ है वह कुछ अलग है। विधि एक नियम संहित होती है जो प्रायः लिखी हुई तथा दिशा निर्देशों के रूप में होती है। विधि के पर्यायवाची शब्दों में कानून, आईन, कायदा, विधान आदि प्रमुख हैं।

विभिन्न विद्वानों ने विधि (कानून) की परिभाषा इस प्रकार दी है-

1-आस्टिन – कानून संप्रभु की आज्ञा है।

2-वुडरो विलसन – कानून स्थिति, विचार तथा स्वभाव का वह अंश है जिसे सरकार की शक्ति लागू करती है।

3-डयूगवी- आधारभूत अर्थ में कानून आचरण के नियमों के उस समूह को कहते हैं जिसका पालन साधारण मनुष्य सामाजिक जीवन से प्राप्त लाभ या सुविधा के संरक्षण और संवर्धन के लिए करता है।

4-पाउंड- न्याय के प्रशासन में जनता तथा नियमित अदालतों द्वारा मान्यता प्राप्त लागू किए गए सिद्धांतों को कानून कहते हैं।

इस तरह से हम देखते हैं कि कानून असल में एक संहिता है। इसमें जीवन जीने का तरीका होता है। नियम का पालन न करने पर दंडित किए जाने का प्रावधान होता है।

बोधप्रश्न

- पाउंड की कानून की परिभाषा बताइए।

12.3.3 विधि पाठ का अर्थ

विधि पाठ को हम दो शब्दों के माध्यम से समझने का प्रयास करेंगे। यहाँ ‘विधि’ और ‘पाठ’ दो शब्द हैं। विधि का सीधा सा अर्थ है- ‘कानून’, ‘संहिता’ या ‘नियम’। हालांकि विधि के अन्य अर्थ भी होते हैं जैसे-ब्रह्म या ईश्वर, तरीका या प्रणाली इत्यादि लेकिन हम यहाँ विधि का तात्पर्य कानून से लेंगे।

यहाँ दूसरा शब्द ‘पाठ’ है। पाठ का अर्थ है ‘पढ़ने वाला विषय या पढ़ने की क्रिया या पढ़ाई’। पाठ वह सब कुछ है जिसे आप देखते हैं, व्याख्या करते हैं, और अर्थ देते हैं।

विधिपाठ का सीधा सा अर्थ है 'कानूनी या कानून से संबंधित लिखित प्रणाली। मुख्यतः यह शब्द न्यायशास्त्र तथा कानूनी प्रणाली से संबंधित है'।

यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि कानून से संबंधित कोई पाठ या कुछ पृष्ठ ही या कोई पुस्तक या किसी न्यायालय द्वारा दिया गया कोई निर्णय जो अंग्रेजी भाषा में है वह 'विधिपाठ' है। आगे हम किसी न्यायालय द्वारा अंग्रेजी में दिए गए निर्णय का हिंदी में अनुवाद करते समय क्या क्या समस्याएँ आती हैं उस पर विचार करेंगे-

बोध प्रश्न-

- विधि पाठ का अर्थ बताइए।

12.3.4 भारतीय संविधान और न्यायालयों की हिंदी

संविधान के अनुच्छेद 348 में कहा गया है कि उच्चतम न्यायालय (supreme court) और उच्च न्यायालय (high court) के विधेयकों (bill in a legislature) और अधिनियमों (act of legislation) में प्रयुक्त भाषा तब तक अंग्रेजी ही रहेगी, जब तक संसद विधि द्वारा कोई अन्य व्यवस्था करने का निर्णय न कर ले।

बोध प्रश्न-

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 348 में क्या कहा गया है?

शुरू में यह व्यवस्था थी कि अंग्रेजी का प्रयोग 1965 तक चलता रहे और बीच में हिंदी को विकसित रूप दे दिया जाय।

'राजभाषा अधिनियम 1963' पास किया गया। इस अधिनियम के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ के जिन कार्यों के लिए 26 जनवरी, 1965 से पहले हिंदी का प्रयोग किया जाता था, उनके लिए उस तारीख के बाद भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग किया जा सकता है। फिर 1967 में 'राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967', पास किया गया। इस 'संशोधन अधिनियम' के अनुसार यह व्यवस्था हुई कि 'हिंदी ही संघ की 'राजभाषा' होगी, किन्तु अंग्रेजी के इस्तेमाल की छूट तब तक बनी रहेगी, जब तक हिंदी को 'राजभाषा' के रूप में न अपनानेवाले सभी राज्यों के विधान मण्डल अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त करने के लिए संकल्प न पारित करें और उनके संकल्पों पर विचार करने के बाद संसद के दोनों सदन भी ऐसा न करें।' इस प्रकार सरकारी कामकाज में हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग करने की व्यवस्था हुई।

आज हिंदी भाषा का प्रयोग सामान्य, भाषा-शास्त्रीय तथा संवैधानिक इन तीन विभिन्न संदर्भों में हो रहा है तथा संविधान ने उसे केन्द्रीय राजभाषा, प्रादेशिक भाषा तथा सह राजभाषा के रूप में मान्यता दी है।

राष्ट्रपति ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (2) द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए 27 मई 1952 को आदेश जारी किया। यह 'राष्ट्रपति का आदेश, 1952' कहा जाता है। इसमें (1) राज्य के राज्यपालों (2) उच्चतम न्यायालय के न्यायधीशों तथा (3) उच्च न्यायालय के न्यायधीशों के नियुक्ति-अधिपत्रों के लिए अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूपों के साथ-साथ देवनागरी के अंकों का प्रयोग प्राधिकृत किया। अब हमें यह समझ लेना चाहिए कि राजभाषा के रूप के रूप में अंग्रेजी के साथ हिंदी के प्रयोग का नियम होने के कारण सरकारी कार्यालयों, संसद आदि में अंग्रेजी से हिंदी के अनुवाद पर बहुत काम किया जाता है। यही वजह है कि प्रशासनिक और कानूनी अनुवाद की काफी जरूरत पड़ती है। हमारी सरकार ने इस कार्य को भलीभांति करने के लिए कई संस्थाएँ/ विभाग बनाए हैं। ये पूरे देश में सरकारी कार्यालयों में हिंदी को प्रयोग में लाने हेतु प्रयास रत रहते हैं। इसमें प्रमुख रूप से हैं भारत सरकार का वैज्ञानिक एवं तकनीकी आयोग, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो इत्यादि। इनके अतिरिक्त विभिन्न विभाग संस्थाएँ पुस्तक एवं पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने का काम कर रही हैं।

बोध प्रश्न-

- हिंदी के प्रयोग के विषय में राष्ट्रपति के आदेश बताइए।

12.3.5 विधिपाठ का अनुवाद और उसकी समस्याएँ

विधि पाठ के अनुवाद में विभिन्न तरह की समस्याएँ आती हैं। आम बोलचाल की भाषा या साहित्यिक भाषा से अलग भाषा और शैली का प्रयोग विधि पाठ में होता है। विधि पाठ के अनुवाद में आने वाली मुख्य समस्याएँ इस प्रकार हैं-

(1) शब्द और पदक्रम के यथोचित अनुवाद का प्रयोग-

विधि पाठ के अनुवाद में अन्य तरह के पाठों के अनुवादों की अपेक्षा अधिक ध्यान देने की जरूरत होती है। अंग्रेजी के एक ही शब्द के हिंदी में कई अर्थ भी होते हैं। उनका यथोचित प्रयोग अनुवादक को करना चाहिए। जी. गोपीनाथन लिखते हैं 'कानून से संबंधित सामग्री के संदर्भ में हमेशा यह ध्यान रखना होता है कि उसमें शब्दावली एवं वाक्य विन्यास का ऐसा प्रयोग हो कि एक ही अर्थ निकल सके।' विधि पाठ में कहीं 'confidencial' (कॉन्फिडेंसियल) शब्द आया है तो हिंदी में इसके कई अर्थ हैं यथा- गोपनीय, अंतरंग, इसी तरह से 'interest' (इन्टरेस्ट) के लिए हिंदी में अभिरुचि या रुचि, हित, स्वार्थ, व्याज वृद्धि शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। अब किसी विधि पाठ में interest शब्द आया है तो वहाँ रुचि या अभिरुचि, स्वार्थ, व्याज वृद्धि शब्द का प्रयोग न करके 'हित' शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए। पड़ाई-लिखाई से संबंधित क्षेत्र के लिए रुचि या अभिरुचि शब्द का प्रयोग ठीक रहेगा। बैंक से संबंधित पाठ में 'व्याज' शब्द ज्यादा उचित होगा।

इसी तरह से स्टैम्प (stamp) शब्द को लीजिए। 'स्टैम्प' शब्द का बहुप्रचालित अर्थ है 'मुहर' या 'मोहर'। उदाहरण द्रष्टव्य है-

1-This copy of the document should be attested by a gazetted officer with his stamp.

इस दस्तावेज़ की प्रतिलिपि किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा, उसकी मुहर के साथ सत्यापित होनी चाहिए।

लेकिन आगे देखिए-

2-Please bring some revenue stamps from the post office। 'कृपया डाकघर से कुछ रसीदी टिकट ले आइए। इस वाक्य में स्टैम्प (stamp) का पर्याय 'टिकट' है, 'मुहर' नहीं।

बोध प्रश्न-

- स्टैम्प (stamp) और इंटेरेस्ट (interest) शब्द के अलग-अलग अर्थ में प्रयोग के बारे में बताइए।

अनुवाद तो कई क्षेत्रों में किया जाता है इसे कलात्मक अभिव्यक्ति भी कहा गया है लेकिन विज्ञान और तकनीकी, विधि, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि विषयों में अनुवाद की कलात्मकता जरूरी नहीं है। इस विषयों के पाठ का अनुवाद करते समय वस्तुनिष्ठता, तथ्यसंगति और प्रामाणिकता का विशेष महत्व होता है। इस तरह के अनुवाद में शब्दानुवाद किया जाता है। इसमें एक-एक शब्द का यथोचित अनुवाद आवश्यक होता है। अब जैसे किसी पाठ में collector (कलेक्टर) शब्द आया है। कलेक्टर के लिए जिलाधीश, समाहर्ता, जिलाधिकारी, जिलादंडाधिकारी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इनमें से जिलाधिकारी शब्द को अधिक उपयुक्त माना गया है। हमें कोई एक शब्द को रख लेना चाहिए जो उचित हो। कहीं-कहीं क्षेत्र विशेष या राज्य विशेष के आधार पर कलेक्टर के लिए अलग अलग शब्दों का प्रयोग भी चलता है। उदाहरण के लिए बिहार में 'समाहर्ता' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। अब हम कुछ अंग्रेजी के वाक्यों को आपके समक्ष रख रहे हैं। इनके साथ इनका हिंदी अनुवाद भी दिया गया है।

बोध प्रश्न-

- Collector (कलेक्टर) के लिए हिंदी में कौन-कौन से शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं?
- (1) In the absence of any rules past practice is the Law.
- नियमों के अभाव में पिछली परिपाटी कानून है।

(2) We agree as a very special case. This should not however, be quoted as a precedent.

विशेष मामला मानकर हम इसे सहमति देते हैं, किन्तु आगे उदाहरण के रूप में इसका उल्लेख न किया जाए।

इसी तरह से 'under process' का कोई यह अनुवाद करे 'प्रक्रिया के अंतर्गत' तो बात पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पा रही है। यह सही अनुवाद नहीं माना जाएगा। इसके लिए सही अनुवाद होगा 'कार्यवाही की जा रही है'। आपके समक्ष एक उदाहरण रख रहे हैं। यह उदाहरण अनुवाद विज्ञान, भोलानाथ तिवारी की पुस्तक से लिया गया है। 'एक हिंदी वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ने को मिला- Ram was sentenced to death for the cold blooded murder of his friend by justice K.V. Shukla. कहना न होगा कि पदक्रम की ग़ड़ब़ड़ी से इस वाक्य का एक अर्थ यह भी निकलता है कि न्यायाधीश ने हत्या की थी, यद्यपि मूल कथ्य ऐसा है नहीं।'

(2) शब्दों का निर्माण-

कानून के क्षेत्र में विभिन्न संकल्पनाओं को प्रकट करने के लिए उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर शब्द-निर्माण किए गए हैं। इनका सही प्रयोग मन किया जाना एक समस्या है। यहाँ कुछ इस तरह के शब्दों को दिया जा रहा है ताकि सही तरह से अनुवाद किया जा सके जैसे-

Law – विधि, By-law – उपविधि ('उप' उपसर्ग), Legal-विधिक ('क' प्रत्यय), Legally-विधितः ('तः' प्रत्यय)। वकालतनामा (power of attorney) में 'नामा' प्रत्यय है।

Legislation-विधान, Constitution-संविधान ('सं' उपसर्ग)। Statutory-सांविधिक ('सां' उपसर्ग), Non Statutory-असांविधिक ('अ' उपसर्ग)।

शब्दों के साथ शब्द जोड़कर भी शब्द-निर्माण किया जाता है। जैसे- विधि निर्माता (Law maker), दीवानी कानून (Civil Law), फौजदारी कानून (Criminal Law), न्यायालय (न्याय + आलय, Law court) आदि।

बोध प्रश्न-

- उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर बनाए गए चार शब्दों को लिखिए।

(3) विशिष्ट वाक्य रचना-

वाक्य रचना के संबंध में स्रोत भाषा की सहजता को भी दृष्टिगत रखना होता है। अंग्रेजी के अन्य पुरुष और कर्मवाच्य वाले वाक्यों को कहीं सरल वाक्य बनाना पड़ता है लेकिन ध्यान में

रखा जाना चाहिए कि अनुवाद में कोई भी शब्द या वाक्य ऐसा न हो कि उसके दो या तीन अर्थ निकलें। कानूनी अनुवाद में ये सब ध्यान में रखना होता है।

विशिष्ट पद-प्रयोग, संयुक्त वाक्य-रचना, विधि की बारीकियों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त भाषा का प्रयोग, सुबोधता और सावैदेशिकता विधि की भाषा के अनिवार्य गुण हैं। विधि के हर शब्द का नियतार्थ होता है। जैसे – अंग्रेजी ‘order’ का हिंदी समानांतर शब्द है ‘आदेश’। किन्तु ‘आदेश’ के भाववाले निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के अलग-अलग अर्थ होते हैं-
Ordinance – अध्यादेश

An order given by a head of the state

Mandate – अधिदेश / जनादेश

A command / the support given to the government policy through an electoral victory

Instruction – व्यादेश

A court order or judgement requiring a person to refrain from doing a certain action

(4)पारिभाषिक शब्दावली-

विधि के क्षेत्र में उचित पारिभाषिक शब्दावली का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। कभी-कभी स्रोत भाषा (अंग्रेजी) के लिए लक्ष्य भाषा (हिंदी) में यथोचित पारिभाषिक शब्द मिलने में मुश्किल होती है। विधि क्षेत्र के अनुवाद में विभिन्न पारिभाषिक शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। पारिभाषिक शब्द क्या है? इसे समझ लेना उचित जान पड़ता है। पारिभाषिक शब्द ‘टेक्निकल टर्म’ का अनुवाद है। इसका अर्थ है प्रत्येक प्रयोजन के लिए निर्धारित की गई विशिष्ट शब्दावली। हमारे देश में ऐसे शब्दों का प्रयोग प्राचीनकाल से चला आ रहा है, किन्तु राजभाषा रूप में काफी नई शब्दावली बनाई गई है।

बोध प्रश्न -

- ‘पारिभाषिक शब्दावली’ का क्या तात्पर्य है?

कानून के क्षेत्र में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द और उनके अर्थ निम्नलिखित हैं-

Adjudication – न्याय – निर्णय

Administration – प्रशासन

Amnesty – सामूहिक क्षमा दान / सर्वक्षमा

Answerable – जवाबदेह

Arrest – गिरफ्तारी

Article – अनुच्छेद

Advocacy – वकालत

Advocate – वकील/ अधिवक्ता

Bureaucracy – अधिकारी तंत्र / नौकरशाही

By law – उपविधि

Bail – जमानत

Complaint book – शिकायत पुस्तिका

Confidential – गोपनीय

Constituency – निर्वाचन क्षेत्र / चुनाव क्षेत्र

Controversial – विवादास्पद

Charge – अभियोग

Clause – खंड

Court – न्यायालय / अदालत / कचहरी / कोर्ट

Court, civil (Civil court) – दीवानी न्यायालय

Court, high (High court) – उच्च न्यायालय

Court, Supreme (Supreme court) – उच्चतम न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय

Daily report book / Day book- रोज़नामचा

Decree – अधिदेश/ आधिकारिक आदेश / डिक्री

Deed – विलेख / कारनामा

Defendant – प्रतिवादी

Democracy - लोकतंत्र / जनतंत्र

Document – दस्तावेज़

District magistrate – जिलाधीश

Implementation – कार्यान्वयन

Invalid – अविधिमान्य

Imprisonment – कारावास

Judicial – न्यायिक / अदालती / न्यायालयिक

Judge – न्यायाधीश, जज

Legally – न्यायतः

Magistrate – दंडाधिकारी, मैजिस्ट्रेट

Ministry of Law, Justice & company affairs – विधि, न्याय और कंपनी – कार्य मंत्रालय

Ordinance – अध्यादेश

Petition – अर्जी

Petitioner – अर्जीदार

Prosecution – अभियोजन

Prosecutor – अभियोक्ता

Plaintiff – वादी

Power of attorney – मुख्तारनामा

Privilege – विशेषाधिकार / प्राधिकार

Ratification – अनुसमर्थन / अभिपुष्टि

Schedule – अनुसूची

Section – धारा / अनुभाग

Statement – बयान

Secularism – धर्मनिरपेक्षता

Statutory – विधिक / सांविधिक

Subordinate – अधीनस्थ व्यक्ति

Register – निबंधक / पंजीयक

Stenographer – आशुलिपिक

Writ – समादेश

बोध प्रश्न-

- निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों (पारिभाषिक शब्दावली) का हिंदी अर्थ बताएँ- Petition, Petitioner, Prosecutor, Section, Statement, Secularism

कानून के क्षेत्र में प्रत्येक शब्द का निश्चित अर्थ होने के कारण कानूनी शब्दावली के निर्माण में कानूनी पहलू का विचार भी महत्वपूर्ण है।

(5) विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ-

विधि पाठ के अनुवाद में विशिष्ट अभिव्यक्तियों की भी आवश्यकता होती है। विशिष्ट अभिव्यक्तियों का सही प्रयोग नहीं किया जाना एक समस्या है। 'विधि' के क्षेत्र में कुछ 'विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ' हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक को इनका यथोचित प्रयोग करना होता है। ये निम्नलिखित हैं -

Abstract Statement of cases disposed of – निपटाए गए प्रकरणों का संक्षिप्त विवरण

Action as proposed may be taken – प्रस्तावित कार्यवाही की जाय / यथाप्रस्तावित कार्यवाही की जाय

Action departmental – विभागीय कार्रवाई

Affidavit submitted is – प्रस्तुत शपथपत्र

Against the rules – नियमों के विपरीत

According to the law - कानून विधि के अनुसार

Background of the case – मामले की पृष्ठभूमि

Ban on creation of post is not applicable in this case – नए पद के सर्जन पर रोक इस मामले में लागू नहीं है

Ban on recruitment – भर्ती पर रोक

Case is filed – मामला फाइल कर दिया गया है

Case is resubmitted - मामला फिर से प्रस्तुत किया गया है

Case is under consideration – मामला विचाराधीन है

Case is under investigation – मामले की जांच की जा रही है

Contempt of court – न्यायालय अवमान

Duly complied – विधिवत अनुपालित

Duly sanctioned – विधिवत मंजूर किया हुआ

Duly verified and passed – विधिवत सत्यापित और पारित

Ex parte statement – एकपक्षीय बयान

Go to law – मुकदमा चलाना

Returned duly endorsed – विधितः पृष्ठांकित करके लौटाया

To right a wrong oneself without legal sanction – कानून को अपने हाथ में लेना

To disregard the law - विधि की उपेक्षा करना

Take into custody - हिरासत में लेना

बोधप्रश्न

- निम्नलिखित (विशिष्ट अभिव्यक्तियों) का हिंदी अर्थ बताएँ-

1-Background of the case

2-Go to law

3-Affidavit submitted is

4-Case is under consideration 5-Contempt of court

(6)भाषा और शैली की भिन्नता-

विधि के क्षेत्र में एक अलग प्रकार की भाषा और उसकी शैली का प्रयोग होता है। उसके अपने कुछ शब्द होते हैं तो सामान्यतः आम व्यक्ति नहीं समझ सकता है। साहित्यिक अनुवाद में थोड़ा बहुत आगे-पीछे कुछ किया जा सकता है लेकिन विधि पाठ के अनुवाद में अपने से जोड़ घटाव नहीं किया जा सकता है। इसमें शब्दों इत्यादि का अनुवाद यथोचित रूप से किया जाना चाहिए नहीं तो समस्या का सामना करन पड़ सकता है। अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

बोध प्रश्न-

- विधि क्षेत्र की भाषा और शैली के विषय में बताइए।

(7)विधि क्षेत्र के अनुवादकों का अभाव-

साहित्य का अनुवाद करना अपेक्षाकृत सरल होता है। विधि पाठ का अनुवाद अपेक्षाकृत कठिन होता है। विधि अनुवाद की अपनी जटिलताएँ होती हैं। विधि क्षेत्र में काम करने वाले

लोगों को अनुवाद के क्षेत्र में अन्य चाहिए। उदहर के लिए वकील साहब लोग इस क्षेत्र में आकार अच्छा काम कर सकते हैं। करण यह है कि वे लोग विधि क्षेत्र में ही काम करते हैं। वे लोग दिन रत यही काम करते हैं। न्यायालय और उसकी प्रक्रिया को अपनी आँखों के सामने देखते हैं। न्यायालय और उसकी प्रक्रिया में आने वाली शब्दावली आदि को बराबर देखते रहते हैं। इसलिए वे लोग विधि पाठ का अनुवाद बड़ी ही कुशलता से कर सकते हैं।

बोध प्रश्न-

- विधि पाठ के अनुवाद में बेहतर तरीके का अनुवाद कौन कर सकता है और क्यों?

प्रिय विद्यार्थियों, अब हम उदाहरण के लिए माननीय उच्च न्यायालय, पटना द्वारा अंग्रेजी में दिए गए आदेश का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे आपको समझने में और आसानी हो जाएगी। ध्यान रहे यह आदेश किसी CWJC NO..... (CIVIL WRIT JURISDICTION NO.....) की सुनवाई के बाद दिया गया है। इसके साथ ही साथ आगे किस तिथि को सुनवाई होगी उसको भी माननीय न्यायालय के द्वारा बता दिया गया है। ध्यान रहे CWJC NO. में उस केस के क्रमांक के साथ / (स्लैश) का निशान लगाकर उस केस को दायर करने का वर्ष भी लिखा जाता है। उदाहरण के लिए CWJC NO. 10935 / 2021।

प्रिय विद्यार्थियों! माननीय उच्च न्यायालय, पटना के दिनांक 05/02/2024 को आए हुए आदेश को उदाहरण स्वरूप देखें-

ORAL ORDER

Let this file be arranged properly and hard copy with proper pagination be kept by the office at top of the brief.

List this case, under appropriate heading, on 12th February, 2024, retaining its position.

अनुवाद-

मौखिक आदेश

इस फाइल को उचित ढंग से व्यवस्थित किया जाए तथा उचित पृष्ठांकन के साथ इसकी हार्ड कॉपी कार्यालय द्वारा संक्षिप्त विवरण के शीर्ष पर रखी जाए।

इस मामले को 12 फरवरी 2024 को उचित शीर्षक के अंतर्गत सूचीबद्ध किया जाएगा तथा इसकी स्थिति बरकरार रखी जाएगी।

विद्यार्थियों यहाँ 'कार्यालय द्वारा संक्षिप्त विवरण के शीर्ष पर रखी जाए' की जगह 'कार्यालय द्वारा संक्षिप्त विवरण के साथ शीर्ष पर रखी जाएगी। ऐसा कहने से भी बात पूरी तरह स्पष्ट हो जा रही है।

इसी तरह से माननीय उच्च न्यायालय, पटना के दिनांक 20/02/2024 को आए हुए आदेश को उदाहरण स्वरूप देखें-

ORAL ORDER

With consent of all parties, re-notify this case on 5th of March, 2024 at the top of the list.

अनुवाद-

मौखिक आदेश

सभी पक्षों की सहमति से इस मामले को 5 मार्च 2024 की सूची में सबसे ऊपर पुनः अधिसूचित किया जाएगा।

विद्यार्थियों ! यहाँ यदि अनुवाद करते समय ये कह दिया जाय 'सभी पक्षों की सहमति से इस मामले को 5 मार्च 2024 की सूची में सबसे ऊपर पुनः अधिसूचित किया जाए' तब भी बात समझ में आ जा रही है, स्पष्ट हो जा रही है। यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी ने 'सहमति' की जगह 'अनुमति' लिख दिया तो ये गलत हो जाएगा। सही अनुवाद नहीं माना जाएगा क्योंकि अंग्रेजी में consent और permission में अर्थ के स्तर पर काफी अंतर है। इसी तरह से हिंदी में 'सहमति' और 'अनुमति' में भी अंतर है।

12.4 पाठ सार

प्रिय विद्यार्थियो ! इस तरह से हम देखते हैं कि विधि पाठ का अनुवाद कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत स्वीकार किया जाता है। सरकारी या अर्ध सरकारी या निजी कार्यालयों में विभिन्न तरह के कागजात का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया जाता है। ये सब कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत स्वीकार किया जाता है। कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत अलग-अलग प्रकार के कार्यालयों के अनुवाद शामिल हैं। उदाहरण के लिए न्यायालय, बीमा, होटल, बैंक आदि का अनुवाद आदि।

विधिपाठ का अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण अनुवाद है। यह साहित्यिक अनुवाद से अलग हटकर होता है। इसमें अनुवाद करते समय बिल्कुल सटीक अनुवाद किया जाना चाहिए। अनुवाद इस तरह से किया जाना चाहिए कि विधि पाठ के अनुवाद में उसका एक ही अर्थ

निकले। इसके साथ-साथ विधि पाठ में अंग्रेजी के शब्दों के लिए हिंदी के विभिन्न शब्दों से यथोचित शब्द को प्रयोग में लाना चाहिए।

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से हमें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-विधि पाठ का अनुवाद कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत स्वीकार किया जाता है। कार्यालयी अनुवाद की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। कार्यालयी अनुवाद का सीधा सा तात्पर्य है विशेष रूप से विभिन्न कार्यालयों में अंग्रेजी से हिंदी में होने वाला अनुवाद।

2-कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत अलग-अलग प्रकार के कार्यालयों के अनुवाद शामिल हैं। जैसे- बैंक, रेलवे, होटल, डाक, बीमा, न्यायालय से संबंधित अनुवाद आदि।

3-विधि का सीधा सा अर्थ है 'कानून'। विधि की विभिन्न परिभाषाएँ मिलती हैं। विधि के पर्यायवाची शब्दों में 'कानून', 'आईन', 'कायदा', 'विधान', 'संहिता' आदि प्रमुख हैं।

4-विधि पाठ का सीधा सा तात्पर्य है- कानून या कानून से संबंधित लिखित प्रणाली। यह शब्द मुख्यतः न्यायशास्त्र तथा कानूनी प्रणाली से संबंधित है।

5-विधि पाठ का अनुवाद करते समय समस्याएँ न आयें इसलिए पारिभाषिक शब्दावली, विशिष्ट अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है। जो पारिभाषिक शब्दावली और विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ अंग्रेजी में होती हैं। उनका यथोचित हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है।

6-विधि पाठ का अनुवाद करते समय शब्दावली, वाक्य विन्यास, पदक्रम आदि को हिंदी में अनुवाद करके इस तरह से रखा जाना चाहिए जिसका सिर्फ और सिर्फ एक ही अर्थ निकले। वजह यह है कि अलग अर्थ निकलने से अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। उदाहरण के लिए confidential, interest, stamp आदि शब्दों का यथोचित हिंदी अर्थ हिंदी अनुवाद में लाया जाना चाहिए।

12.6 शब्द संपदा

1. अभिधा = शब्द के असल व सीधे अर्थ को प्रदान करना
2. अन्य पुरुष = व्याकरण में (वक्ता एवं श्रोता से भिन्न) वह व्यक्ति या वस्तु जिसके विषय में कुछ कहा जाए, जब एक आदमी दूसरे आदमी से किसी तीसरे आदमी की बात कर रहा हो
3. कर्मवाच्य = क्रिया का वह रूप जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध होता है
4. वाक्य = वह शब्द समूह जिससे पूरी बात समझ में आ जाए, 'वाक्य' कहलाता है

5. पदक्रम	=	गमन करना, चलना, वाक्य में शब्दों या पदों के रखने का ढंग
6. विशेष अभिव्यक्तियाँ	=	विशेष रूप से ज़ाहिर करना, विशेष रूप से दिखाना
7. अभिव्यक्ति	=	प्रकाशन, स्पष्टीकरण, साक्षात्कार, प्रकट होना
8. अधिसूचित	=	किसी को किसी चीज़ की सूचना देना, आमतौर पर औपचारिक या आधिकारिक तरीके से सूचित करना
9. दस्तावेज़	=	कानूनी व्यवस्था में किसी समझौते, संपत्ति अधिकार घोषणा या अन्य महत्वपूर्ण बात का प्रमाण देने के लिए जिन विशेष कागजात का प्रयोग होता है, 'दस्तावेज़' कहलाता है
10. प्रतिलिपि	=	किसी लेख की नकल, फोटोकापी, छायाप्रति
11. राजपत्रित अधिकारी	=	भारतीय अधिकारी में एक कार्यकारी / प्रबंधकीय स्तर का सरकारी अधिकारी होता है
12. सत्यापित	=	प्रमाणित
13. कलात्मक	=	कलापूर्ण या कलामय
14. प्रामाणिकता	=	प्रामाणिक होने की अवस्था या भाव
15. समक्ष	=	आँखों के सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष, सामने

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए-

1-कार्यालयी अनुवाद और उसकी विशेषताएँ लिखिए।

2-विधि पाठ के अनुवाद की समस्याओं पर चर्चा कीजिए।

3-भारतीय संविधान और न्यायालयों की हिंदी के विषय में लिखिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए-

1-पारिभाषिक शब्दावली के विषय में बताते हुए विधि क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली दस शब्दावली को लिखें।

2-विधि किसे कहते हैं? अपने शब्दों में लिखें।

3-विधि का अर्थ बताते हुए किन्हीं दो विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विधि की परिभाषा दीजिए।

खंड (क)

(इ)वैकल्पिक प्रश्न

(I)निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प छाँटिए-

1-Advocacy (एडवोकेसी) के लिए हिंदी में प्रयुक्त शब्द है-

(क) वकालत (ख) अभिरक्षा (ग) मुल्जिम (घ) थमा

2-नियमों के विपरीत हेतु अंग्रेजी में प्रयोग किया जाता है।

(क) According to the law (ख) Against the rules

(ग) Case is under consideration (घ) Go to law

3-Collector (कलेक्टर) के लिए लाए जाने वाले शब्द हैं-

(क) जिलाधीश (ख) जिलाधिकारी (ग) समाहर्ता (घ) सभी विकल्प सही हैं

(ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1-कार्यालयी अनुवाद से आशय है..... किया जाता है।

2-फौजदारी कानून हेतु शब्दका इस्तेमाल किया जाता है।

3-आस्टिन के अनुसार -कानून की आज्ञा है।

(iii) सुमेल प्रश्न

(क) CWJC No..... (अ) Case is filed

(ख) मामला फाइल कर दिया गया है (ब) मौखिक आदेश

(ग) Oral order (स) अधिदेश/आधिकारिक आदेश/डिक्री

(घ) Decree (द) Civil Writ Jurisdiction Case No.....

12.8 पठनीय पुस्तकें

1-अनुवाद मीमांसा – निर्मला जैन

2-अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी

3-अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग – जी. गोपीनाथन

4-प्रयोजनमूलक हिंदी – सूर्यप्रसाद दीक्षित

5-प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. पी. लता

6- प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. रामप्रकाश गुप्त, डॉ. दिनेश कुमार गुप्त

इकाई 13 : हिंदी अंग्रेजी कहानी अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 मूल पाठ

13.3.1 हिंदी से अंग्रेजी में सर्जनात्मक अनुवाद

13.3.2 अनूदित पाठों का अध्ययन

13.3.3 हिंदी कहानी के अंग्रेजी अनुवाद के चरण

13.3.4 विशेष शब्दों और सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद

13.3.5 कहानी के अनुवाद की चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

13.4 पाठ सार

13.5 पाठ की उपलब्धियां

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 : प्रस्तावना

आपने अनुवाद के सिद्धांत की चर्चा से जुड़ी इकाइयों में पढ़ा होगा कि कविता का अनुवाद करना थोड़ा कठिन होता है। सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद करना ज्ञान के साहित्य के मुकाबले होता तो जरा मुश्किल ही है, पर इसको करने में अच्छा खूब लगता है। चुनौती जरूर होती है, पर कुछ कम। कविता भाव प्रधान होती है, कहानी घटना प्रधान। जहां तक कहानी के अनुवाद का सवाल है, इसमें अनुवादक से यह उम्मीद की जाती है कि वह कहानी की जड़ तक जाकर उसे दूसरी भाषा में इस तरह ढालकर पेश कर दे कि पढ़ने वाला पहली नजर में यह जान ही न सके कि जो कहानी वह पढ़ रहा है वह अनुवाद है। इस इकाई में खास तौर से हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद पर गौर किया जाएगा। याद रहे, हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले अनुवादक को अंग्रेज होने की जरूरत नहीं है। जरूरत बस यह है कि अनुवादक कहानीकार और कहानी दोनों को समझकर उसे अपनी भाषा में फिर से पेश करे। पुनः प्रस्तुत करे। इसीलिए अक्सर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद को पुनः सृजन या नवसृजन भी कहा जाता है। इस इकाई में खास तौर से हिंदी कहानी का अंग्रेजी में अनुवाद करने के बारे में चर्चा की गई है। यह भी ध्यान रखा जाना जरूरी है कि अनुवादक कोई और दूसरा नहीं, खुद आप हैं। आप को यह अनुवाद उनके लिए करना है जो हिंदी नहीं जानते और अंग्रेजी में अनूदित कहानियाँ पढ़कर हिंदी लेखन से परिचय प्राप्त करना चाहते हैं।

13.2 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

1. यह जान सकेंगे कि हिंदी कहानी के अंग्रेजी में अनुवाद करते वक्त किन किन चुनौतियों, कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
 2. नमूने के लिए दिए गए मूल और अनूदित पाठ के आधार पर अनुवाद की समीक्षा कर सकेंगे।
 3. इस समीक्षा के आधार पर अनुवाद के भाषिक और सांस्कृतिक स्तर पर टिप्पणी कर सकेंगे।
 4. कुछ कहानियों के कुछ अंशों का अनुवाद खुद करने का प्रयास कर सकेंगे।
 5. अनुवाद करते वक्त किन- किन उपायों या युक्तियों को काम में लिया जा सकता है, यह पता लगा सकेंगे।
-

13.3 मूल पाठ : हिंदी अंग्रेजी कहानी अनुवाद

13.3.1 हिंदी से अंग्रेजी में सर्जनात्मक अनुवाद

यह तो आप जान ही गए हैं कि साहित्यिक और सर्जनात्मक पाठों का अनुवाद करना बिल्कुल अलग बात है और वैज्ञानिक-तकनीकी लेखन के अनुवाद करना अलग बात है। साहित्यिक पाठ से मतलब कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि हैं। इनका अनुवाद करने के लिए दो भाषाओं का ज्ञान तो उतना ही जरूरी है, पर ज्यादा जरूरी यह है कि मूल भाषा या मानक(स्टैन्डर्ड)हिंदी और उसकी बोलियों का ज्ञान हो। लफ़ज़ दर लफ़ज़ या शब्द प्रति शब्द अनुवाद और आशय(अर्थ) के अनुवाद के बीच का अंतर समझ लिया जाए। यह भी समझ लिया जाए कि अच्छा अनुवाद शब्दों का नहीं, अर्थ का होता है। यह भी समझने की जरूरत होती है कि हर लेखक का अपना अलग स्टाइल होता है। लिखने का अंदाज होता है। उसका अपना सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, और सांप्रदायिक संदर्भ होता है। इसलिए अनुवादक को बहुत सी सावधानियाँ रखनी होती हैं। 'अनुवाद विज्ञान की भूमिका' में प्रोफेसर गोस्वामी लिखते हैं कि अनुवाद में मूल पाठ का न केवल विकोडीकरण होता है और न ही लक्ष्य भाषा में पूरे पाठ या पाठांश का पुनःसृजन होता है वरन् उसमें स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की भाषिक और सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की भी विशिष्ट भूमिका होती है। वास्तव में अंग्रेजी जैसी विजातीय भाषों का सामाजिक-सांस्कृतिक धरातल भिन्न होने के कारण अनुवादक को मूल पाठ के भावार्थ को अनूदित पाठ में पहुँचने के लिए काफी परिश्रम करना पड़ता है। प्रेमचंद की एक कहानी की पहली पंक्ति के अंग्रेजी अनुवाद को देखकर ये बातें आपको ठीक तरह से समझ में आ जाएंगी।

किसी गाँव में शंकर नाम का एक कुर्मि किसान रहता था। सीधा- सादा गरीब आदमी था। अपने काम से काम, न किसी से लेने में, न किसी से देने में। छक्का पंजा न जानता था। (सवा सेर गेहूँ- प्रेमचंद)

In a certain village, there was a low-caste peasant named Shankar. He was a simple and poor fellow who absorbed in his own toil and did not try to interfere in the affairs of other folk. He had no tricks up his sleeve at all.

आप देख सकते हैं कि अंग्रेजी में अनुवाद और हिंदी में जो मूल पाठ है, उसमें थोड़ा सा अंतर है। ज्यों का त्यों शब्द-दर-शब्द अनुवाद नहीं। पर अर्थ में कमोबेश कोई अंतर नहीं आया। प्रेमचंद इतने मंजे हुए लेखक हैं कि वे बिना किसी सर्वनाम के ही अपनी कहानी शुरू कर देते हैं। पर अंग्रेजी अनुवाद में सर्वनामों का प्रयोग हुआ है। यह शायद इसलिए किया गया क्योंकि बिना सर्वनाम के प्रयोग के बात समझ में न आती। हिंदी में तो सर्वनामों के प्रयोग के बिना भी प्रेमचंद अपनी कहानी की शुरुआत कर सकते हैं। अनुवाद में अर्थ-संगति कितनी हुई है? आप खुद किसी नतीजे पर पहुंचे। मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद करने में भी अनुवादक को सफलता मिली है। अर्थ संगति या भाव का एक भाषा से दूसरी में प्रेषण अच्छे अनुवाद की पहली शर्त है।

बोध प्रश्न -

- कहानी के अनुवाद और मूल पाठ को देखते हुए उनमें तीन अंतर बताइए।
- अच्छे अनुवाद की पहली शर्त क्या है, अपने शब्दों में लिखिए?

13.3.2 अनूदित पाठों का अध्ययन

हिंदी कहानी का अंग्रेजी में अनुवाद करने के दौरान जो जो मुश्किलें और चुनौतियाँ आती हैं, उनका जिक्र करने से बेहतर यह रहेगा कि किसी एक हिंदी कहानी का एक बड़ा अंश लेकर या किसी कहानी और उसके अनुवाद को लेकर देखा जाए। मुंशी प्रेमचंद हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं के साझे कथाकार हैं। हिंदी कहानी का इतिहास इनसे शुरू नहीं होता, फिर भी वे इसे उन बुलंदियों पर ले जाते हैं जिनका कोई सानी आज तक नहीं मिलता। उन्होंने तीन सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखीं और उनकी हर कहानी बेजोड़ है। 1933 में प्रेमचंद द्वारा लिखी गई कहानी 'ईदगाह' प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानी है। इस कहानी के कई अंग्रेजी अनुवाद हुए हैं। यहाँ हिंदी अंग्रेजी अनुवाद की विवेचना करते समय इस कहानी को लेने की वजह यह भी है कि शायद ही कोई ऐसा हिंदी जानने वाला होगा जिसने प्रेमचंद की यह कहानी न पढ़ी हो। कहानी बस इतनी सी है कि एक बच्चे का अपनी दादी से गहरा लगाव है। यह इस कहानी का एक पक्ष है। पर इस कहानी का दायरा इतना बड़ा है कि इसमें सारा हिंदुस्तान समा जाए। जिंदगी की सज्जाई बयान करती इस कहानी के कई अनुवादों में से दो को लेकर उनका तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा। कहानी का केवल एक हिस्सा ही लिया जाएगा।

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज न मिली जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया? हामिद ने अपराधी भाव से कहा - 'तुम्हारी अंगुलियाँ तवे से जल जाती थीं

इसीलिए मैंने इसे लिया।‘ बुधिया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया और स्नेह भी वह नहीं जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। वह मूल सलह था, खूब ठोस रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौना लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? यहाँ भी इसे अपनी बुधिया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद गद हो गया। (ईदगाह – प्रेमचंद)

अनूदित पाठ (1)

a) Amina wrung her hands; what a foolish boy he was! It was noon, and he had nothing to eat or drink. What did he get? Tongs!

‘Couldn’t you get anything else at the whole fair since you had to pick up these tongs?’ Hamid said guiltily, “ Your fingers burn on the griddle, so I bought these.’ The old woman’ annoyance changed into love, and not a love which is wasted in words, but one that is salient, deep and filled with sweetness. How wise, kind and self-sacrificing the child was! How tempted he must have been when the others were eating sweets and buying toys. How could he forfeit so much? Hamid had remembered his old grandmother even there. Amina was overwhelmed.

(Usha Saksena Nilsson)

Amina was distressed. How foolish the child was! It was almost midday; he had nothing to eat or drink all this while! And was he bought from the fair? Tongs! ‘ could you find nothing else in the whole fair, that you had to go and buy these iron tongs?’

Hamid explained guiltily, “Your fingers get burnt on the pan. That is why I bought them” The anger of the old woman turned into affection. Not that loud affection which scatters its intensity in a fold of words. This was mute love, solid, filled to the core with sweetness. How wise, gentle and self-sacrificing the child was! How sorely he must have been tormented

while the others bought sweet and toys! How could he suffer so much? He remembered his old Granny even at the fair. Amina was supremely happy.

(P. C. Gupta)

अनूदित पाठ 3

Granny Ameena beat her breast. "You are a stupid child! It is almost noon and you haven't had anything to eat or drink. And what do you buy—tongs! Couldn't you find anything better in the fair than this pair of iron tongs?"

Hamid replied in injured tones, "You burn your fingers on the iron plate. That is why I bought them."

The old woman's temper suddenly changed to love—not the kind of calculated love, which wastes away in spoken words. This love was mute, solid and seeped with tenderness. What a selfless child! What concern for others! What a big heart! How he must have suffered seeing other boys buying toys and gobbling sweets! How was he able to suppress his own feelings! Even at the fair he thought of his old grandmother. Granny Ameena's heart was too full for words.

(Khushvant Singh)

मूल पाठ	अनूदित पाठ 1	अनूदितपाठ 2	अनूदित पाठ 3
अमीना ने छाती पीट ली	Amina wrung her hands.	Amina was distressed	Granny Ameena beat her breast.
दोपहर हुआ	It was noon	It was almost midday.	It is almost noon.

तुम्हारी उंगलियां तवे से जल जाती थीं	Your fingers burn on the griddle.	Your fingers get burnt on the pan	You burn your fingers on the
--------------------------------------	-----------------------------------	-----------------------------------	------------------------------

			iron plate.
बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया	The old woman's annoyance changed into love.	The anger of the old turned into affection.	The old woman's temper suddenly changed to love.
वह मूँक स्नेह था ,खूब ठोस रस और स्वाद से भरा हुआ	That is silent, deep and filled with sweetness.	This was mute love, solid filled to the core with sweetness.	This love was mute, solid and seeped with tenderness.
इसका मन कितना ललचाया होगा	How tempted he must have been.	How sorely he must have been tormented.	How was he able to suppress his own feelings!
बुढ़िया दादी अमीना का मन गद गद हो गया ।	Old grandmother Amina was overwhelmed	Old Granny Amina was supremely happy.	Granny Ameena's heart was too full for words.

प्रेमचंद की इस कहानी के एक अंश के तीन अनुवादों को सरसरी तौर पर देखने से ही कुछ बातें शीशे की तरह साफ हो जाती हैं।

1. अनुवाद प्रक्रिया में अकेले शब्द अथवा वाक्य का अनुवाद नहीं होता।
2. समूचे पाठ या पाठांश का अनुवाद एक साथ होता है।
3. अनुवादक लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार अनुवाद करता है।
4. वह कई बार उसमें बदलाव भी कर देता है। कई बार वह मूल पाठ के भाव को मद्दे नजर रखते हुए लक्ष्य भाषा में कुछ ही शब्दों में पेश कर देता है।

बोध प्रश्न -

- अनुवाद के तीनों नमूनों को देखने पर आपको सबसे अच्छा अनुवाद कौनसा लगता है और क्यों?
- कम से कम तीन ऐसी चूकों को गिनाओं जिनको आप आसानी से पहचान गए?

13.3.3 हिंदी कहानी अंग्रेजी अनुवाद के चरण

आपने पहले अनुवाद के कुछ नमूने या इकाइयां देखीं। ये अनुवाद किसी मशीन ने नहीं किए। सब अनुभवी अनुवादक हैं। इन नमूनों से आप भी कुछ सीख ले सकते हैं। अनुवाद करने के लिए खुद की कोई स्कीम या योजना बना सकते हैं। हम नमूनों को सिलसिलेवार और बार बार देखेंगे। आप समझते तो हैं ही कि अनुवाद करने की चीज है। करके देखने की चीज है। एक एक कदम रखना होगा और हर कदम ध्यान से रखना होगा। क्या हमें शुरुआत से ही शुरुआत करनी चाहिए और वाक्य दर वाक्य, पैराग्राफ दर पैराग्राफ, अध्याय दर अध्याय अनुवाद करते रहना चाहिए? नहीं, पहला कदम कहानी को पूर्णतः पढ़ना होगा। संपूर्ण लघु कहानी या कहानी को अच्छी तरह से पढ़ें और समझें कि यह कहानी किस बारे में है। इसका कथानक क्या है?

हिंदी कहानी के अंग्रेजी में अनुवाद के दो चरण या अवस्थान माने गए हैं। महेंद्र चतुर्वेदी के अनुसार पहले अवस्थान में अनुवादक को कृति को आत्मसात करना होता है। उसके हर अंश को अच्छी तरह समझना पड़ता है। उसकी भावना को समझना होता है। इसे चतुर्वेदी 'अर्थवत्ता बोध' कहते हैं। दूसरा चरण या अवस्थान 'संप्रेषण' का है। इसमें अनुवादक यह कोशिश करता है कि मूल कहानी के कथ्य को उसी तरह दूसरी भाषा में पेश कर दे। इस तरह यदि पहला कदम मूल कहानी को आत्मसात करना है तो अगला कदम या दूसरा कदम सम्पूर्ण कहानी को कुछ अनुवाद-इकाइयों (ट्रांसलेशन यूनिटों) में विभाजित करना होगा। आप पूछेंगे कि हम यह कैसे निर्धारित करते हैं कि अनुवाद इकाई क्या होनी चाहिए? क्या यह एक अनुच्छेद, अनुभाग या अंश हो सकता है?

यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान अनुवादक को खुद करना होगा। एक कहानी को संपूर्ण रूप में देखा जाना चाहिए और कथाकार द्वारा व्यक्त किए गए अर्थ के आधार पर भागों को विभाजित किया जाना चाहिए। और आसान करके कहें तो अनुवादक को कहानी को कुछ इकाइयों में बाँट कर धीरे-धीरे अनुवाद करना चाहिए।

बोध प्रश्न

- सम्पूर्ण पाठ को छोटी छोटी इकाइयों में बाँटने से क्या फायदा होगा?
- कहानी के शीर्षक का अनुवाद पहले करना चाहिए या नहीं?

13.3.4 विशेष शब्दों और सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद

हिंदी कहानियों के अंग्रेजी भाषी अनुवादक भी खूब हैं और उनके अनुवाद पुरस्कृत भी होते जाते हैं। पर यहाँ बात आपकी हो रही है, इसलिए फिलहाल यह समझ लें कि आपको हिंदी कहानी के अंग्रेजी अनुवाद को गंभीरता से लेना होगा। लापरवाही नहीं करनी चाहिए। यह बात तो कहने से ज्यादा खुद-ब-खुद समझने की है कि हिंदी कहानी के अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले अनुवादक के पास एक अच्छा शब्दकोश (हिंदी-अंग्रेजी) तो होना ही चाहिए। प्रत्येक भाषा के अपने संस्कार होते हैं। एक अच्छे शब्दकोश से यह पता चलता है कि 'गर्म' का अनुवाद 'हॉट' भी है और 'वार्म' भी। 'शीतल' और 'कोल्ड' भी एक दूसरे के पर्याय नहीं। 'दीप' के लिए 'लैम्प' हो भी

सकता है और नहीं भी पर ‘कुलदीप’ का अंग्रेजी में अनुवाद कठिन हो सकता है। ‘कुलदीप’ में कुछ संस्कार है।

बहुत से अनुवादक सिफारिश करते हैं कि पहले कहानी का अनुवाद करना चाहिए और फिर उनके शीर्षक का अपने ढंग से अनुवाद करना चाहिए। प्रेमचंद के अनुवाद के उदाहरण से ही इस बात को समझें। प्रेमचंद की कहानियों के शीर्षक बड़े सीधे सादे होते हैं। प्रेमचंद की एक कहानी है ‘शतरंज के खिलाड़ी’। बाद में सत्यजित राय ने इस पर एक बढ़िया फ़िल्म भी बनाई। उर्दू में यह कहानी ‘शतरंज की बाजी’ के नाम से आई। ‘शतरंज के खिलाड़ी’ का जो अंग्रेजी अनुवाद किया गया वह सीधा साधा ‘The Chess Players’ है। और भी अनुवाद हुए हैं। एक कहानी है – बाबाजी का भोग। इस कहानी के दो अनुवाद हुए। एक का शीर्षक है- *Babaji's Feast*. दूसरा शीर्षक है- *A feast for the holy man*. इसमें से पहला अनुवाद संस्कृतिनिष्ठ है तो दूसरा लक्ष्य भाषा की आंतरिक चेतना की ओर उन्मुख। और भी अनुवाद हुए हैं तो और भी शीर्षक हैं, जैसे- *A mendicant's alms, A friar's feast*. क्या आप बता सकते हैं कि कौनसा अनुवाद भारतीय संस्कृतिनिष्ठ है और कौनसा अंग्रेजी संस्कृतिनिष्ठ? आपको समझ में आ जाना चाहिए कि अनुवाद चाहे कहानी के शीर्षक का हो या उसकी इकाइयों का हो, आपको तय कर लेना होगा कि आप अनुवाद भारतीय संस्कृतिनिष्ठ करते हैं या अंग्रेजी संस्कृतिनिष्ठ। या इस बात पर भी निर्भर करता है कि अनुवाद का पाठक कौन होगा? भारतीय या विदेशी?

इस चर्चा को जारी रखते हुए कहना होगा कि अनुवाद करते वक्त जिस तरह उसके शीर्षक पर ध्यान दिया गया वैसे ही व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों पर भी खासा गौर करना होगा। बहुत बार तो जाति-वाचक संज्ञा शब्द भी अनुवाद की मांग करते हैं। इसकी एक वजह यह भी है कि हिंदी के बहुत से शब्द ही नहीं बल्कि स्वर और व्यंजन भी अंग्रेजी में नहीं मिलते। ‘ठाकुर’ का ‘टैगोर’ हो जाता है। शब्दों के धरातल पर कई दूसरी चुनौतियाँ भी आती हैं। जलेबी, मठरी, खीर आदि शब्दों का अनुवाद करेंगे, या उन्हें वैसा ही छोड़ देंगे। कोष्ठक में इनका अर्थ लिख देंगे। इसे तय करने का अधिकार अनुवादक का है। याद रहे, अब पाठक के पास ‘गूगल’ है, वे ऐसे शब्दों के अर्थ कहानी पढ़ते हुए खुद तलाशने की कोशिश करने से नहीं चूँगे। हाँ, आप ‘पकौड़ा’ के साथ अंग्रेजी में ‘क्रिस्पी’ शब्द जोड़ सकते हैं। जलेबी के साथ ‘डिलिशस’ जैसे विशेषण जोड़ सकते हैं। शब्दों के साथ ही पद-बंधों का अनुवाद भी महत्वपूर्ण है। बहुत बार कहानी में शब्द ही नहीं कुछ खास ध्वनियाँ भी होती हैं। उदाहरण के लिए फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी ‘तीसरी कसम’ का अनुवाद करते हुए अनुवादक ने इन ध्वनियों को भी अंग्रेजी में अनूदित किया। कहानी का नायक हीरामन बात बात पर ‘इस्स’ कहता है और इस ‘इस्स’ का अनुवाद भी किया गया है। ढोल की आवाज का अनुवाद है-*Kiir-rr-rr-r*, “kar-d-d-d-d-rr-rr-dhan-dhan-dharanama!” आदि करके अनूठा काम किया है। साफ बात है कि अनुवादक को शब्दों से ही ध्वनियों से भी खेलना होगा।

13.3.5 कहानी के अनुवाद की चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

अब हम इस इकाई के अंत की तरफ आ गए हैं। यह तो आपको समझ में आ ही गया है कि हिंदी कहानी का अंग्रेजी में अनुवाद करने का मतलब है – हिंदी कहानी का अंग्रेजी कहानी के रूप में अनुवाद। कहानी का जो कहानीपन है वह अनुवाद में भी रहना चाहिए। अनुवाद है, ऐसा लगे तो लगे। इसमें कोई नुकसान नहीं। कुछ समस्याएं, चुनौतियाँ आती हैं। उन्हें मुश्किलों जैसा न समझें। उन पर काम करें। अनुवाद को बार बार पढ़ें। इस इकाई में उदाहरण देकर कुछ चुनौतियों, समस्याओं और मुश्किलों का जिक्र किया गया है। खास तौर से तीन चार परेशानियाँ आपको भी होंगी। एक अच्छा हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश होना चाहिए, यह तो कोई कहने की बात ही नहीं। पहली समस्या शब्द-दर-शब्द और अनुच्छेद दर अनुच्छेद के अनुवाद के बीच संतुलन बिठाने की है। एक अनुवादक को पता होना चाहिए कि उसे शाब्दिक अनुवाद या शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद कब करना है। शब्द-क्रम को कब बदलना है, शब्दों को कब जोड़ना या हटाना है, वाक्य-संरचना को कब और कितना बदलना है, आदि। दूसरी समस्या अनूदित पाठ में भाषा को पाठक के अनुकूल करना है। ऐसा बहुत कम होता है कि अनुवादक हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में समान गति रखता हो। हिंदी कहानी के अंग्रेजी में अनुवाद करने वाला अंग्रेजी के वाक्य-विन्यास और मुहावरे को ध्यान में रखता है। हिंदी कथाकार द्वारा अपने लेखन में प्रयुक्त शैलीगत परिवर्तनों या बदलावों का भी प्रभावी ढंग से 'अनुवाद' करना चाहिए। सांस्कृतिक संदर्भों और सामाजिक रूढ़ियों का अनुवाद भी होता रहे तो अच्छा होगा। कुछ परंपराएँ हिंदी समाज की अपनी हैं, उन्हें अंग्रेजी में ज्यों को त्यों पेश करना बेहतर होगा। आदर्श अनुवाद तो वह होता ही है जिसमें मूल पाठ के सभी शब्दों का अनुवाद पेश हो जाए। पर हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करते वक्त यदि ऐसा न हो सके तो या तो वाक्य को इस तरह रख दें कि अंग्रेजी पाठक को सुभीता हो जाए। उदाहरण के लिए 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का एक वाक्य है- लखनऊ विलासिता के रंग में डूबा था। इसका शब्दशः अनुवाद होगा- Lucknow was sunk into the colours of worldly pleasure." पर यदि इसे थोड़ा संवार कर लिखा जाए – Lucknow was immersed in worldly pleasures. तो यह अनुवाद अंग्रेजी पाठक को सीधे समझ में आ जाएगा। शब्द-प्रति-शब्द से बेहतर कभी-कभी मुक्त अनुवाद होता है। इसी कहानी का एक वाक्य है- आपका नमक खाते हैं। इस वाक्य का अनुवाद करते समय 'eat your salt' कहना अनुवादक को हँसी का बायस बनाएगी। कहना चाहिए कि अनुवादक को संतुलन रखना चाहिए।

बोध प्रश्न-

- 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के इन शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए- हुक्का, पान, बिसात, खुदगर्ज, इत्र, कलाबत्तू, उबटन
- इसी कहानी के इन शब्दों का अनुवाद कीजिए- मौरूसी जागीर,
- इस कहानी के निम्नलिखित वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए-

1. खुदा न करे, किसी को इसकी चाट पड़े।
2. उन्होंने उनका नाम मीर बिगाड़ू रख छोड़ा था।
3. बड़ा लती आदमी है।
4. मिर्जा ने कहा, तुमने गजब किया!”

13.4 पाठ सार

हिंदी कहानी का अंग्रेजी कहानी के रूप में अनुवाद या रूपांतर करना एक हुनर से कम नहीं है। यह शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद नहीं होता। अच्छा अनुवाद शब्दों का नहीं अर्थ का होता है। हिंदी से अंग्रेजी में अनूदित एक ही कहानी के कई अनुवादों को ध्यान से देखने पर यह साफ हो जाता है कि समूचे पाठ या पाठांश का अनुवाद एक साथ होता है। अनुवादक लक्ष्य भाषा(अंग्रेजी) की प्रकृति के अनुसार अनुवाद करता है। पर स्रोत भाषा (हिंदी) की सांस्कृतिक प्रकृति का भी बदस्तूर ध्यान रखता है। अनुवाद करने से पहले कहानी को पहले पूरी तरह से समझना, उसे आत्मसात करना और कहानीकार की भावना को समझना होता है। तभी उसका सफल संप्रेषण अंग्रेजी में हो सकता है। अनुवादक कुछ छोड़कर और कुछ जोड़कर अनुवाद करता है। उदाहरण के लिए जाति वाचक संज्ञा के साथ विशेषण जोड़ सकता है। मुहावरों-कहावतों आदि को छोड़कर उनके जैसे शब्द और पद का प्रयोग कर लेता है। अनुवादक अनुवाद की मुश्किलों रणनीति बनाकर उन्हें चुनौती की तरह लेता है। इस तरह हिंदी से अंग्रेजी में किसी कहानी का अनुवाद भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों को सहेजते हुए करना असरदार रहता है।

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

- ज्ञान के साहित्य के अनुवाद में जहां शब्द प्रति शब्द अनुवाद की गुंजाइश होती है, वहाँ सर्जनात्मक साहित्य में यह आसान नहीं होता।
- हिंदी कहानी का अंग्रेजी कहानी के रूप में अनुवाद करने का मतलब है, मूल कहानी के परिवेश, मुहावरे और सांस्कृतिक-सामाजिक वातावरण को अंग्रेजी पाठक के अनुकूल करना।
- शब्द-प्रति-शब्द की बजाय वाक्य-दर-वाक्य और वाक्य-दर-वाक्य की अपेक्षा इकाई दर इकाई अनुवाद बेहतर होता है।
- सम्पूर्ण कहानी को कई अनुवाद यूनिटों में बाँटकर अनुवाद करना बेहतर होगा।
- अनुवाद सिद्धांतों को जानना एक बात है, और अनुवाद करना दूसरी बात।
- अच्छा अनुवादक समस्याओं को चुनौती की तरह लेता है और अनुवाद के लिए रणनीति बनाकर आत्मविश्वास से लबरेज होकर आगे बढ़ता है।

13.6 शब्द संपदा

1. विकोडीकरण - कोई पाठक जब किसी पाठ को पढ़ता है तो उसका अर्थ समझने के लिए उसका कोडीकरण करता है। फिर वह अनुवाद करता है।

अनुवादक उस पाठ का अर्थ ग्रहण करने के लिए उस पाठ का विकोडीकरण करता है, जो कोड की समानता होने पर ही संभव है।

- | | | |
|-------------|---|--------------------------------------------------------------------------|
| 2. आत्मसात | - | मन में उतारना और अच्छी तरह से समझना। |
| 3. रूढ़ि | - | परंपरा; प्रथा, वह शब्दशक्ति जिससे शब्द अपने रूढ़ अर्थ का ज्ञान कराता है। |
| 4. डाह करना | - | जलन, ईर्ष्या, हसद, कीना |
| 5. अवस्थान | - | स्थिति, स्थान, जगह, वास, निवासस्थान |

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड -(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

- क) 'कहानी के अनुवाद को पुनः सृजन या नव सृजन भी कहा जाता है।' हिंदी-अंग्रेजी कहानी अनुवाद के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए।
- ख) हिंदी अंग्रेजी कहानी अनुवाद के भाषिक और सांस्कृतिक स्तर पर उदाहरण देते हुए टिप्पणी कीजिए।
- ग) हिंदी कहानी का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय किन उपायों या युक्तियों को काम में लाया जा सकता है। तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
- घ) आशय के अनुवाद से आप क्या समझते हैं ?

खंड -(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित कथा अंशों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

- 1) एक राजा है। उसकी दो रानियाँ हैं। एक को बड़ा है, दूसरी को नहीं है। जिसको नहीं है, वह डाह करती है। बड़े को मरवाने का उपाय करती है। किसी को धन देती है। पर धन लेनेवाली औरत बड़े को मारती नहीं। किसी जानवर के खून से रँगा बड़े का कपड़ा दिखा देती है। वह बड़ा बड़ा होता है। फिर वही अंत में राज्य का मालिक हो जाता है। राज्य पर चढ़ाई होती है तो राजा की सहायता करता है। अंत में राज्य का मालिक हो जाता है। पर अपनी सौतेली माँ से बदला नहीं लेता है। जब नौकरानी के माध्यम से सारी बातें खुल जाती हैं तो उसके पिता सौतेली माँ को जिंदा गड़वाने जाता है। पर लड़का उसे बचा लेता है। नेकी नेक राह बदी बद राह।

2) "बन्दी!"

"क्या है? सोने दो।"

“मुक्त होना चाहते हो?”

“अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।”

“फिर अवसर न मिलेगा।”

“बड़ा शीत है, कहीं से एक कम्बल डालकर कोई शीत से मुक्त करता।”

“आँधी की सम्भावना है। यही अवसर है। आज मेरे बन्धन शिथिल हैं।”

“तो क्या तुम भी बन्दी हो?”

“हाँ, धीरे बोलो, इस नाव पर केवल दस नाविक और प्रहरी हैं।”

“शस्त्र मिलेगा?”

“मिल जायगा। पोत से सम्बद्ध रज्जु काट सकोगे?”

“हाँ।” (‘आकाशदीप’ - जय शंकर प्रसाद)

3) अंगहीन धनी

एक धनिक के घर उसके बहुत से प्रतिष्ठित मित्र बैठे थे। नौकर बुलाने को घंटी बजी। मोहना भीतर दौड़ा, पर हँसता हुआ लौटा।

और नौकरों ने पूछा, “क्यों बे, हँसता क्यों है?”

तो उसने जवाब दिया, “भाई, सोलह हट्टे-कट्टे जवान थे। उँ सभी से एक बत्ती न बुझे। जब हम गए, तब बुझे।” (अंगहीन धनी- भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

4) सुखदेव ने ज़ोर से चिल्ला कर पूछा—‘मेरा साबुन कहाँ है?’ श्यामा दूसरे कमरे में थी। साबुनदानी हाथ में लिए लपकी आई, और देवर के पास खड़ी हो कर हौले से बोली—‘यह लो।’ सुखदेव ने एक बार अँगुली से साबुन को छू कर देखा, और भँवें चढ़ा कर पूछा—‘तुमने लगाया था, क्यों?’ (साबुन-द्विजेन्द्रनाथ मिश्र ‘निर्गुण’)

5) निम्नलिखित कहानी शीर्षकों के दो दो अनुवाद कीजिए।

पंच-परमेश्वर, हार की जीत, सिक्का बदल गया, परीक्षा, गिल्ली-डंडा, उसने कहा था, तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम।

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

क) हिंदी कहानी का अंग्रेजी कहानी के रूप में अनुवाद करते वक्त सबसे पहले अनुवाद करना चाहिए।

1) कहानी के शीर्षक का 2) कहानी के कठिन शब्दों का 3) कहानी के आशय का 4) कहानी के कोड का

ख) 'बाबाजी का भोग' शीर्षक का कौनसा अनुवाद भारतीय संस्कृतिनिष्ठ है?

1) Babaji's Feast 2) -A mendicant's alms 3) A friar's feast 4) A feast for the holy man

ग) 'ईदगाह' शीर्षक का कौनसा अनुवाद अंग्रेजी संस्कृतिनिष्ठ है?

1) Festival of Eid 2) Eidgah 3) Prayer Ground 4) Hamid and Amina

घ) 'उसने कहा था' शीर्षक का कौनसा अनुवाद आकर्षक नहीं लगता?

1) The Promise 2) What she said 3) Sardarni 4) Jab They met

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

क) पहले अवस्थान में अनुवादक को कृति को _____ करना होता है।

ख) कहानी में जो _____ है वह अनुवाद में भी रहना चाहिए।

ग) अनुवादक _____ की प्रकृति के अनुसार अनुवाद करता है।

घ) कहानी के कथ्य को दूसरी भाषा में पेश करने को _____ कहते हैं।

III. सुमेल कीजिए

अ) कान फोड़ क) The Good Earth

आ) बयानिया ख) The Fall

इ) पतन ग) Deafening

ई) भारत माता घ) Narrative

12.8 पठनीय पुस्तकें

13.8 पठनीय पुस्तकें

अनुवाद विज्ञान की भूमिका: कृष्ण कुमार गोस्वामी

अनुवाद कला: एन. ई। विश्वनाथ अच्युर

अनुवाद: परंपरा और प्रयोग : गोपाल शर्मा

Premchand in Translation: Gopal Sharma

इकाई 14 : अंग्रेजी हिंदी कहानी अनुवाद

अंग्रेजी हिंदी कहानी अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मूल पाठ

14.3.1 अंग्रेजी हिंदी कहानी सैद्धांतिक आधार

14.3.2 “हाफ ए डे” अंग्रेजी कहानी का अंश

14.3.3 अनुवाद का विवेचन और विश्लेषण

14.3.4 ‘केजिज़’ अंग्रेजी कहानी का अंश

14.3.5 अंग्रेजी कहानी के हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

14.4 पाठ सार

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

14.6 शब्द संपदा

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में आपने सर्जनात्मक अनुवाद का जमकर अभ्यास किया है। पद्धति (कविता) का अनुवाद बेशक ज्यादा सावधानी की मांग करता है, पर गद्य (निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास) का अनुवाद भी चुनौती भरा होता है। उपन्यास का अनुवाद तो बड़ी बात है, किन्तु किसी कहानी का अनुवाद करना भी कोई छोटी बात नहीं। इस इकाई में अंग्रेजी से हिंदी में कहानी के अनुवाद की चर्चा की जानी है। अंग्रेजी कथा साहित्य (उपन्यास-कहानी) का हिंदी में लगातार अनुवाद किया जाता रहा है। भारतेन्दु युग में हिंदी जब नई चाल में ढल रही थी, तब से अंग्रेजी से अनुवाद का सिलसिला जारी है। इस इकाई का खास ध्यान इस बात पर है कि अंग्रेजी कहानी का हिंदी में बेहतर अनुवाद कैसे किया जा सकता है। अनुवाद क्या है से ज्यादा आपको यह पहले जानना चाहिए कि अंग्रेजी कहानी का हिंदी कहानी के रूप में अनुवाद कैसे किया जाए। वे कौन सी रुकावें हैं जो अनुवादक को परेशान और हैरान करती हैं। इनसे पार पाने का उपाय क्या है। अलग अलग कहानियों के कुछ अंशों को मिसाल के तौर पर सामने रखकर बात की जाएगी। इससे समझना आसान होगा।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के पाठ से आप

- अंग्रेजी कहानी का हिंदी कहानी के रूप में अनुवाद करने के बारे में जान सकेंगे।
- कहानियों के अनुवाद में किन भाषिक और संस्करतिक तत्वों का ध्यान रखना चाहिए।
- यह भी जान सकेंगे कि कहानी के अनुवाद की समस्याएं और चुनौतियाँ क्या हैं।
- अनुवाद इन समस्याओं और चुनौतियों को हल करने के लिए क्या उपाय कर सकते हैं।

14.3 मूल पाठ अंग्रेजी हिंदी कहानी अनुवाद

14.3.1 अंग्रेजी हिंदी कहानी अनुवाद सैद्धांतिक आधार

शुरुआत कैसे करें? क्या आपको यह बताना आपके किसी काम आएगा कि अंग्रेजी कहानियों के अनुवाद हिंदी में होते रहे हैं और होते रहेंगे? नजीब महफूज (1911-2006) और अब्दुल रजाक गुरनाह (1948-) का नाम आपने सुना होगा। ये दोनों नोबेल पुरस्कार पाने वाले दो नगमा निगार हैं। पहले मिश्र के हैं और अरबी भाषा में लिखते थे। दूसरे जंजीबार में पैदा हुए और अंग्रेजी में लिखते हैं। ये विश्व साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार हैं। आप इनके लिखे को एक तो इनकी भाषा में पढ़ सकते हैं दूसरे अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से। अनुवाद एक ऐसा जरिया है जो पूरी दुनिया को एक साथ जोड़ता है। जब हम कोई विदेशी कहानी पढ़ते हैं तो लगता है कि दुनिया में सब लोग एक जैसे और हमारे जैसे ही होते हैं। सब कहानियों में एक ही बात है। मनुष्यता और आदमीयत सबके केंद्र में है।

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद की इस इकाई में क्यों न हम इन दोनों की एक एक कहानी के कुछ अंशों को लेकर चर्चा करें? हम ऐसा करेंगे कि पहले तो जिन दोनों कहानीकारों की यहाँ चर्चा की जा रही उनकी अंग्रेजी कहानी को पूरी तरह से पढ़ कर समझ लेंगे। इस इकाई में ये कहानियां समूची नहीं दी जा सकतीं। पर इनको आप इनके रचनाकार का नाम देकर गूगल से प्राप्त कर सकते हैं। एक बार जब आप कहानी को अच्छी तरह पढ़ लेंगे तो आपको खुद यह तमन्ना होगी कि इनका अनुवाद किया जाए और अपने लोगों को उसे पढ़वाया जाए।

दूसरा कदम यह होगा कि हम एक अंग्रेजी कहानी को पढ़कर कुछ छोटे छोटे हिस्सों में बाँट लें। लगभग एक सदी पहले 1931 में अनुवाद पर व्याख्यान देते हुए हिलैरे बेलोक (Hilaire Belloc) ने कहा था, “मेरा मानना है कि अनुवादक को ‘वाक्य-दर-वाक्य’, और ‘शब्द दर शब्द’, से आगे बढ़ना चाहिए, हमेशा अपने अनुवाद को “निर्धारित” (ब्लॉक आउट) करना चाहिए। जब मैं “ब्लॉक आउट” कहता हूँ तो मेरा मतलब है कि उसे अनुवाद शुरू करने से पहले उसकी सामग्री को मूल रूप में समग्र रूप से समझने के लिए उसे बड़े पैमाने पर पढ़ना चाहिए, और उसके बाद, जब अनुवाद किया जा रहा हो, तो उसे कम से कम खंड दर खंड, पैराग्राफ दर पैराग्राफ लेना चाहिए और पहले खुद से पूछना चाहिए कि इस खंड का वास्तव में अभिप्राय क्या है। प्रत्येक

खंड या अंश को किसी अन्य भाषा में पुनः प्रस्तुत करने से पहले उसे खुद को समझाना होता है कि संपूर्ण इकाई का प्रभाव उसके पाठकों पर क्या हो सकता है।

अंग्रेजी भाषा और हिंदी भाषा दोनों एक ही भाषा परिवार की भाषाएं होने के बावजूद बहुत अलग हैं। अंग्रेजी का एक आम वाक्य 'I love you.' हिंदी में जाकर 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ' हो जाता है। पर बात इतनी आसान भी नहीं है। अंग्रेजी में you केवल एक शब्द है, पर हिंदी में तीन हैं - तुम, तू, आप। 'को भी लोग 'मैं', 'अपन', और 'हम' आदि कहते हैं। अंग्रेजी के 'love' के लिए भी प्रेम, मुहब्बत, अनुराग, इश्क आदि दर्जनों शब्द हैं। यहीं नहीं इस वाक्य को यदि कोई पुरुष कहता है तो अंत में 'ता हूँ' होगा। दूसरी तरफ यदि कोई स्त्री कहती है तो अंत 'ती हूँ' होगा। ये कुछ सावधानियाँ हैं जिनका ध्यान रखना आम अनुवादक के लिए भी हर बार इतना आसान नहीं होता है।

एक दूसरी समस्या नामों को लेकर आती है। किसी अंग्रेजी कहानी में आए जितने भी संज्ञा शब्द होते हैं उनका हिंदी में अनुवाद करते वक्त अनुवादक अनुमान से काम चलाता है। उसका अंदाजा गलत भी हो सकता है और सही भी। उदाहरण के लिए "Dakar" को वह 'डकार' कहे या कुछ और? (यह सेनेगल की राजधानी है।) आप खुद देख लें कि परेशानी कोई मामूली नहीं। आज जब दुनिया के दर्जनों देशों के लेखक अंग्रेजी में लिख रहे हैं और उनका लिखा बरास्ते अंग्रेजी आ रहा है तो हिंदी में अनुवाद करते वक्त अनुवादक क्या करे? उदाहरण के लिए "Ngugi", 'Guthera', 'Tolstoy', 'Chinua Achebe' आदि को हिंदी में कैसे ढालेंगे? अचानक ये नाम किसी को कोई एक चिट पर लिख कर दे दे तो उसे यह भी समझ न आएगा कि इनमें से व्यक्ति, कौन है और वस्तु या स्थान कौन?

तीसरी समस्या को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हम पहले से ही जानते हैं कि जो अनुवाद मूल के सबसे करीब होता है वह सबसे अधिक सफल माना जाता है। कहानी में एक संपूर्ण-काल्पनिक संसार पेश किया जाता है। अनुवादक को केवल भाषाई तुल्यता के बारे में चिंता करने के बजाय अपनी भाषा में इस काल्पनिक दुनिया का निर्माण करना होगा। ऐसा करने के लिए, अनुवादक को मुक्त अनुवाद(फ्री ट्रांसलेशन) करना होगा। इसके लिए कुछ युक्ति या तरकीब अपनानी होगी। महफूज की एक कहानी का शीर्षक है 'half a day'. अंग्रेजी के इस शीर्षक का हिंदी में अनुवाद क्या 'आधा दिन' उपयुक्त रहेगा? आप जानते होंगे कि हिंदी की पहली आत्मकथा का शीर्षक 'अर्थ कथानक' है। बहुत सोच समझकर इसके लेखक ने यह नाम 'अर्ध कथानक' रखा होगा क्योंकि जब लेखक यह किताब लिख रहा था तब उसकी उम्र पचास बरस से ज्यादा हो गई थी। 'God of small things' हिंदी में अनूदित होकर कैसे 'मामूली चीजों का देवता' हो जाता है, यह सोचने-समझने वाली बात है।

एक दूसरी समस्या आती है, वाक्य-दर-वाक्य आती है। 'Half a day' कहानी का तीसरा वाक्य है-All my clothes were new: the black shoes, the green school uniform, and

the red tarboosh. इस वाक्य का अनुवाद करने में एक शब्द खासी मुश्किल पैदा करता है। वह शब्द है 'tarboosh'। वाक्य को पढ़ने से यह अंदाज होता है कि यह बालक स्कूल जा रहा है तो लाल रंग की 'टाई' लगाए होगा। पर यह शब्द 'टाई' नहीं बल्कि एक खास तरह की टोपी है। कपड़े की एक लटकन वाली टोपी, जो आमतौर पर लाल होती है, जिसे मिश्र देश के लोग अकेले या पगड़ी के अंदरूनी हिस्से के रूप में पहनते हैं। यह 'तारबुश' है या 'तरबुश' है, कैसे पता चलेगा? आप जब अनुवाद करेंगे तो इस समस्या का निदान कैसे करेंगे? फिर किया क्या जाए? क्या ऐसे शब्दों की फेहरिश बनाकर कहानी के अंत में जोड़ दिया जाए? और उनके अर्थ चित्र सहित दे दिए जाएं। यदि फिलहाल तीन सुझाव दिए जाएं तो इन सुझावों पर गौर किया जा सकता है।

1. हमें शाब्दिक और मुक्त अनुवाद के बीच संतुलन करने की जरूरत है। अनुवादक को पता होना चाहिए कि कब शाब्दिक अनुवाद करना है और कब शब्द-क्रम बदलना है, शब्दों को जोड़ना या हटाना है, वाक्य-संरचना को बदलना है आदि।
2. मूल पाठ में उनके उपयोग के अनुसार मानक भाषा और बोली रूपों के बीच बदलाव करना होगा। पैरों में पहनने के लिए जूते, चप्पल, खड़ाऊँ, पद-त्राण, उपानह आदि बहुत से शब्द हिंदी में हैं। अंग्रेजी के 'शूज' आदि का अनुवाद करते वक्त इस तरह की जानकारी बहुत काम आती है।
3. अनुवादक को मूल कहानीकार द्वारा अपने लेखन में प्रयुक्त शैलीगत परिवर्तनों या बदलावों का भी प्रभावी ढंग से 'अनुवाद' करना होगा।

अंग्रेजी से हिंदी में हो या हिंदी से अंग्रेजी में हो, कहानी के अनुवाद में भाव-भंगिमाओं, शैली की बारीकियों, बहुत से अर्थों, अनेक प्रतीकों, बिंबों, अलंकारों, मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों आदि का ठीक या उपयुक्त अनुवाद करने की चुनौती अनुवादक के सामने हमेशा रहती है। इसके लिए अनुवादक को दोनों समाजों, संस्कृतियों और भाषाओं पर पूरी पकड़ होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो अनुवाद बढ़िया नहीं हो सकेगा। अनुवादक को एक ओर तो मूल कहानी के प्रति वफादारी निभानी पड़ती है, दूसरी ओर उसे दूसरी भाषा में सहजता, स्पष्टता और बोधगम्यता को भी बनाए रखना होता है। अनुवादक कुछ छूट जरूर लेता है, पर वह मूल पाठ से बेर्इमानी नहीं कर सकता।

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय हमें अर्थ की पहचान सबसे जरूरी है। एक ही शब्द अनेक अर्थों में अपनी भाषा में रूढ़ हो जाता है। अंग्रेजी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय ही सटीक नहीं होते तो उनका हिंदी में अर्थ क्या हो सकेगा।

बोध प्रश्न

- ब्लॉक आउट से क्या अर्थ निकलता है?
- फ्री ट्रांसलेशन में 'फ्री' क्या है?

14.3.2 'हाफ ए डे' अंग्रेजी कहानी का अंश

नजीब महफूज़ एक मिस्री लेखक व साहित्यकार थे जिन्होंने सन् 1988 में साहित्य के लिए नोबेल नोबेल पुरस्कार जीता। अपने 70 साल के लेखन में उन्होंने 34 उपन्यास, 350 कहानियाँ, दर्जनों फ़िल्मों की पटकथाएँ और पाँच नाटक लिखे। 'हाफ ए डे' कहानी का केंद्रीय रूपक आदमी की औकात पर एक टिप्पणी है। कहानीकार ने जीवन की पाठशाला में संपूर्ण जीवन काल को केवल "आधे दिन" के रूप में अनुभव किया है। कहानी जीवन -चक्र की ओर भी इशारा करती है, जिसके तहत कहानीकार एक दिन के दौरान बचपन, अधेड़-अवस्था और बुद्धिप्रे से एक साथ गुजरता है।

अब आप इस कहानी के शुरुआती अंश का वाक्य-दर वाक्य का अनुवाद देखें और गौर करें।

1. I proceeded alongside my father, clutching his right hand, running to keep up with the long strides he was taking.
 2. All my clothes were new: the black shoes, the green school uniform, and the red tarboosh.
 3. My delight in my new clothes, however, was not altogether unmarred, for this was no feast day but the day on which I was to be cast into school for the first time.
1. मैं अपने पिता का दाहिना हाथ थामे उनके लंबे कदमों के कदम मिलाते हुए आगे बढ़ता जा रहा था।
 2. मेरे सभी कपड़े नए-नकोर थे: काले जूते, हरे रंग की स्कूल यूनिफॉर्म, और सिर पर लाल रंग की तारबोश तुर्की टोपी।
 3. हालाँकि, अपने नए कपड़ों को लेकर मेरी खुशी पूरी तरह से आधी-अधूरी नहीं थी, क्योंकि यह कोई दावत का दिन नहीं था बल्कि यह वह दिन था जिस दिन मुझे पहली बार स्कूल में दाखिला मिलना था।

इन तीन वाक्यों के अनुवाद में दो तीन बातें तो एक दम शीशे की तरह साफ हैं। अनुवादक शब्द प्रति शब्द अनुवाद नहीं कर रहा। यह अनुवाद मूल के नजदीक जरूर है, पर कई शब्दों की व्याख्या भी करता है। वह मूल लेखक के भाव के अनुकूल है। दूसरी तरफ वह हिंदी के पाठक को किसी उलझन में नहीं रखना चाहता। इस खातिर वह अंग्रेजी शब्दों (स्कूल यूनिफॉर्म) और अरबी शब्दों (तारबोश) को ज्यों का त्यों ही नहीं रखता, वह उनको व्याख्यायित भी करता है।

बोध प्रश्न

- इसी कहानी के अगले अंश का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद ध्यान से पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए।

My mother stood at the window watching our progress, and I would turn toward her from time to time, as though appealing for help. We walked along a street lined with gardens; on both sides were extensive fields planted with crops, prickly pears, henna trees, and a few date palms.

मेरी माँ खिड़की पर खड़ी होकर हमें जाते हुए देख रही थी, और मैं बार-बार उनकी ओर मुड़ता था, जैसे कि मदद की अपील कर रहा हूँ। हम दोनों ओर बाग-बगीचों से सजी सड़क पर चले जा रहे थे। दोनों तरफ बड़े-बड़े फ़सली खेत फैले हुए थे जिनमें कंटीली नाशपाती, मेंहदी की झाड़ियाँ और खजूर के कुछ पेड़ लगे हुए थे।

- इसी कहानी के इस अंश के अनुवाद को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

“Why school?” I challenged my father openly. “I shall never do anything to annoy you.” “I’m not punishing you,” he said, laughing. “School’s not a punishment. It’s the factory that makes useful men out of boys. Don’t you want to be like your father and brothers?

“स्कूल क्यों?” मैंने अपने पिता को खुली चुनौती दी। “मैं आपको दिक करने के लिए कभी कुछ नहीं करूँगा।”

उन्होंने हँसते हुए कहा, “मैं तुम्हें सज्जा नहीं दे रहा हूँ।” “स्कूल में दाखिल होना कोई सज्जा नहीं है। स्कूल वह कारखाना है जो लड़कों को कामयाब मर्द बनाता है। क्या तुम अपने पिता और भाइयों की तरह नहीं बनना चाहते?”

- अनुवाद में ‘सज्जा’, ‘कामयाब’, ‘मर्द’, ‘दिक करना’ आदि शब्दों का प्रयोग अनुवादक क्यों करता है?
- इनके बजाय ‘दंड’, ‘सफल’, ‘पुरुष’ और ‘परेशान करना’ आदि शब्दों का प्रयोग क्यों नहीं करता?

14.3.3 अनुवाद का विवेचन और विश्लेषण

उपरोक्त अनूदित पाठ को आपने गौर देकर पढ़ा और उसके बाद बोध प्रश्नों के उत्तर भी दिए। आपको कुछ तो समझ में आ गया होगा कि अनुवादक प्रायः शब्दशः अनुवाद (लिटरल ट्रांसलेशन) नहीं करते। वे अपनी मर्जी से कोई परिवर्तन नहीं करते, बल्कि वे यह परिवर्तन अनुवाद के पाठक के लिए करते हैं। इससे पाठक को सुविधा हो जाती है। इस बात को आप इस उदाहरण से समझ सकते हैं।

I was not convinced. I did not believe there was really any good to be had in tearing me away from the intimacy of my home and throwing me into this building that stood at the end of the road like some huge, high-walled fortress, exceedingly stern and grim.

मैं आश्वस्त नहीं था। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि मुझे मेरे घर की अंतरंगता से दूर कर इस इमारत में फेंकने में वास्तव में कोई भलाई थी जो सङ्क के अंत में किसी विशाल, ऊँची दीवारों वाले किले की तरह खड़ी थी, जो बेहद कठोर और गंभीर थी।

इस अनुच्छेद में केवल दो वाक्य हैं। पहला वाक्य बहुत छोटा है। दूसरा वाक्य कुछ लंबा है। पहला वाक्य है- I was not convinced. इसका अनुवाद अनुवादक ने 'मैं आश्वस्त नहीं था" किया है। क्या आपको 'convinced' का अनुवाद उपयुक्त (relevant) लगा? यदि हाँ तो क्यों यदि नहीं तो क्यों नहीं? इस शब्द का अर्थ 'भरोसा', 'कायल' आदि भी हो सकता है। अनुवादक को ध्यान रखना होता है कि अनुवाद में मूल भाषा की महक भी हो। इस कहानी के कहानीकार अरबी भाषी हैं इसलिए अनुवादक यदि अपने अनुवाद में अरबी भाषा के कुछ शब्द या उर्दू के कुछ शब्दों का प्रयोग करे तो यह ठीक लगेगा। इसे देरिदा जैसे बड़े अनुवाद चिंतक 'उपयुक्तता' कहते हैं।

अब आप दूसरे वाक्य को देखें। मूल पाठ में यह बहुत बड़ा वाक्य है। व्याकरण के लिहाज से यह मिश्रित वाक्य है। इसका अनुवाद करते वक्त अनुवादक ने 'इमारत' शब्द का प्रयोग जरूर किया है पर यह अनुवाद बड़ा अटपटा दिखाई देता है। इसका अर्थ भी कुछ खुल नहीं रहा है। इसलिए यह ठीक रहेगा कि वाक्य को तोड़ दिया जाए। इस एक वाक्य को दो या तीन वाक्यों में तब्दील कर दिया जाए।

यह भरोसे लायक बात न थी कि घर की अपनापन भरी चहल पहल से मुझे इन ऊँची दीवारों के पार फेंक दिया जाए। सङ्क के उस पार किले जैसी मजबूत और पुख्ता स्कूल नाम वाली इस इमारत में मुझे फेंके जाने में भलाई थी?

यह अर्थ का अनुवाद है। अभिप्राय या भावार्थ का अनुवाद है। जिस प्रक्रिया से एक मिश्रित या मिश्र वाक्य को कई सरल वाक्यों में बदलकर अनुवाद किया जाता है उसे डिवर्बलाइजेशन अर्थात् 'अभाषीकरण' कहते हैं। इसके अनुसार अनुवादक को सबसे पहले मूल पाठ की संरचनाओं से निजात पाकर पाठ के संज्ञानात्मक (cognitive) स्तर पर पहुंचना होता है। इसके बाद 'शब्दों का नहीं बल्कि उन शब्दों के भाव का अनुवाद किया जाता है। किसी भाषा से ज्यों के त्यों लिए गए 'लोन ट्रांसलेशन' तथा 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' (शब्द के स्थान पर शब्द) जैसे अनुवादों से बचने का तरीका यही है। अंग्रेजी कहानी का हिंदी अनुवाद करते वक्त यदि अनुवादक इतना ही कर ले कि अंग्रेजी के कथ्य को हिंदी में पेश कर दे तो बात बन सकती है। अनुवादक को अंग्रेजी के भाषिक संरचनाओं के परे जाना ही होगा। हिंदी की अपनी संरचनाओं

का सहारा लेकर अनुवाद करना होगा। याद रखना होगा कि हर अनुवादक का अपना एक सर्जनात्मक रवैया भी होता है। मूल लेखक के प्रति ईमानदार होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं कि सब कुछ का सब कुछ में अनुवाद करना पड़ेगा। अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद को ऐसा होना चाहिए कि वह पाठक को अपनी भाषा में अनूदित कहानी लगे।

बोध प्रश्न

- अभाषीकरण का अर्थ एक उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
- आपकी नजर में उपयुक्त अनुवाद क्या है?

14.3.4 "Cages" अंग्रेजी कहानी का अनुवाद

अब एक दूसरे कहानीकार की एक कहानी का एक अंश आपके सामने है। यह अंग्रेजी में लिखी गई कहानी है। अब्दुल रज्जाक गुरनाह (1948-) तंजानिया में जन्मे साहित्यकार हैं। उनका जन्म तंजानिया में हुआ था और 1960 के दशक में वे शरणार्थी के रूप में यूनाइटेड किंगडम चले गए थे। उन्हें 2021 में "उपनिवेशवाद के प्रभावों और संस्कृतियों और महाद्वीपों के बीच की खाई में शरणार्थियों के भाग्य के बारे में उनके अडिग और विनम्र हस्तक्षेप के लिए" साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इनकी यह कहानी है जिसका शीर्षक 'cages' है। इसका प्रारम्भिक अंश पढ़िए।

Sometimes, Hamid has the illusion that he has been in this little shop for a long, long time and will spend the rest of his life here. He no longer felt that the days were difficult, and in the dead of night he did not hear the whispers that had frightened him again. Now he knew that the sound was coming from a swamp full of worms. It was those seasonal swamps that separated the urban areas from the townships. The small shop is in a good location right at a main intersection leading to the city. Every morning, the first rays of dawn appeared, and the earliest workers dragged their heavy steps through the time, and the shop opened its doors.

अब इसके हिंदी अनुवाद पर गौर कीजिए।

अनूदित पाठ

कभी-कभी हामिद को यह भ्रम होता है कि वह काफी समय से इस छोटी सी दुकान में है और अपनी बाकी जिंदगी यहीं गुजारेगा। उसे अब महसूस नहीं होता कि बीते दिन तकलीफदेह थे, और रात के सन्नाटे में अब वह इन फुसफुसाहटें नहीं सुनता जो उसे बार बार डरा देती थी। अब उसे पता चला कि आवाज़ लिजलिजे रेंगने वाले कीड़ों से भरे दलदल से आ रही थी। यह वह मौसमी दलदल थी जो शहरी क्षेत्रों को बाहरी क्षेत्रों से अलग करती थी। छोटी सी यह दुकान

शहर की ओर जाने वाले मुख्य चौराहे पर एक अच्छी जगह पर है। पौं फटते ही जब पहली शिफ्ट के कर्मचारी अपने भारी कदमों को धकेलते हुए आते थे तो दुकान उनके स्वागत में दरवाजे खो देती थी।

यह 'पिंजरे' नामक कहानी का पहला अनुच्छेद है। यह कैसा अनुवाद है, यह जाँचना उस आम पाठक का काम नहीं जो हिंदी में एक ऐसे कहानीकार की कहानी पढ़ रहा है जिसे साहित्य का नोबेल पुरस्कार अभी अभी मिला है। वह तो हिंदी में यह कहानी पढ़कर ही खुश हो लेता है। इस अनुवाद से उसका काम चल सकता है। सारी दुनिया में गुरनाह की कहानियों और उपन्यासों को पढ़ने की मांग इसी वजह से बढ़ी है।

अब आप अपनी बात करें। आप अंग्रेजी कहानी का हिंदी कहानी के रूप में अनुवाद का अध्ययन कर रहे हैं। आपका काम इतने से ही चलने वाला नहीं। आप तो इस अनुवाद की जाँच करना चाहेंगे। आप कुछ कमी खोजना चाहेंगे। दूसरे यह भी देख लेंगे कि इस अनुवाद की खासियत क्या है। आप सरसरी तौर पर यह भी देखेंगे कि क्या अनुवादक ने हिंदी में अनुवाद करते समय कई शब्दों को अपनी ओर से जोड़ा है। जैसे उसने 'पौं फटने' का प्रयोग किया है। 'लिजलिजे' शब्द को अपनी तरफ से जोड़ा है। इसके लिए मूल में कोई शब्द नहीं है। आप दो चार ऐसी दूसरी बातें खुद भी देख सकते हैं।

बोध प्रश्न-

- कहानी के आम पाठक और अनुवाद-अध्येता अनुवाद को कैसे अलग अलग देखते हैं?
- गुरनाह की कहानी के हिंदी अनुवाद की एक खासियत और एक भूल का पता लगाइए।

14.3.5 अंग्रेजी कहानी के अनुवाद की चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

अंग्रेजी कहानी का हिंदी अनुवाद करते वक्त उसके सामने एक निश्चित उद्देश्य होता है। अनुवादक का उद्देश्य अपने हिंदी पाठक को मूल हिंदी कहानी का स्वाद और अनुभव साझा करना होता है। अनुवाद के संदर्भ में कविता का अनुवाद लगभग असंभव ही माना जाता है। पर कहानी के अनुवाद में असंभव की जगह संभावना ले लेती है। अनुवाद के दौरान अनुवादक को मूल लेखक की मनस्थिति तक पहुंचना होता है। और चूंकि अंग्रेजी भाषा की मूल संस्कृति हिंदी समाज की संस्कृति से भिन्न है, इसलिए अनुवादक को खासा सचेत रहना होता है। अनुवादक को अनुवाद करते वक्त यह भी ध्यान रखना होता है कि अनुवाद उनके लिए नहीं किया जा रहा जो अंग्रेजी भाषा को समझते हैं और मूल कहानी को पढ़ सकते हैं। नाइजीरीयाई कथाकार चिनुआ अचेबे(1903-2013) की एक अंग्रेजी कहानी 'Dead Men's Path' है। 'मृतकों का मार्ग' शीर्षक से इसका हिंदी में अनुवाद सुशांत प्रिय ने किया है। पहले इस कहानी के बीच का एक अंश पढ़ें। इस भाग को सुविधा के लिए वाक्यों में बाँट कर देखते हैं।

1. Three days later the village priest of Ani called on the headmaster.
2. He was an old man and walked with a slight stoop.

3. He carried a stout walking-stick which he usually tapped on the floor, by way of emphasis, each time he made a new point in his argument.
 4. "I have heard," he said after the usual exchange of cordialities, "that our ancestral foot-path has recently been closed. . . ."
 5. "Yes," replied Mr. Obi. "We cannot allow people to make a highway of our school compound."
 6. "Look here, my son," said the priest bringing down his walking-stick, "this path was there before you were born and before your father was born. The whole life of this village depends on it. Our dead relatives depart by it and our ancestors visit us by it. But most important, it is the path of children coming in to be born."
 7. Mr. Obi listened with a satisfied smile on his face.
1. तीन दिनों के बाद उस कबीलाई गाँव का पुजारी ऐनी प्रधानाचार्य ओबी से मिलने आया।
 2. वह एक बूढ़ा और थोड़ा कुबड़ा आदमी था।
 3. उसके पास एक मोटा-सा डंडा था।
 4. वह जब भी अपनी दलील से पक्ष में कोई नया बिन्दु रखता था तो अपनी बात पर बल देने के लिए आदतन उस डंडे से जमीन को थपथपाता था।
 5. शुरुआती शिष्टाचार के बाद पुजारी बोला, “मैंने सुना है कि हमारे पूर्वजों की पगड़ंडियों को हाल ही में बंद कर दिया गया है।”
 6. ‘हाँ, हम स्कूल- परिसर को सार्वजनिक रास्ता बनाने की इजाजत नहीं दे सकते” ओबी ने कहा।
 7. ‘देखो बेटा, यह रास्ता तुम्हारे पिता के जन्म के भी पहले से यहाँ मौजूद था। हमारे इस गाँव का पूरा जीवन इस पर निर्भर करता है। हमारे मृत संबंधी इस रास्ते से आते हैं और हमारे पूर्वज इसी मार्ग से होकर हमसे मिलने आते हैं। लेकिन इससे भी ज्यादा जरूरी बात यह है कि जन्म लेने वाले बच्चों के आने का भी यही रास्ता है।“
 8. श्री ओबी ने एक संतुष्ट मुस्कान के साथ पुजारी की बात सुनी।
- अब आप इस अनुवाद पर इस तरह से विचार करें कि आप खुद कुछ सीख सकें। आपने देखा कि अनुवादक ने सात वाक्यों की जगह आठ कर दिये हैं। क्यों? पहले ही वाक्य में अनुवादक ‘village priest’ का अनुवाद ‘कबीलाई गाँव का पुजारी’ करता है। दूसरे वाक्य में ‘walked with a slight stoop’ का अनुवाद ‘थोड़ा लंगड़ाकर चलता था’ के बजाय ‘कुबड़ा’ करता है।

अनूदित चौथे वाक्य में 'आदतन उस डंडे से जमीन को थपथपाता' के स्थान पर क्या 'उस डंडे से जमीन को आदतन थपथपाता' बेहतर होता? इस तरह यदि आप इस अनुवाद को अनुवाद के एक जिज्ञासु छात्र की निगाह से देखेंगे तो आपको कुछ सुझाव खुद ब खुद मिलते चले जाएंगे। जैसे यह सुझाव कि अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते वक्त कोशगत अर्थ से एक हद तक ही मदद मिल सकती है। इसलिए शब्द-संयोगों को देखकर उनमें छिपे अर्थ को ढूँढ़ लेने में ही समझदारी है। प्रख्यात अनुवादक और अनुवादवेत्ता गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक के ठीक ही सलाह दी है कि सांस्कृतिक रूप से भिन्न अंग्रेजी कहानी का अनुवाद करने का एकमात्र ईमानदार तरीका अपने समय और समझ से परे और आगे जाना है। बोध प्रश्न आपको इसमें और ज्यादा मदद करेंगे।

यह भी ध्यान रखना अति आवश्यक है कि अंग्रेजी यूँ तो आजकल भारत की ही एक भाषा हो गई है, फिर भी यदि भारत की दूसरी भाषाओं के साथ अंग्रेजी के शब्द विन्यास, व्याकरण व्यवस्था की तुलना की जाए तो इनके फासले का अंदाजा होने लग जाता है। भाषा-वैज्ञानिक कहते हैं कि हिंदी, उडिया, तेलुगु, तमिल, गुजराती आदि भारतीय भाषाएं सजातीय हैं और अंग्रेजी विजातीय। स्वजातीय या सजातीय भाषा (जैसे उर्दू-हिंदी) का आपसी अनुवाद जिस तरह से शिल्प और सांस्कृतिक संदर्भों को आसानी से अनूदित कर सकता है, वैसा विजातीय भाषा(अंग्रेजी-हिंदी)) के अनुवाद के दौरान आसानी से नहीं होता। अंग्रेजी कहानी के हिंदी में अनुवाद करते समय इस भाषा समाज (जिसमें मूल कहानी घटित हुई) की संस्कृति, मूल्यों, आदर्शों और जीवन पद्धतियों के अनुवाद को भी ध्यान में रखना होगा। यदि कोई कहानी अंग्रेजी में है तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि उसमें अंग्रेज़ियत जरूर होगी। भारत या भारतीय मूल का रचनाकार , अफ्रीकी कहानीकार या मध्य पूर्व का लेखक जब अंग्रेजी में कोई कहानी रचता है तो वह अपना संसार भी पेश करता है। हिंदी अनुवादक को इसका भी खास ध्यान रखना होगा। यदि प्रत्येक भाषा का एक पौराणिक आधार होता है, कुछ मिथकीय संदर्भ होते हैं तो इस समाज के भी ये आधार होते हैं जिसका वर्णन कहानीकार अपनी कहानी में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से करता है। इन सबका ध्यान रखकर ही हिंदी में अनुवाद बेहतर बन पड़ेगा।

बोध प्रश्न-

- इस अनुवाद में संस्कृति सूचक शब्दों की सूची बनाइए।
- जब इस कहानी के अनुवाद में बार बार 'रास्ता' शब्द आया है तो इसके शीर्षक में 'मार्ग' क्यों है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

14. 4 पाठ सार

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद बेतहाशा हो रहे हैं। विश्व साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकारों को हिंदी में पढ़ने का चलन नया नहीं है। अंग्रेजी हिंदी कहानी के अनुवाद में अनुवादक वाक्य-दरवाक्य और शब्द-प्रति-शब्द से आगे बढ़कर मूल पाठ को समग्र रूप से पढ़कर उसे छोटे छोटे अंशों या खंडों में बाँटकर अनुवाद करता है। हिंदी और अंग्रेजी एक ही भाषा परिवार (भारोपीय) की भाषाएं हैं पर भारत की दूसरी भाषाओं के मुकाबले एक स्वजातीय है और दूसरी विजातीय।

अंग्रेजी का वाक्य विन्यास (कर्ता -क्रिया -कर्म) और हिंदी का वाक्य विन्यास (कर्ता-कर्म-क्रिया) अलग अलग है। अंग्रेजी के संज्ञा शब्दों का अनुवाद चुनौतीपूर्ण है। इसलिए शब्दशः अनुवाद न करके मुक्त अनुवाद करते हुए कहानी की रोचकता को कायम रखा जाता है। कहानी के शीर्षक में भी अनुवादक अपना हुनर दिखाता है। कहानी के अनुवाद में पहले अनुवादक अंग्रेजी कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़ता है। उसकी आत्मा और कलेवर को पहचानकर फिर एक एक अनुच्छेद के आशय को समझते हुए अनुवाद करता है। अनुवाद करके फिर उसे खुद जाँचता है जिससे कहीं भी जाने-अनजाने में कोई चूक न हो गई हो। इस तरह अनुवादक मूल अंग्रेजी कहानी और उसके अनूदित पाठ के बीच एक संतुलित पुल बनाता है। अनुवादक को अंग्रेजी-हिंदी में मातृ-भाषा जैसी अव्वल दर्जे की महारत होने की इतनी जरूरत नहीं, जितनी निरंतर अभ्यास और उसके प्राप्त अनुभव की होती है।

14.8 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

1. अंग्रेजी से हिंदी में किसी कहानी का अनुवाद करना कविता के अनुवाद से आसान है।
2. कहानी के अनुवाद में शब्द-प्रति-शब्द के स्थान पर भाव, अभिप्राय और मंतव्य के अनुवाद पर जोर दिया जाता है।
3. कहानी के शीर्षक से लेकर संवादों और बातचीत में अनुवादक अंग्रेजी के कथन को हिंदी के कथन में बदलता है।
4. अनुवादक मूल अंग्रेजी कहानी को हिंदी में अनूदित करते हुए दोनों भाषाओं के पाठ के बीच संतुलन कायम करता है।
5. अनुवादक को अंग्रेजी भाषा में तो पैठ चाहिए ही, उससे बढ़कर उसे अनुवाद कार्य में अभ्यास करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।
6. अंग्रेजी कहानी को हिंदी अनुवाद के द्वारा पाठकों तक पहुँचाने के लिए अनुवादक को अपने पाठकों के प्रति निष्ठा रखनी होती है, कुछ नवीन देना होता है। दोनों भाषाओं, सभ्यताओं और संस्कृतियों और उनके भाषायी हुनर को पेश करना होता है।

14. 6 शब्द संपदा

भाषा परिवार- जिस प्रकार मनुष्यों का अपना वंश और परिवार होता है, ठीक उसी तरह भाषा का भी है। भारत में संसार के चार भाषा परिवारों- भारोपीय, द्रविड़, तिब्बत-बर्मी और आग्रेय की अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।

मक्षिका स्थाने मक्षिका- मक्खी की जगह मक्खी लिखना। मूल लेखक की मानकर 'मक्षिका स्थाने मक्षिका'(ज्यों का त्यों) लिखना कुछ अनुवादक अपना धर्म मानते हैं। बिना विचार किए शब्दानुवाद करने वाले अनुवादकों के लिए प्रायः 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' मुहावरे का इस्तेमाल किया जाता है।

मुक्त अनुवाद- मुक्त अनुवाद (free translation) वह अनुवाद है जो मूल पाठ के सामान्य अर्थ को फिर से प्रस्तुत करता है। यह मूल के स्वरूप का बारीकी से अनुसरण कर भी सकता है और नहीं भी।

पौं फटना- पौं फटना मुहावरे का अर्थ है – सुबह हो जाना। वह वाक्य या वाक्यांश जो अपना साधारण अर्थ छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, उसे मुहावरा कहते हैं। वाक्य में प्रयोग होते समय मुहावरा लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार अपना रूप बदल लेता है।

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. अंग्रेजी कहानी का हिंदी कहानी के रूप में अनुवाद करते समय आने वाली दो समस्याओं का उदाहरण सहित उल्लेख करते हुए उनके निदान का उपाय बताइए।
2. 'तरबुश, तारबुश, तरबॉश, तारबुश' आदि एक ही शब्द के अनेक संभावित हिज्जें हैं। अंग्रेजी कहानी में आए ऐसे शब्दों का हिंदी में अनुवाद करते समय आप किन युक्तियों को अपनाएंगे और क्यों?
3. "अनुवादक को 'वाक्य-दर-वाक्य', और 'शब्द दर शब्द', से आगे बढ़ना चाहिए।" अंग्रेजी हिंदी कहानी के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए।
4. किसी अंग्रेजी कहानी का हिंदी में अनुवाद करते वक्त आनुवादक की हैसियत से आप क्या रणनीतियाँ बनाने का विचार करेंगे? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
5. किसी भारतीय भाषा की कहानी का हिंदी में अनुवाद करना और अंग्रेजी से अनुवाद करना क्यों और किन स्तरों पर कठिन हो सकता है?

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित कथा अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। इनके शीर्षक का अनुवाद भी कीजिए।

- 1) The will of Allah: David Owoyele

There had been a clear moon. Now the night was dark. Dogo glanced up at the night sky. He saw that scudding black clouds had obscured the moon. He cleared his throat.

- 2) Bossy: Abdul Razak Gurnah

O Mummy in my heart, I prayed, if ever I needed you it is now. Tell me truly, O Fount of Hygiene, will I sooner die of Hunger or of Dysentery. O Wiper of my Arse, I have heeded your word through Thick and Thin generally speaking, but now a Text sirens through my guts to throw Caution to the winds.

3. Admiral: T.C. Boyle

She knew in her heart it was a mistake, but she'd been laid off and needed the cash, and her memories of the strikers were mostly on the favourable side, so when Mrs. Striker called –Gretchen, this is Gretchen? Mrs. Striker?-she'd said yes, she'd love to come over and hear what they had to say.

4. The Clothing of Books: Jhumpa Lahiri

Clothing has always carried additional layers of meaning for me. My mother, even today, fifty years after leaving India, wears only the traditional clothing of her country. She barely tolerated my American clothes. She did not find my jeans or T-shirts. When I became an adolescent, she disapproved of short skirts, high heels. The older I grew, the more it mattered to her that I, too, wear Indian or, at the very least, concealing clothing. She held out for my becoming a Bengali woman like her.

5. Terminator: Mohsin Hamid

Ma doesn't hear it. She's asleep, snorin' like an old brown bear after a dogfight. Don't know how she manages that. 'Cause I can hear it. The whole valley can hear it. The Machines are huntin' tonight.

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

- 1) अंग्रेजी कहानी का हिंदी में अनुवाद करते समय अनुवादक को इस विषय का ज्ञान सबसे जरूरी है
- क) अनुवाद कला का ज्ञान ख) अभ्यास और अनुभव ग) अंग्रेजी मातृभाषा घ) हिंदी मातृ भाषा

2) 'home consumption' का सबसे अच्छा अनुवाद है

क) गृह क्षय ख) घरेलू खपत ग) निजी खपत घ) ये सभी

3) फिलिस्तिनी कहानी "My mother's brother Munnawar" का सटीक अनुवाद होगा-

क) मेरा मामा मुनब्बर ख) मेरे मुनब्बर मामू ग) मेरी माताजी के भाई श्री मुनब्बर घ) मुनब्बर मामू

4) 'Coachman' का हिंदी अनुवाद होगा

क) कोचवान ख) तांगेवाला ग) गाड़ीवान घ) ये सभी

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. _____ में हिंदी जब नई चाल में ढल रही थी, तब से अंग्रेजी से अनुवाद का सिलसिला जारी है।

2. हिलैरे बेलोक ने कहा था कि अनुवादक को 'वाक्य-दर-वाक्य', और 'शब्द दर शब्द', से आगे बढ़कर अपने अनुवाद को _____ करना चाहिए।

3. जिस प्रक्रिया से एक मिश्रित या मिश्र वाक्य को कई सरल वाक्यों में बदलकर अनुवाद किया जाता है उसे _____ कहते हैं।

4. अनुवाद की दृष्टि से अंग्रेजी _____ भाषा है और उर्दू सजातीय।

5. _____ का आपसी अनुवाद जिस तरह से शिल्प और सांस्कृतिक संदर्भों को आसानी से अनूदित कर सकता है, वैसा विजातीय भाषा के अनुवाद के दौरान आसानी से नहीं होता।

6. सांस्कृतिक रूप से भिन्न अंग्रेजी कहानी का अनुवाद करने का एकमात्र ईमानदार तरीका अपने _____ से आगे जाना है।

III. सुमेल कीजिए

अ) हिलैरे बेलोक क) 1988

आ) नजीब महफूज ख) 2021

इ) अब्दुल रजाक गुरनाह ग) 1913

ई) चिनुआ अचेबे घ) 1931

14.8 पठनीय पुस्तकें

1. अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग: कैलाश चंद्र भाटिया

2. अनुवाद: परंपरा और प्रयोग : गोपाल शर्मा

3. अनुवाद क्या है : डॉ भ. ह. राजूरकर और डॉ राजमल बोरा

इकाई 15 : हिंदी –अंग्रेजी कविता अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 मूल पाठः हिंदी-अंग्रेजी कविता अनुवाद

15.3.1 अनुवाद के लिहाज से कविता

15.3.2 शीर्षक का अनुवाद

15.3.3 अनुवाद में भाव और शिल्प का सामंजस्य

15.3.4 एक ही कविता के विविध अनुवाद

15.3.5 हिंदी- अंग्रेजी कविता अनुवाद की समस्याएं और समाधान

15.4 पाठ सार

15.5 पाठ की उपलब्धियां

15.6 शब्द संपदा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता, ऐसा आपने बहुत बार सुना होगा। इस लिहाज से हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करना और वह भी कविता का अनुवाद करना आसान काम तो बिल्कुल है नहीं। किसी ने चाहे कितनी भी अनुवाद सिद्धांत की किताबें पढ़ ली हों, यह काम मेहनत और सावधानी माँगता है। गद्य और पद्य के अनुवाद के अलग अलग तरीके हैं, अलग अलग तरह की मुश्किलें हैं और अलग अलग समाधान हैं। कविता का अनुवाद हूँ ब हूँ नहीं होता, यह सब जानते हैं। हर अनुवादक अपनी तरह से अनुवाद करता है। बहुत से सवाल हैं जिनका जवाब इकाई के पाठ से मिले यह जरूरी है क्योंकि हिंदी कविता का अंग्रेजी कविता में अनुवाद पद्य में भी हो सकता है और गद्य में भी। पंक्ति दर पंक्ति अनुवाद हो या अर्थ का अनुवाद हो। हिंदी और अंग्रेजी के बीच विचार, संस्कृति, विश्वास आदि की जो दूरी है उसे अनुवादक कैसे तय कर है, यह जानना जरूरी है। कविता का अनुवाद हूँ ब हूँ नहीं हो सकता तो क्यों? अनुवाद एक कोशिश ही तो है, एक ईमानदार कोशिश। आप खुद भी इस कोशिश में शामिल हो जाइए। अनुवाद पढ़ने के बाद पहले सोचिए। फिर अनुवाद के मूल को पढ़िए और उस अनुवाद की समीक्षा कीजिए। सोचिए कि आप खुद उसका अनुवाद कैसे करेंगे? इस इकाई में आप हिंदी से अंग्रेजी में कविता के अनुवाद से जुड़े खास-खास मुद्दों पर विचार करेंगे। विस्तार से अध्ययन

करेंगे। समस्याओं और चुनौतियों को चिन्हित ही नहीं करेंगे बल्कि उनके समाधान भी पता कर सकेंगे।

15.2 : उद्देश्य

इस इकाई का पाठ करने की बाद आप जान सकेंगे कि

- अनुवाद के लिहाज से कविता क्या है।
- कविता का अनुवाद करना क्यों चुनौती भरा है।
- हिंदी कविता से अंग्रेजी कविता में अनुवाद करते समय कौनसी मुश्किलें आती हैं।
- हिंदी कविता से अंग्रेजी कविता में अनुवाद के दौरान आने वाली चुनौतियों का समाधान क्या है।

15.3 : मूल पाठ : हिंदी – अंग्रेजी कविता अनुवाद

15.3.1 अनुवाद के लिहाज से कविता

साहित्य की कई विधाएं होती हैं। कहानी, उपन्यास, नाटक आदि गद्य की विधाएं हैं और कविता पद्य की। गद्य और पद्य का अंतर आप समझते ही हैं। पद्य गद्य की तुलना में भाव-प्रधान ज्यादा होता है। उसकी भाषिक सीमा होती है लेकिन उसमें व्यक्त भावों की कोई सीमा नहीं होती। इसलिए काव्य की अच्छी समझ रखने वाले और कविता के प्रसिद्ध अध्यापक और आलोचक डॉ नगेन्द्र ने कहा है कि कविता सर्जनात्मक साहित्य का नवनीत है। यह भी लगभग तयशुदा बात है कि सारी दुनिया का साहित्य पहले पहल पद्य में ही लिखा गया। ठीक वैसे ही हिंदी और उसकी बोलियों में शुरुआत से ही खूब कविताई हुई। आगे जाकर जब हिंदी नई चाल में ढलने लगी तो बहुत सी अच्छी रचनाओं का अनुवाद देशी और विदेशी अनुवादकों ने करना शुरू किया।

कविता के अनुवाद को लेकर दो बातें कही जाती हैं। एक तो यह कि कविता का अनुवाद करना कहानी और गद्य के अनुवाद करने से मुश्किल काम है। दूसरे यह कि कोई कवि ही कविता का अनुवाद कर सकता है। कई कवियों और आलोचकों ने तो इसी आधार पर कविता की परिभाषा ही पेश कर दी है। एक आधुनिक भारतीय कवि ने कविता की परिभाषा करते हुए उसे जिंदगी का अनुवाद कह दिया है - जिंदगी के नाद पर बजता हुआ अनुनाद है, कविता कहाँ अनुवाद है! अमरीकी कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट के अनुसार कविता वह है जो अनुवाद में खो जाती है। रूसी कवि जोसेफ ब्राडस्की कहते हैं कि कविता वह है जो अनुवाद में भी बची रहती है। लेखक और अनुवादक ए के रामानुजन ने एक बार कहा था कि कविता का अनुवाद असंभव कार्य है, पर वे ताउम्र अनुवाद करते रहे। अनुवादकों को काव्यानुवाद असंभव लगता रहा है क्योंकि वे अनुवाद को शुद्ध अनुवाद के रूप में देखते रहते हैं।

आपने यह जरूर सुन रखा होगा कि भारत में केवल वाल्मीकि की लिखी हुई रामायण ही नहीं है बल्कि तुलसीदास की रामायण भी है। सच तो यह है कि लगभग 300 रामायण भारत की दूसरी भाषाओं में लिखी गई हैं। मूल कथा वही है किन्तु कुछ न कुछ बदलाव भी है। यह

अनुवाद नहीं है। एकदम अनुवाद नहीं है। शुद्ध अनुवाद नहीं है। आपको अच्छा लगेगा जब आप अल्लामा इकबाल की कुछ कविताओं का अनुवाद शमशेर बहादुर सिंह के शब्दों में पढ़ेंगे- 'आह! किसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे? राह तू, रहरै भी तू, रहबर भी तू, मंजिल भी तू!" इसका अनुवाद है- तू किसकी खोज में भटक रहा है? अरे पथ और पथिक, पथ-प्रदर्शक और लक्षित स्थान, सब कुछ तू ही तो है!" हिंदी-उर्दू के बारे में तो लोग यह कहते ही हैं कि इनमें अंतर है तो बस लिपि का है। इस तरह के तर्जुमे को पढ़कर आप अब क्या कहेंगे? आपको कौनसा पाठ बेहतर समझ आता है? क्यों? क्या अनुवाद कुछ बदल गया सा लगता है? उत्तर आधुनिक विचारक लेफेवेर यदि ऐसे अनुवाद को पुनःलेखन (रीराइटिंग) कहते हैं तो भारतीय अनुवादक-वेत्ता सुजित मुखर्जी अनुवाद को नवीन लेखन (न्यू राइटिंग) कहते हैं। ऑक्टोविया पॉज तभी तो कहते हैं कि कविता वह है जो रूपांतरित हो गई। यह सब आपको इसलिए नहीं बताया जा रहा कि आप कविता के अनुवाद से डर जाएं। यह जरूर है कि हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद और उसमें भी हिंदी कविता का अंग्रेजी से अनुवाद करना आसान नहीं है। पर कविता लिखना ही कहाँ आसान है। यदि कविता लिखने वाले अर्थात् कवियों की सुनें तो आपको पता चलेगा कि कभी कभी कविता अपने आप बन जाती है। कविता बनी बनी बनाई ऊपर से 'उत्तर' आती है। कवि बस उसे कागज पर उतार देते हैं। अंग्रेजी के महान कवि कॉलरिज कविता को 'बेहतरीन शब्दों का सर्वोत्तम क्रम' (बेस्ट वर्डस इन बेस्ट ऑर्डर) कहते हैं। पर यह ऊपर से उत्तर कर खुद ब खुद कविता बन नहीं जाती। यह बनाई जाती है। अक्सर कवि को उसके रूप-रंग और कलेवर पर बड़ी मेहनत-मशक्त करनी होती है। उसे ठोक पीटकर - काट कूटकर कसना होता है। कॉलरिज के मित्र विलियम वर्डसवर्थ ने कहा था कि जैसे नदी के बहाव को बाँधना होता है वैसे ही कविता को बनाने के लिए उसे 'रिक्लेक्ट' (इकट्ठा) करना होता है। कवि विलियम वर्डसवर्थ के शब्दों में ही कहें तो प्रशांत क्षणों में आवेग उत्तर जाने के बाद में उसे 'रिकास्ट' करना होता है। इस तरह कोई कविता सचमुच बेहतरीन शब्दों का सर्वोत्कृष्ट संयोजन है। अनुवाद करते वक्त इस संयोजन को कभी छेड़ना और कभी छोड़ना होगा। आप भी जब हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करेंगे तो कभी कुछ छोड़ना और कभी कुछ जोड़ना पड़ेगा। जब कोई अनुवादक हिंदी की बेहतरीन कविताओं को अंग्रेजी में पेश करना चाहता है और वह चाहता है कि भारत की प्रमुख भाषा हिंदी की बेहतरीन कविताओं का अनुवाद विश्व की प्रमुख भाषा अंग्रेजी में हो, तो उसके सामने सबसे बड़ा सवाल यह होता है कि मूल कविता पहले से ही बेहतरीन शब्दों का सर्वोत्कृष्ट संयोजन है, उसका दूसरी भाषा में सर्वोत्कृष्ट संयोजन कैसे किया जाए?

दो बातें गौरतलब हैं। एक तो यह है कि कविता का अनुवाद करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। किसी एक भाषा में रची गई कविता के शब्दों के अनुवाद-भर से उसे दूसरी भाषा में उतार लाना जोखिम और मुश्किल भरा काम है। दूसरी बात यह कही जाती है कि कविता अनुवाद से बिगड़ जाती है। यदि कविता अनुवाद से खराब हो जाती है तो क्या अनुवाद किया ही न जाए? यह तो हो नहीं सकता। वह कविता ही क्या जो अनुवाद का झटका ही न झेल सके?

अच्छी कविता तो वह है जो अनुवाद का झटका खाकर भी दूसरी भाषा में जाकर वैसे ही मुस्कराती है जैसे वह पहले थी। कई बार तो अनुवादक अनुवाद करके कविता को पहले से भी अधिक चुस्त दुरुस्त कर देते हैं। 'गीतांजलि' के दो अनुवाद हुए हैं। एक खुद कवि ने किया था। दूसरा अंग्रेजी कवि डब्ल्यू बी येट्स ने किया। दूसरा अनुवाद बहुत से लोगों को बेहतर लगा। फिर भी मूल रचना की छंद योजना और शब्द झंकार तो उस अंग्रेजी अनुवाद में भी नहीं उतार पाई। अनुवाद में कविता का भाव तो जरूर उतार आता है, पर अक्सर रस, छंद, अलंकार आदि हूँ ब हूँ नहीं आ पाते। इसलिए यह जिद भी न की जानी चाहिए।

बोध प्रश्न

- अनुवाद के लिहाज से कविता क्या है?
- कविता को नदी का बहाव कहने का क्या मतलब है?
- कविता के अनुवादक को क्या जिद नहीं करनी चाहिए?

15.3.2 शीर्षक का अनुवाद

अभी आपने 'विस्मय तरबूज की तरह' का अनुवाद करने की कोशिश की। यह एक कविता का शीर्षक है। हिंदी की किसी कविता का अनुवाद करते समय सबसे पहले उसके शीर्षक का अनुवाद करना होगा। यह बहुत जरूरी है। पर आसान नहीं है। उदाहरण के लिए मुक्तिबोध की एक प्रसिद्ध कविता है "चाँद का मुँह टेढ़ा है।" इसका अनुवाद अलग अलग तरह से किया जाता रहा है, जैसे - The Moon Wears A Crooked Smile; The Moon's Face is Crooked; The Moon's Face Is Bent; The Moon is Askew आदि। इस स्तर पर विचार करने से आप हिंदी अंग्रेजी कविता के अनुवाद की बारीकियों को समझ सकते हैं। आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने 'लाइट ऑफ एशिया' का अनुवाद 'बुद्ध चरित' और 'riddle of the universe' का अनुवाद 'विश्व प्रपञ्च' किया था। क्या आप इनके शीर्षक बदलकर 'एशिया-ज्योति' और 'विश्व-पहेली' रखना ज्यादा पसंद करेंगे? यदि हाँ, तो क्यों? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

हिंदी कविता का अंग्रेजी में अनुवाद करने की कोशिश करने वाले पहले तो अनुवाद पद्धति रूप में ही करते हैं। यदि ठीक से अनुवाद नहीं हो पाता तो मुक्त छंद में कर सकते हैं। यदि यह भी मुमकिन न हो तो गद्य में कर सकते हैं। कम से कम अर्थ का अनुवाद तो करना ही चाहिए।

15.3.3 अनुवाद में भाव और शिल्प का सामंजस्य

एक कविता की याद रखने लायक लाइन पर गौर करें - कविता क्या है भावों का लँगड़ाता सा अनुवाद। यहाँ 'भाव' ('मायना/मतलब') और विचार के अधूरे अनुवाद की तरफ इशारा है। जब कविता में ही 'भाव' अधूरा होता है तो उसके अनुवाद में कैसे वह आधा अधूरा न रह जाएगा। अनुवादक की कोशिश रहती है कि भाव का अनुवाद ठीक-ठीक हो जाए, चाहे शिल्प का अनुवाद सिर्फ ठीक-ठाक रह जाए। यदि शिल्प भी अनूदित कविता में आ सके तो बहुत अच्छा रहे। क्या आपने हिंदी से अंग्रेजी में अनूदित की गई कोई कविता पढ़ी है? यदि हाँ, तो

अच्छी बात है। यदि नहीं तो फैज़ अहमद फैज़ की लिखी हुई नीचे दी गई चार लाइनें और उनके अनुवाद पर गौर कीजिए।

बोल कि लब आजाद है तेरे

बोल ज़बा अब तक तेरी है

तेरा सुतवाँ जिस्म है तेरा

बोल कि जां अब तक तेरी है।

स्पीक, फॉर योर लिप्स आर फ्री

स्पीक, फॉर योर टंग इज स्टील योर्स

योर अप- राइट बॉडी बिलोंग्स टू यू

स्पीक, फॉर योर सोल इज स्टिल योर्स

पहले मूल कविता की चार लाइनों पर गौर करें। दो तीन बातें आपने ध्यान से देखीं होंगी।

1) एक शब्द है जो दुहराया गया है। वह शब्द है –बोल। यह पहली दूसरी और चौथी पंक्ति का पहला शब्द है। इसके लिए अंग्रेजी में ‘टेल’ और ‘से’आम फ्रहम शब्द हैं।

2) कवि ने तेरा, तेरी, तेरे शब्दों का भी प्रयोग किया है, ये सब आजकल अंग्रेजी में ‘यू, योर्स, योर’ आदि होते हैं। यूं तो अंग्रेजी में ‘दाउ’ भी होता है, पर यह अब चलन में कम है।

3) दूसरी और चौथी पंक्ति तुकांत हैं। ‘तेरी है’ शब्द हर लाइन के अंत में आते हैं।

आप फिलहाल इन तीन खासियतों पर गौर करें। और इसके अंग्रेजी अनुवाद को ध्यान से देखें। आप देखेंगे कि ये तीनों बातें अंग्रेजी अनुवाद में भी हैं। कहने को तो आप कह सकते हैं कि ‘स्पीक’ क्यों लिखा गया? ‘टेल’क्यों नहीं? पर यह तो अनुवादक के अपने चुनाव की बात है। यदि आप भी खुद अनुवाद करें या किसी दूसरे से करवाएं तो वह अपनी तरह से अनुवाद करेगा। शब्दों का अपनी तरह से चुनाव करेगा।

आप भी इस बात को मान लेंगे कि अनुवादक ने मूल कविता के कथ्य के साथ कविता के शिल्प पर भी खासा ध्यान दिया है। उसे अनूदित कविता में भी झलकाने की कोशिश की है। आपको अच्छा लगा होगा? शिल्प का भी ध्यान यदि अनुवादक रखता है तो सोने में सुहागा हो जाता है।

विषय-वस्तु(मैटर)और शैली(मैनर) इन दोनों का अनुवाद करना होता है। आप जानना चाहेंगे कि विषय-वस्तु क्या है? विचार और भाव और घटना इन तीनों का अनुवाद करना होता है। कथ्य साहित्य का अनुवाद करना सरल है। पर विचार का अनुवाद कठिन है। ‘रामायण’ का अनुवाद सरल है लेकिन ‘कामायनी’ का अनुवाद कठिन है। अब सवाल उठता है कि शैली का अनुवाद करना क्यों कठिन हो जाता है। शैली क्या है? इमेज या बिम्ब मूर्त विचार या भाव को जब शब्द बद्ध करते हैं, वही शैली है। इससे आप इस बात को समझ सकते हैं कि हिंदी कविता के अच्छे अनुवाद के लिए अनुवादक को कविता के विचार या भाव के साथ साथ उसके छंद, लय, ध्वनि, और नाद का भी ध्यान रखना होता है। यह अनिवार्य तो नहीं पर आवश्यक जरूर है।

बोध प्रश्न

- अनुवादक को भाव के साथ किस बात का ध्यान रखना होगा?
- अनुवाद की दृष्टि से शिल्प क्या है?
- अनुवाद की दृष्टि से शैली क्या है?

15.3.4 एक ही कविता के विविध अनुवाद

क्या आप जानते हैं कि जय शंकर प्रसाद की महाकाव्यात्मक कविता 'कामायनी' का कई अनुवादकों ने अनुवाद किया है? बी.एल. साहनी (1956), जगत भारद्वाज (1974), जय किशन दास सदानी (1975), मनोहर बंधोपाध्याय (1978), हरिचंद्र बंसल (1987), प्रतिभा विनोद कुमार (2013), रतन चौहान (2016), मोहम्मद मजहर (2022), परमानन्द शर्मा और उषा किशोर आदि ने 'कामायनी' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इसे कविता के अनुवाद का एक नायाब नमूना कहना होगा। यह कहने की जरूरत नहीं कि सबने यह अनुवाद अपनी अपनी तरह से किया होगा। इसलिए यह बात आपको समझ लेनी होगी कि एक ही कविता के यदि अनुवादक बदल जाएंगे तो अनुवाद भी बदलेंगे। यह पक्की बात है। गद्य के अनुवाद में कुछ समानता मुमकिन है, पद्य के अनुवाद में मुश्किल है। एक मजेदार उदाहरण देखें। कामायनी की पहली चार पंक्तियों के चार अनुवाद दिए गए हैं। ये अनुवाद किसने किये हैं, यह जानना आपके लिए जरूरी नहीं है। पर यह पता लगाना दिलचस्प होगा कि इनमें से कौनसा अनुवाद 'गूगल' ने किया है?

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,

बैठ शिला की शीतल छाँह

एक पुरुष, भीगे नयनों से

देख रहा था प्रलय प्रवाह।

अनुवाद एक :

On the high peak of Himgiri,

sit in the cool shade of a rock

A man with wet eyes

Was watching the flood flow.

अनुवाद दो

On the spring summit of the Himalayas,

Sheltering under shadowed stone,

The lone man, with tearful eyes,

watched the swelling deluge.

अनुवाद तीन

Upon the high summit of Himgiri;
Beneath a balmy shade of mount;
A man was watching with moist eyes,
Endless deluges watery bound.

अनुवाद चार

On Himalaya's spring summit
sheltered under shadows of stone,
the lone man, with tearful eyes,
discerned the swelling deluge.

भाव और शिल्प के आधार पर आप इन चारों अनुवादों को जाँचेगे तो पता चलेगा कि भाव तो लगभग सबमें एक सा ही है। शिल्प (बनावट और बुनावट) अलग अलग है। सबने पंक्तियाँ चार की चार रखीं हैं। पर शब्द चयन अलग अलग है। याद रखने वाली बात है कि अनुवादक सबसे पहले कविता के मर्म को समझता है और फिर मूल कवि के आशय को ध्यान में रखकर लक्ष्य भाषा में उपलब्ध शब्दों में से चुनकर जहां तक हो सके उसको सजा सँवारकर पेश करता है। 'कामायनी' कविता की एक पंक्ति है-खिला हो ज्यों बिजली का फूल। इस पंक्ति में 'बिजली' शब्द का यदि हिंदी में अनुवाद करना हो तो किसे करेंगे? 'बिजली' की जगह अंग्रेजी में thunder या thunder-bolt रखें तो इन शब्दों में जो 'कड़क' है वह अनुवादक को चाहिए या lightning रखें जिसमें 'चकाचोंध' है। 'उल्लू' का अनुवाद 'owl' तो होगा ही, पर 'वह उल्लू है' का अनुवाद अंग्रेजी में करना कठिन होगा क्योंकि अंग्रेजी में 'उल्लू' 'बुद्धिमानी' का प्रतीक है। 'गाय' अंग्रेजी में 'दय' और 'करुणा' का प्रतीक नहीं, वह 'कर्कशा' और 'झगड़ालू' है। इसलिए 'शीला गाय जैसी है' का सही सही अनुवाद करना मुश्किल होगा। अभिधा से नहीं लक्षण से अनुवाद होगा।

इससे यह बात शीशे की तरह साफ हो जाती है कि यदि हिंदी कविता को अंग्रेजी में पेश करने वाला कवि-अनुवादक या अनुवादक कवि कितनी ही कोशिश क्यों न करे, कुछ न कुछ छूट जाता है। मूल के आशय या अर्थ को ठीक ठीक पेश करने की चाह में वह मूल कविता की शैली को ज्यों का त्यों रखने में कामयाब नहीं हो पाता। आलोक धन्वा की एक कविता है- विस्मय तरबूज की तरह। इस कविता की कुछ पंक्तियों का अंग्रेजी अनुवाद देखें।

समुद्र मुझे ले चला उस दोपहर में
जब पुकारना भी नहीं आता था
जब रोना ही पुकारना था
जहां विस्मय
तरबूज की तरह

जितना हरा उतना ही लाल ।

अंग्रेजी अनुवाद

Into the afternoon

The Ocean led me

when I didn't even know

How to call out

when crying was calling out

Where awe

Like watermelon

As green as it is red.

बोध प्रश्न

- 'कामायनी' के उपरोक्त अनुवादों में कौनसा अनुवाद 'गूगल' का प्रतीत होता है और क्यों?
- शिल्प के लिहाज से आपको सबसे बढ़िया अनुवाद इनमें से कौनसा लगता है और क्यों?
- क्या 'विस्मय' के लिए 'awe' ठीक शब्द होगा? 'विस्मय तरबूज की तरह' का अपना अनुवाद करें।

15.3.5 हिंदी-अंग्रेजी कविता : अनुवाद की समस्याएं और समाधान

गद्य और पद्य के अनुवाद एक सा नहीं होता। कविता के अनेक अर्थ हो सकते हैं। पर गद्य में एक अर्थ की प्रधानता होती है। इसे कुछ ज्यादा समझकर कहें तो गद्य में यदि अभिधा की प्रधानता होती है और अनुवाद सीधे होता चला जाता है। कविता में लक्षणा और व्यंजना को देखते रहना होता है। कविता से अनुवाद में यह समस्या भी है और चुनौती भी। इमेज या बिम्ब, मूर्त विचार या भाव को जब हम शब्द-बद्ध करते हैं तो इसे शैली कहते हैं। शैली की बनिस्पत विचार ज्यादा महीन होते हैं। शैली का अनुवाद टेढ़ी खीर है। हिंदी कविता का अंग्रेजी अनुवाद का मतलब है कई समस्याओं का सामना करना। एक तो समस्या काव्य शिल्प की है। हिंदी कविता का अंग्रेजी में अनुवाद करते वक्त मूल कविता की शिल्प योजना, उसकी भाषा तथा उसके दूसरे उपकरणों से अनुवाद में है तरह की मुश्किलें आती हैं। दूसरी मुश्किल लक्षणा और व्यंजना को लेकर आती है। एक समस्या बिम्ब के अनुवाद को लेकर आती है। बिम्ब से ही जुड़ी समस्या उपमान और प्रतीक को लेकर होती है। अलंकार भी मुहावरों और लोकोक्तियों की तरह अनुवाद के लिए चुनौती खड़ी करते हैं। यही बात छंद और लय के लिए सच है। हिंदी कविता की लय अंग्रेजी में जितनी आ सके, उतना ही अच्छा। इन सब चुनौतियों और समस्याओं को जानते बूझते काबू में किया जाता है। काबू में ही नहीं, कभी कभी तो एक ही कृति के कई अनुवाद किए जाते हैं। इसलिए काव्यानुवाद को अनुसर्जना कहा गया है। कविता का अनुवाद कठिन तो है,

असंभव नहीं। 'टू रीक्रिएट द ओरिजिनल' मूल कविता को दौबारा पैदा करना ही कविता का अनुवाद है। यही अनुवाद का आदर्श है।

बोध प्रश्न

- काव्यानुवाद की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
- अनुसर्जना का क्या अर्थ है?

15.4 : पाठ सार

हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करना कोई आसान कार्य नहीं है। कविता का अनुवाद करना तो टेढ़ी खीर है। यह जरूरी नहीं कि कविता का अनुवाद कोई कवि ही करे, पर यह भी देखा गया है कि शुरू से ही हिंदी के कई कवियों ने हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद किया। एक परंपरा ही कायम कर दी। कुछ श्रेष्ठ कविताओं के तो कई कई अनुवाद हुए। एक कविता के विभिन्न पहलू होते हैं। कविता के अनुवाद का मतलब है, एक दूसरी भाषा में एक दूसरी कविता पेश करना। अनुवादक को मूल कविता का रूपांतरण करना नहीं होता बल्कि उसका पुनः सृजन करना होता है। कविता का अर्थ उसमें प्रयुक्त शब्दों के अर्थों का योगमात्र नहीं होता, कविता का अर्थ स्वयं कविता है। हिंदी कविता के अंग्रेजी में अनुवाद प्रक्रिया यही है कि अनुवादक हिंदी कविता की विषयवस्तु और कथन शैली को अलग अलग मानकर भी अनुवाद कर सकता है। बल्कि करता ही है। कविता के घटना-विधान या कथन का अनुवाद मुश्किल नहीं होता। मुश्किल होता है काव्य भाषा और उसके आधार तत्वों – बिम्ब, उपमान, प्रतीक, अर्थालिंकार, शब्दालंकार, आदि का अंग्रेजी में अनुवाद करना। छंद के अनुवाद की मुश्किल 'लय' को तय करके किया जा सकता है। हिंदी कविता का अंग्रेजी में अनुवाद करना टेढ़ी खीर नहीं है और न ही असंभव। यह तो बड़ी मजेदार प्रक्रिया है। हिंदी से अंग्रेजी में काव्यानुवाद करते समय रस-सम्मत अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दावली का चयन करते हुए उसका रूपांतरण करना अनुसृजन ही तो है।

15.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं-

1. हिंदी से अंग्रेजी कविता का अनुवाद करना कुछ बुनियादी सवालों के अधीन है।
2. पंक्ति-दर-पंक्ति अनुवाद हो, शब्दशः अनुवाद हो, या अर्थ का अनुवाद हो, यह सवाल बड़ा है।
3. अनुवादकों का एक वर्ग यह मानता है कि कविता का अनुवाद नहीं हो सकता, दूसरा वर्ग कहता है कि हो तो सकता है पर मुश्किल है।
4. भारत में हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करने की अपनी परंपरा है। 'कामायनी' के अंग्रेजी अनुवाद की लंबी परंपरा है।
5. अनुवाद करते समय शीर्षक के अनुवाद से लेकर बहुत सी चुनौतियों का मुकाबला करना है।
6. अनुवाद में भाव और शिल्प का सामंजस्य करना होता है। पर भाव का अनुवाद ज्यादा जरूरी है।

7. शिल्प का अनुवाद जितना हो सके किया जाना चाहिए।
8. अनुवाद के सिद्धांत को जानना ही काफी नहीं अनुवाद करना अनुवादक का लक्ष्य है।
9. मूल कविता के आशय को अंग्रेजी में पेश करना पहला कदम है।
10. इसके लिए समस्याओं को चुनौती की तरह लेना चाहिए और उनका समाधान खुद तलाश करना चाहिए।

15.6 : शब्द संपदा

1. काव्य-शिल्प = किसी भी कलाकृति का मूल्यांकन अनुभूति- पक्ष (भाव पक्ष) और अभिव्यक्ति-पक्ष(कलापक्ष) के रूप में अलग-अलग की जाती है। इनके मिले जुले रूप को काव्य- कला या काव्य-शिल्प कहते हैं।
2. अभिधा = शब्द की तीन शक्तियों में से एक। जब किसी शब्द का सामान्य अर्थ में प्रयोग होता है तब वहाँ उसकी अभिधा शक्ति होती है।
2. लक्षणा = शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय या निहितार्थ सूचित होता है।
3. व्यंजना = शब्द की जिस शक्ति या व्यापार से प्रचलित अर्थ एवं लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी तीसरे अर्थ का बोध हो, उसे 'व्यंजना' कहते हैं।
4. बिम्ब- बिम्ब (इमेज) का अर्थ है = मूर्त रूप प्रदान करना।
5. अलंकार = अलंकृत करना या सजाना। अलंकार सुन्दर वर्णों से बनते हैं और काव्य की शोभा बढ़ाते हैं।

15.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड -(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में लिखिए।

- 1) हिंदी कविता का अंग्रेजी कविता में अनुवाद करते समय भाव को प्राथमिकता दें या शैली को? तर्क पूर्ण उत्तर दें।
- 2) "शैली का अनुवाद मुश्किल है, विचार का आसान" इस कथन को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
- 3) "कविता की परिभाषा में ही कविता के अनुवाद की कठिनाइयाँ छिपी हुई हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
- 4) हिंदी की किसी कविता की चार पंक्तियों का अनुवाद करते हुए दो कारण भी बताइए कि आपने इन पंक्तियों को ही क्यों चुना?
- 5) "एक ही कविता के बहुत से अनुवाद हो सकते हैं" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

खंड -(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

क) स्त्री का कंकाल

खुदाई में

न माया मिली

न राम

मिला स्त्री का कंकाल

राम के जमाने का

(जिसका कोई जिक्र नहीं रपट में)

ख) जूता

हिकारत भरे शब्द चुभते हैं

त्वचा में

सूई की नोक की तरह

जब वे कहते हैं-

साथ चलना है तो कदम बढ़ाओ

जल्दी जल्दी

ग) ठाकुर का कुआं

कुआं ठाकुर का

पानी ठाकुर का

खेत-खलियान ठाकुर के

गली-मुहल्ले ठाकुर के

फिर अपना क्या?

गाँव?

शहर?

देश?

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1) 'वह बड़ी छुई मुई है' को अंग्रेजी में उतारने पर कहेंगे

क) She is touch me not.. ख) She is as delicate as a flower.

ग) She is a chui mui. घ) She is a great tender.

2) 'वह कामदेव जैसा सुंदर है' का समुचित अनुवाद होगा।

क) He is as handsome as Kamdeva.

ख) He is as handsome as cupid.

ग) He is as handsome as a god.

घ) He is as beautiful as Apollo.

3) 'कनक कनक ते सौगुनी' में 'कनक' का ज्यों का त्यों अनुवाद अंग्रेजी में नहीं हो सकता क्योंकि

क) अंग्रेजी में कोई ऐसा शब्द नहीं

ख) अंग्रेजी विदेशी भाषा है

ग) हिंदी में कनक के कई अर्थ हैं

घ) अंग्रेजी में ऐसा कोई एक शब्द नहीं जिसका अर्थ सोना और धतूरा हो

4) इनमें से कौनसी काव्यानुवाद की मुख्य समस्या नहीं है।

क) शिल्प ख) शब्द-चयन ग) लक्षणा और व्यंजना घ) छंद और लय

5) इनमें से किसका शुमार यहाँ उपयुक्त नहीं लगता?

क) ए के रामानुजन ख) सुजित मुखर्जी ग) डॉ नगेन्द्र घ) जय शंकर प्रसाद

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

क) _____ सर्जनात्मक साहित्य का नवनीत है।

ख) भाव को जब हम शब्द-बद्ध करते हैं तो इसे _____ कहते हैं।

ग) _____ का अर्थ है -मूर्त रूप प्रदान करना।

घ) आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने 'लाइट ऑफ एशिया' का अनुवाद _____ के रूप में किया था।

च) कवि कॉलरिज कविता को _____ कहते हैं।

III. सुमेल कीजिए।

अ) द मून्स फेस इज क्रूकड क) वर्डसवर्थ

आ) कविता-अनुवाद में खोई ख) जयशंकर प्रसाद

इ) खिला हो ज्यों बिजली का फूल ग) मुक्तिबोध

ई) नव लेखन घ) रॉबर्ट फ्रॉस्ट

उ) प्रशांत क्षणों का आवेग च) सुजित मुखर्जी

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. काव्यानुवाद की समस्याएँ: भोलानाथ तिवारी और महेंद्र चतुर्वेदी(संपादक)

2. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रयोग: डॉ नगेन्द्र(संपादक)

3. अनुवाद: परंपरा और प्रयोग : गोपाल शर्मा

4. अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग: कैलाश चंद्र भाटिया

5. भारतीय साहित्य रत्न माला(1970) , वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली

इकाई 16 : अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ: अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद

16.3.1 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: पृष्ठभूमि

16.3.2 अंग्रेजी-हिंदी कविता अनुवाद : विवेचन और विस्तार

16.3.3 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: चुनौती और समाधान

16.3.4 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: सरलता से सघनता

16.3.5 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: अनुकरणीय उदाहरण

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियां

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 : प्रस्तावना

इस प्रश्नपत्र की इससे पहली वाली इकाई में आपने हिंदी कविता के अंग्रेजी में अनुवाद की बाबत विस्तार से अध्ययन किया। यह आपको समझ आ गया होगा कि गद्य से अधिक मशक्त पद्धति या कविता के अनुवाद में करनी होती है। चुनौती दो स्तरों पर होती है। कथ्य के स्तर के साथ ही शिल्प के स्तर को भी ध्यान में रखना होता है। अंग्रेजी कविता का हिंदी अनुवाद करते समय केवल शब्द के लिए शब्द रख देने से काम नहीं चल सकता। यह जरूरी तो नहीं कि कविता का अनुवाद कोई कवि ही करे, पर हिंदी के कवियों ने अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद करना तब से शुरू कर दिया था जब खड़ी बोली में लिखने की शुरुआत ही हुई थी। अंग्रेजी से हिंदी में काव्यानुवाद का लक्ष्य अंग्रेजी में मिलने वाले विश्व साहित्य की बेहतरीन कविताओं को हिंदी के पाठकों तक पहुंचाना रहा है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर आज तक अनगिनत कवियों और अनुवादकों के अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किये हैं। आपको यहाँ भारतीय काव्यानुवाद परंपरा पर ज्यादा गौर नहीं करना है। हिंदी में अंग्रेजी से अनुवाद करने की चुनौती और समस्याओं पर अपना ध्यान केंद्रित रखना है। अंग्रेजी-हिंदी कविता का अनुवाद भी करने की ओर अपना ध्यान लगाना होगा।

16.2 : उद्देश्य

इस इकाई के पाठ से आप –

- अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे।

- इस अध्ययन में अंग्रेजी से हिंदी कविता का अनुवाद पर ध्यान केंद्रित रहेगा।
- अनेक अनूदित उदाहरणों की सहायता से अंग्रेजी हिंदी कविता के अनुवाद के स्वरूप पर विचार कर सकेंगे।
- कविता के अनुवाद में आने वाली समस्याओं की चर्चा करते हुए उनका समाधान पेश किया जाएगा।

16.3 : मूल पाठ : अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद

16.3.1 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: पृष्ठभूमि

यह इकाई अंग्रेजी कविता के हिंदी अनुवाद की बाबत है। हिंदी में अनुवाद करते वक्त आपको कुछ ख्याल अंग्रेजी के संरचनात्मक ढांचे को हिंदी के संरचनात्मक ढांचे में ढालने के वक्त करना ही होगा। अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया-कर्म चलता है तो हिंदी में कर्ता-कर्म-क्रिया आधार होता है। यह नियम कविता के अनुवाद में कुछ लचीला जरूर हो जाएगा, पर रहेगा यही। पिछली इकाइयों में बार बार कहा गया कि आपको अनुवाद के सिद्धांतों, प्रक्रियाओं और परंपराओं पर ध्यान देते हुए खुद भी अनुवाद करने का अभ्यास करना है जिससे आपको उन चुनौतियों और समस्याओं का पता चल सके जो किसी अनुवादक के सामने आती हैं। इसी तर्ज पर इस इकाई का आप अध्ययन करेंगे।

इस इकाई की प्रस्तावना में कहा गया कि हिंदी में काव्यानुवाद की अच्छी-खासी परंपरा है। आप इस परंपरा के आगाज का बस जायजा ही लेंगे, तफसील में जाने की जरूरत नहीं है। फिर भी सिलसिलेवार स्टडी करने के लिए शुरुआत से शुरू करना बेहतर होगा। यह सिलसिला-अंग्रेजी से हिंदी में कविता के अनुवाद करने का सिलसिला- खड़ी बोली के कवियों ने बड़ी उम्मीद से शुरू किया था। जब कवियों ने अंग्रेजी को अपने इर्द-गिर्द पाया तो आचार्य राम चंद्र शुक्ल से लेकर उस समय के प्रसिद्ध कवि श्रीधर पाठक ने अंग्रेजी की कई कविताओं का अनुवाद किया। शुक्ल जी का अनुवाद में इतना हाथ सध गया था कि 21 शब्दों का अनुवाद उन्होंने 9 शब्दों में करके दिखा दिया था। अनुवाद है – ‘सबल निबल को समर चालत जल थल में ऐसों’ और मूल अंग्रेजी में पंक्ति है- ...in the brake now fierce / The war of weak and strong! In the air what plots! No refuge e'en in water? आप देख सकते हैं कि राम चंद्र शुक्ल ने ‘बुद्ध चरित’ में ‘लाइट ऑफ एशिया’ का जैसा अनुवाद उस समय किया वह कवि के भावों को समझकर किया। आपको यह बताने में कोई हर्ज नहीं होगा कि शुरुआत में व्याकरण के लेखकों तक ने अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किए। हिंदी व्याकरण के लेखक पंडित कामता प्रसाद गुरु ने थाँमस ग्रे के प्रसिद्ध शोक गीत का हिंदी में अनुसृजन किया था। इसे क्या आप अनुवाद का भारतीय रूप कहेंगे?

Some village-Hampden, that with dauntless breast

The little tyrant of his fields withstood;
Some mute inglorious Milton here may rest,
Some Cromwell guiltless of his country's blood

कोई अयोध्यानाथ सदृश निजदेसुपासि,
शिवप्रसाद सम कोई अधिकार उपासी।
इनमें होते वीर कोई राणा प्रताप सम,
अथवा कोई मगन सिंह जी से भूपाली ॥

इस तरह के बहुत से अनुवाद इसीलिए मुमकिन हुए क्योंकि वे अनुवादक के रूप में मूल-पाठ के भाव को पेश कर रहे थे। शब्दों का हिसाब नहीं लगा रहे थे। वे वास्तव में भारतीय संस्कृति, समाज, इतिहास, और विचारधारा को अनूदित कृति के द्वारा पेश कर रहे थे। यदि अमुक कवि, योद्धा, देशभक्त आदि अंग्रेजी समाज के पाठक के मन में बसे हैं और वह इन अंग्रेजी काव्य पंक्तियों से प्रभावित होता है तो भारत का हिंदी पाठक भी अपने सांस्कृतिक वैभव और इतिहास को अनूदित कृति में क्यों न पेश कर दे? मजे की बात यह है कि भारत में अनुवाद की इस तरकीब को उन्नीसवीं सदी से ही अपनाया जाने लगा था। इसका सैद्धांतिक विवेचन इटली के अनुवाद वेत्ता लॉरेंस वेणुती ने 1995 में किया। अनुवाद में घरेलूकरण और विदेशीकरण वे रणनीतियाँ हैं, जिसके द्वारा अनुवादक एक पाठ को लक्ष्य संस्कृति के अनुरूप बनाते हैं। डोमेस्टिकेशन टेक्स्ट को जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उसकी संस्कृति के अनुरूप बनाने की रणनीति है, जिसमें स्रोत टेक्स्ट से जानकारी का नुकसान शामिल हो सकता है।

शुरुआत से ही हिंदी में अनुवाद करने वाले देख रहे थे कि अंग्रेजी में भारतीय कविता का अनुवाद अंग्रेज भी कर रहे हैं। परस्पर बातचीत और संपर्क से अनुवादकों को यह पता चल गया कि एक विशिष्ट विधा के रूप में अंग्रेजी कविता की अपनी परंपराएँ हैं। शायद आप भी उस परंपरा के बारे में कुछ न कुछ जानते होंगे कि हिंदी की तरह अंग्रेजी में भी महाकाव्य, फुटकर कविताएँ, शोकगीत, गीत, सॉनेट, नाटकीय एकालाप इत्यादि विधाओं में कविताएं लिखी जाती रही हैं। ये सब अपने तरीकों से आज तक लिखा जाता रहा है। उदाहरण के लिए, सॉनेट एक 14-पंक्ति वाली कविता है जिसे या तो पेट्रारकियन सॉनेट के हिसाब से लिखा जा सकता है या शेक्सपियरियन सॉनेट की तरह। जबकि पंक्ति छंद (चौपाई) 2 छंदबद्ध पंक्तियों (दोहे) के साथ समाप्त होती है। इन रूढ़ियों के अतिरिक्त अंग्रेजी कविताओं में अपनी तरह से तुक, लय और छंद भी होते हैं। कवि रस, छंद और अलंकार का भी प्रयोग करता है। पर कविता केवल रूढ़ियाँ या काव्य उपकरण नहीं है, वह अर्थ या भाव भी प्रकट करती है। जब भी हम कोई कविता पढ़ते हैं, तो पहला सवाल शायद यही होता है कि 'कवि क्या कह रहा है?' एक बार जब हम कुछ हद

तक अर्थ समझ लेते हैं तो हम मूल कविता को देखकर खुद से पूछ सकते हैं, 'वह यह कैसे कह रहा है!' किसी कविता का अनुवाद करते समय, दोनों पहलुओं को ध्यान में रखना होता है। इस तरह शुरू से ही अनुवाद ने कवियों और समीक्षकों को कविता की रचना प्रक्रिया की नई परिपाटी भी सीखी-सिखाई। यह सिलसिला आज तक चल रहा है।

तब से लेकर आज तक के इतिहास को देखें तो यह जानकार आपको अचरज होगा कि अंग्रेजी और अंग्रेजी के माध्यम से विश्व की अनेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का अनुवाद हिंदी में हो चुका है और होता चला जा रहा है। पर एक श्रेष्ठ कृति के बहुत से अनुवादों की लंबी परंपरा हिंदी में विकसित नहीं हो सकी। केवल एक दो उदाहरण ही हैं जहां एक कृति के कई अनुवाद हुए। उमर खैयाम की रुबाइयों के अंग्रेजी अनुवाद ने कवि को सारी दुनिया में मशहूर कर दिया। फिटजेराल्ड के अनुवाद को जब भारत में पढ़ा गया तो इन रुबाइयों के हिंदी में ही बरास्ता अंग्रेजी के सोलह अनुवाद हुए। मैथिली शरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, बच्चन, केशव प्रसाद पाठक, गिरिधर शर्मा, बलदेव प्रसाद मिश्र, सूर्यनाथ सप्त्रू, इकबाल वर्मा 'सेहर', गया प्रसाद गुप्त, ब्रज मोहन तिवारी, रघुवंश लाल गुप्त, किशोरी रमन टंडन, जगदंबा प्रसाद हितैषी, आदि आदि ने इस कृति का हिंदी में अनुवाद किये। 'खैयाम की मधुशाला' (1935) में हरि वंश राय बच्चन जी द्वारा किया गया अनुवाद इतना पढ़ा गया कि उन्होंने दूसरी बार इसका अनुवाद फिर से पेश किया। इस अनुवाद को उन्होंने 'खैयाम की रुबाइयाँ' (1939) कहा। फिर उन्होंने एक कविता संग्रह पेश किया। 'मधुशाला' आज भी पढ़ी सुनी जाती है। यही नहीं उस समय इस तरब्बुम के आधार पर कई कवियों ने हिंदी में कविताएं लिखीं। मधुशाला की तर्ज पर 'टीशाला' तक लिखी गई। ये होती हैं अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद की ताकत। इसके बाद हिंदी में अनुवादक-कवियों या कवि-अनुवादकों की बाढ़ ही आ गई। घरेलूकरण की युक्ति उन्होंने भी कमोबेश अपनाई।

आप अब इन्हीं बच्चन जी की नीचे डी गई एक अनूदित कविता को ध्यान से देखें। याद रहे, जिस आयरिश कवि की यह कविता है, उसके लेखन पर बच्चन जी ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट किया था। 13 जून 1865 को पैदा हुए विलियम बट्टलर येट्स 20वीं शताब्दी के साहित्य के बड़े नामों में से एक थे। दिसम्बर 1923 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनकी अनेक कविताओं का अनुवाद महाकवि हरिवंशराय बच्चन ने हिंदी में किया है। यहाँ पृष्ठभूमि में इस तरफ इशारा करना जरूरी था। इससे आपको बरास्ता अंग्रेजी विश्व की बेहतरीन कविताओं को पढ़ने और अनुवाद करके दूसरे लोगों तक उन्हें पहुँचाना आसान लगने लगेगा।

बोध प्रश्न

- विदेशी भाषा की कौनसी कविता है जिसके अंग्रेजी अनुवाद के बहुत से अनुवाद हुए। इसका कारण क्या था?
- अनुवादक को खैयाम की रुबाइयों के बहुत से अनुवादों का जिक्र सुनकर क्या प्रेरणा मिलती है?
- 21 अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद 9 शब्दों में किया जा सकता है। इस कथन का क्या अभिप्राय है?

16.3.2 अंग्रेजी-हिंदी कविता अनुवाद : विवेचन और विस्तार

सर्जनात्मक या ललित साहित्य के अनुवाद की प्रक्रिया निश्चय ही अधिक जटिल होती है। अनुवादक और समीक्षक डॉ नगेन्द्र ने कहा है कि कविता सर्जनात्मक साहित्य का नवनीत है और उसकी संवेद्य अनुभूति 'सांद्र' और बिम्ब योजना अत्यंत संक्षिप्त होती है, इसलिए उसे अनन्य उक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है।

किसी भी कविता के दो घटक हमारे सामने आते हैं : (1) विषयवस्तु, और (2) शैली। कविता की विषयवस्तु और शैली को अलग अलग मानकर उसका अनुवाद किया जा सकता है। कविता की विषयवस्तु का निर्माण अनुभूति(एहसास) और विचार के आधार पर होता है। विचार का संप्रेषण निश्चय ही कठिन है। अनुवादक बौद्धिक अभ्यास के द्वारा उसके तत्व को ग्रहण कर पारिभाषिक पर्यायों तथा यथावश्यक परिभाषा कोशों की सहायता से उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत कर सकता है। अनुभूति के अनुवाद की चुनौती यह है कि उसका स्वरूप अमूर्त होने के साथ-साथ तरल भी होता है।

काव्यशैली का अनुवाद और भी अधिक चुनौती से भरा है। काव्य भाषा का सौंदर्य प्रायः लक्षणा और व्यंजना पर आधारित रहता है। लक्षणा का रूपांतर करने के लिए अनुवादक को ऐसे पर्यायों का चयन करना आवश्यक होता है जिनमें मूर्त विधान की क्षमता हो। इसी प्रकार, व्यंजना के अनुवाद के लिए वे ही पर्याय सार्थक हो सकते हैं जो पाठक के मन में समान कल्पना जगा सकें।

काव्य भाषा का दूसरा प्रमुख घटक या आधार तत्व है – बिम्ब। पाँच प्रकार के बिम्ब होते हैं : चाक्षुष या दृश्य बिंब, श्रौत या नाद बिम्ब, रस्य या आस्वाद्य बिम्ब, स्पर्श बिंब और ग्राण या गंध बिंब। इनमें से दृश्य बिंबों का उनके मूर्त रूप के कारण अनुवाद सबसे सरल होता है। जैसे, Rosy Cheeks = गुलाबी गाल, Blue Sky = नीला आकाश, Dark eyes = श्यामल नेत्र, Dark night = काली रात आदि। रस या आस्वाद बिम्ब का अनुवाद भी उपयुक्त पर्यायों द्वारा अनुवाद हो जाता है; जैसे – Sweet Voice = मधुर स्वर, Bitter reaction = कटु प्रतिक्रिया,

Bitter Remark = कड़बी बात आदि । इसी तरह स्पर्श बिंब; जैसे – Silken touch = रेशमी स्पर्श, Stone deaf = वज्रबधिर आदि । गंध बिंब, जैसे – Stinking atmosphere = दुर्गंधपूर्ण वातावरण आदि । अतः बिंबों के अनुवाद में अनुवादक को बहुत सावधानी बरतनी होती है ।

काव्य भाषा का एक अन्य आवश्यक आधार तत्व है – अलंकार। उपमान और बिंब अलंकार के उपजीवी हैं । अलंकार के दो भेद हैं – अर्थालंकार और शब्दालंकार । इनमें अर्थालंकारों के अनुवाद का सार्थक प्रयत्न किया जा सकता है। सादृश्यमूलक अलंकार सबसे कम कठिनाई उत्पन्न करते हैं। वैषम्यमूलक अलंकारों का अनुवाद ज्यादा मुश्किल होता है। अन्य अलंकारों का अनुवाद भी मुश्किलें पैदा करता है। शब्दालंकारवर्ग के क्षेष, यमक आदि का भाषांतर प्रायः असंभव ही होता है ।

छंद कविता का आवश्यक साधन-उपकरण है । अंग्रेजी तथा दूसरी यूरोपीय भाषाओं का संगीतिक आधार भिन्न होने से पाश्चात्य छंदों का अनुवाद हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में प्रायः दुःसाध्य ही होता है । अतः कविता का अनुवाद एक प्रकार की असाध्य साधना ही है । डॉ. नरेंद्र ने काव्यानुवाद को असाध्य साधना नहीं तो दुःसाध्य साधना माना है ।

अंग्रेजी से हिंदी कविता के अनुवाद में सही पर्याय के चयन की समस्या प्रमुख समस्या है। अनुवादक के सामने सवाल खड़ा होता है कि मौजूद पर्यायों में से वह किस का चयन करे । उदाहरण के लिए अंग्रेजी का एक सीधा-सा शब्द है- Fine. इसके अनेक अर्थ हैं : सुंदर, अच्छा, उत्तम, सुसंस्कृत, सूक्ष्म, बारीक आदि । व्यक्ति का विशेषण होने पर फ़ाइन के लिए उपयुक्त पर्याय होगा- अच्छा या सुसंस्कृत । He is a fine man – वह अच्छा आदमी है या सुसंस्कृत पुरुष है । भाषण आदि के संदर्भ में सही पर्याय होगा- सुंदर : It was a fine speech – कपड़े के लिए प्रयुक्त होने पर ‘बारीक’ पर्याय ही ग्राह्य हो सकता है । ये तीनों पर्याय अर्थ की दृष्टि प्रायः संबद्ध हैं किन्तु Fine का एक अर्थ ‘जुर्माना’ भी होता है । इसलिए पर्याय में से एक का चुनाव करने का सबसे बड़ा आधार ‘संदर्भ’ है । संदर्भ के द्वारा ही शुद्ध और उपयुक्त पर्याय का निर्णय संभव होता है । पर्याय निर्धारण का दूसरा आधार है – अनुवाद की भाषा की प्रकृति और प्रायोगिक स्तर । हिन्दी की अपनी प्रकृति है । यद्यपि आधुनिक हिन्दी की गद्य शैली पर अंग्रेजी का स्पष्ट प्रभाव रहा है; फिर भी, उसके वाक्यविन्यास, शब्दयोजना, वर्ण मैत्री आदि का पृथक वैशिष्ट्य है । संस्कृत और अंग्रेजी से भिन्न इसका अपना मुहावरा है जो उसके स्वरूप को रेखांकित करता है । इसलिए अंग्रेजी के वाक्यांशों, मुहावरों और पर्यायों को भी उसकी इसी प्रकृति के अनुरूप ढालना आवश्यक होता है ।

यह तो रही अनुवादक के लिए कुछ तकनीकी जानकारी। इसे आप सिद्धांत कहें या न कहें। पर जानना तो जरूरी है ही। समग्रतः आप इतना तो समझ ही लें कि अंग्रेजी से हिंदी में

अनुवाद करने के लिए और खास तौर से कविता का अनुवाद करने के लिए चार बातों की खास जरूरत होती है।

- 1) मूल या स्रोत भाषा अंग्रेजी पर अधिकार
- 2) अनुवाद की भाषा या लक्ष्य भाषा हिंदी पर अधिकार
- 3) विषय का सम्यक ज्ञान
- 4) अभ्यास

16.3.3 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: चुनौती और समाधान

इस इकाई में बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं पर इसकी एक सीमा भी तो है। है ना? विस्तार से विवेचन किये जाने से बेहतर होगा कि कुछ अनुवाद किये जाए। 'करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' का अंग्रेजी में अनुवाद जो है सो है, पर इसे अंग्रेजी मुहावरे में कहते हैं- practice makes a man perfect. इसी तरह अंग्रेजी की एक मुहवारेदार पंक्ति है- slow and steady wins the race। इसका हिंदी में अनुवाद क्या होगा? क्या कोई उपयुक्त मुहावरा आपको सूझता है? अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔथ' ने कुछ 'चौखे-चोपदे' खड़ी-बोली हिंदी में लिखे थे।

कवि अनूठे कलाम के बल से,

हैं बड़ा ही कमाल कर देते।

बंधने के लिए कलेजों को,

हैं कलेजा निकाल धर देते॥

ऐसी ही कविता अंग्रेजी में यदि आपको मिले और उसका अनुवाद हिंदी में करना पड़े तो मुश्किल जरूर होगी। एक प्रसिद्ध अंग्रेजी कविता की चार लाइने देखें:

'Twas brillig, and the slithy toves

Did gyre and gimble in the wabe;

All mimsy were the borogoves,

And the mome raths outgrabe.

इसका हिंदी में अनुवाद करना बच्चों का खेल नहीं। वैसे यह कविता बच्चों के लिए है। पर यदि एक बार आपको पता चल जाए कि इसके सभी अटपटे शब्द अटपटे जानबूझ कर बनाए गए हैं तो अर्थ पता चलते ही आप हिंदी में भी कई अटपटे शब्द खुद बना सकते हैं।

"ब्रिलिंग": (क्रिया से 'ब्रिल' या 'ब्रोइल' क्रिया से व्युत्पन्न)। "रात के खाने का समय,

"स्लेथी": ('स्लीमी' और 'लीथ' से मिलकर बना)। "सुचारू और सक्रिय"

"टोव": बेजर की एक प्रजाति। उनके चिकने सफेद बाल, लंबे पिछले पैर और हिरन की तरह छोटे सींग थे।

"ग्यारे": क्रिया ('ग्याउर' या 'गियाउर' से व्युत्पन्न: "एक कुत्ता") "कुत्ते की तरह खरोंचना।"

"जिम्बल": (जहाँ से 'गिम्बलट' आया) किसी भी चीज़ में छेद करना

"वेबे": ('स्वैब' क्रिया से 'सोखना') "पहाड़ी का किनारा" (बारिश से भीगने से)

"मिम्सी": दुखी

"बोरोगोव": तोते की एक विलुप्त प्रजाति। उनके पंख नहीं थे, चोंच ऊपर की ओर थीं, वे धूपघड़ी के नीचे अपना घोंसला बनाते थे।

"माँ": गंभीर

"रथ": कछुए की एक प्रजाति। सिर सीधा, मुंह शार्क की तरह, सामने का हिस्सा

"आउटग्रेब": 'आउटग्रीब' क्रिया का भूतकाल (यह 'ग्रिके' या 'श्रीके' की पुरानी क्रिया से जुड़ा है, जिससे "चीखना" और "क्रेक" बने हैं।) "चीखना"

इसे कहते हैं बूझना। अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। पर अनुवादक को ऐसा होने नहीं देना। वह लक्ष्य भाषा और मूल भाषा दोनों में महारत रखने वाला कवि-हृदय होता है। अर्जिता मित्तल और शैलेन्द्र पालीवाल ने इस अटपटी कविता का अनुवाद 'बकरसुरी' शीर्षक (देखें "बकरसुरी" पोषम पा –जून 266,2018) से किया है। देखें और समझें। उन्होंने भी हिंदी के कुछ शब्दों के सम्मिश्रण से कुछ नए शब्द बनाए हैं जो कि अंग्रेजी कविता में उनकी जगह प्रयोग हुए शब्दों के जैसे ही चुस्त-दुरस्त और मस्त हैं।

खाचार समय था चातले बीजू,

घुमराते, गर्माते, मेत में

दूजओर थे सारे दुर्बल्लू ,

और खुम सीव भी थे शोम में।

16.3.4 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: अनुकरणीय उदाहरण

इस इकाई में हिंदी में अंग्रेजी कविता का अनुवाद करने के बारे में चर्चा की जा रही है। संस्कृत की एक उक्ति है- महाजनो येन गतः स पंथा। कहने का अर्थ यह है कि हमें वह रास्ता लेना चाहिए, जिस रास्ते पर बड़े लोग गए हों। बहुत से कवि-अनुवादक और अनुवादक-कवियों ने कई कई कविताओं का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया है। यहाँ कुछ उदाहरणों से बात समझाई जा रही है। अनूदित पाठ को ध्यान से पढ़ें, फिर मूल अंग्रेजी को देखें। पेंसिल से लिख लें कि अनुवादक ने कथ्य और शिल्प को किस हद तक संभाला और संवारा है। कम से कम चार बिन्दु तो आप जरूर जांच लेंगे। ऐसा तो होना ही चाहिए। यह बात तो तय है कि अनुवाद किया जा सकता है। आसान रास्ता भी है। आजकल तो इतनी मशक्कत भी करने की जरूरत नहीं पड़ती। कविताएं मुक्त छंद में होती हैं। कविताएं तुकांत नहीं

होती। लय और तुक का ध्यान रखना कम जरूरी हो गया है। चार अंग्रेजी पंक्तियाँ हैं, साथ में इनका हिंदी में अनुवाद भी है-

Hope' is the thing with feathers—

That perches in the soul—

And sings the tune without the words—

And never stops—at all—

आशा एक चिड़िया का नाम है

जो हमारी आत्मा में बसती है

और गाती है निःशब्द गीत

और कभी रुकती नहीं पल भर भी

आपने यह बात नोट की होगी कि पंक्ति दर पंक्ति अनुवाद करना थोड़ा आसान है। अमूमन अंग्रेजी कविता को स्टैनजा (Stanza) में बाँटकर पेश किया जाता है। हिंदी में इसी को पद कहते हैं। लाइन या पंक्ति दर पंक्ति अनुवाद करने का भी अपना तरीका है। हिंदी के पुराने प्रसिद्ध कवि पंडित श्रीधर पाठक ने 1902 में अंग्रेजी कविता 'द ट्रेवलर' का खड़ी बोली हिंदी में अनुवाद किया था। यह तब की बात है जब खड़ी बोली में कविता लिखना भी बहुत कम था। वह जमाना कुछ दूसरा था, पर आज भी उनका पंक्ति दर पंक्ति अनुवाद हिंदी के बहुत से अनुवादकों को अनुकरण के लायक लगता है। नीचे चार पंक्तियाँ दी जा रही हैं। एक एक पंक्ति के अनुवाद को गौर से देखिए।

मूल : Its uplands sloping deck the mountains side,

अनुवाद : उसकी उच्च भूमि ढालू, गिरि-तट को शोभा देती है।

मूल: Woods over woods in gay theartic pride,

अनुवाद: वन श्रेणी की परंपरा रंगस्थल की छवि लेती है।

मूल: While oft some temple's moulding tops between

अनुवाद: उसमें बहुधा जहां जीरण मंदिर की शिखा चमकती है।

मूल: With venerable grandeur mark the scene.

अनुवाद: एक महत्व मिश्रित सदृश्य-छवि-छटा वहाँ पर पलती है।

इस अनुवाद को देखकर एक तो यह आपको लगा होगा कि मूल कविता और अनूदित कविता की रचना प्रक्रिया में बुनियादी तौर पर ज्यादा भेद नहीं है। आपको यह कहने का हक है कि यदि मूल कविता को कवि अपनी 'रचना' कहता है तो अनुवादक अपने अनुवाद को अनुसृजन, पुनर्रचना, पुनःसृजन कह सकते हैं।

एक दूसरा उदाहरण देखें। यह भी उतने ही प्रसिद्ध और भरोसेमंद कवि का काम है। ध्यान दें।

मूल कविता

O! Do Not Love Too Long

Sweetheart, do not love too long:

I loved long and long,

And grew to be out of fashion

Like an old song.

All through the years of our youth

Neither could have known

Their own thought from the other's,

We were so much at one.

But O, in a minute she changed –

O do not love too long,

Or you will grow out of fashion

Like an old song.

अनूदित कविता

ज्यादा दिन मत नेह लगाना

प्राण-प्रियतमे, ज्यादा दिन मत नेह लगाना,

ज्यादा दिन तक नेह लगाकर मैंने सीखा है पछताना,

मैं ऐसा बे-फैशन का माना जाता हूंजैसे कोई गीत पुराना ।

एक इस तरह थे हम यौवन के वर्षों में

हाय, कहाँ वह गया ज़माना

क्या उसके मन, क्या मेरे मन,

इसे असम्भव था अलगाना।

लेकिन पल में बदल गई वह

ज्यादा दिन मत नेह लगाना,

वरना तुम भी हो जाओगे बे-फैशन के,

जैसे कोई गीत पुराना ।

अब जब आपने मूल और उसके अनुवाद को पढ़ लिया है तो कुछ बातें नोट भी की होंगी। उन पर विचार करें। आप देखेंगे कि बच्चन जी के अनुवाद में अधिक नाटकीयता, अधिक सजीवता और सुंदरता आ गई दिखाई देती है। अनुवाद की एक दूसरी विशेषता है कि वे अनुवाद में बोल चाल की भाषा से शब्द लेकर अर्थ को गहरा का देते हैं। उदाहरण के लिए, वे इस कविता में 'लव' के लिए 'प्रेम' नहीं बल्कि 'नेह' का प्रयोग करते हैं 'स्वीट्हार्ट' के लिए 'मधुरिमे' आदि न लिखकर 'प्राण-प्रियतमे' लिखते हैं। आप खुद भी इस तरह के शब्द प्रयोगों को नोट कर सकते हैं। वे अनूदित कविता में 'तुक' की लय का प्रयोग भी करते हैं जिससे मूल का सा स्वाद बना रहता है।

बोध प्रश्न

- अनूदित हिंदी कविता से चुनकर चार ऐसे शब्दों को लिखिए जो आपको अच्छे लगे हों, अच्छे लगने की वजह भी मूल कविता को ध्यान में रखते हुए बताइए।
- अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय अनुवादक को किन दो बातों का ध्यान रखना चाहिए?

16.3.4 अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद: सरलता से सघनता

सीखने की एक तरकीब बताई गई है। यह तरकीब अनुवाद करने में भी काम आ सकती है। यह तरीका है-आसान कविता से मुश्किल कविता की तरफ बढ़ना। पहले चार-छह लाइनों की कविता लेते हैं। बच्चों की कविता है। नर्सरी राइम से आसान भला क्या होगा? 1777 में लिखी गई इस कविता को देखें। कई कविताओं और नर्सरी कविताओं की तरह, 'हिकॉरी डिकरी डॉक' एक विशेष ध्वनि की नकल करने की कोशिश करता है। इस कविता में घड़ी की टिक-टिक की नकल की जा रही है। इसका उपयोग 18वीं और 19वीं शताब्दी में बच्चों द्वारा बड़े पैमाने पर यह तय करने के लिए किया जाता था कि खेल कौन शुरू करेगा। हिकरी, डिकरी और डॉक शब्द कुम्भिक बोली में 8, 9 और 10 संख्याओं से काफी मिलते-जुलते हैं (8 के लिए हेवेरा, 9 के लिए डेवेरा और 10 के लिए डिक), वही संख्या प्रणाली जिसे एनी मीनी माइनी मो की नींव माना जाता है। पहले अंग्रेजी में पढ़ें।

Hickory dickory dock.

The mouse ran up the clock.

The clock struck one,

The mouse ran down,

Hickory dickory dock.

जहाजों का जमघट लागा,

चूहा घड़ी के ऊपर भागा

घड़ी ने बजाया एक

डर गया चूहा यह देख

चूहा नीचे भागा ,

जहाजों का जमघट लागा ।

पाँच पंक्तियों की इस छोटी सी तुकांत बाल-कविता के अंग्रेजी अनुवाद को आपने ध्यान से पढ़कर कुछ इस तरह के नतीजे निकाले होंगे।

1) मूल पाठ से अनूदित पाठ की पंक्तियों की संख्या घट-बढ़ सकती है।

2) कविता तुकांत हो सकती है और नहीं भी।

3) मूल कृति को यदि हम 'रचना' कहते हैं तो अनूदित कृति को 'पुनर्रचना' कह सकते हैं।

यहाँ से आगे बढ़ने से पहले कुछ बोध प्रश्नों का उत्तर देते चलें।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित पंक्तियों के दो अनुवाद पेश कीजिए। एक तुकांत हो दूसरा अतुकांत । कोशिश कीजिए कि पहले दो शब्द दुहराए जाएं।

- 'Twinkle twinkle little star,
How I wonder what you are !
- क्या सभी कविताओं का अनुवाद ज्यों का त्यों/शब्दशः किया जा सकता है? क्यों? क्यों नहीं?

16.3.5 अंग्रेजी हिंदी कविता: अनुकरणीय उदाहरण

यदि आप किसी अनुभवी अनुवादक से बातचीत करें तो वह आपको बताएंगे कि वे किसी कविता का अनुवाद कैसे करते हैं। अंग्रेजी कविता का अनुवाद करने का मतलब यह तो है ही कि एक दूसरी कविता का निर्माण करना होगा। फर्क यह है कि कविता हिंदी में होगी। हिंदी की प्रकृति के अनुकूल होगी। जब कोई अनुवादक गद्य का अनुवाद करता है तो वह मूल कृति के स्थान पर अनूदित कृति को ऐसे पेश करता है जैसे वह ज्यों का त्यों रखता हो। इसे अनुवादकों की भाषा में 'समतुल्य' कहते हैं। अनुवाद विज्ञान के क्षेत्र में 'समतुल्यता' का सिद्धांत अब तो खासा पुराना हो गया है। गद्य साहित्य के अनुवाद को आप समतुल्यता की कसौटी पर कस कर देख सकते हैं। पर कविता के अनुवाद में यह हमेशा मुमकिन नहीं होता। कविता का संगीत, उसका अंदाजे – बयां , परिवेश अलग होता है। इनका अनुवाद करना टेढ़ी खीर लगता है। क्या आप 'टेढ़ी खीर' का अनुवाद कर सकते हैं? कर तो सकते हैं , पर यह इतना आसान नहीं होगा। बेहतर यह होगा कि रिटलर (1791) के द्वारा प्रस्तावित काव्यानुवाद के तीन सूत्रों को याद

करते हुए आगे बढ़ें- भावानुसरण, शैली का अनुसरण, मूल की प्रबोधता। टेढ़ी खीर के भाव को लें। यह 'मुश्किल काम' हो सकता है। और 'मुश्किल काम' का अनुवाद करना मुश्किल न होगा। यहीं सूत्र अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय अपनाना कामयाबी दिलाएगा।

खैर, अब आप एक प्रसिद्ध कवयित्री तोरू दत्त की अंग्रेजी कविता का हिंदी के प्रसिद्ध कवि बाल कृष्ण राव के द्वारा किये गए अनुवाद को पढ़ें। दो बार पढ़ें। यह कविता अपने आप में प्रतिनिधि कविता है और इसका अनुवाद भी उतना ही जोरदार बन पड़ा है। आप इसे मौन वाचन और स्वर वाचन दोनों तरह से पढ़ जाइए। पढ़कर बोध प्रश्नों का उत्तर भी सोच समझकर दीजिए। ये जो सवाल और जवाब हैं उनसे आपका कोई इम्तिहान नहीं लिया जा रहा। ये प्रश्न आपको गहन अध्ययन के लिए तैयार करते हैं।

Sita

Three happy children in a darkened room!
What do they gaze on with wide-open eyes?
A dense, dense forest, where no sunbeam pries,
And in its centre a cleared spot.—There bloom
Gigantic flowers on creepers that embrace
Tall trees: there, in a quiet lucid lake
The white swans glide; there, "whirring from the brake,"
The peacock springs; there, herds of wild deer race;
There, patches gleam with yellow waving grain;
There, blue smoke from strange altars rises light.
There, dwells in peace, the poet-anchorite.
But who is this fair lady? Not i
n vain
She weeps,—for lo! at every tear she sheds
Tears from three pairs of young eyes fall amain, And bowed in sorrow are
the three young heads.
It is an old, old story, and the lay
Which has evoked sad Sîta from the past

Is by a mother sung.... 'Tis hushed at last
And melts the picture from their sight away,
Yet shall they dream of it until the day!
When shall those children by their mother's side
Gather, ah me! as erst at eventide?

अंधेरे कमरे में तीन बच्चे किलकारियाँ मार रहे हैं?
क्या है जिसे वे यों देखते हैं आंखे फाड़ फाड़ कर ?
एक घना , बहुत, बहुत घना वन है,
सूरज की एक भी किरण जिसे ढूँढ नहीं पाती है,
और उसके बीच में है एक साफ किया हुआ स्थान,
वहाँ खिलते हैं कई बड़े बड़े फूल , उन बेलों पर
जो लिपटी हुई है लंबे –लंबे पेड़ों से
वहाँ एक शांत, स्वच्छ सरोवर में ,
तैरते हैं श्वेत राजहँस,
वहाँ झाड़ी से झटके के साथ निकलकर
मोर झपट पड़ता है ,
दौड़ते हैं वहाँ झुंड के झुंड जंगली हिरण
जगह जगह वहाँ झिलमिलाते हैं टुकड़े जमीन के
जिन पर लहराती है सुनहरी बालियाँ अनाज की
वहाँ विचित्र वेदियों से उड़ता है हल्का, नीलाभ धुआँ
वहाँ रहता है संन्यासी कवि,
चिर शांति के साथ
कौन है किन्तु वह रूपवती ?
व्यर्थ ही रोती नहीं है देखो तो
इसकी आँखों से गिरे एक-एक आँसू के साथ
बहने लग जाती है अश्रुधार
तीन नेत्र-युग्मों से,
तीनों शिशु शीश
झुक जाते हैं करुणा से!

बहुत, बहुत पुरानी कहानी है यह
 दुखी सीता का
 बीते हुए युग से जिसने आह्वान किया
 वह गीत
 गाया एक माता ने ।
 आखिर सब मूक हुआ,
 उसकी आँखों के आगे का चित्र
 शून्य में विलीन हुआ,
 फिर भी सपनों के सारे दिन
 उसको ही देखेंगे!
 फिर कब, आह फिर कब पहले की तरह
 साँझ होते होते
 घेर कर चारों ओर से अपनी माँ को
 वे बच्चे पास आकर बैठ जाएंगे?

‘एनशिएन्ट बैलड्स एण्ड लेजेंड्स ऑफ हिंदुस्तान’ पुस्तक में यह अंग्रेजी कविता है और इसका अनुवाद 1970 में किया गया था। आप इस कविता को देखते हुए उसके अनुवाद पर गौर करेंगे। यह कविता ‘एक अंधेरे कमरे में तीन खुश बच्चों की कहानी सुनाती है। यह कहानी इन तीन खुश नसीब बच्चों को उनकी माँ सुना रही है। और माँ उन्हें सीता जी की कहानी सुना रही है। यह कहानी सीता के परित्याग की है। इसमें लव-कुश हैं और हैं वाल्मीकि भी। यहाँ राजा राम भी हैं। अंतिम पंक्ति में उन दिनों की याद शामिल है जब कहानी सुनाने वाली खुद कहानी सुना करती थी। अपने रूप और छंद योजना में बाईस पंक्तियों की यह कविता अनूदित होकर बड़ी हो जाती है। किस तरह मूल कविता और उसके अनुवाद में कवि और अनुवादक दोनों व्यक्तिगत और सांस्कृतिक के बीच का अंतर पाठने की कोशिश करते हैं।

हमारा उद्देश्य यह है कि कविता के अनुवाद की प्रक्रिया के चार चरणों की पहचान कर लें। ये चार चरण हैं- शब्द चयन, कथ्य निर्वाह, संरचनात्मक गठन, और आगत शब्दों की तर्जुमानी। यह बात आप पहले ही समझ चुके हैं। अनुवादक को यह ध्यान रखना है कि सबसे पहले वह भाव और विचार का समुचित अनुवाद करना सीखें। अंग्रेजी से हिंदी में कविता का अनुवाद करते समय यह चुनौती है और यह सावधानी भी बरतनी होती है। मूल कविता के विचार को और उसके कथ्य को जहां तक हो सके वहाँ तक उसे बरकरार रखना होगा। इसे समतुल्यता कहते हैं। यह समतुल्यता का सिद्धांत बड़े काम का है। मूल कविता के विचार तत्व को अनुवादक जहां तक हो सके, वहाँ तक सँजो कर पेश करता है। एक दूसरी सावधानी जो अनुवादक को ध्यान में रखनी होती है, वह है अंग्रेजी के संरचनात्मक ढांचे को हिंदी के

संरचनात्मक ढांचे में ढालना। अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया-कर्म चलता है तो हिंदी में कर्ता-कर्म-क्रिया आधार होता है। इसका ध्यान रखना होगा। तीसरी जरूरत है शब्द-चयन की। शब्दों के अर्थ तो सावधानी की मांग करते ही हैं। मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी खास गौर करना मांगते हैं। यह चौथी जरूरत होगी। इन जरूरतों का सिलसिला तो कभी खत्म न होगा। पर हर इकाई की सीमा होती है। और यह सीमा होती है इस बात की कि अनुवाद चाहे ज्यों का त्यों न हो सके, फिर भी जहां तक हो सके अनुसर्जन तो हो ही सकता है।

जो बात इकाई के शुरू करते ही आपको पता चल गई थी कि हिंदी के कवि-अनुवादकों ने हिंदी में अनुवाद करते समय कई बार बहुत कुछ और कई बार कुछ कुछ उन युक्तियों का प्रयोग किया जिन्हें बहुत बाद में विदेशी अनुवाद वेत्ताओं ने “डोमेस्टिकेशन” कहते हुए पेश किया। अनुवाद अध्ययन में ‘डोमेस्टिकेशन’ को एक अनुवाद रणनीति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें लक्ष्य भाषा पाठक के लिए विदेशी पाठ की विचित्रता को कम करने के लिए एक पारदर्शी, धाराप्रवाह शैली अपनाई जाती है। कामता प्रसाद गुरु(1875-1947) बहुत कुछ वैसा ही करते हैं और “सीता” कविता के अनुवाद में कवि-अनुवादक बाल कृष्ण राव (1913-1936) में थोड़ा बहुत वैसा ही करते हैं जैसा वेणुती 1995 में बताते हैं। घरेलूकरण की इस प्रक्रिया से अनुवाद करके आप भी अच्छा महसूस कर सकते हैं।

अनुवादकों के बीच एक चुटकुला चलता है कि ‘खूबसूरत’ अनुवाद ‘बेवफा’ और ‘मनचले’ होते हैं। खूबसूरत महबूब की मानिंद, और बहुत ‘बढ़िया’ अनुवाद के साथ मुश्किल यह होती है कि ‘खूबसूरत’ नहीं होते। मशीनी हो जाते हैं। वे समझ में नहीं आते। बढ़िया अनुवाद वह है जो अनुवाद जैसा लगे ही नहीं। याद रखें आप अंग्रेजी कविता का अनुवाद उनके लिए नहीं कर रहे जो अंग्रेजी जानते हैं।

हम आपको यहीं कुछ बोध प्रश्नों के साथ छोड़े जाते हैं। सवालों के जवाब में ही समझदारी छिपी है। यह तो आपको पता ही होगा कि तैरना सीखने के लिए या साइकल चलाने के लिए अभ्यास के बिना बात नहीं बनती। पानी में उतरना होता है। सड़क पर पैडल मारने होते हैं।

बोध प्रश्न

- ‘सीता’ कविता के हिंदी अनुवाद को पढ़ते वक्त आप कौनसी चार बातों पर गौर करते हैं?
- अंग्रेजी से हिंदी कविता की अनुवाद प्रक्रिया के चार चरणों का उल्लेख ‘सीता’ कविता से उदाहरण देकर कीजिए।
- पंडित कामता प्रसाद गुरु/ बाल कृष्ण राव के अनुवाद के बारे में आपकी राय क्या है?

16.4 : पाठ सार

अंग्रेजी कविता को हिंदी कविता के रूप में ढालकर हिंदी पाठकों के लिए पेश करने की कवायद खड़ी बोली हिंदी में कविता लिखने की शुरुआत के साथ साथ हुई। कवि-अनुवादकों और अनुवादक-कवियों ने अनुवाद किये और यह सिलसिला आज तक चला आ रहा है। इस इकाई में इस सिलसिले की तरफ इशारा करते हुए उन बातों पर ध्यान दिलाया गया है जो अनुवादक को अनुवाद करने में मददगार होती हैं। अंग्रेजी कविता के अनुवाद के वक्त अनुवादक की निगाह मूल कविता के विषय, शीर्षक, नाद या संगीत, शैली, और शिल्प आदि पर रहता है। अनुवाद के समय अनुवादक मूल-कविता को देखकर तय करता है कि वह कविता का भावानुवाद करेगा या इसमें लय, तुक, ताल आदि का भी ध्यान रखा जा सकता है। कविता के कथ्य का अनुवाद अच्छे अनुवाद की पहली शर्त है। अनुवादक यह तो जानता ही हैं कि वह केवल तर्जुमा नहीं कर रहा बल्कि अंग्रेजी के अंदाजे-बयां को मद्देनजर रखते हुए अंग्रेजीपन और ढंग को भी पेश करने की कोशिश कर रहा है। इसलिए वह लगातार कोशिश करता है कि पुराने अनुवादकों और अनुवाद चिंतकों ने अंग्रेजी कविता का हिंदी में अनुवाद करते समय आई बहुत सी चुनौतियों का सामना जिस तरह किया, वैसे ही वह भी कर सके। नए-पुराने अनुवादकों के अनुवादों और उन पर की गई बातचीत से यह भी सीख मिलती है कि अनुवाद की बहुत सी जाँची परखी पद्धतियों और सिद्धांतों के अध्ययन से अनुवाद करना आसान हो जाता है। अंग्रेजी कविता का हिंदी अनुवाद मूल कविता का अनुसृजन होगा। उसके अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती अनुवाद के द्वारा उसकी पुनर्रचना होती है। अगर आप इतना भी नहीं कर सकते, मूल रचना को अपने और अपने पाठक की रुचि के अनुसार नहीं ढाल सकते तो सफल अनुवाद नहीं हो सकता।

16.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

1. अंग्रेजी हिंदी कविता का अनुवाद सिर्फ शब्द के स्थान पर शब्द रखने से नहीं हो सकता।
2. जब से खड़ी बोली में कविता शुरू हुई तब से अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद शुरू हुए।
3. कवि अनुवादकों ने रास्ता बनाया और बताया कि एक ही कविता का अनुवाद तरह तरह से किया जा सकता है।
4. इस तरह के अनुवाद में सबसे पहले कवि के भाव को अंग्रेजी से हिंदी में ले जाना होता है।
5. मूल कविता के छंद, लय, ताल और शब्द विन्यास को ज्यों का त्यों अनूदित नहीं किया जा सकता। पर कोशिश की जा सकती है।
6. अंग्रेजी कविता का हिंदी में घरेलूकरण करना भी एक युक्ति हो सकती है।
7. अनुवादक को ध्यान रखना चाहिए कि वह अनुवाद अपने लिए नहीं अपने पाठकों के लिए कर रहा है।

8. सफल अनुवादक बहुत से तरीकों में से खुद चुनाव कर सकता है क्योंकि पाठक नतीजा देखते हैं, प्रक्रिया नहीं।

16.6 : शब्द संपदा

- | | |
|--------------|-------------------------------------------------------------------|
| 1. समतुल्यता | - बराबरी; समानता; साम्य; मेल; संयोग; अनुकूलता; संयोजन |
| 2. रूढ़ि | - जिनमें बदलाव नहीं होते, वह रूढ़ि होती है। |
| 3. काव्य | - उपकरण- कविता में दिखने या ध्वनि को प्रभावित करने वाली चीजें |
| 4. तरन्नुम | - स्वर-माधुर्य; लय |
| 5. संक्षिष्ट | - मिला हुआ; मिश्रित; जुड़ा हुआ; चिपका हुआ; सटा हुआ |
| 6. नर्सरी | - राइम- बच्चों के लिए लिखे गए गीत, कहानी या कविता, बच्चों की नज़म |

16.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड -(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

- 1) अंग्रेजी कविता के हिंदी में अनुवाद करते समय आने वाली कुछ समस्याओं और उनके समाधान की चर्चा उदाहरण देते हुए कीजिए।
- 2) 'अंग्रेजी कविता का हिंदी में अनुवाद नहीं अनुसर्जन हो सकता है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।
- 3) कविता की रचना प्रक्रिया के चार चरणों को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
- 4) अंग्रेजी कविता के हिंदी अनुवाद की भारतीय परंपरा के विकास की शुरुआत क्यों और कैसे हुई? इसकी कुछ खासियतों का व्याख्यान कीजिए।
- 5) हिंदी-अंग्रेजी काव्य-शैली से क्या तात्पर्य है? इनका ख्याल रखना अनुवादक के लिए क्यों जरूरी है?
- 6) अंग्रेजी-हिंदी कविता अनुवाद की चुनौतियों का जिक्र करते हुए उदाहरण देकर बताइए कि कवि-अनुवादक या अनुवादक-कवि इनका कैसे सामना करता है?
- 7) शुरुआती दौर के अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवादकों में से किसी एक की अनुवाद युक्ति पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

खंड -(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में लिखिए।

1. इन चार पंक्तियों के अंतिम शब्दों को 1-3-2-4 क्रम देते हुए हिंदी में इनके अर्थ के समतुल्य चार शब्द दीजिए। हो सके तो तुकांत खोजिए।

There is an age, alas! In life,
Where every idle dream must end,
An age of introspection rife,
With memories that cross and blend.

2. निम्नलिखित तीन पंक्तियों के अर्थ के समतुल्य चार काव्य- पंक्तियाँ लिखिए

Just a solitude-

Without the swan and quay
Mirrors its loneliness in the look

3. बच्चों के लिए लिखी इस कविता का हिंदी में रूपांतर कीजिए।

Twinkle, twinkle, little star,
How I wonder what you are!
Up above the world so high,
Like a diamond in the sky.
When the blazing sun is gone,
When he nothing shines upon,
Then you show your little light,
Twinkle, twinkle, all the night.

4. 'To a squirrel' कविता का अनुवाद करते समय क्या इसका शीर्षक आपकी कोई मदद करता है? अनुवाद भी कीजिए।

Come play with me;
Why should you run
Through the shaking tree
As though I'd a gun

To strike you dead?
When all I would do
Is to scratch your head And let you go.

5. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों का अनुवाद करें और एक शीर्षक भी दें।
You see, they have no judgement.

So it is natural that they should drown,
First the ice taking them in
And then, all winter, their wool scarves
Floating behind them as they sink
Until at last they are quiet.
And the pond lifts them in its manifold dark arms.

6. “2 Little Whos” शीर्षक का अनुवाद करने के बाद इस कविता का अनुवाद कीजिए। यदि घरेलूकरण कर सकें तो बेहतर होगा।

a little whos
(he and she)
Under are this
wonderful trees
smiling stand
(all realms of where
and when beyond)
now and here
(far from a grown
up i & you-
ful world of known)
who and who
(a little ams
and over them this

aflame with dreams

incredible is)

खंड- (स)

I. सही विकल्प चुनिए

क) कविता के अनुवाद की प्रक्रिया का चरण नहीं है।

1) शब्द चयन, 2) कथ्य निर्वाह, 3) अनुवाद समीक्षा 4) संरचनात्मक गठन

ख) रिटलर (1791) के द्वारा प्रस्तावित काव्यानुवाद का यह सूत्र नहीं है।

1) भावानुसरण, 2) शैली का अनुसरण 3) समतुल्यता 4) मूल की प्रबोधता

ग) “Gather, ah me! as erst at eventide?” कविता की इस पंक्ति के अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती है?

1) पंक्ति का गलत छपा होना 2) अंग्रेजी का बिगड़ा-पुराना रूप होना 3) शायद किसी दूसरी भाषा का कथन होना 4) अनुवादक को अंग्रेजी का अधूरा ज्ञान होना

घ) घरेलूकरण की युक्ति को हिंदी में पहले पहले किसने अपनाया।

1) वेणुती ने 2) गुरु ने 3) बच्चन ने 4) राव ने

च) ‘लाइट ऑफ एशिया’ कविता के शीर्षक का शुक्ल जी ने अनुवाद किया

1) एशिया-प्रकाशक 2) रोशनी -दर-रोशनी 3) बुद्ध चरित 4) इनमें से कोई नहीं

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1) _____ के क्षेष, यमक आदि का भाषांतर प्रायः असंभव ही होता है।

2) काव्यानुवाद को असाध्य साधना नहीं तो कम से कम _____ साधना माना जाता है।

3) पंडित कामता प्रसाद गुरु का अंग्रेजी हिंदी कविता अनुवाद को हम _____ कह सकते हैं।

4) अंग्रेजी कविता का हिंदी अनुवाद करते समय केवल _____ रख देने से काम नहीं चल सकता।

5) अंग्रेजी कविता का अनुवाद उनके लिए नहीं किया जाता जो _____ जानते हैं।

6) काव्यानुवाद की सबसे बड़ी चुनौती अनुवाद के द्वारा उसकी _____ होती है।

7) _____ हिंदी पाठक के लिए अंग्रेजी कविता की विचित्रता को कम करने के लिए एक शैली है।

III. सुमेल कीजिए।

अ) वेणुती

क) भावानुसरण

आ) बच्चन

ख) शोकगीत

इ) थॉमस ग्रे
ई) रिटलर

ग) घरेलूकरण
घ) रुबाइयाँ

16.8 पठनीय पुस्तकें

1. काव्यानुवाद, सिद्धांत और समस्याएं- नगीन चंद सहगल
2. काव्यानुवाद की समस्याएं- डॉ भोला नाथ तिवारी
3. अनुवाद परंपरा और प्रयोग- प्रो गोपाल शर्मा